[illegible]
[illegible]ACHAR
JAGAT

1969

G.K.U.
HARDWAR

078330

Diamond Book Binding House
Moh Karachi [illegible] Road Jawalapur

RT-0323

078330

STOCK VERIFICATION
Central Library
2024-25 G.K.V. HWR

12-4-

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 8 5 अंक

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

सत्यमेव जयते

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर० एन० 1[illegible]17।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष : 8 जनवरी, 1969 अंक 5

078330

- 0 भाषा संगम
- 0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं
- 0 हिंदी
  - × भारत सरकार में
  - × राजधानी में
  - × प्रादेशिक अंचल में
  - × विश्वविद्यालयों में
  - × विदेशों में

"गांधी जी ने कहा था"

विभिन्न प्रदेशों में अंग्रेज़ी बोलने वाले लोग काफी मिल जाते हैं, किन्तु उनकी संख्या बहुत ही थोड़ी है और हमेशा थोड़ी ही रहेगी। इसका मुख्य कारण यह है कि यह भाषा कठिन और विदेशी है। साधारण मनुष्य इसे ग्रहण नहीं कर सकता। इसलिए यह संभव नहीं कि अंग्रेज़ी के जरिये भारत एक राष्ट्र बन जाए। अतः भारतीयों को भारत की ही कोई भाषा पसंद करनी होगी।

(गुजराती से - इंडियन ओपीनियन 18-8-1906)

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

सर्व भारती भाषा कोश

काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी ने समस्त भारतीय भाषाओं के शब्दों का एक बृहद शब्दकोश बनाने के लिए 40 लाख 52 हज़ार रुपये की एक योजना बनाई है। यह योजना स्वीकृति तथा आवश्यक आर्थिक सहायता के लिए शिक्षा मंत्रालय को भेजी गई है। 'सर्व भारती भाषा कोश' 15 खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा और यह योजना पांच वर्षों में पूरी होगी।

पंजाबी में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें आमंत्रित .

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने पंजाबी को शिक्षा का माध्यम बनाने के कार्यक्रम के अंतर्गत, गुरुमुखी लिपि में पंजाबी भाषा की पुस्तकें आमंत्रित की हैं। डिग्री स्तर की विभिन्न परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के लिए इनमें से पुस्तकें चुनी जाएंगी। उत्कृष्ट पुस्तकों पर पुरस्कार भी दिए जाएंगे। विज्ञान, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, शिक्षा, वाणिज्य और कानून विषयक ग्रंथों पर दो-दो हज़ार रुपये के पांच पुरस्कार और कला, मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों पर एक-एक हज़ार रुपये के पांच पुरस्कार दिए जाएंगे। पुरस्कृत पाण्डुलिपियों का प्रकाशन विश्वविद्यालय करेगा और उस पर लेखक को 15 प्रतिशत रायल्टी दी जाएगी। पाण्डुलिपि की टाइप की हुई। छपी हुई चार प्रतियां 30 नवम्बर, 1969 तक भेज दी जानी चाहिए। विस्तृत जानकारी के लिए डाइरेक्टर, प्लैनिंग एण्ड डिवेलपमेंट (पी) पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से पत्र-व्यवहार करें।

"गुजराती संतों की हिंदी वाणी" - एक परिसंवाद का आयोजन

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर (गुजरात) के हिंदी विभाग की ओर से 'गुजराती संतों की हिंदी वाणी' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस आयोजन के लिए श्रीराम ट्रस्ट, अमरावती (महाराष्ट्र) की ओर से 5005 रुपये दान में प्राप्त हुए थे। परिसंवाद में पं0 के0के0 शास्त्री डा0 मदन गोपाल गुप्त, डा0 सनत्कुमार रंगाटिया, डा0 नरेश पंड्या, डा0 देवीसहाय,

और डा0 मदन कुमार जी ने क्रमशः प्रीतम, अखा, आनंदघन, प्राणनाथ ब्रह्मानंद और गौरीबाई पर अपने - अपने शोध-पत्र पढ़े । परिसंवाद का उदघाटन डा0 भोगीलाल जी सांडेसरा की अध्यक्षता में सरदार पटेल विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वरभाई पटेल ने किया ।

विविध समाचार

- सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग की पाक्षिक पत्रिका 'योजना' अब बंगला, असमिया और तमिल में भी प्रकाशित होगी । इस समय यह पत्रिका केवल हिंदी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित होती है । पत्रिका में देश के आर्थिक विकास और समृद्धि से संबंधित लेखों के अतिरिक्त क्षेत्र विशेष की समस्याओं तथा आवश्यकताओं को भी स्थान दिया जाएगा ।

- बिहार संस्कृत संजीयन समाज का 61 वां वार्षिक अधिवेशन पटना में 20 जनवरी को हुआ । बिहार सरकार के मुख्य सचिव श्री एस0वी0 साहनी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की । सम्मेलन का उदघाटन करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री टी0एल0 वेंकटरमण अय्यर ने कहा संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आधार-शिला है । इसकी प्रगति के लिए सभी संभव प्रयास किए जाने चाहिए । सम्मेलन में विभिन्न वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि संस्कृत को स्कूलों और कालेजों में अनिवार्य भाषा बनाया जाए ।

- राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन द्वारा संचालित नित्यानंद संस्कृत पुस्तकालय एवं वाचनालय में डा0 संपूर्णानंद को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 17 जनवरी को एक सभा का आयोजन किया गया । प्रदेश के अनेक संस्कृत विद्वान इस सभा में सम्मिलित हुए । सभा में अनेक वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि राजस्थान में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना करके डा0 सम्पूर्णानंद जी के अंतिम इच्छा को पूरा किया जाए ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिंदी प्रेमी मंडली महाविद्यालय की रजत जयंती के अवसर पर 18 और 19 जनवरी को तेनाली में आंध्र प्रदेश के हिंदी प्रचारकों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया । सम्मेलन में राज्य के लगभग 500 हिंदी प्रचारकों ने भाग लिया । संसद सदस्य बाबू गंगाशरण सिंह ने सम्मेलन की अध्यक्षता की । सम्मेलन में श्रीमती सरोजिनी महिषी, डा0 रामधारी सिंह `दिनकर` और श्री मोटूरि सत्यनारायण के भाषण हुए । इस अवसर पर विविध भाषा कवि सम्मेलन तथा अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन भी किया गया ।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का पदवीदान समारोह :

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास का 33 वां पदवीदान समारोह 30 दिसंबर को मद्रास में संपन्न हुआ । इस अवसर पर 820 छात्रों को उपाधियां वितरित की गईं । इन छात्रों में वेंकटेश्वर राव नाम का एक नेत्रहीन छात्र भी था जिसे `विशारद` की उपाधि मिली । केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने अपने दीक्षांत भाषण में कहा कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं के लिए देवनागरी को अतिरिक्त लिपि के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए । इससे क्षेत्रीय भाषाएँ एक दूसरे के निकट आएंगी और हिंदी के साथ साथ सभी भाषाओं का विकास होगा ।

दक्षिण के हिंदी सेवी पं0 देवदूत शर्मा का अभिनंदन :

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, केरल शाखा के स्थापक पं0 देवदूत शर्मा के 65 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी प्रचार सभा की ओर से 1 जनवरी, 1969 को अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया । मलयालम के महाकवि जी0 शंकर कुरुप्प ने समारोह की अध्यक्षता की । केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री वी0 आर0 कृष्णय्यर ने पं0 देवदूत जी के एक चित्र का अनावरण किया ।

विविध :

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति बंगलौर की ओर से मंगलूर स्थित राजकीय माध्यमिक महिला - शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल में 23 दिसंबर से एक

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शुरु किया गया है। यह पाठ्यक्रम मंलगुर शहर तथा आस-पास के वरिष्ठ प्राथमिक स्कूलों के हिंदी शिक्षकों के लिए है।

- राष्ट्रभाषा आंदोलन संगठन, जोधपुर की ओर से विज्ञान विषय के हिंदी लेखक डा0 रमेशचंद्र कपूर का नागरिक अभिनंदन किया गया। डा0 कपूर को उनकी हिन्दी कृति 'परमाणु विखंडन' पर हिंदी साहित्य सम्मेलन का मंगला प्रसाद पारितोषिक दिया गया है।

- केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली, ने देवनागरी तारों की लोकप्रियता बढ़ाने के उद्देश्य से 1 अगस्त, 1968 से 15 अगस्त, 1968 तक एक तार प्रतियोगिता का आयोजन किया था। यह प्रतियोगिता डाक तार, रेल विभाग, नहर विभाग आदि के उन कर्मचारियों के लिए थी जो तारों की बुकिंग, प्राप्ति और प्रेषण का काम करते हैं। विभिन्न तार घरों के 39 तार बाबुओं ने इसमें भाग लिया। श्री रामचंद्र पाण्डेय (इलाहाबाद) को 101 रुपये का प्रथम पुरस्कार, श्री रामनाथ दिवाकर (कानपुर) को 51 रुपये का द्वितीय पुरस्कार तथा श्री यमुना प्रसाद (पटना) को 31 रुपये का तृतीय पुरस्कार दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त 9 प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार तथा विशेष पुरस्कार दिए जा रहे हैं। ये पुरस्कार आगामी मार्च में होने वाले पुरस्कार वितरण समारोह में दिए जाएंगे।

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, पूर्वोत्तर रेल शाखा, लखनऊ की ओर से 6 जनवरी को अहिंदी भाषियों के लिए एक निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें तेलुगु, बंगला, मराठी, सिंधी तथा उर्दू भाषी सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। सफल प्रतियोगियों को 101, 51 और 31 रुपये के तीन पुरस्कार दिए जाएंगे।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

सभी मंत्रालयों में 'हिंदी सैल' बनेंगे

गृह मंत्रालय ने सभी मंत्रालयों । विभागों को आदेश जारी किए हैं कि वे अपने यहां मार्च के अंत तक विशेष अनुवादक कर्मचारियों की व्यवस्था कर लें ताकि सरकारी काम-काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जा सके । ये आदेश राजभाषा अधिनियम के उपबंधों के अनुसरण में जारी किए गए हैं । अधिनियम पर हुई बहस के दौरान कुछ सदस्यों ने मांग की थी कि हिंदी या अंग्रेज़ी में पत्र भेजने वालों पर अंग्रेजी या हिंदी में अनुवाद भेजने का दायित्व नहीं रखा जाना चाहिए. । इसी मांग को ध्यान में रखते हुए 'अनुवाद सैल' खोले जा रहे हैं ताकि यह काम मंत्रालयों । विभागों में ही हो सकें । इस तरह की सिफारिश कुछ समय पहले हिंदी सलाहकार समिति ने भी की थी । हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति का मूल्यांकन अब हर तीन महीने में किया जा रहा है । प्रत्येक मंत्रालय में एक संयुक्त सचिव को हिंदी के प्रयोग तथा कर्मचारियों के हिंदी-शिक्षण पर नज़र रखने का काम सौंपा गया है । सांविधिक और इतर सांविधिक साहित्य के अनुवाद का काम भी जोरों से चल रहा है । यह काम क्रमश: राजभाषा (विधायी) आयोग, विधि मंत्रालय, तथा शिक्षा मंत्रालय में हो रहा है ।

संसद में भारतीय भाषाओं के तुरन्त अनुवाद की व्यवस्था

संसद भवन में शीघ्र ही इस प्रकार व्यवस्था की जा रही है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं में बोलने वाले सदस्यों के भाषण अनुवाद के माध्यम से अन्य सदस्यों द्वारा समझे जा सकें । इस समय अंग्रेजी भाषण हिंदी में और हिंदी भाषण अंग्रेज़ी में सुनने की व्यवस्था है । अब तमिल मलयालम और कन्नड़

जैसी तीन चार भाषाओं में उक्त व्यवस्था शुरु की जाएगी । इन क्षेत्रीय भाषाओं के हिंदी तथा अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध कराए जाएंगे । किंतु हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषणों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद नही किया जाएगा । हिंदी तथा अंग्रेजी को छोड़ कर अन्य किसी भी भाषा में बोलने वाले सदस्य को पहले सूचना देनी होगी ताकि उस भाषा विशेष के अनुवादक कर्मचारी वहां मौजूद रहें ।

- केन्द्रीय खाद्य तथा कृषि मंत्रालय द्वारा संचालित दिल्ली दुग्ध योजना अपना काम-काज अब हिंदी में किया करेगी । दूध के टोकन के लिए आवेदन पत्र अब हिन्दी में भरे जा सकते हैं । टोकनों पर अंग्रेजी में छपे नामों को भी धीरे-धीरे हिंदी में बदला जाएगा ।

- केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मंडल की स्थायी समिति ने सिफारिश की है कि हिंदी भाषी राज्यों को दक्षिण भारतीय भाषाओं की पढ़ाई के लिए उसी प्रकार वित्तीय सहायता दी जाए जिस प्रकार अहिंदी भाषी राज्यों को हिंदी की पढ़ाई के लिए दी जाती है ।

नव साक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें आमंत्रित

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय ने 14 वीं नव साक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए असमिया, बंगला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु तथा उर्दू भाषाओं की पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियां आमंत्रित की हैं । चुनी हुई पुस्तकों तथा पाण्डुलिपियों के लेखकों को एक-एक हज़ार रुपये के लगभग 40 पुरस्कार दिए जाएंगे । पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियां प्रकाशकों अथवा लेखकों द्वारा भेजी जा सकती हैं । प्रत्येक प्रविष्टि पर पांच रुपये प्रवेश शुल्क है । पुस्तकें आदि 31 मई, 1969 तक अनुभाग अधिकारी (एस०ई०-2) शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली में पहुंच जानी चाहिए । विस्तृत जानकारी के लिए उक्त अनुभाग से पत्र-व्यवहार करें ।

* राजधानी में

एक सम्पर्क भाषा आवश्यक

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने नई दिल्ली में 1 जनवरी को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि देश में एक सम्पर्क भाषा जरूरी है। बिना सम्पर्क भाषा के देश के एक भाग के लोगों का दूसरे भाग के लोगों से सीधा सम्पर्क नहीं रह सकता। हर स्तर पर न तो अनुवाद संभव है और न हमेशा इस का सहारा लेना चाहिए। त्रिभाषा सूत्र के बारे में प्रश्न पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि त्रिभाषा सूत्र कायम है।

सड़कों के नाम हिंदी उर्दू में

दिल्ली नगर निगम की तदर्थ हिंदी समिति की बैठक में निश्चय किया गया है कि सड़कों के नाम हिंदी और उर्दू में ही लिखे जाएं। इससे पहले सड़कों के नाम हिंदी उर्दू तथा अंग्रेज़ी में लिखने का प्रस्ताव था।

ब्लूमफील्ड की प्रसिद्ध पुस्तक 'लैंग्वेज' के हिंदी अनुवाद का विमोचन

विश्व विख्यात भाषाशास्त्री ब्लूमफील्ड की प्रसिद्ध पुस्तक 'लैंग्वेज' के हिंदी अनुवाद 'भाषा' का 30-1-69 को एक समारोह में विमोचन किया गया। ग्रंथ-विमोचन शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह द्वारा सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक का अनुवाद स्व० डा० विश्वनाथ प्रसाद ने किया था और यह केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की योजना के अंतर्गत मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई है।

- नगर निगम हिंदी परिषद, करोलबाग की ओर से महामना पं० मदनमोहन मालवीय की स्मृति में एक सभा का आयोजन किया गया। हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि डा० रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा संसद सदस्य बाबू गंगा शरण सिंह ने मालवीय जी की अनंत हिंदी सेवाओं का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

- दिल्ली प्रशासन ने राजधानी में ईंट बनाने वालों की एसोसिएशन से अपील की है कि वे ईंटों पर अंग्रेज़ी के बजाय हिंदी में नाम लिखें। एसोसिएशन ने प्रशासन को आश्वासन दिया कि भविष्य में वे हिंदी में ही नाम लिखेंगे।

विविध समाचार

अमीर खुसरो साहित्य अकादमी की ओर से 9 जनवरी, 1968 को निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली में, अमीर खुसरो जयंती समारोह मनाया गया । समारोह का उद्घाटन केन्द्रीय वाणिज्य उपमंत्री श्री मोहम्मद शफी कुरैशी ने तथा स्मारिका विमोचन स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन उपमंत्री श्री बी0 एस0 मूर्ति ने किया । डा0 बाबू राम सक्सेना समारोह के अध्यक्ष थे । इस अवसर पर हिंदी तथा उर्दू के कवियों का एक कवि-सम्मेलन भी हुआ ।/

- उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक श्री कृश्न चंदर का उनकी 55 वीं वर्षगांठ के अवसर पर राजधानी में भव्य अभिनंदन किया गया । समारोह `जश्न-ए-कृश्न चंदर समिति` द्वारा 11 जनवरी को चेम्सफोर्ड क्लब में आयोजित किया गया । समारोह में राष्ट्रपति डा0 जाकिर हुसैन तथा कुछ विदेशी राजदूत भी उपस्थित हुए । संसद सदस्य श्री आनंद नारायण मुल्ला ने श्री कृश्न चंदर को शुभ कामनाएं देते हुए कहा कि उनके साहित्य का मूल स्वर इन्सानियत की हिमायत करना है । इसके लिए वे प्रशंसा के पात्र हैं । हिंदी लेखकों की ओर से श्री राजेन्द्र अवस्थी ने, पंजाबी लेखकों की ओर से श्रीमती अमृता प्रीतम ने और प्रकाशकों की ओर से श्री दीननाथ मल्होत्रा ने श्री कृश्न चंदर का अभिनंदन किया । इस अवसर पर समिति की ओर से श्री कृश्न चंदर को 25 हजार रुपये का चैक भेंट किया गया ।

- राज्य सभा क्लब की ओर से 17 जनवरी को एक कवि - गोष्ठी का आयोजन किया गया । हिंदी के प्रसिद्ध कवि डा0 हरिवंश राय `बच्चन` ने कवि गोष्ठी की अध्यक्षता की । राजधानी के अनेक उदीयमान कवियों ने इसमें भाग लिया ।

* प्रादेशिक अंचल में

शिक्षा के माध्यम के संबंध में गोआ सरकार की नीति

संघ शासित क्षेत्र गोआ की सरकार ने निर्णय किया है कि क्षेत्रीय भाषाओं को सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम बनाया जाए । मंत्रिमंडल द्वारा लिए गए इस निर्णय में यह भी कहा गया है कि जब प्राथमिक शिक्षा अंग्रेजी में हो तो क्षेत्रीय भाषा तीसरी कक्षा से और हिंदी पांचवीं कक्षा से शुरू हो जानी चाहिए । गोआ में मराठी और कोंकणी भाषाओं को क्षेत्रीय भाषाएं माना गया है । यदि प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषा के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषा में हो, तो दूसरी भाषा के रूप में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा को तीसरी कक्षा से शुरू किया जाए तथा अंग्रेजी को पांचवी कक्षा से । जब प्राथमिक शिक्षा का माध्यम गोआ की क्षेत्रीय भाषा हो, तो दूसरी भाषा के रूप में हिंदी या अन्य भारतीय भाषा तीसरी कक्षा से और अंग्रेजी पांचवी कक्षा से प्रारंभ की जाए । माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा से शिक्षा देने की सुविधाओं का, मांग को देखते हुए, विस्तार किया जाए । अंग्रेज़ी माध्यम वाले माध्यमिक स्कूलों से कहा गया है कि वे अपने यहां मराठी माध्यम वाली कक्षाएं भी चलाएं क्योंकि इस समय मराठी माध्यम वाले माध्यमिक स्कूलों की कमी है । चूंकि बहुत से बच्चे प्राथमिक शिक्षा मराठी माध्यम से लेते हैं, अतः माध्यमिक स्तर पर भी मराठी माध्यम वाले अधिकाधिक स्कूल खोले जाने चाहिएं । विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के बारे में मंत्रिमंडल ने निर्णय किया है कि फिलहाल शिक्षा का मुख्य माध्यम अंग्रेज़ी बनी रहे, किंतु क्षेत्रीय भाषाओं को भी वैकल्पिक माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाए । किंतु यह निर्णय बम्बई विश्वविद्यालय द्वारा इस संबंध में लिए गए निर्णय के अधीन होगा, क्योंकि इस समय गोआ के कालेज बम्बई विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं ।

पंजाब सरकार के कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग अवैध

पंजाब सरकार के मुख्य सचिव ने एक परिपत्र द्वारा सब सचिवों तथा विभागीय अध्यक्षों को सूचित किया है कि पंजाब भाषा अधिनियम, 1967, के उपबंधों के अनुसार सरकारी काम काज में पंजाबी का प्रयोग आवश्यक है । कार्यालय के काम में अंग्रेजी भाषा का किसी भी कर्मचारी अथवा अधिकारी द्वारा प्रयोग इस अधिनियम तथा इसमें समय-समय पर किए गए संशोधनों का उल्लंघन होगा ।

शासकीय पत्र - व्यवहार के संबंध में अंतर्राज्यीय समझौता

मध्य प्रदेश सरकार ने शासकीय पत्र-व्यवहार के लिए हिंदी के प्रयोग के संबंध में छः राज्यों से अंतर्राज्यीय समझौता कर लिया है । ये राज्य हैं उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, गुजरात, और महाराष्ट्र । इन राज्यों का आपसी पत्र-व्यवहार अब हिंदी में हुआ करेगा ।

हिंदी शिक्षकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम संगोष्ठी

केन्द्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, ने 23-12-68 से 11-1-69 तक एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम संगोष्ठी का आयोजन किया । इसमें विभिन्न अहिंदी भाषी राज्यों के 49 हिंदी शिक्षकों ने भाग लिया । संगोष्ठी का समापन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेर सिंह ने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं की काम-चलाऊ जानकारी देने के लिए इस समय अल्पकालिक पाठ्यक्रमों की बड़ी आवश्यकता है । शिक्षा मंत्रालय इस प्रकार के पाठ्यक्रम चलाने की योजना पर विचार कर रही है ।सम्भवत: यह काम संस्थान को सौंपा जाएगा ।

अब तक संस्थान के तत्वावधान में इस प्रकार की दस संगोष्ठियां हो चुकी है, जिनमें कुल 366 सदस्यों ने भाग लिया है ।

क्षेत्रीय भाषाओं में लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेर सिंह ने मदुरै में एक पत्रकार सम्मेलन में बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय सितंबर से ऐसी व्यवस्था करना चाहता है जिसके अंतर्गत संघीय लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में दी जा सकेंगी । उन्होंने बताया कि हिंदी के प्रति केन्द्र की विशेष जिम्मेदारी है, क्योंकि वह राष्ट्रभाषा बन चुकी है । किंतु केन्द्र सभी क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के लिए बहुत उत्सुक है । विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकें क्षेत्रीय भाषा में तैयार करने के लिए केन्द्रीय सरकार ने हर राज्य को एक-एक करोड़ रुपये की राशि दी है ।

हिंदी कवयित्री ‘मीरा’ के नाम पर अखिल भारतीय पुरस्कार

राजस्थान साहित्य अकादमी ने इस वर्ष दो हज़ार रुपये का अखिल भारतीय ‘मीरा पुरस्कार’ देने का निर्णय किया है । यह पुरस्कार हिंदी के कथा-साहित्य पर दिया जाएगा । इसके अतिरिक्त एक-एक हज़ार रुपये के पुरस्कार हिंदी भाषा के काव्य, साहित्यिक निबंध, राजस्थानी भाषा में पद्य तथा उर्दू भाषा और साहित्य पर प्रदान किए जाएंगे । अकादमी ने पुस्तकों या पाण्डुलिपियों की चार-चार प्रतियां ३1 जनवरी, तक आमंत्रित की हैं ।

गांधी जी की हिंदी सेवा : एक विचार गोष्ठी :

श्री वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, की साहित्य परिषद के तत्वावधान में ‘गांधी जी की हिंदी सेवा’ विषय पर एकविचार गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें स्थानीय हिंदी साहित्यकारों और विद्वानों ने भाग लिया ।

विभिन्न भाषाओं के लिए देवनागरी का प्रयोग

लखनऊ के साहित्यकार श्री नंदकुमार अवस्थी राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से फारसी, अरबी, बंगला आदि कई भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रंथों के लिप्यंतरण देवनागरी लिपि में तैयार कर रहे हैं। बंगला के प्रसिद्ध रामभक्त कवि श्री कृत्तिवास की बंगला रामायण का प्रथम भाग इस योजना के अंतर्गत प्रकाशित हो चुका है तथा दूसरा भाग प्रकाशनाधीन है।

विविध समाचार

-कांग्रेस अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा ने दीनापुर में एक सभा में भाषण देते हुए कहा है कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है और हमें हिंदी सीखनी चाहिए। उन्होंने अभी हाल ही में हिंदी सीखना शुरू किया है। उन्हें आशा है, कि वे एक साल के अंदर अंदर अच्छी तरह हिंदी बोलने लगेंगे।

-बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के भवन में 12 जनवरी को गोस्वामी तुलसीदास की एक मानवाकार संगमरमर प्रतिमा का अनावरण किया गया। प्रतिमा-अनावरण की रस्म बिहार के भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री आचार्य बदरीनाथ वर्मा ने अदा की और समारोह की अध्यक्षता बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राम दयाल पाण्डेय ने की। उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री सतीशचंद्र मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

-बिहार राष्ट्र भाषा परिषद के वरिष्ठ अनुसंधान पदाधिकारी पं० रमाकांत पाठक ने आनन्दघन द्वारा रचित 'गोकुल चरित्र' की खोज की है। यह रचना राष्ट्रभाषा परिषद की त्रैमासिक पत्रिका 'परिषद पत्रिका' में प्रकाशित हो रही है।

-हरियाणा सरकार द्वारा प्रकाशित नये वर्ष के कैलेंडर और डायरियों में हिंदी को प्रथम स्थान तथा अंग्रेजी को द्वितीय स्थान दिया गया है। उधर पंजाब सरकार द्वारा प्रकाशित नये वर्ष के कैलेंडर और डायरियों में अंग्रेजी को हटा दिया गया है। इनमें पंजाबी तथा हिंदी का ही प्रयोग हुआ है।

* विश्वविद्यालयों में

-लखनऊ में 4 जनवरी, 1969 को आयोजित कुलपतियों के सम्मेलन में भाषण करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा0 गोपाल रेड्डी ने सुझाव दिया है कि एम0ए0 (हिंदी) में प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए एक अन्य भारतीय भाषा, विशेषकर दक्षिण भारतीय भाषा, का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जाए। इस दिशा में लखनऊ, इलाहाबाद, गोरखपुर, आगरा, आदि के विश्वविद्यालय आगामी जुलाई से शुरुआत कर सकते हैं।

-वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय का पदवीदान समारोह 31 दिसंबर, 1968 को सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा0 गोपाल रेड्डी ने की। कलकत्ता विश्वविद्यालय के सम्मान्य प्रो0 श्री एस0 मुखोपाध्याय ने अपने दीक्षांत भाषण में कहा कि संस्कृत के अध्ययन से संबंधित विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं को उच्च कोटि के विद्वान तैयार करने की ओर सारी शक्ति लगानी चाहिए।

-सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित गांधी शताब्दी जनगोष्ठी का आरंभ करते हुए गांधी दर्शन के सुप्रसिद्ध चिंतक काका साहेब कालेलकर ने कहा है कि जब तक इस देश का शासन 80 प्रतिशत जनता द्वारा समझी जानी वाली हिंदी भाषा में नहीं चलेगा, तब तक इस देश में लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता।

-दिल्ली विश्वविद्यालय ने उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि मिर्जा गालिब की शताब्दी के अवसर पर गालिब अनुसंधान छात्रवृत्ति देने का निर्णय किया है। छात्रवृत्ति की राशि 200 रुपये प्रतिमास है। विश्वविद्यालय के गालिब शताब्दी मनाने का एक व्यापक कार्यक्रम बनाया है। विश्वविद्यालय का उर्दू विभाग विभागीय अनुसंधान पत्रिका 'उर्दू-ए-मुल्ला' का 1000 पृष्ठों का विशेषांक निकालेगा। विभाग महाकवि से संबंधित एक ग्रंथ सूची भी प्रकाशित करेगा जिसमें लगभग 2,000 प्रविष्टियां होंगी।

-कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के छात्र संघ ने विश्वविद्यालय की विद्या परिषद से मांग की है कि स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को अप्रैल, 1969 में एम0ए0 की परीक्षाएं हिंदी माध्यम से देने की अनुमति दी जाए। अध्यापकों को हिंदी माध्यम से पढ़ाने में यदि कठिनाई होती है, तो वे भले ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाते रहें, किंतु परीक्षा हिंदी के माध्यम से देने की छूट होनी चाहिए।

* विदेशों में

पूर्वी जर्मनी की हिंदी विदुषी डा0 मार्गोत हेलज़िग

कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय, लीपज़िग, के भारतीय विद्या संस्थान की निदेशक डा0 मार्गोत हेलज़िग द्वारा हिंदी व्याकरण पर लिखी गई एक पुस्तक अभी हाल ही में पूर्वी जर्मनी में प्रकाशित हुई है। जर्मन छात्रों को हिंदी भाषा का ज्ञान कराने के उद्देश्य से यह पुस्तक व्याकरण की पाठ्यपुस्तक के रूप में लिखी गई है। पुस्तक का उद्देश्य हिंदी-व्याकरण की नई वैज्ञानिक व्याख्या करना नहीं है। इसमें आधुनिक साहित्यिक हिंदी के व्याकरण के मूलभूत नियमों की विस्तार से व्याख्या की गई है और व्याकरण के क्षेत्र में इसे मुख्यत: एक संदर्भ पुस्तक माना जा सकता है। लेखिका ने अनेक वर्षों के हिंदी अध्ययन के बाद यह पुस्तक तैयार की है और इसमें अनेक रूसी तथा भारतीय विद्वानों से सहायता प्राप्त की है।

डा0 मार्गोत हेलज़िग दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए सन् 1964 में आई थीं। उन्होंने आधुनिक साहित्यिक हिंदी में 'हुआ' से बनने वाले शब्दों के अध्ययन पर शोध-प्रबंध लिखा है।

कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय, लीपज़िग, के भारतीय विद्या संस्थान में उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से भारतीय साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान का काम हो रहा है। वैदिक तथा संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान स्व0 मैक्समूलर ने इस विश्वविद्यालय में अध्ययन शुरू किया था। जर्मनी के प्राचीन अन्वेषक मुख्य रूप से प्राचीन भारत की संस्कृति में सारी शक्ति लगाते थे, किंतु आजकल बीसवीं शताब्दी के भारत की समस्याओं को समझने तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं, विशेष कर हिंदी तथा उर्दू के अध्ययन की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

विश्व-झाँकी की मासिक पत्रिका

पिछले अंकों की कुछ झलकियां :

जनवरी, 1968 :	रामायण और महाभारत द्रौपदी का विवाह वानरपति हनुमान्
मार्च, 1968 :	विज्ञान संस्कृति के रूप में विज्ञान तथा हमारे युग की संस्कृति अंतरिक्ष नव-संगीत
अगस्त-सितंबर, 1968 :	परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग दूसरी पानामा नहर-नाभिकीय विस्फोटकों की देन ? राष्ट्रों की सेवा में परमाणु
अक्तूबर-नवंबर, 1968 :	जापान, परिवर्तन की एक शताब्दी दस हजार गुड़ियों का देश तोक्यो : दो नगरों की कहानी
जनवरी, 1969 :	वेनिस खतरे में वेनिस के सहस्रों विरोधाभास वेनिस, पूर्व और पश्चिम को मिलाने की कड़ी
एक प्रति :	एक रुपया । संयुक्तांक : 2 रुपये ।
वार्षिक शुल्क :	रु0 10.50 (पुस्तकालयों, शिक्षा-संस्थाओं से रु0 9.50)
नोट :	1-जनवरी, 1968 से ग्राहक बनने वालों को अगस्त, 1967 से दिसंबर, 1967 तक के अंक नि:शुल्क । 2- शुल्क मनीआर्डर से ही भेजें । चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें ।

प्रबंध संपादक : यूनेस्को कूरियर, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

पुस्तकालय
178330
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. **अपना हृदय सबल बनाइए :** ले० वी जेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5-00
2. **सिखों का इतिहास :** ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. **हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक** पृ० 165 मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. **व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश** पृ० 324 मूल्य 4-50
2. **शब्दार्थ मीमांसा :** ले० रामचन्द्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भांषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. **शांति-रक्षा अंक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 148 मूल्य 4-50
2. **द्विवेदी स्मृति विशेषांक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 270 मूल्य 12-50
3. **संकलन** पृ० 580 मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)

वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. **मानक देवनागरी**
3. **Standard Devanagari Script**
4. **Devanagari Through the Ages**
5. **देवनागरी लेखन विधि चार्ट**
6. **परिवर्धित देवनागरी चार्ट**
7. **Standardisation of Hindi Spelling**
8. **हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण**

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

2318

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 8

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 फरवरी, 1969 अंक 6

0 भाषा संगम (संस्कृत परीक्षाओं की मान्यता आदि)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

* भारत सरकार में

* प्रादेशिक अंचल में

* विदेशों में

* राजधानी में

* विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था

अपने देशवासियों पर अंग्रेजी का मुलम्मा चढ़ा हुआ देखकर मुझे जितना दुख होता है उतना अन्य किसी वस्तु से नहीं ।,...... जब मैं भारतीयों को अपने भारतीय भाइयों के साथ विदेशी भाषा में बोलते देखता हूं तब मुझे बड़ी वेदना होती है । प्रो0 यदुनाथ सरकार और श्री सिगविक कहा करते थे कि भारतीय विद्यार्थी पर अंग्रेजी का इतना भारी बोझ है कि उसके परिणामस्वरूप वह मौलिक रूप से कुछ सोच नहीं सकता ।

-सिंध राष्ट्रीय कालेज में दिए गए भाषण से

(24-7-1920)

साहित्य अकादमी द्वारा दस भाषाओं की

साहित्य अकादमी ने 1968 के पुरस्कारों के लिए 10 भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों को चुना है । पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं- अलकनंदा (असमिया कविता) श्रीमती नलिनी बाला देवी ; अवलोकन (गुजराती समालोचना) श्री सुन्दरम् ; नन्नक थगालु (कन्नड़, कहानी संग्रह) मस्ती वेंकट अय्यंगार; युगांत (मराठी) श्रीमती इरावती कर्वे; नवें लोक (पंजाबी) कुलवंतसिंह विर्क ; श्री गुरुगोविन्द सिंह चरितम् (संस्कृत) सत्यव्रत शास्त्री; शाहजे रसाले (सिंधी) के०जी० एडवानी; वेल्लई परवई (तमिल) श्री निवास राघवन, और दो चट्टानें (हिंदी कविता) डा० बच्चन ।

साहित्य अकादमी सन् 1954 से भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियों पर प्रतिवर्ष पुरस्कार देती आ रही है । संविधान में उल्लिखित 15 भाषाओं के अतिरिक्त मैथिली अंग्रेजी और संस्कृत के ग्रंथों पर भी पुरस्कार दिए जाते हैं । इस वर्ष का पुरस्कार पहली जनवरी, 1965 से 31 दिसम्बर, 1968 तक प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया है ।

संस्कृत परीक्षाओं की समकक्षता

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय ने केंद्रीय संस्कृत बोर्ड की सिफारिश पर कुछ समय पहले विभिन्न संस्थाओं की संस्कृत परीक्षाओं की समकक्षता निर्धारित की थी । पाठकों की जानकारी के लिए इस का विवरण नीचे दिया जा रहा है :

क्र सं०	परीक्षक संस्था का नाम	परीक्षा का नाम	सामान्य परीक्षाओं से संस्कृत परीक्षाओं की समकक्षता
1	2	3	4
1	वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	प्रथमा	निम्नतर माध्यमिक
		मध्यमा	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
		शिक्षा शास्त्री	बी०एड० या बी०

1	2	3	4
2	बिहार संस्कृत एसोसिएशन, पटना और कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा	प्रथमा	निम्नतर माध्यमिक
		मध्यमा	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
3	महाराजा सियाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा	उपाध्याय	निम्नतर माध्यमिक
		विशारद	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
4	मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास और अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई	शिरोमणि (प्रथम खण्ड)	बी०ए०
		शिरोमणि (अन्तिम खण्ड)	एम०ए०
5	बृहद् गुजरात संस्कृत परिषद् अहमदाबाद ।	मध्यमा	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
6	असम सरकार संस्कृत समिति, गोहाटी ।	आद्या	निम्नतर माध्यमिक
		द्वितीया	उच्चतर माध्यमिक
		उपाधि	बी०ए०
7	राजस्थान सरकार	प्रवेशिका	निम्नतर माध्यमिक
		उपाध्याय	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
8	मैसूर सरकार	काव्य	निम्नतर माध्यमिक
		साहित्य	उच्चतर माध्यमिक
		विद्वत मध्यमा	बी०ए०
		विद्वत उत्तमा	एम०ए०

1	8		
9	भारतीय विद्याभवन बंबई	प्रवेशिका	निम्नतर माध्यमिक
		मध्यमा	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
10	तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ पूना	कोविद	उच्चतर माध्यमिक
		विशारद	बी०ए०
		पारंगत	एम०ए०
11	वेद शास्त्रोत्तेजक सभा, पूना	दयचा - I	उच्चतर माध्यमिक
		कोविद	बी०ए०
		चूडामणि	एम०ए०
12	केरल सरकार	काव्य भूषण	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्र भूषण (प्रथम)	बी०ए०
		शास्त्र भूषण (अन्तिम)	एम०ए०
13	मद्रास सरकार, मद्रास	ओ०एस०एल०सी० या इंट्रेन्स	उच्चतर माध्यमिक
14	आन्ध्र प्रदेश सरकार	वही	वही
15	पूना विश्वविद्यालय	प्रवेशिका	उच्चतर माध्यमिक
		उपाध्याय	बी०ए०
16	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी	प्रवेश	निम्नतर माध्यमिक
		मध्यमा	उच्चतर माध्यमिक
		शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०

1	2	3	4
17	आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर	विद्याप्रवीण (प्रथम)	बी०ए०
		विद्याप्रवीण (अंतिम)	एम०ए०
18	लखनऊ विश्वविद्यालय	शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
19	उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद	प्राच्य शिक्षण डिप्लोमा	बी०ए०
		(संस्कृत सहित) पार्ट 2 और 3 बी०ओ०एल०	
		(संस्कृत साहित्य) पार्ट 2 और 3	एम०ए०
20	बंगीय संस्कृत शिक्षण परिषद्, कलकत्ता	मध्यमा	बी०ए०
		तीर्थ	एम०ए०
21	पंजाब विश्वविद्यालय	शास्त्री	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
22	गुरुकुल वृंदावन	अधिकारी	निम्नतर माध्यमिक
		पंडित	उच्चतर माध्यमिक
		शिरोमणि	बी०ए०
		आचार्य	एम०ए०
23	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति	शिक्षा शास्त्री	बी०एड० (या) बी०टी०

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय, विभिन्न स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं द्वारा संचालित हिंदी परीक्षाओं की समय-समय पर मान्यता निर्धारित करती है । इस संबंध में एक विवरण हिंदी समाचार जगत के सितंबर 1968 अंक में प्रकाशित किया जा चुका है । अभी हाल ही में शिक्षा मंत्रालय ने कुछ और परीक्षाओं को मान्यता दी है । इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

संस्था का नाम	मान्यता प्राप्त परीक्षा	निर्धारित स्तर	मान्यता की अवधि
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बंगलौर	हिंदी उत्तमा हिन्दी भाषा भूषण	एस0एल0सी0 इंटर	1-1-69 से 31-12-6 तक । (वे नई परी हैं, जिन्हें पहली बार मान्यता प्रदान की ग
मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति, बंगलौर	राजभाषा राजभाषा प्रवेश	एस0एल0सी0 इंटर	,,
सौराष्ट्र रचनात्मक समिति, राजकोट	तीसरी परीक्षा	एस0एल0सी0	,,
केरल हिंदी प्रचार सभा, त्रिवेन्द्रम	साहित्याचार्य	बी0ए0	,,

पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन :

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद (महानिदेशक, डाक-तार, लखनऊ शाखा) के वा उत्सव के अवसर पर एक हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से 1500 हिंदी पुस्तकें प्रदर्शित की गईं । प्रदर्शनी का उद्घाटन 16-2-69 को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल ने किया । केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो0 चन्द्रहासन ने 'यूनेस्को कूरियर' पत्रिका का एक सैट और 100 पुस्तकें परिषद को भेंट की । निदेशालय के सहायक शिक्षा अधिकारी श्री वी0 आर0 नारायण ने इस आयोजन में भाग लिया ।

* भारत सरकार में

'उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका' का विमोचन

विधि मंत्रालय की 'उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका' के प्रथम अंक का विमोचन 12 फरवरी, 1969 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली, में आयोजित एक समारोह में हुआ । विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन ने पत्रिका का विधिवत विमोचन करते हुए अपने भाषण में कहा कि सभी न्यायालयों का काम देशी भाषाओं में होना चाहिए । जब कानून जनभाषा में होगा तभी जनजीवन में कानून वस्तुतः सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्वीकार्य होगा । समारोह में अनेक अधिकारी तथा उच्चतम न्यायलय के कई न्यायाधीश भी उपस्थित थे ।

इस पत्रिका में उच्च न्यायालयों के निर्णयों का हिंदी अनुवाद प्रकाशित होगा । उच्चतम न्यायलय के निर्णयों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित करने के लिए 'उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका' का प्रकाशन पहले से ही हो रहा है ।

पत्रिका की एक प्रति की कीमत 4 रु0 और वार्षिक चंदा 45 रु0 है । प्राप्ति के लिए अवैतनिक संपादक, उच्चतम न्यायलय निर्णय पत्रिका, इंडियन ला इन्स्टीट्यूट भवन, भगवानदास रोड, नई दिल्ली को लिखें ।

हिंदी टेलीफोन निर्देशिका का विमोचन

केंद्रीय संचार तथा संसदीय मामलों के मंत्री डा0 रामसुभग सिंह ने 25 जनवरी को आयोजित एक विशेष समारोह में हिंदी की टेलीफोन निर्देशिका का उद्घाटन किया । इसमें 694 पृष्ठ तथा लगभग 67 हज़ार प्रविष्टियां हैं । अभी इसकी 20 हज़ार प्रतियां छापी गई हैं किंतु मांग होने पर इसकी और प्रतियां मुद्रित करने की व्यवस्था है । डा0 रामसुभगसिंह ने आशा प्रकट की है कि इस निर्देशिका का प्रकाशन हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक मील स्तम्भ का काम करेगा । दिल्ली में पहली बार प्रकाशित इस हिंदी निर्देशिका की मांग लंबे अर्से से की जा रही थी । इससे पहले उत्तर प्रदेश और बिहार में दो बार तथा राजस्थान और मध्य प्रदेश में एक बार हिंदी निर्देशिका छप चुकी है ।

* राजधानी में

गणतंत्र दिवस के साहित्यिक समारोह

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी लाल किले में 23 जनवरी को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से आयोजित इस साहित्यिक समारोह की अध्यक्षता ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त गुजराती महाकवि श्री उमाशंकर जोशी ने की और उद्घाटन गृहमंत्री श्री यशवंत राव चव्हाण ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में श्री चव्हाण ने कहा कि कवि राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए कविता की महान शक्ति का उपयोग करें । श्री जोशी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भाषा के नाम पर जहां राजनीति भेदभाव कराती है वहां कविता भाषा के माध्यम से एकता स्थापित करती है । कवि सम्मेलन में डा0 रामकुमार वर्मा, श्री भवानी प्रसाद मिश्र, श्री गोपाल प्रसाद व्यास, श्री नीरज, काका हाथरसी, श्री हंस कुमार तिवारी, भरत व्यास आदि अनेक प्रसिद्ध कवियों ने अपनी-अपनी कविताएं सुनाईं ।

इसी अवसर पर 24 जनवरी को उर्दू का मुशायरा और 26 जनवरी को पंजाबी कवि दरबार का आयोजन भी किया गया ।

संस्कृत कवि सम्मेलन

संस्कृत प्रचारक् एवं शिक्षा समिति के तत्वावधान में 22 जनवरी को दीवान हाल में संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । इसका उद्घाटन दिल्ली के उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा ने किया और अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा0 त्र्यंबक गोविंद नारायण माइणकर ने की ।

गालिब शताब्दी के उपलक्ष में कवि सम्मेलन

गालिब शताब्दी के उपलक्ष में 16 फरवरी को सप्रू हाउस में एक कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें डा0 बच्चन, गिरिजाकुमार माथुर, रमानाथ अवस्थी, बालस्वरूप राही, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कैलाश वाजपेयी, श्रीकांत वर्मा, शमशेर बहादुर आदि अनेक कवियों ने भाग लिया ।

- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ की ओर से 23 जनवरी, को राजधानी में वसंतोत्सव मनाया गया । इस समारोह में अनेक संस्कृत-विद्वान सम्मिलित हुए । हिंदी साहित्य सम्मेलन के महासचिव श्री मौलिचंद्र शर्मा ने इस अवसर पर भाषण देते हुए कहा कि भारत का सांस्कृतिक इतिहास संस्कृत से ही जाना जा सकता है अतः राष्ट्र का सांस्कृतिक जागरण संस्कृत के प्रचार से ही संभव है ।

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व शाखा की ओर से गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में 25 जनवरी को अहिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इसमें बंगला भाषी श्री सुशील कुमार गांगुली को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ ।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिन्दी मासिक पत्रिका
यूनेस्को कूरियर
मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री अति उत्कृष्ट और प्रशंसा प्राप्त
एक प्रति : एक रुपया
वार्षिक शुल्क 10-50 रुपये
शैक्षिक संस्थाओं | 9-50 रुपये
एवं पुस्तकालयों के |
लिए |
शुल्क मनीआर्डर से ही भेजें । चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें ।
नमूने की प्रति के लिए 80 पैसे के डाक टिकट भेजें । विवरण के लिए लिखें :-
प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, (शिक्षा मंत्रालय)
वेस्ट ब्लाक-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

* प्रादेशिक अंचल में

शासकीय काम-काज के लिए हिंदी का प्रयोग

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शासकीय कामकाज के लिए हिंदी को पूर्णत: अपनाने की दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं । विधि विभाग, विशेष प्रकार के न्यायालीन मामलों में हिन्दी के प्रयोग के बारे में उच्च न्यायालय से परामर्श कर रहा है । ये मामले इस प्रकार हैं - अभियुक्त के विरुद्ध आरोपों का अभिलेखन, विशेषत: साक्षियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों का अभिलेखन, समस्त फौजदारी और दीवानी मामलों से संबंधित प्रतिवेदन तथा आदेश, आदि । आशा है कि इन मामलों में राज्यपाल केन्द्रीय सरकार की अनुमति से हिंदी व्यवहार के आदेश दे सकते हैं । राज्य सरकार ने राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात और दिल्ली के साथ, उनकी सहमति से हिन्दी में पत्र-व्यवहार आरंभ कर दिया है । हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की सहमति की प्रतीक्षा की जा रही है । केन्द्रीय शासन से भी हिंदी में पत्र-व्यवहार किया जा रहा है ।

हरियाणा में सरकारी काम-काज के लिए हिंदी पूर्णरूप से प्रतिष्ठित

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर हरियाणा सरकार ने सरकारी काम काज के हिंदी को पूर्ण रूप से अपना लिया है । राज्यपाल ने इस संबंध में एक आदेश जारी कर जैसा कि पाठक जानते हैं हरियाणा सरकार ने 26 जनवरी से हिंदी को राजभाषा की घोषणा बहुत पहले ही कर दी थी । इसके लिए आवश्यक तैयारी भी 26 जनवरी से पहले ही कर ली गई थी । अधिकांश विभागों में हिंदी की टाइप मशीनों की व्यव हो चुकी है । लगभग सात हजार कर्मचारी, शासन द्वारा शुरू की गई बोध और प्रबोध की परीक्षाएं पास कर चुके हैं । इसके अतिरिक्त 1130 कर्मचारी हिंदी टाइपिंग और 234 कर्मचारी हिंदी आशुलिपि की परीक्षा पास कर चुके हैं । लगभग साढ़े आठ हजार फार्मों तथा नियम पुस्तकों के 44 हजार से भी अधिक पृष्ठों का हिंदी अनुवाद हो गया है । प्रशासन के काम में हिंदी को लागू करने का यह काम हरियाणा सरकार के भाषा विभाग की देखरेख में हो रहा है ।

हिंदी पत्राचार के लिए विशेष व्यवस्था

पंजाब के राज्यपाल ने राज्य सरकार को निदेश किया है कि महाराष्ट्र सरकार से हिंदी में पत्र-व्यवहार करे। महाराष्ट्र सरकार ने इस आशय का पत्र राज्यपाल को भेजा था। पंजाब सरकार ने हिंदी में पत्राचार के लिए एक विशेष अनुभाग स्थापित किया है। इस अनुभाग में एक सहायक निदेशक तथा दो अनुसंधान सहायकों की नियुक्ति की गई हैं।

विविध समाचार

- पश्चिम बंगाल की सरकार ने बंगला के सत्तर वर्षीय राष्ट्रीय कवि - काज़ी नजरुल इस्लाम के भवन निर्माण के लिए 10 कट्ठा ज़मीन दी है। यह ज़मीन पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री धर्मवीर ने 28 जनवरी को आयोजित एक समारोह में समर्पित की। राज्य सरकार भवन - निर्माण के लिए 10 हज़ार रुपये की सहायता भी देगी। बंगला के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री ताराशंकर बनर्जी ने भवन निर्माण के लिए एक हज़ार रुपये चंदे के रूप में दिए हैं।

- भारतीय साहित्य परिषद की पंजाब शाखा का अधिवेशन 18 जनवरी को जालंधर में हुआ। अधिवेशन में पास किए गए एक प्रस्ताव में पंजाबी से हिंदी तथा संस्कृत के शब्दों को निकालने का विरोध किया गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि पंजाबी को प्रत्येक भारतीय भाषा से अधिकाधिक शब्द ग्रहण करके अपने शब्द भण्डार में वृद्धि करनी चाहिए। इसी से देश में भाषायी एकता सुदृढ़ होगी।

- हरियाणा सरकार आगामी शैक्षिक सत्र से स्कूलों में तमिल अथवा तेलुगु को एक अनिवार्य भाषा के रूप में शुरू कर रही है। इस की तैयारी के रूप में अध्यापकों के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर लगाए जाएंगे।

- हरियाणा के प्रमुख साहित्यकारों की एक विशेष बैठक में हरियाणा साहित्य अकादमी की स्थापना का निर्णय किया गया है। यह अकादमी विशुद्ध रूप से हरियाणा में हिंदी तथा हरियाणवी साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन के लिए काम करेगी। अकादमी प्रति वर्ष उत्कृष्ट रचनाओं पर

पुरस्कार देगी, वर्ष में एक बार लेखकों का सम्मेलन आयोजित करेगी तथा उच्चकोटि के ग्रंथों के प्रकाशन का काम भी हाथ में लेगी ।

- राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य ने कहा है कि राजस्थान में जिला स्तर पर, अकादमी से संबद्ध संस्थाओं और साहित्यकारों की सहायता से आंचलिक साहित्यकार सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे । इन सम्मेलनों का उद्देश्य साहित्यकारों तथा विद्वानों का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त करना है ।

- गौहाटी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० एस०एन० गोस्वामी ने उदयपुर में एक सभा में भाषण देते हुए कहा कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो सम्पर्क भाषा का स्थान ले सकती है । आज राजनीतिज्ञों के कारण हिंदी अपना अपेक्षित स्थान नहीं ले पा रही है । उन्होंने परामर्श दिया कि हिंदी के प्रश्न पर दुराग्रह की नीति नहीं अपनाई जानी चाहिए ।

- मध्य प्रदेश सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें तैयार करने के लिए विश्वविद्यालयी रचना अकादमी की स्थापना की है । अकादमी का उद्घाटन 22 जनवरी को भोपाल में आयोजित एक समारोह में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में प्रो० शेरसिंह ने कहा : यदि पांचों हिंदी भाषी राज्य मिलकर कार्य करें तो 1973 तक चार हज़ार के लगभग ग्रंथ तैयार हो जाएंगे और पाठ्यपुस्तकों की समस्या हल हो जाएगी । समारोह की अध्यक्षता मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री प्रेम सिंह ने की । मुख्य मंत्री श्री गोविंद नारायण सिंह ने एक पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।

- बिहार के समस्तीपुर कालेज के तत्वावधान में 16 जनवरी, 1969 को विद्यापति पर्व मनाने के लिए एक सभा का आयोजन किया गया । हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री रामावतार अरुण ने अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा बिहार के विद्यापति और बाणभट्ट ने अपनी कृतियों द्वारा विश्व में भारतीय साहित्य का गौरव बढ़ाया है । उन्होंने सुझाव दिया कि प्रस्तावित मिथिला विश्वविद्यालय का नाम विद्यापति विश्वविद्यालय रखा जाना चाहिए ।

- आगरा की नज़ीर मेला समिति के महाकवि नज़ीर का स्मारक बनाने के लिए ताजमहल के सामने नज़ीर के मकबरे के आस-पास 3 हज़ार एकड़ से अधिक भूमि खरीदने का निर्णय किया है । यह स्मारक एक बाग और पुस्तकालय के रूप में होगा । पुस्तकालय में नज़ीर की रचनाओं का संग्रह किया जाएगा ।

- स्वर्गीय महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के अंतिम कविता-संग्रह का विमोचन श्री सुमित्रानंदन पंत ने इलाहाबाद में 24 जनवरी को आयोजित एक समारोह में किया । प्रस्तुत संग्रह 'संध्याकाकली' की कविताएं महाकवि ने अपने जीवन की सांध्य वेला में लिखी थी ।

- असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्वावधान में अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ की ओर से पूर्वांचल हिंदी कार्यकर्ताओं का एक शिविर गोहाटी में 4 जनवरी से 10 जनवरी तक आयोजित किया गया । इसमें असम, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, त्रिपुरा और नागालैंड के लगभग 32 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया ।

आचार्य रामचंद्र वर्मा का देहांत

हिंदी के प्रसिद्ध कोशकार और लेखक आचार्य रामचंद्र वर्मा का 18 जनवरी को वाराणसी में एक लंबी बीमारी के बाद देहांत हो गया । उनकी अवस्था 80 वर्ष की थी । भारत सरकार ने उन्हें हिंदी भाषा की सेवा के लिए 'पद्मश्री' की उपाधि से अलंकृत किया था । आचार्य वर्मा ने 60 से अधिक ग्रंथ लिखे हैं । हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित मानक हिंदी कोश (पांच भाग) के अतिरिक्त उन्होंने 'प्रामाणिक हिंदी कोश', 'उर्दू कोश' 'संक्षिप्त शब्द सागर', आदि अनेक कोशों का सम्पादन किया है । उनकी नवीनतम कृति 'शब्दार्थ दर्शन' है । वे कई वर्षों तक हिंदी साहित्य सम्मेलन के 'हिंदी साहित्य वाचस्पति' रहे हैं । वे अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ थे और उन्होंने मराठी, गुजराती, बंगला, पंजाबी तथा उर्दू से अनेक पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद भी किया है ।

हिंदी समाचार जगत उनके निधन पर शोक प्रगट करता है ।

* विश्वविद्यालयों में

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग - एक परिचय

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की स्थापना जुलाई, 1967 में हुई । प्रारंभ से ही इसमें हिंदी के उच्च अध्ययन की व्यवस्था की गई और इस व्यवस्था का भार हिंदी अभ्यासक्रम समिति को सौंपा गया । समिति ने एम०ए० तक की कक्षाओं में हिंदी अध्ययन का नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया । इस समय हिंदी अभ्यासक्रम समिति के अध्यक्ष डा० सुदर्शन मजीठिया हैं । सौराष्ट्र में हिंदी के स्नातकोत्तर अध्ययन का केन्द्र सामलदास कालेज में जुलाई, 1962 में प्रारंभ हुआ । उसके बाद जूनागढ़ तथा जामनगर में स्नातकोत्तर अध्ययन के केन्द्र स्थापित हुए । इस समय लगभग 100 छात्र इन केन्द्रों पर स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययन कर रहे हैं । इन केन्द्रों के प्रभारी प्रोफेसरों के नाम इस प्रकार हैं :

1 सामलदास कालेज, भावनगर - डा० सुदर्शन मजीठिया
2 बाहुद्दीन कालेज - जूनागढ़ - प्रो० एस०टी० ठाकर
3 डी०के०वी० कालेज, जामनगर - प्रो० पी०एन० धानकी

भावनगर, जूनागढ़, जामनगर, राजकोट तथा उपलेटा के कालेजों में बी०ए० तक ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी पढ़ने की व्यवस्था है । इसके अतिरिक्त डा० सुदर्शन मजीठिया के निर्देशन में पी०एच०डी० के लिए शोध कार्य भी हो रहा है । शोध के विषय इस प्रकार हैं :-

1 ईसरदास : व्यक्तित्व और कृतित्व - श्री बी०एम० सांवलिया
2 स्नातकोत्तर हिंदी व गुजराती कहानी - प्रा० बी०एम० सांवलिया
3 हिंदी व गुजराती शब्द समूह व शब्द रचना - कुमारी निर्मला भट्ट
4 ढोला मारूरा दूहा की भाषा के वैयाकरणिक रूपों का वर्णनात्मक अध्ययन । - प्रा० घनश्याम अग्रवाल

* विदेशों में

जर्मनी के हिंदी विद्वान : डा० लोठार लुत्से

भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्ययन में जर्मनी के विद्वानों ने हमेशा ही बड़ी रुचि ली है। गेटे, मैक्समूलर, ब्रेख्ट, त्स्वाइग, शापनहावर आदि कलाकारों, दार्शनिकों एवं [illegible] ने भारत और जर्मनी के बीच भावनात्मक और बौद्धिक आदान-प्रदान का जो क्रम शुरू किया था, वह आज भी चल रहा है। इस क्रम की नवीनतम कड़ी है डा० लोठार लुत्से जिनके साहित्यिक निबंधों का एक संग्रह साहित्य: विविध संदर्भ अभी हाल ही में हिंदी में अनूदित और अक्षर प्रकाशन दिल्ली-6 से प्रकाशित हुआ है। निबंध मूलत: जर्मन और अंग्रेजी में लिखे गए थे। पुस्तक की विषय-वस्तु को हिंदी साहित्य और जर्मन साहित्य इन दो खंडों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में आधुनिक हिंदी साहित्य के कुछ पक्षों, विशेष कर कविता पर नवीन दृष्टि से विचार किया गया है और दूसरे भाग में जर्मन-साहित्य, विशेष कर जर्मन-रंगमंच का विवेचन किया गया है। इससे पहले उनका बिहारी के दोहों का जर्मन अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। गत वर्ष डा० लुत्से द्वारा सम-सामयिक हिंदी कविताओं के एक संग्रह का जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ था। आधुनिक हिंदी कहानियों के एक संग्रह का जर्मन अनुवाद प्रकाशनाधीन है।

डा० लुत्से अंग्रेजी - जर्मन, रूसी तथा हिंदी भाषाओं के ज्ञाता हैं। 1960 से 1965 तक वे दिल्ली विश्वविद्यालय में जर्मन के अध्यापक रहे हैं।

नेपाल की जन-जागृति में हिंदी का योगदान

रायल नेपाल एकेडेमी के उपकुलपति श्री बालकृष्ण सम ने दिल्ली में आयोजित एक सांस्कृतिक समारोह में कहा : नेपाल की जनजागृति में हिंदी पुस्तकों का बड़ा योगदान रहा है। नेपाल के लोग हिंदी भाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं को लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं। इस दिशा में रायल नेपाल एकेडेमी प्रयत्नशील है और प्रमुख नेपाली साहित्य का अनुवाद हिंदी में कर रही है। उन्होंने बताया कि नेपाली हिंदी के बहुत निकट है तथा वहां बहुत से लोग हिंदी समझते हैं।

0 नए प्रकाशन

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	पृष्ठ संख्या	मूल्य
सम्भाषिनी	-	हिंदी भाषा शिक्षण	84	1-50
गांधी जीवन झलक	-	जीवनी	48	0-75
गांधी जीवन परिचय	-	,,	62	0-75
पंचरत्न	-	जीवनी संग्रह	126	2-00
संताप	-	बाल साहित्य	36	0-50
राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6 ।				
चार बहनें	लुइसा अलकाट	उपन्यास	364	6-00
बच्चन - निकट से	अजित कुमार तथा ओंकार नाथ श्रीवास्तव	संस्मरण	253	15-00
न्याय की रति	चंद्र गुप्त विद्यालंकार	नाटक	149	3-50
लाजवंती	द्विजेन्द्र नाथ मिश्र 'निर्गुण'	कहानी संग्रह	144	3-50
इमरतिया	नागार्जुन	उपन्यास	125	3-00
कटी पतंग	गुलशन नंदा	,,	222	4-50
नायिका	विमल मित्र	,,	160	6-00
सामयिक प्रकाशन, 3543 जटवाड़ा, दरियागंज, दिल्ली-6				
प्रेम चंद	डा0 प्रेम नारायण टंडन	समालोचना	160	9-00
एक अदद औरत	डा0 मस्तराम कपूर	कहानी संग्रह	120	4-00
साहसी गाथाएं	विनोद बाला	किशोर साहित्य	80	2-00
अनमोल गाथाएं	श्यामलाल 'मधुप'	,,	72	2-00
किशोर गाथाएं	,,	,,	72	2-00
अमर गाथाएं	,,	,,	80	2-00
तलवार का धनी	,,	नाटक	72	2-00

-0-0-0-0

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए :	ले० वी जेलेनिन	पृ० 142	मूल्य 5-00
2. सिखों का इतिहास :	ले० हरीराम गुप्त	पृ० 304	मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक	पृ० 165	मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश		पृ० 324	मूल्य 4-50
2. शब्दार्थ मीमांसा :	ले० रामचन्द्र वर्मा	पृ० 326	मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ० 148	मूल्य 4-50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ०270	मूल्य 12-50
3 संकलन		पृ० 580	मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)
वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script
4. Devanagari Through the Ages
5. देवनागरी लेखन विधि चार्ट
6. परिवर्धित देवनागरी चार्ट
7. Standardisation of Hindi Spelling
8. हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

23181

हिंदी समाचार जगत

3 वर्ष 7 8 अंक

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 मार्च 1969 अंक 7

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था

आप हिंदी भाषा की साहित्यिक दरिद्रता की बात कहते हैं – आप वर्तमान हिंदी की गरीबी की बात कहते हैं, किंतु यदि आप तुलसीदास की 'रामायण' को गहराई से पढ़ें तो शायद आप मेरी इस राय से सहमत होंगे कि संसार की आधुनिक भाषाओं के साहित्य में उसके मुकाबले में कोई दूसरी किताब नहीं ठहरती। उस एक ही ग्रंथ ने मुझे जितनी श्रद्धा और आशा दी है, उतनी किसी दूसरी किताब से मुझे नहीं मिली।

कलकत्ता-राष्ट्रीय महाविद्यालय के उद्घाटन पर (4-2-21)

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

संघीय लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं का प्रयोग :

केन्द्रीय सरकार की हिंदी सलाहकार समिति की 17 मार्च की बैठक में गृह मंत्री श्री वाई0 बी0 चव्हाण ने बताया कि संघीय लोक सेवा आयोग की अखिल भारतीय उच्च सेवाओं की परीक्षाओं में दो प्रश्नपत्रों के लिए भारतीय भाषाओं के प्रयोग की सुविधा इसी वर्ष मिलने लग जाएगी । परीक्षार्थी निबंध तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्नपत्रों के उत्तर संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भी क्षेत्रीय भाषा में दे सकेंगे । किंतु इसके साथ ही इन प्रश्नपत्रों के उत्तर अंग्रेजी में देने की सुविधा भी जारी रहेगी । अन्य विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर फिलहाल अंग्रेजी में ही दिए जाएंगे, किंतु इनमें भी क्षेत्रीय भाषाओं में उत्तर देने की सुविधा शीघ्र उपलब्ध कराई जाएगी ।

राज्यपाल के अभिभाषण में भारतीय भाषाओं का प्रयोग :

महाराष्ट्र के राज्यपाल डा0 वी0पी0 चेरियन ने राज्य विधान सभा के सत्र को प्रारम्भ करते हुए अपना अभिभाषण मराठी में दिया । उधर पंजाब के राज्यपाल डा0 पावटे ने विधान मंडल के संयुक्त अधिवेशन में अपना 3500 शब्दों का अभिभाषण पंजाबी में पढ़ा । राज्यपालों द्वारा "मराठी" तथा "पंजाबी" में अभिभाषण दिए जाने का यह प्रथम अवसर है ।

महाकवि शंकर कुरुप्प भारतीय साहित्य परिषद के अध्यक्ष निर्वाचित

मलयालम के महाकवि श्री गोविन्द शंकर कुरुप्प को आगामी सत्र के लिए भारतीय साहित्य परिषद का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है । परिषद भारतीय साहित्य एवं भाषाओं के विकास के लिए प्रयत्नशील है । अब तक कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक उसकी अनेक शाखाएं स्थापित हो चुकी हैं । समस्त भारत के अनेक साहित्यकार एवं भाषाविद इसमें सम्मिलित होकर भारतीय भाषाओं के विकास में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं ।

अनेक भाषाओं में गालिब की जीवनी :

नेशनल बुक ट्रस्ट ने मिर्जा गालिब की जीवनी अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, पंजाबी और गुजराती भाषाओं में प्रकाशित की है। यह जीवनी गालिब साहित्य के माने हुए विद्वान श्री मालिकराम ने लिखी है। 100 पृष्ठों की इस पुस्तक में गालिब की जीवनी के साथ-साथ उनकी शायरी की भी कुछ बानगी दी गई है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने गतमास आज़ाद भवन में आयोजित एक समारोह में इस पुस्तक का विमोचन किया था।

भारतीय साहित्य परिषद का नव वर्ष समारोह :

- भारतीय साहित्य परिषद के तत्वावधान में 25 मार्च को नव वर्ष के उपलक्ष्य में एक समारोह आयोजित किया गया। समारोह का उद्घाटन शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने किया। इस अवसर पर अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष महाकवि शंकर कुरुप ने कहा : भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी को स्थान देकर भाषाई समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता। हमें भारतीय भाषाओं के लिए एक मानदंड निर्धारित करना होगा और सभी प्रांतीय भाषाओं के लिए एक लिपि पद्धति स्वीकार करनी होगी। कन्नड़ के वंदनीय साहित्यकार मास्ति वेंकटेश्वर अय्यंगार के शब्दों के दुहराते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय जनमानस से अंग्रेजी के प्रेम का वर्चस्व अब भी समाप्त नहीं हो रहा है, यह बड़े खेद की बात है।

भारतीय भाषाओं के प्रख्यात लेखकों की संगोष्ठी

साहित्य सहकारी प्रकाशन के तत्वावधान में 23 मार्च को बम्बई में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रख्यात साहित्यकारों ने भाग लिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता अंग्रेजी के कवि निसीम इजीकिल ने की। संगोष्ठी का विषय था 'राष्ट्रीयता अंतर्राष्ट्रीयता तथा लेखकों का उत्तरदायित्व'। उक्त विषय पर कन्नड़ लेखक श्री [illegible], मलयालम के श्री हरिहरण, मराठी के श्री अनंत काणेकर, गुजराती के श्री चंद्रवदन शुक्ल हिंदी के श्री कमलेश्वर आदि सुविख्यात साहित्यकारों के भाषण हुए।

क्षेत्रीय भाषाओं की परीक्षाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने समस्त हिंदी- अहिन्दी भाषा-भाषियों के लिए तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, मराठी, असमिया, मणिपुरी, बंगला, उड़िया, पंजाबी, कश्मीरी और सिंधी भाषाओं की परीक्षाओं की व्यवस्था की है। ये परीक्षाएं वर्ष में दो बार फरवरी और सितंबर मास में होंगी और परीक्षा का माध्यम देवनागरी लिपि होगा। समिति ने उपर्युक्त भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकें भी तैयार कर ली हैं। ये देवनागरी लिपि में हैं। इनमें शब्दार्थ के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं की स्वर लिपि तथा व्यवहारोपयोगी छोटे-छोटे वाक्य आवश्यक सूचनाओं के साथ दिए गए हैं।

हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की ओर से कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए 'हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया था। इसमें विभिन्न कार्यालयों के 511 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में श्री घनश्याम दत्त, श्री बहादुर सिंह और श्री विश्वेश्वर दत्त दोभाल को क्रमशः प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान मिला। परिषद ने अहिंदी भाषी सरकारी कर्मचारियों के लिए एक निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया था जिसमें 662 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में श्री एम०टी० जाम्बुलकर (मराठी) सुश्री एम०के० समुद्राम्बा (तमिल) और सु० रामनाथन (मलयालम) को क्रमशः प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान मिला। विधि मंत्री श्री पी० गोविन्द मेनन ने मावलंकर हाल में 22 मार्च को आयोजित एक समारोह में पुरस्कार वितरित किए। विधि मंत्री ने विधि मंत्रालय के हिंदी कार्य का विवरण देते हुए कहा : राजभाषा विधायी आयोग द्वारा सवा सौ केंद्रीय अधिनियमों के हिंदी पाठ तैयार किए जा चुके हैं। गत वर्ष से विधि मंत्रालय 'उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका' निकाल रहा है और इस वर्ष 'उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका' का प्रकाशन भी आरंभ हो गया है।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के आगामी सत्र के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित :

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, में अहिंदी भाषा-भाषी प्रदेशों के लिए (1) हिंदी शिक्षण निष्णात, (2) हिंदी शिक्षण पारंगत (एक वर्षीय मानक पाठ्यक्रम) तथा (3) हिंदी शिक्षण पारंगत (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) की परीक्षाओं की पढ़ाई की व्यवस्था है । इन परीक्षाओं के उद्देश्य क्रमश: (1) हिंदी शिक्षक महाविद्यालयों और कालेजों में पढ़ाने तथा हिंदी भाषा-शिक्षण संबंधी अनुसंधान करने और वैज्ञानिक पद्धति पर शिक्षण सामग्री और उपकरण तैयार करने तथा राजकीय कार्यालयों से सम्बद्ध हिंदी शिक्षण योजनाओं में कार्य करने के लिए योग्य हिंदी शिक्षकों, प्रशिक्षकों और अनुसंधान-कर्ताओं तथा (2) और (3) हाई स्कूलों और हायर सेकेण्डरी स्कूलों के लिए योग्य हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षण देना है । संस्थान का आगामी सत्र दिनांक 7-7-69 से प्रारम्भ होगा, जिसके लिए निर्धारित प्रवेश आवेदन - पत्रों के इस कार्यालय में प्राप्त होने की अंतिम तिथि 15-3-69 है । नि:शुल्क शिक्षा और आवास की सुविधा के अतिरिक्त उक्त पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने वाले छात्रों को निम्नलिखित छात्रवृत्ति दी जाती है :-

1	हिंदी शिक्षण निष्णात	रु0 110-00 प्रतिमास
2	हिंदी शिक्षण पारंगत (एक वर्षीय मानक पाठ्यक्रम)	रु0 90-00 प्रतिमास
3	हिंदी शिक्षण पारंगत (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) - प्रथम वर्ष	रु0 70-00 प्रतिमास
	- द्वितीय वर्ष	रु0 90-00 प्रतिमास

निर्धारित प्रवेश पत्र तथा अन्य जानकारी केवल 25 पैसे का मनीआर्डर निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, 25 नया आगरा, आगरा-5 को भेज कर प्राप्त कर सकते हैं ।

भारत सरकार के विभिन्न विभागों से प्रकाशित होने वाली कुछ पत्रिकाओं की जानकारी 'हिंदी समाचार जगत' के सितम्बर 68 के अंक में दी गई थी । कुछ अन्य प्रकाशनों की जानकारी नीचे दी जा रही है :-

श्रमिक ब्यूरो, श्रम तथा रोज़गार मंत्रालय, शिमला-4 के प्रकाशन :

(1) न्यूनतम मजदूरी, 1963 ; यह तकनीकी विषय का वार्षिक प्रकाशन है ।

(2) भारत में श्रमिक संघ 1959-60 : यह तकनीकी विषय का अर्ध-वार्षिक प्रकाशन है । इसकी कीमत 13 रुपये है ।

भारतीय डाक तार विभाग, नई दिल्ली के प्रकाशन

(1) ब्यौरेवार वार्षिक रिपोर्ट : इस वार्षिक प्रकाशन में साहित्यिक और तकनीकी दोनों प्रकार की सामग्री होती है । इसकी एक प्रति की कीमत डेढ़ रुपया है ।

(2) वार्षिक रिपोर्ट (गतिविधियां) यह भी वार्षिक प्रकाशन है और इसमें भी साहित्यिक तथा तकनीकी दोनों प्रकार की सामग्री छपती है । यह प्रकाशन बिक्री के लिए उपलब्ध नहीं है ।

रक्षा मंत्रालय, अनुसंधान तथा विकास संगठन, अंतर्सेवा सामान परिरक्षण संगठन, नई दिल्ली के प्रकाशन :

अंतर्सेवा सामान परिरक्षण संगठन विज्ञप्ति नं040 ;

इसमें 'सामान परिरक्षण के संबंध में विभिन्न रिपोर्टें तैयार करने के बारे में टिप्पणियां' दी गई है । यह तकनीकी प्रकाशन है और केवल विभागीय इस्तेमाल के लिए है ।

हिंदी की नई 'त्रैमासिक पत्रिका' लोकतंत्र समीक्षा

संवैधानिक तथा संसदीय अध्ययन संस्थान की ओर से हिंदी की एक नई त्रैमासिक पत्रिका "लोकतंत्र समीक्षा" का प्रकाशन होने लगा है । 3 मार्च को पटेल भवन में आयोजित एक समारोह में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने इस पत्रिका का विमोचन करते हुए कहा : जनतंत्र की सफलता भारतीय भाषाओं के प्रयोग से ही संभव है । किसी विदेशी भाषा को अपनाने से जनतंत्र कमजोर होगा ।

संसद - सदस्यों की पुस्तकों की प्रदर्शनी

संसदीय हिंदी परिषद की ओर से 26 मार्च को संसद भवन के पुस्तकालय के हाल में एक पुस्तक - प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस में संसद सदस्यों द्वारा रचित पुस्तकें प्रदर्शित की गईं । प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।

हिंदी शिक्षण योजना (दक्षिण क्षेत्र) का पुरस्कार वितरण समारोह

गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के दक्षिण क्षेत्र की ओर से मद्रास में हिंदी टाइपराइटिंग के प्रशिक्षण के लिए कक्षाओं का आयोजन किया जाता है । गत वर्ष जनवरी । फरवरी 68 और जुलाई । अगस्त 63 की परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान पाने वाले टंककों और आशुलिपिकों को पुरस्कार वितरित करने के लिए 15 फरवरी को एक समारोह आयोजित किया गया । रेल सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री सी0आर0 वारण्या ने समारोह की अध्यक्षता की । हिंदी शिक्षण योजना के क्षेत्रीय अधिकारी डा0 एन0 चन्द्रकांत मुदलियार ने प्रशिक्षण की गतिविधियों का परिचय दिया ।

हिंदी सीखने वालों को नकद पुरस्कार

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि केन्द्रीय सरकार के तृतीय श्रेणी और उसके ऊपर के जो कर्मचारी अपने प्रयास से गृह मंत्रालय की हिंदी परीक्षाएं पास करेंगे, उन्हें नकद पुरस्कार दिया जाएगा । यह योजना केवल उन कर्मचारियों पर लागू होगी जो ऐसे स्थानों पर नियुक्त हैं, जहां हिंदी शिक्षा योजना के अंतर्गत हिंदी पढ़ने की व्यवस्था नहीं है । जो कर्मचारी 'प्रबोध' और 'प्रवीण' परीक्षाएं पास करेंगे उन्हें 250/- रुपये और जो 'प्राज्ञ' परीक्षा पास करेंगे उन्हें 300/- रुपये पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे ।

- परिवहन उपमंत्री श्री इकबाल सिंह ने लोक सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया : केन्द्रीय सरकार ने सभी राज्य सरकारों को आदेश दिया है कि वे राष्ट्रीय मार्गों पर स्थानों के नाम क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी तथा अंग्रेजी में भी लिखें । उन्होंने इस बात पर आपत्ति प्रकट की कि पंजाब में राष्ट्रीय मार्गों पर केवल पंजाबी में ही सड़कों के नाम लिखे हुए हैं ।

दिल्ली कला परिषद की पुरस्कार योजना

दिल्ली प्रशासन द्वारा स्थापित दिल्ली कला परिषद की प्रथम बैठक में यह निश्चय किया गया है कि प्रति वर्ष दिल्ली के चार श्रेष्ठ साहित्यकारों तथा कलाकारों को सम्मानित किया जाएगा । सम्मानित व्यक्तियों को ग्यारह सौ रुपये, दुशाला और ताम्र प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाएगा ।

दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी :

दिल्ली की हार्डिंग नगर पालिका पुस्तकालय में गत मास प्राचीन और दुर्लभ पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई । इसमें हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और संस्कृत की अनेक दुर्लभ पुस्तकें प्रदर्शित की गईं । दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।

दिल्ली नगर निगम का पुरस्कार वितरण समारोह

दिल्ली नगर निगम की ओर से कुछ समय पहले हिंदी आशुलेखन, टिप्पण और पत्र-व्यवहार की प्रतियोगिता आयोजित की गई थी । इसमें प्रथम तीन स्थान पाने वालों को, टाउन हाल में आयोजित एक विशेष समारोह में महापौर द्वारा पुरस्कार दिए गए । प्रथम स्थान पाने वाले को 100रु0, दूसरा स्थान वाले को 50रु0 और तीसार स्थान पाने वाले को 25रु0 के नकद पुरस्कार दिए गए । इस अवसर पर दिल्ली प्रशासन में हिंदी के प्रयोग की प्रगति की जानकारी देते हुए सहायक आयुक्त श्री महेश अग्रवाल ने बताया कि निगम के जनरल विंग के 3530 कर्मचारियों में से 3380 ने हिंदी का ज्ञान प्राप्त कर लिया है । शेष कर्मचारियों के लिए टाउन हाल तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है । निगम में 15 अगस्त, 1968 से सारा कार्य सामान्यत: हिंदी में हो रहा है ।

दिल्ली प्रशासन में भाषा कर्मशाला की स्थापना :

दिल्ली प्रशासन ने शासकीय काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भाषा कर्मशाला की स्थापना की है । कार्यकारी पार्षद डा0 राम लाल वर्मा ने 22 मार्च को कर्मशाला का उद्घाटन करते हुए घोषणा की कि जो कर्मचारी वर्ष में अपना काम हिंदी में अधिक योग्यता से करेंगे उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा ।

23 मार्च को विट्ठल भाई पटेल भवन में आयोजित एक समारोह में डा० जाकिर हुसैन व्यक्तित्व और विचार` नामक ग्रंथ का उपप्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने विमोचन किया । समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की । राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन पर लिखा गया यह ग्रंथ चिन्मय प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित हुआ है ।

होली के अवसर पर `हास्य रस` के कार्यक्रम

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी होली के उपलक्ष्य में अनेक साहित्यिक समारोह आयोजित किए गए । 9 मार्च को हिंदी के सुप्रसिद्ध हास्यकवि श्री बेधड़क बनारसी की अध्यक्षता में एक `हास्य रस` कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया । राजधानी के अनेक कवियों ने इस समारोह में भाग लिया ।

दिल्ली की सड़कों के नाम हिंदी और उर्दू में

दिल्ली नगर निगम ने 17 मार्च को हुई अपनी बैठक में यह निर्णय किया है कि दिल्ली की सड़कों के नाम हिंदी और उर्दू में लिखे जाएंगे और अंग्रेजी के नाम बिल्कुल हटा दिए जाएंगे । कुछ विरोधी सदस्यों ने अंग्रेजी को हटाने के संबंध में धीरे चलने की नीति का सुझाव दिया, किंतु इस सुझाव को अस्वीकार करते हुए स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री केदारनाथ साहनी ने कहा कि `धीरे चलो` की नीति के कारण पिछले बीस वर्षों से हिंदी का हित होने के बजाय उसकी प्रगति में धक्का ही लगा है ।

प्रादेशिक अंचल में

राजस्थान- हिंडौन नगर में हिंदी साहित्य परिषद के तत्वावधान में, राजस्थान अकाल सहायता कोष के लिए एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने समारोह की अध्यक्षता की। कवि सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय वित्त उपमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने किया।

- हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री मीरा की पावन स्मृति में उदयपुर में एक भव्य भवन का निर्माण किया जा रहा है। राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार एवं राजनीतिज्ञ श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने इसकी सूचना देते हुए यह विश्वास प्रकट किया है कि यह स्मारक देश को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को प्रेरणा देगा।

हरियाणा- हरियाणा के राजकवि प्रो0 उदय भानु 'हंस' के महाकाव्य 'संतसिपाही' पर राज्य सरकार ने वर्ष की श्रेष्ठ कविता पुस्तक का प्रथम पुरस्कार दिया है। यह महाकाव्य गुरु गोविन्द सिंह के जीवन चरित्र पर आधारित है।

उत्तर प्रदेश- उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव ने विभागाध्यक्षों के नाम एक परिपत्र में यह अनुरोध किया है कि समस्त सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग किया जाए और इस संबंध में दिए गए आदेशों के पालन में किसी प्रकार की ढिलाई न बरती जाए। सचिवों और विभागाध्यक्षों को स्वयं इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि उनके अधीनस्थ अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में ही कार्य करें।

- रुड़की स्थित आर्य समाज के मंदिर में हिंदी प्रेमियों की एक गोष्ठी हुई जिसमें यह निर्णय किया गया कि राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न व्यापारी वर्गों के प्रतिनिधियों का एक मंडल बनाया जाए। यह मंडल व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें अपने सभी काम हिंदी में करने की प्रेरणा देगा तथा साइन-बोर्ड हिंदी में ही लिखवाने का आग्रह करेगा।

इलाहाबाद में [illegible]

सत्यनारायण ने कहा : राष्ट्रभाषा हिंदी देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा समझी और बोली जाती है। राष्ट्रीय एकता के लिए देश की सर्वमान्य भाषा के रूप में हिंदी का : पठन-पाठन अनिवार्य है।

प्रयाग नगर महापालिका के प्रांगण में 22 मार्च को अहिंदी भाषी साहित्यकारों के एक सद्भावना मंडल के सम्मान में एक स्वागत-समारोह आयोजित किया गया। इस सद्भावना मंडल में तमिल साहित्यकार श्री सुब्रह्मण्यम, तेलुगु साहित्यकार श्री विश्वनाथ सत्यनारायण, तथा उड़िया साहित्यकार श्री कालिन्दी चरण पाणिग्राही हैं। यह सद्भावना-यात्रा अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ की योजना के अंतर्गत आयोजित की गई है। श्रीमती महादेवी वर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की और श्री सुमित्रानंदन पंत ने तीन साहित्यकारों को अभिनंदन - पत्र भेंट किया। अभिनंदन का उत्तर देते हुए उड़िया साहित्यकार श्री कालिन्दी चरण पाणिग्राही ने कहा : हिंदी भाषा ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रभाषा बन सकती है, किंतु इसके लिए जहां हिंदी भाषी प्रान्तों को नेतृत्व करना होगा वहां अहिंदी भाषी प्रांतों का दायित्व भी कम नहीं है।

इसके बाद 25 मार्च को सद्भावना मंडल लखनऊ पहुंचा। राज्यपाल डा0 बी. गोपाल रेड्डी ने राजभवन में आयोजित एक समारोह में उनका स्वागत किया।

डा0 वृन्दावन लाल वर्मा का देहावसान

हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार डा0 वृन्दावन लाल वर्मा का 23 फरवरी को झांसी में देहावसान हो गया। वे 82 वर्ष के थे। देश के विभिन्न स्थानों में साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों ने शोक सभाएं करके इस साहित्य - महारथी को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री वर्मा ने सन् 1908 में महात्मा बुद्ध का जीवन - चरित्र लिखकर अपनी साहित्य-यात्रा प्रारंभ की थी और वे अंत तक साहित्य - सर्जन करते रहे। इस दीर्घकाल में उन्होंने गढ़कुंडार, झांसी की रानी, मृगनयनी, कचनार, मुसाहिबजू आदि अनेक उत्कृष्ट कोटि की पुस्तकें हिंदी साहित्य को दी हैं।

`हिंदी समाचार जगत` उनके निधन पर शोक प्रकट करता है।

नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना शीघ्र होगी

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर० वी० राव ने राज्य सभा में एक लिखित प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना शीघ्र ही की जाएगी । इस विश्वविद्यालय में स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू के सिद्धांतों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । इन सिद्धांतों में राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, निरपेक्षवाद, वैज्ञानिक एवं लोकतांत्रिक जीवन दर्शन और अन्तर्राष्ट्रीय सहअस्तित्व प्रमुख हैं । विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और भाषाओं के अध्ययन के लिए एक संस्थान की स्थापना भी की जाएगी।

पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिंदी की उच्च शिक्षा

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की विद्वत्परिषद ने यह प्रस्ताव रखा है कि विश्वविद्यालय में इस वर्ष से हिंदी, अर्थशास्त्र राजनीति, विज्ञान और इतिहास में पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किया जाए ।

विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो ।

विक्रम विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने इस बात पर बल दिया कि व्यक्ति की शिक्षा उसकी मातृभाषा के माध्यम से ही होनी चाहिए । इज़राइल, जापान और रूस का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि भारत में हिंदी को उसका उचित और प्रतिष्ठित पद प्रदान न करने का कोई कारण नहीं है । इस अवसर पर श्रीमती महादेवी वर्मा को सम्मानार्थ साहित्याचार्य (डाक्टर ऑफ लिट्रेचर) की उपाधि से विभूषित किया गया ।

डा० शिव मंगल सिंह 'सुमन' का अभिनंदन

विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन' का रायपुर की साहित्यिक तथा शैक्षिक संस्थाओं की ओर से अभिनंदन किया गया । इस अवसर पर भाषण देते हुए डा० 'सुमन' ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि सबसे प्राचीन इतिहास वाले भारत राष्ट्र को अभी तक कोई राष्ट्र भाषा नहीं है ।

‘रस सिद्धांत’ का गुजराती अनुवाद प्रकाशित

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डा0 नगेन्द्र के सम्मान में 13 मार्च को एक सभा का आयोजन किया गया । यह आयोजन डा0 नगेन्द्र के प्रसिद्ध ग्रंथ ‘रस सिद्धांत’ के गुजराती अनुवाद के प्रकाशन के उपलक्ष्य में कियागया । सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ-विद्यानगर, के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल ने समारोह की अध्यक्षता की । इस अवसर पर अहमदाबाद, बम्बई तथा उदयपुर के हिंदी तथा गुजराती के विद्वानों ने डा0 नगेन्द्र को अभिनन्दन पत्र भेंट किया । ग्रंथ का प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ने किया है ।

‘गांधीवाद और साहित्य’ विषय पर गोष्ठी का आयोजन

दिल्ली विश्वविद्यालय की हिंदी साहित्य सभा की ओर से ‘गांधीवाद और साहित्य’ विषय पर तीन दिन की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें अनेक प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया । गोष्ठी की अध्यक्षता सेठ गोविन्द दास ने की । प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक, श्री वियोगी हरि ने अपने भाषण में कहा : गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में ही यह महसूस कर लिया था कि एक राष्ट्र के लिए एक भाषा का होना बहुत आवश्यक है, अत: उन्होंने हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार - प्रसार किया । इस अवसर पर डा0 हरिवंश राय ‘बच्चन’ की अध्यक्षता में एक गांधीवादी काव्य-गोष्ठी का आयोजन भी किया गया ।

* विदेशों में

स्पेन के राजदूत का हिंदी में भाषण

स्पेन के राजदूत श्री नाडाल ने गत मास राष्ट्रपति को अपने प्रत्यय - पत्र प्रस्तुत करने के बाद हिंदी में भाषण किया। किसी विदेशी राजदूत द्वारा हिंदी में भाषण देने का यह पहला अवसर है। राष्ट्रपति भवन के अशोक कक्ष में आयोजित समारोह में बिना झिझक भाषण करते हुए उन्होंने कहा : आप की राजभाषा से मुझे प्रेरणा मिली है और इसी भाषा में मैं यह निवेदन कर रहा हूं। मेरी भाषा टूटी-फूटी होगी, इसलिए मैं आशा करता हूं कि आप मुझे माफ करेंगे।

श्री नाडाल भारत में चार वर्ष तक स्पेन के अमात्य - परामर्शदाता के पद पर रह चुके हैं।

'जफरनामा' का रूसी भाषा में अनुवाद

गुरु गोविन्द सिंह की साहित्यिक कृति 'जफरनामा' का रूसी तथा उजबेक भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। यह सूचना ताशकंद विश्वविद्यालय के प्राच्य संकाय के अध्यक्ष डा० शमीसग्यीव ने पटियाला में दी। वे पंजाबी विश्वविद्यालय के छात्रों एवं अध्यापकों की सभा में भाषण दे रहे थे। 'जफरनामा' का अनुवाद डा० शमीसन्योव ही कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ताशकंद विश्वविद्यालय में आगामी सत्र से हिंदी और उर्दू के अतिरिक्त पंजाबी और बंगाली भाषाएं भी पढ़ाई जाएंगी।

सोवियत रूस में मिर्ज़ा गालिब की लोकप्रियता

सोवियत रूस में मिर्जा गालिब और उनके साहित्य को व्यापक लोकप्रियता मिली है। इसका एक प्रमाण यह है कि रूस में गालिब शताब्दी के उपलक्ष्य में गालिब - साहित्य को जन सुलभ बनाने के लिए कई कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। गत मास सोवियत दूतावास की ओर

से दिल्ली में मिर्जा गालिब पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इसका उद्घाटन सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के एशियाई जनगण संस्थान के निदेशक अकादमीशियन बाबाजन `गाफूरोव' ने किया ।

अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा : सोवियत संघ में न केवल गालिब की कविता के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, बल्कि उनकी मौलिक रचनाओं का भी प्रकाशन हुआ है । गालिब पर सोवियत संघ में बहुत काम हुआ है और हम गालिब शताब्दी के उपलक्ष्य पर एक विशेष प्रकाशन की तैयारी कर रहे हैं । संगोष्ठी में डा० अलेक्सी सुखाच्योव ने `गालिब के अध्ययन की कुछ समस्याएं' विषय पर निबंध पढ़ा ।

इधर सुप्रसिद्ध ताज़िक विद्वान शाराफ बानू पुलातोवा ने मिर्ज़ा गालिब के जीवन तथा कृतित्व पर एक नई पुस्तक लिखी है और उनकी फारसी कविताओं का एक संकलन भी प्रकाशित किया है । इसके अतिरिक्त, गालिब के पत्रों का ताज़िक भाषा में अनुवाद तैयार किया गया है । ताशकंद के एक लेखक - वृंद ने मिर्ज़ा गालिब की ग़ज़लों का एक संकलन उजबेक भाषा में तैयार किया है । एक स्थानीय प्रकाशन संस्था इस संकलन को बड़ी संख्या में प्रकाशित कर रही है ।

आगामी मई में सोवियत मध्य - एशियाई जनतंत्र में `गालिब स्मृति मेला' आयोजित किया जा रहा है । इसके लिए भारत तथा पाकिस्तान के विद्वानों को आमंत्रित किया गया है । शायर के जीवन तथा कृतित्व पर विज्ञान अकादमी में एक वैज्ञानिक सत्र आयोजित किया जाएगा जिसमें मास्को, लेनिनग्राड, ताज़िकिस्तान तथा उजबेकिस्तान के प्रसिद्ध विद्वान भाग लेंगे । सिनेमा हालों में गालिब के विषय में फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा ।

[illegible]

इंडिया बुक हाउस, 249 दादाभाई, नौरोजी रोड, बंबई-1।

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
निद्रा मग्न सुंदरी	-	नाटिक	32	0-75
पिनोकियो	-	,,	32	0-75

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका

यूनेस्को कूरियर

मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री अति उत्कृष्ट और प्रशंसा प्राप्त

एक प्रति: एक रुपया	वार्षिक शुल्क	10-50रु0
	शैक्षिक संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए	9-50रु0

कम से कम 5 वार्षिक ग्राहक बनाने वालों को कमीशन दिया जाएगा। शुल्क मनीआर्डर से ही भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें। नमूने की प्रति के लिए 80 पैसे के डाक टिकट भेजें। विवरण के लिए लिखें :

प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी) केन्द्रीय हिंदी निदेशालय
(शिक्षा मंत्रालय) वेस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अप्रैल 1969 अंक 8

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में

* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था -

गुजराती, बंगाली, तमिल आदि बोलने वाले भारतीय हैं तो बहुत, फिर भी इनमें से किसी एक के सारे भारत में फैलने की बहुत कम संभावना है। बाकी बच गई हिंदी भाषा। यह भाषा उत्तर भारत में सब लोग बोलते हैं इसलिए इसका प्रचार सब जगह होता है। --- हर एक पाठशाला में स्वभाषा के अतिरिक्त इस भाषा का शिक्षण दिया जाना चाहिए। -- -- तभी भारत वास्तविक रूप में एक राष्ट्र बनेगा।

(इंडियन ओपीनियन 18-8-1906)

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

0 भाषा संगम

हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों को पुरस्कार वितरण :

हिंदीतर-भाषी राज्यों के हिंदी साहित्यकारों को, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, शिक्षा मंत्रालय गत तीन वर्षों से पुरस्कार-योजना चला रही है। इस योजना के अंतर्गत 1968-69 वर्ष के लिए 8 साहित्यकारों को एक-एक हज़ार रुपये के प्रथम पुरस्कार और 6 को पांच-पांच सौ रुपये का द्वितीय पुरस्कार दिया गया। 19 अप्रैल को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में शिक्षा मंत्री डा0 वी0 के0 आर0 वी0 राव ने पुरस्कार वितरित किए। पुरस्कृत लेखकों तथा रचनाओं का ब्यौरा इस प्रकार है :-

लेखक का नाम	मातृभाषा	पुस्तक का नाम
प्रथम पुरस्कार		
1- डा0 सरोजिनी महिषी	कन्नड़	अतिथि सत्कार
2- श्री आबिद अली	गुजराती	मजदूर से मिनिस्टर
3- श्री एस0जी0 वेंकटकृष्णन्	तमिल	नूपुरगाथा
4- श्री सूर्यनारायण 'भानु'	तेलुगु	तेलुगु की आधुनिक काव्यधा
5- श्री ज्ञानसिंह मान	पंजाबी	मृगतृष्णा
6- श्री प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय	बंगला	नरक की क्रांति में मैं
7- डा0 कृष्ण दिवाकर	मराठी	हिंदी साहित्य : शोध और समीक्षा
8- श्री ए0 रामचंद्र देव	मलयालम	तुलसी और तुंचन
द्वितीय पुरस्कार :		
1- श्री गुरुनाथ जोशी	कन्नड	कन्नड साहित्य की रूप
2- डा0 एस0एस0 दक्षिणमूर्ति	तेलुगु	पंप रामायण की कथा
3- श्री सुरेश चंद्र	पंजाबी	प्रवाल
4- श्रीमती कनक सिंह	बंगला	महुआ

5- श्री कांत गोपाल शेवड़े	मराठी	इन्द्र धनुष
6- श्रीमती लक्ष्मी कुट्टी अम्मा	मलयालम	तीन एकांकी

पंत की काव्य कृति 'चिदम्बरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार :

वर्ष 1968 के भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानंदन पंत की काव्य कृति 'चिदम्बरा' को चुना गया है । पुरस्कार में कर मुक्त एक लाख रुपया, प्रशस्ति-पत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा भेंट की जाएगी । वर्ष के अंत में एक विशेष समारोह पर उन्हें यह भेंट देकर सम्मानित किया जाएगा । भारतीय ज्ञानपीठ का यह चौथा पुरस्कार है । इससे पहले मलयालम के महाकवि श्री शंकर कुरुप्प, बंगला के मूर्धन्य उपन्यासकार श्री ताराशंकर बंदोपाध्याय तथा कन्नड़ के महाकवि डा० कु० वें० पुटप्प और गुजराती के प्रसिद्ध लेखक श्री उमाशंकर जोशी को यह पुरस्कार मिल चुका है ।

त्रिभाषी कोशों के प्रकाशन का निश्चय :

केन्द्रीय हिंदी शिक्षा समिति ने 20 अप्रैल की अपनी बैठक में यह निश्चय किया है कि देश की सभी भाषाओं के लिए त्रिभाषी कोशों का प्रकाशन किया जाए । कोश में क्षेत्रीय भाषा, अंग्रेजी और हिंदी तीनों भाषाओं के पर्याय होंगे । समिति ने यह भी निश्चय किया कि अहिंदी क्षेत्रों में हिंदी माध्यम से पढ़ाने वाले कालेज खोलने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए तथा ऐसे कालेजों को विश्वविद्यालयों से मान्यता दिलाई जाए ।

बैठक की अध्यक्षता शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्त दर्शन ने की । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष डा० बाबूराम सक्सेना ने समिति को बताया कि इंजीनियरी को छोड़ कर अन्य सभी विषयों की तकनीकी शब्दावली अगले वर्ष तक पूरी तरह तैयार हो जाएगी ।

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा लेखकों को पुरस्कार :

उत्तरप्रदेश सरकार की पुरस्कार योजना समिति ने हिंदी, उर्दू और संस्कृत के लेखकों को 51 हजार रुपये की राशि पुरस्कारों के रूप में वितरित की है ।

हिंदी के वयोवृद्ध लेखक श्री वियोगी हरि को 10 हजार रुपये के विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया है। इनके अतिरिक्त हिंदी के 46, उर्दू के 8 और संस्कृत के 6 लेखकों को पुरस्कृत किया गया है। इलाहाबाद के डा0 जगदीश गुप्त को उनकी कृति "प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला" के लिए ढाई हजार रुपये का "प्रसाद पुरस्कार" और लखनऊ के डा0 रामाश्रय अवस्थी को उनकी रचना "खजुराहो की देवप्रतिमाएँ" के लिए ढाई हजार रुपये का "नरेन्द्र देव पुरस्कार" प्रदान किया गया है।

जम्मू-कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी द्वारा पुस्तकें पुरस्कृत :

जम्मू-कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी ने वर्ष 1968 के पुरस्कारों की घोषणा की दी है। डोगरी भाषा में श्री विश्वनाथ खजूरिया को उनकी पुस्तक "डूगर-जीवन" पर द्वितीय पुरस्कार दिया गया है। इस भाषा में प्रथम पुरस्कार के लिए किसी पुस्तक को नहीं चुना गया। उर्दू भाषा में श्री आबिद मनावरी को "शमीम-ए-गुल" पर प्रथम पुरस्कार दिया गया। श्री ए0 के0 ताक और श्री अमीन कामिल को कश्मीरी भाषा की पुस्तकों के लिए क्रमशः प्रथम और द्वितीय पुरस्कार दिए गए। हिंदी के प्रथम और द्वितीय पुरस्कार क्रमशः श्री सुभाष भारद्वाज को "रेत का सागर" पुस्तक पर और श्री एल0 एल0 कम्पू को "तीन असंगत एकांकी" पर दिए गए।

विमान विद्या पर प्राचीन ग्रंथ :

विमान विद्या पर एक प्राचीन ग्रंथ "विमान शास्त्र" अभी हाल ही में प्राप्त हुआ है। इस ग्रंथ में विमान विद्या से संबंधित बहुमूल्य सामग्री है। संसद-सदस्य श्री ओम प्रकाश त्यागी ने नागरिक उड्डयन मंत्री डा0 कर्णसिंह को इस ग्रंथ की एक प्रति भेंट की। ग्रंथ की मूल प्रति बड़ौदा राजकीय संस्कृत पुस्तकालय से प्राप्त हुई थी जिसे बाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

सम्मेलन के पुरस्कारों के लिए पुस्तकें आमंत्रित :

हिंदी साहित्य सम्मेलन ने इस वर्ष के श्री मंगलाप्रसाद पारितोषिक तथा श्री सेकसरिया महिला पारितोषिक के लिए 21 मई तक जीवित लेखकों और लेखिकाओं से पुस्तकें आमंत्रित की हैं । 1200 रुपये का मंगला प्रसाद पारितोषिक इस वर्ष हिंदी साहित्य के 'दर्शन' विषय पर दिया जाएगा । दर्शन के अंतर्गत वेद, उपनिषद, स्मृति, दर्शन, धर्म, ईश्वर, जीव और मन संबंधी मीमांसा, सृष्टि मीमांसा तथा अध्यात्म की गणना की जाएगी । 500 रुपये का सेकसरिया महिला पारितोषिक हिंदी की मौलिक रचना पर दिया जाता है । मंगला प्रसाद पारितोषिक के लिए पुस्तक की आठ प्रतियां तथा अन्य पारितोषिकों के लिए सात प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से भेजी जानी चाहिए ।

मध्यप्रदेश की हिंदी सेवी संस्थाओं का सम्मेलन :

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन और मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के संयुक्त तत्वावधान में इंदौर में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया । सम्मेलन में विभिन्न वक्ताओं ने हिंदी सेवियों को याद दिलाया कि छत्तीस वर्ष पहले इसी स्थान पर महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा हिंदी का समस्त भारत में प्रचार करने के लिए युवकों का आह्वान किया था । सम्मेलन में यह निश्चय किया गया कि प्रदेश की समस्त हिंदी सेवी संस्थाओं की ओर से मई में गांधी शताब्दी के उपलक्ष्य में एक वृहद् सम्मेलन का आयोजन किया जाए । सम्मेलन के संयोजक पं0 राम नारायण शास्त्री ने बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से प्रदेश के अभाव पीड़ित साहित्यकारों की सेवा करने का भी विचार है ।

प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार वितरण समारोह :

'दिल्ली प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का प्रमाण पत्र तथा

पुरस्कार वितरण समारोह 21 अप्रैल, 1969 को राजकीय लेडी नायस मूक वधिर विद्यालय, फिरोज़शाह कोटला में मनाया गया । समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने की । महावीर लाला हंसराज गुप्त ने पुरस्कार वितरित किए । प्रमाण-पत्र पाने वालों में लगभग एक सौ मूक वधिर विद्यार्थी थे । मूक वधिर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री कुंवरपाल गुप्त ने विद्यालय की हिंदी शिक्षण की प्रगति का विवरण देते हुए कहा : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की दिल्ली शाखा की व्यवस्थापिका श्रीमती राजलक्ष्मी राघवन की कृपा से सर्वप्रथम सन् 1960 में 38 विद्यार्थी समिति की परीक्षाओं में बैठे । अब तक कुल 748 विद्यार्थी प्राथमिक, प्रारंभिक, प्रवेश तथा परिचय की परीक्षाओं में बैठ चुके हैं जिनमें से 539 छात्र उत्तीर्ण घोषित हो चुके हैं । उत्तीर्ण विद्यार्थियों में से 41 ने विशेष योग्यता, 77 ने प्रथम श्रेणी तथा एक-एक विद्यार्थी ने दिल्ली प्रांत में प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया है ।

'सर्वभारती भाषा शब्दकोश' के लिए आर्थिक सहायता की मांग :

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 'सर्वभारती भाषा शब्द कोश' प्रकाशित करने की एक वृहद् योजना तैयार की है और इसे भारत सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत किया है । इस संबंध में विभिन्न दलों के 83 संसद-सदस्यों ने प्रधान मंत्री को एक ज्ञापन दिया है जिसमें कहा गया है कि 75 वर्षों से भारत भारती की अमूल्य सेवा करने वाली इस संस्था का प्रस्तावित प्रकाशन राष्ट्रीय एकता को सम्बल प्रदान करेगा अत: उसके लिए उपयुक्त आर्थिक सहायता दी जाए ।

० हिंदी

* भारत सरकार में

अधिनियमों के अनुवाद की प्रगति :

विधि मंत्रालय के राजभाषा (विधायी) आयोग द्वारा तैयार किए गए 75 केन्द्रीय अधिनियमों के अनुवादों को राष्ट्रपति ने अधिप्रमाणित कर दिया है। इनमें से 69 अधिनियमों की सूची "हिंदी समाचार जगत" के नवंबर 68 अंक में दी चुकी है। शेष अधिनियमों की सूची पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दी जा रही है :-

70- उत्तरप्रदेश राज्य विधान मंडल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1968
71- पश्चिमी बंगाल राज्य अधिनियम (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1968
72- लोक भविष्य निधि अधिनियम, 1968
73- वैयक्तिक क्षति (प्रतिकर बीमा) अधिनियम 1968
74- बिहार राज्य विधान मंडल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1968,
75- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा अधिनियम, 1964।

लोकसभा समाचार :

- शिक्षा मंत्रालय की मांगों पर हुई बहस का जवाब देते हुए शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर० वी० राव ने लोकसभा में कहा : सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं को बनाने की नीति स्वीकार की है और वह इसे लागू करने के लिए प्रयत्नशील है। उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए प्रत्येक राज्य सरकार को एक करोड़ रुपए का अनुदान स्वीकृत किया गया है। क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था के लिए केंद्र भी राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकों का प्रकाशन करेगा। त्रिभाषा सूत्र के संबंध में उन्होंने कहा कि राज्यों में त्रिभाषा सूत्र को लागू किया जा रहा है। संस्कृत की शिक्षा तथा अध्ययन के विस्तार का प्रयास किया जाएगा किन्तु इसे त्रिभाषा सूत्र में शामिल नहीं किया जाएगा।

- शिक्षा मंत्रालय के उपमंत्री श्री सुरेन्द्रपाल सिंह ने लोकसभा में एक लिखित प्रश्न के उत्तर में बताया : विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनों को निदेश जारी कर दिए गए हैं कि वे आपसी बातचीत में तथा हिंदी जानने वाले विदेशियों के साथ बातचीत करते समय हिंदी का प्रयोग करें । अधिकारियों से कहा गया है कि वे उपयुक्त अवसर पर हिंदी में भाषण दें और निमंत्रण पत्र आदि हिंदी में छपवाएं । इस समय प्रत्यय-पत्र हिंदी में प्रस्तुत किए जाते हैं और उनका अंग्रेज़ी अनुवाद साथ दिया जाता है ।

क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों के निर्माण की योजना :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद के लिए विज्ञान तथा अन्य विषयों की लगभग दो हज़ार पुस्तकें वितरित की हैं । इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध लेखकों से 800 मौलिक ग्रंथ भी लिखवाए जाएंगे । विश्वविद्यालयों में क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की योजना के अंतर्गत ये पाठ्य-पुस्तकें तैयार कराई जा रही हैं ।

हिंदी वैज्ञानिक साहित्य परिषद की स्थापना :

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के कुछ तरुण वैज्ञानिकों ने "हिंदी वैज्ञानिक साहित्य परिषद" नामक संस्था की स्थापना की है । यह संस्था हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य का सृजन करेगी । संस्था की ओर से समय-समय पर संगोष्ठियाँ आदि का आयोजन भी किया जाएगा जिनमें हिंदी में मूलरूप से लिखे गए अथवा अनूदित निबंध पढ़े जाएंगे । परिषद ने वैज्ञानिक विषयों के प्रामाणिक ग्रंथों का अनुवाद-कार्य भी हाथ में लिया है ।

हिंदी शिक्षण योजना की परीक्षाओं में मौखिक परीक्षा समाप्त :

एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार भारत सरकार ने हिंदी शिक्षण योजना की 'प्रवीण' और 'प्राज्ञ' परीक्षाओं के लिए मौखिक परीक्षा को समाप्त करने का निश्चय किया है । उक्त निर्णय आगामी जून में होने वाली परीक्षाओं से लागू होगा ।

*राजधानी में

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से स्थानीय हंसराज कालेज में 20 अप्रैल को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध विभिन्न कालेजों के प्रधानाचार्यों तथा प्राध्यापकों ने एकमत से स्वीकार किया कि दिल्ली विश्वविद्यालय में परीक्षा का माध्यम तुरंत हिंदी कर किया जाना चाहिए । पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की कठिनाई को नगण्य बताते हुए डा० करन्दीकर ने बताया कि बम्बई विश्वविद्यालय में सन् 1962 तक एलोपैथी की शिक्षा मराठी भाषा के माध्यम से दी जाती रही है और आज भी वहाँ के ग्रंथालय में एलोपैथी से संबंधित अनेक मराठी ग्रंथ विद्यमान हैं । डा० मेहता ने गुजरात विश्वविद्यालय का उदाहरण दी हुए कहा कि वहाँ विज्ञान और कानून सहित सभी विषय गुजराती के माध्यम से पढ़ाए जाते हैं । गोष्ठी में पास किए गए एक प्रस्ताव में दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा संबंधित अधिकारियों से अनुरोध किया गया है कि जुलाई, 1969 से प्रत्येक कक्षा की परीक्षा में हिंदी को वैकल्पिक माध्यम स्वीकार किया जाए ।
- भारतीय भाषाओं की समाचार एजेंसी हिन्दुस्तान समाचार सहकारी समिति की साधारण सभा की 11वीं बैठक सोमवार 21 अप्रैल को मंडी हाउस, नई दिल्ली में हुई । बैठक का उद्घाटन करते हुए गृह मंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण ने कहा : जनसाधारण के विचारों का सही प्रतिबिंब हमारे भाषायी पत्रों में ही मिलता है अत: लोकतंत्र के विकास की दृष्टि से भारतीय भाषाओं की समाचार एजेंसियों का महत्व निर्विवाद है ।
- लाला श्रीराम की स्मृति में 26 अप्रैल; 1969 को दिल्ली क्लाथ मिल नाट्य कला मंदिर में एक अखिल भारतीय कवि - सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि - सम्मेलन की अध्यक्षता हिंदी के प्रसिद्ध कवि डा० रामधारी सिंह दिनकर ने की । नगर-निगम दिल्ली के महापौर लाला हंसराज गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

* प्रादेशिक अंचल में

हिंदी के शासकीय प्रयोग में एकरूपता का प्रयास

18 अप्रैल को दिल्ली में हिंदी राज्यों के मुख्य मंत्रियों की एक बैठक हुई जिसमें हिंदी के शासकीय प्रयोग में एकरूपता लाने की समस्या पर विचार विमर्श हुआ । बैठक में यह तय हुआ कि इस संबंध में एक सम्मिलित प्रयास किया जाना चाहिए । बैठक में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्रियों ने भाग लिया । यह निश्चय किया गया कि सभी हिंदी राज्यों के संबंधित सचिवों की बैठक शीघ्र ही बुलाई जाए जिसमें इस विषय की सारी समस्याओं पर विस्तार से विचार किया जाए । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चंद्र भानु गुप्त ने पत्रकारों को बताया : सभी राज्यों में हिंदी के विकास के लिए सरकार की ओर से कार्य हो रहा है । उसमें समन्वय लाने से विकास की प्रगति काफी तेज हो जाएगी और भाषा में एकरूपता भी आएगी ।

केन्द्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव

भारतीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष श्री के० हनुमंतैया ने, झांसी में आयोजित एक समारोह में सुझाव दिया कि सरकार को हिंदी भाषा के विकास के लिए एक केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना करनी चाहिए । उन्होंने कहा कि राष्ट्रभाषा घोषित होने के तत्काल बाद यदि हिंदी भाषी प्रदेश हिंदी का प्रयोग करने लग जाते तो आज एक नई पीढ़ी का निर्माण हो जाता । हिंदी राष्ट्र भाषा है तथा सरकारी काम-काज की भी भाषा है किन्तु उसकी यथोचित उन्नति के लिए प्रयत्न करना होगा ।

सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अनिवार्य

बिहार के लोक शिक्षा निदेशक श्री एन०एस० नागेन्द्रनाथ ने एक परिपत्र द्वारा शिक्षा विभाग के सभी अधिकारियों को आदेश दिया है कि सरकारी कार्यों में हिंदी का शतप्रतिशत प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाए ।

परिपत्र में कहा गया है कि पूर्व निर्देशों के अनुसार सरकारी कामों में हिंदी का प्रयोग नहीं करना सरकारी नीति के विरुद्ध माना जाएगा अतः इस आदेश का कड़ाई से पालन किया जाए ।

विविध समाचार

- संस्कृत के विद्वानों को प्रोत्साहन देने की एक योजना के अंतर्गत राजस्थान सरकार ने 1968-69 के लिए 2500 रुपये का पुरस्कार कलकत्ता के श्री श्रीनिवास शास्त्री को दिया है । श्री श्रीकृष्ण शर्मा को जीवनयापन-वृत्ति के रूप में 1200 रुपये दिया गया है ।
- पंजाब विधान परिषद् में वित्त मंत्री श्री कृष्ण लाल ने बताया कि म्युनिसिपल समितियों को आदेश दिया गया है कि वे अपना काम गुरुमुखी लिपि में करें ।
- कमला नेहरू नर्सरी स्कूल, रायबरेली का शिलान्यास करते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भाषा को सीखने का भार उत्तर और दक्षिण के लोगों द्वारा समान रूप से उठाया जाना चाहिए । यदि दक्षिण भारतीय राष्ट्रभाषा हिंदी सीखते हैं तो उत्तर भारतीयों को भी कोई दक्षिण भारतीय भाषा सीखनी चाहिए ।
- अन्नामलै विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान उच्च अध्ययन केन्द्र ने भारतीय भाषाओं के द्विभाषी कोश तैयार करने की योजना बनाई है । इन द्विभाषी कोशों में सम्पर्क भाषा अंग्रेजी होगी । यह केन्द्र इस समय विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रमाण-पत्र और डिप्लोमा के अंशकालिक पाठ्यक्रम चला रहा है । केन्द्र में इस समय तमिल, तेलुगु, कन्नड़ मलयालम, बंगला और हिंदी के अध्यापन की व्यवस्था है । केन्द्र में बोलचाल की तमिल सीखने के लिए आठ सप्ताह का पाठ्यक्रम शुरू किया गया था । इस पाठ्यक्रम से लगभग एक सौ विदेशियों ने लाभ उठाया है ।

* विश्वविद्यालयों में

सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाएं हों :

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित उपकुलपतियों के सम्मेलन में यह निश्चय किया गया कि सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाओं को बनाया जाए। तीन दिवसीय सम्मेलन का समापन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने बताया : हम छात्रों को अपनी भाषा में बोलना व लिखना सिखाना चाहते हैं। लेकिन इसके साथ - साथ उन्हें अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान का भी लाभ उठाना चाहिए और इसके लिए अंग्रेजी की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर हिंदी भाषी राज्यों के उपकुलपतियों की एक बैठक हुई। इस बैठक में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें तैयार करने पर विचार-विमर्श हुआ। सम्मेलन में उच्च शिक्षा के लिए हिंदी माध्यम के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई और विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों के लिए गर्मियों में प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने पर विचार किया गया।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय का 51 वां दीक्षांत समारोह 30 मार्च को सम्पन्न हुआ। इसमें लगभग साढ़े तीन हज़ार छात्र-छात्राओं को विभिन्न विषयों में उपाधियां प्रदान की गईं। विभिन्न विषयों में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या 150 थी। इस अवसर पर 72 मेधा छात्र-छात्राओं को स्वर्णपदक तथा रजतपदक भी प्रदान किए गए। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के चांसलर काशी नरेश श्री विभूति नारायण सिं ने की और दीक्षांत भाषण जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा0 मोहन सिंह मेहता ने दिया।

* विदेशों में

जापान में हिंदी का अध्ययन

पूर्वी देशों में जापान के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंध प्राचीन काल से रहे हैं अत: भारत के जनमानस को समझने के लिए जापान के लोग हमेशा उत्सुक रहे हैं भारत के जनमानस को प्रतिबिंबित करने वाली हिंदी भाषा के प्रति उनका प्रेम इस बात का प्रमाण है ।

हिन्दुस्तानी और तमिल पढ़ाने की व्यवस्था यहां सर्वप्रथम सन् 1909 में टोक्यो के विदेशी भाषा विद्यालय में की गई थी । सन् 1911 में इन दोनों भाषाओं के लिए अलग-अलग विभाग स्थापित हो गए । कुछ वर्ष बाद तमिल का अध्यापन, संभवत: उपयुक्त अध्यापक न मिल सकने के कारण रुक गया किंतु हिंदी का अध्ययन - अध्यापन अनवरत चलता रहा । हिंदी विभाग के स्नातकों में सर्वश्री मीजुगुची, इनूयी, ताकाहाशी गामो, ओनिशी, ओगावा और सावा को जापान में भारतीय विद्याओं के विद्वान के रूप में आज भी आदर प्राप्त है । यह बात उल्लेखनीय है कि शुरु-शुरु में वहां हिंदी और उर्दू में भेद नहीं किया जाता था और विद्यार्थी को देवनागरी तथा फारसी दोनों लिपियां सिखाई जाती थीं ।

हिंदी अध्यापकों की कमी वहां हमेशा रही है । प्रारंभिक दिनों में हिंदी अध्यापन के लिए प्राय: प्रवासी भारतीय क्रांतिकारियों अथवा व्यापारियों की सेवाएं उपलब्ध होती थीं । टोक्यो विद्यालय में आरंभिक काल में जिन विदेशी सज्जनों ने कार्य किया उनके नाम इस प्रकार हैं - सर्वश्री देवीलाल सिंह चिटरानी, अटल, हेनरी ड्रमंड, सावरकर, बेरलास तथा बदरुलइस्लाम फज़ली । द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विद्यालय का हिन्दुस्तानी विभाग ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी भारतीयों की गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था । नेता जी सुभाष चंद्र बोस भी एक बार विभाग में पधारे थे और उनसे प्रभावित होकर विभाग के अनेक जापानी स्नातकों ने आज़ाद हिंद फौज में दुभाषिये का काम सहर्ष स्वीकार किया था ।

सन् 1945 में प्रोफेसर दोइक्यूया की नियुक्ति हिंदी विभाग में हुई और हिंदी तथा उर्दू विभाग अलग-अलग हो गए । प्रो0 दोइ सन् 1953-55 में विशेष अध्ययन के लिए इलाहबाद विश्वविद्यालय में रहे । सन् 1948 के बाद भारतीय दूतावास के अधिकारियों के परिवार से श्रीमतीरञ्जन, श्रीमती लाल और कु0 प्रेमलता ने विभाग में हिंदी पढ़ाने का काम किया । जयपुर के श्री कृपालसिंह शेखावत भी, जो जापानी चित्रकला का अध्ययन करने वहां गए थे, कुछ समय तक हिंदी का अध्यापन करते रहे । भारतीय दूतावास के सैनिक सचिव कर्नल खन्ना की पत्नी ने तो अवैतनिक रूप से सप्ताह में आठ-आठ घंटे पढ़ाकर विभाग की इतनी सेवा की कि उनका आभार प्रकट करने के लिए विभाग की ओर से प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी को 'खन्ना रजत पदक' दिया जाता है । विभाग में इस समय प्रो0 दोइ के अतिरिक्त श्री तानाका तथा श्रीमती यामादा नियमित रूप से काम कर रहे हैं । श्री तानाका ने भारत में कुछ समय रह कर श्री अज्ञेय की कृतियों का विशेष अध्ययन किया है।

जापान में हिंदी के अध्ययन - अध्यापन का दूसरा केन्द्र ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग है । इसकी स्थापना सन् 1922 में हुई थी और लगभग प्रारंभ से ही यहां हिंदी का अध्यापन होने लगा था ।

सन् 1923 से सन् 1963 तक श्री सावा हिंदी विभाग का संचालन करते रहे । उन्होंने हिंदी जापानी शब्द संग्रह तथा जापानी में हिंदी भाषा का व्याकरण भी लिखा है जो जापान में ही प्रकाशित हुआ । इस विभाग को जिने भारतीयों की सेवाएं प्राप्त हुईं उनके नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री महादेव, अतरलाल जैन, मदन लाल, संतराम वर्मा, रामसिंह गुलेरिया, राधेश्याम खेतान तथा जगदीश दवे । सन् 1966 में वहां डा0 लक्ष्मीधर मालवीय की नियुक्ति हुई । डा0 मालवीय के अतिरिक्त इस समय वहां सर्वश्री कोगा, कुवा जिमा, तानीगुरा और मिजोकामी स्थायी रूप से अध्यापक पद पर काम कर रहे हैं ।

इन दो विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त टोकियो विश्वविद्यालय तथा क्योतो विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी हिंदी वैकल्पिक विषय है। टोकियो के एशियाई अफ्रीकी भाषाओं के विद्यापीठ में तथा एशियाई अर्थशास्त्र अनुसंधान विद्यापीठ में भी हिंदी पढ़ाई जाती है।

(धर्मयुग में प्रकाशित डा0 लक्ष्मीधर मालवीय के लेख से साभार)

पश्चिमी जर्मनी में भारतीय साहित्य के प्रति रुचि :

पश्चिमी जर्मनी के हारवर्ड विश्वविद्यालय में भारत, इस्लाम संस्कृति तथा तुलनात्मक धर्म की प्राध्यापिका डा0 कुमारी अन्नामारिया शिमेल, मिर्ज़ा गालिब के जीवन तथा उनकी रचनाओं पर एक पुस्तक लिख रही हैं। उनका विश्वास है कि उक्त पुस्तक जर्मनी के लोगों को मिर्ज़ा गालिब की रचनाओं से परिचय कराने में बहुत सहायक होगी। डा0 अन्नामरिया शिमेल उर्दू, फारसी, तुर्की और सिंधी भाषाओं की विदुषी हैं।

- गोयटे की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक "फाउस्ट" का अनुवाद अब तक नौ भारतीय भाषाओं में हो चुका है।

- प्रसिद्ध जर्मन लेखिका अन्ना सेवार्स के एक प्रसिद्ध उपन्यास का (जिस के शीर्षक का भावार्थ है "उसके सिर के लिए इनाम") तमिल अनुवाद हाल ही में मद्रास की एक प्रकाशन-संस्था ने प्रकाशित किया है।

- पश्चिमी जर्मनी की प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था हार्स्ट एर्डमान ने स्टुटगार्ट के विदेश संबंध संस्थान के सहयोग से "आध्यात्मिक मिलन" विषयक पुस्तकमाला का प्रकाशन आरंभ किया है। इस पुस्तक माला में अब तक 22 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। एक पुस्तक का नाम है "भारत के श्रेष्ठ समकालीन लेखकों द्वारा कथा चित्रण"। एक अन्य पुस्तक "भारतीय और जर्मन" शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र "यूनेस्को कूरियर" विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, चीनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है। प्रति मास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9.50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10.50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध सम्पादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें।

भाषा (त्रैमासिक)

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण हैं। मूल्य एक प्रति 3.00 रुपये, वार्षिक :10.00 रुपये। प्राप्ति स्थान : प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-6.

---0000---

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. **अपना हृदय सबल बनाइए :** ले॰ वी जेलेनिन पृ॰ 142 मूल्य 5-00
2. **सिखों का इतिहास :** ले॰ हरीराम गुप्त पृ॰ 304 मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. **हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक** पृ॰ 165 मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. **व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश** पृ॰ 324 मूल्य 4-50
2. **शब्दार्थ मीमांसा :** ले॰ रामचन्द्र वर्मा पृ॰ 326 मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु॰

भाषा के विशेषांक

1. **शांति-रक्षा अंक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ॰ 148 मूल्य 4-50
2. **द्विवेदी स्मृति विशेषांक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ॰ 270 मूल्य 12-50
3. **संकलन** पृ॰ 580 मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर
(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)

वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. **मानक देवनागरी**
3. **Standard Devanagari Script**
4. **Devanagari Through the Ages**
5. **देवनागरी लेखन विधि चार्ट**
6. **परिवर्धित देवनागरी चार्ट**
7. **Standardisation of Hindi Spelling**
8. **हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण**

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो॰ ए॰ चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

सं. आर. एन.
817/66

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 9

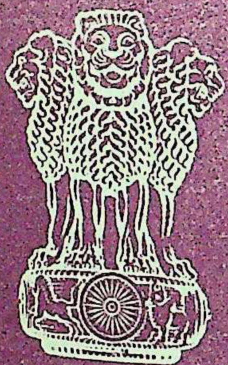

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अप्रैल 1969 अंक 8

- 0 भाषा संगम
- 0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं
- 0 हिंदी
  - * भारत सरकार में
  - * राजधानी में
  - * प्रादेशिक अंचल में
  - * विश्वविद्यालयों में
  - * विदेशों में
- 0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था -

गुजराती, बंगाली, तमिल आदि बोलने वाले भारतीय हैं तो बहुत, फिर भी इनमें से किसी एक के सारे भारत में फैलने की बहुत कम संभावना है। बाकी बच गई हिंदी भाषा। यह भाषा उत्तर भारत में सब लोग बोलते हैं इसलिए इसका प्रसार सब जगह होता है। --- हर एक पाठशाला में स्वभाषा के अतिरिक्त इस भाषा का शिक्षण दिया जाना चाहिए। -- -- तभी भारत वास्तविक रूप में एक राष्ट्र होगा।

(इंडियन ओपीनियन 18-8-1906)

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं0 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों को पुरस्कार वितरण :

हिंदीतर-भाषी राज्यों के हिंदी साहित्यकारों को, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, शिक्षा मंत्रालय गत तीन वर्षों से पुरस्कार-योजना चला रही है। इस योजना के अंतर्गत 1968-69 वर्ष के लिए 8 साहित्यकारों को एक-एक हज़ार रुपये के प्रथम पुरस्कार और 6 को पांच-पांच सौ रुपये का द्वितीय पुरस्कार दिया गया। 19 अप्रैल को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में शिक्षा मंत्री डा0 वी0 के0 आर0 वी0 राव ने पुरस्कार वितरित किए। पुरस्कृत लेखकों तथा रचनाओं का ब्यौरा इस प्रकार है :-

लेखक का नाम	मातृभाषा	पुस्तक का नाम
प्रथम पुरस्कार		
1- डा0 सरोजिनी महिषी	कन्नड़	अतिथि सत्कार
2- श्री आबिद अली	गुजराती	मजदूर से मिनिस्टर
3- श्री एस0जी0 वेंकटकृष्णन्	तमिल	नूपुरगाथा
4- श्री सूर्यनारायण 'भानु'	तेलुगु	तेलुगु की आधुनिक काव्यधा
5- श्री ज्ञानसिंह मान	पंजाबी	मृगतृष्णा
6- श्री प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय	बंगला	नरक की क्रांति में मैं
7- डा0 कृष्ण दिवाकर	मराठी	हिंदी साहित्य : शोध और समीक्षा
8- श्री ए0 रामचंद्र देव	मलयालम	तुलसी और तुंचन
द्वितीय पुरस्कार :		
1- श्री गुरुनाथ जोशी	कन्नड	कन्नड साहित्य की रूपरेखा
2- डा0 एस0एस0 दक्षिणमूर्ति	तेलुगु	पंप रामायण की कथा
3- श्री सुरेश चंद्र	पंजाबी	प्रवाल
4- श्रीमती कनक सिंह	बंगला	महुआ

5- श्री अनंत गोपाल शेवड़े	मराठी	इन्द्र धनुष
6- श्रीमती लक्ष्मी कुट्टी अम्मा	मलयालम	तीन एकांकी

पंत की काव्य कृति 'चिदम्बरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार :

वर्ष 1968 के भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानंदन पंत की काव्य कृति 'चिदम्बरा' को चुना गया है। पुरस्कार में कर मुक्त एक लाख रुपया, प्रशस्ति-पत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा भेंट की जाएगी। वर्ष के अंत में एक विशेष समारोह पर उन्हें यह भेंट देकर सम्मानित किया जाएगा। भारतीय ज्ञानपीठ का यह चौथा पुरस्कार है। इससे पहले मलयालम के महाकवि श्री शंकर कुरुप्प, बंगला के मूर्धन्य उपन्यासकार श्री ताराशंकर वंद्योपाध्याय तथा कन्नड़ के महाकवि डा0 कु0 वें0 पुटप्प और गुजराती के प्रसिद्ध लेखक श्री उमाशंकर जोशी को यह पुरस्कार मिल चुका है।

त्रिभाषी कोशों के प्रकाशन का निश्चय :

केन्द्रीय हिंदी शिक्षा समिति ने 20 अप्रैल की अपनी बैठक में यह निश्चय किया है कि देश की सभी भाषाओं के लिए त्रिभाषी कोशों का प्रकाशन किया जाए। कोश में क्षेत्रीय भाषा, अंग्रेज़ी और हिंदी तीनों भाषाओं के पर्याय होंगे। समिति ने यह भी निश्चय किया कि अहिंदी क्षेत्रों में हिंदी माध्यम से पढ़ाने वाले कालेज खोलने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए तथा ऐसे कालेजों को विश्वविद्यालयों से मान्यता दिलाई जाए।

बैठक की अध्यक्षता शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्त दर्शन ने की। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष डा0 बाबूराम सक्सेना ने समिति को बताया कि इंजीनियरी को छोड़ कर अन्य सभी विषयों की तकनीकी शब्दावली अगले वर्ष तक पूरी तरह तैयार हो जाएगी।

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा लेखकों को पुरस्कार :

उत्तरप्रदेश सरकार की पुरस्कार योजना समिति ने हिंदी, उर्दू और संस्कृत के लेखकों को 51 हज़ार रुपये की राशि पुरस्कारों के रूप में वितरित की है।

हिंदी के वयोवृद्ध लेखक श्री वियोगी हरि को 10 हज़ार रुपये के विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया है । इनके अतिरिक्त हिंदी के 46, उर्दू के 8 और संस्कृत के 6 लेखकों को पुरस्कृत किया गया है । इलाहाबाद के डा0 जगदीश गुप्त को उनकी कृति "प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला" के लिए ढाई हज़ार रुपये का "प्रसाद पुरस्कार" और लखनऊ के डा0 रामाश्रय अवस्थी को उनकी रचना "खुजराहो की देवप्रतिमाएँ" के लिए ढाई हज़ार रुपये का "नरेन्द्र देव पुरस्कार" प्रदान किया गया है ।

जम्मू-कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी द्वारा पुस्तकें पुरस्कृत :

जम्मू-कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी ने वर्ष 1968 के पुरस्कारों की घोषणा की दी है । डोगरी भाषा में श्री विश्वनाथ खजूरिया को उनकी पुस्तक "डूगर-जीवन" पर द्वितीय पुरस्कार दिया गया है । इस भाषा में प्रथम पुरस्कार के लिए किसी पुस्तक को नहीं चुना गया । उर्दू भाषा में श्री आबिद मनावरी को "शमीम-ए-गुल" पर प्रथम पुरस्कार दिया गया । श्री ए0 के0 ताक और श्री अमीन कामिल को कश्मीरी भाषा की पुस्तकों के लिए क्रमशः प्रथम और द्वितीय पुरस्कार दिए गए । हिंदी के प्रथम और द्वितीय पुरस्कार क्रमशः श्री सुभाष भारद्वाज को "रेत का सागर" पुस्तक पर और श्री एस0 एल0 कम्मू को "तीन असंगत एकांकी" पर दिए गए ।

विमान विद्या पर प्राचीन ग्रंथ :

विमान विद्या पर एक प्राचीन ग्रंथ "विमान शास्त्र" अभी हाल ही में प्राप्त हुआ है । इस ग्रंथ में विमान विद्या से संबंधित बहुमूल्य सामग्री है । संसद-सदस्य श्री ओम प्रकाश त्यागी ने नागरिक उड्डयन मंत्री डा0 कर्ण सिंह को इस ग्रंथ की एक प्रति भेंट की । ग्रंथ की मूल प्रति बड़ौदा राजकीय संस्कृत पुस्तकालय से प्राप्त हुई थी जिसे बाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने प्रकाशित किया है ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

सम्मेलन के पुरस्कारों के लिए पुस्तकें आमंत्रित :

हिंदी साहित्य सम्मेलन ने इस वर्ष के श्री मंगलाप्रसाद पारितोषिक तथा श्री सेकसरिया महिला पारितोषिक के लिए 21 मई तक जीवित लेखकों और लेखिकाओं से पुस्तकें आमंत्रित की हैं । 1200 रुपये का मंगला प्रसाद पारितोषिक इस वर्ष हिंदी साहित्य के ‘दर्शन’ विषय पर दिया जाएगा । दर्शन के अंतर्गत वेद, उपनिषद, स्मृति, दर्शन, धर्म, ईश्वर, जीव और मन संबंधी मीमांसा, सौंदर्य मीमांसा तथा अध्यात्म की गणना की जाएगी । 500 रुपये का सेकसरिया महिला पारितोषिक हिंदी की मौलिक रचना पर दिया जाता है । मंगला प्रसाद पारितोषिक के लिए पुस्तक की आठ प्रतियां तथा अन्य पारितोषिकों के लिए सात प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से भेजी जानी चाहिए ।

मध्यप्रदेश की हिंदी सेवी संस्थाओं का सम्मेलन :

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन और मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के संयुक्त तत्वावधान में इंदौर में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया । सम्मेलन में विभिन्न वक्ताओं ने हिंदी सेवियों को याद दिलाया कि छत्तीस वर्ष पहले इसी स्थान पर महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा हिंदी का समस्त भारत में प्रचार करने के लिए युवकों का आह्वान किया था । सम्मेलन में यह निश्चय किया गया कि प्रदेश की समस्त हिंदी सेवी संस्थाओं की ओर से मई में गांधी शताब्दी के उपलक्ष्य में एक वृहद् सम्मेलन का आयोजन किया जाए । सम्मेलन के संयोजक पं0 राम नारायण शास्त्री ने बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से प्रदेश के अभाव पीड़ित साहित्यकारों की सेवा करने का भी विचार है ।

प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार वितरण समारोह :

"दिल्ली प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का प्रमाण पत्र तथा

पुरस्कार वितरण समारोह 21 अप्रैल, 1969 को राजकीय लेडी नायस मूक वधिर विद्यालय, फिरोजशाह कोटला में मनाया गया । समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने की । महापौर लाला हंसराज गुप्त ने पुरस्कार वितरित किए । प्रमाण-पत्र पाने वालों में लगभग एक सौ मूक वधिर विद्यार्थी थे । मूक वधिर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री कुंवरपाल गुप्त ने विद्यालय की हिंदी शिक्षण की प्रगति का विवरण देते हुए कहा : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की दिल्ली शाखा की व्यवस्थापिका श्रीमती राजलक्ष्मी राघवन की कृपा से सर्वप्रथम सन् 1960 में 38 विद्यार्थी समिति की परीक्षाओं में बैठे । अब तक कुल 748 विद्यार्थी प्राथमिक, प्रारंभिक, प्रवेश तथा परिचय की परीक्षाओं में बैठ चुके हैं जिनमें से 539 छात्र उत्तीर्ण घोषित हो चुके हैं । उत्तीर्ण विद्यार्थियों में से 41 ने विशेष योग्यता, 77 ने प्रथम श्रेणी तथा एक-एक विद्यार्थी ने दिल्ली प्रांत में प्रथम तथा द्वितीय-स्थान.. प्राप्त किया है ।

'सर्वभारती भाषा शब्दकोश' के लिए आर्थिक सहायता की मांग :

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 'सर्व भारती भाषा शब्द कोश' प्रकाशित करने की एक वृहद् योजना तैयार की है और इसे भारत सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत किया है । इस संबंध में विभिन्न दलों के 33 संसद-सदस्यों ने प्रधान मंत्री को एक ज्ञापन दिया है जिसमें कहा गया है कि 75 वर्षों से भारत भारती की अमूल्य सेवा करने वाली इस संस्था का प्रस्तावित प्रकाशन राष्ट्रीय एकता को सम्बल प्रदान करेगा अत: उसके लिए उपयुक्त आर्थिक सहायता दी जाए ।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

अधिनियमों के अनुवाद की प्रगति :

विधि मंत्रालय के राजभाषा (विधायी) आयोग द्वारा तैयार किए गए 75 केन्द्रीय अधिनियमों के अनुवादों को राष्ट्रपति ने अधिप्रमाणित कर दिया है । इनमें से 69 अधिनियमों की सूची "हिंदी समाचार जगत" के नवंबर 68 अंक में दी चुकी है । शेष अधिनियमों की सूची पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दी जा रही है :-

70- उत्तरप्रदेश राज्य विधान मंडल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1968
71- पश्चिमी बंगाल राज्य अधिनियम (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1968
72- लोक भविष्य निधि अधिनियम, 1968
73- वैयक्तिक क्षति (प्रतिकर बीमा) अधिनियम 1968
74- बिहार राज्य विधान मंडल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1968.
75- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा अधिनियम, 1964 ।

लोकसभा समाचार :

- शिक्षा मंत्रालय की मांगों पर हुई बहस का जवाब देते हुए शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर० वी० राव ने लोकसभा में कहा : सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं को बनाने की नीति स्वीकार की है और वह इसे लागू करने के लिए प्रयत्नशील है । उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए प्रत्येक राज्य सरकार को एक करोड़ रुपए का अनुदान स्वीकृत किया गया है । क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था के लिए केंद्र भी राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकों का प्रकाशन करेगा । त्रिभाषा सूत्र के संबंध में उन्होंने कहा कि राज्यों में त्रिभाषा सूत्र को लागू किया जा रहा है । संस्कृत की शिक्षा तथा अध्ययन के विस्तार का प्रयास किया जाएगा किन्तु इसे त्रिभाषा सूत्र में शामिल नहीं किया जाएगा ।

- विदेश मंत्रालय के उपमंत्री श्री सुरेन्द्रपाल सिंह ने लोकसभा में एक लिखित प्रश्न के उत्तर में बताया : विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनों को निदेश जारी कर दिए गए हैं कि वे आपसी बातचीत में तथा हिंदी जानने वाले विदेशियों के साथ बातचीत करते समय हिंदी का प्रयोग करें । अधिकारियों से कहा गया है कि वे उपयुक्त अवसर पर हिंदी में भाषण दें और निमंत्रण पत्र आदि हिंदी में छपवाएं । इस समय प्रत्यय-पत्र हिंदी में प्रस्तुत किए जाते हैं और उनका अंग्रेज़ी अनुवाद साथ दिया जाता है ।

क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों के निर्माण की योजना :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद के लिए विज्ञान तथा अन्य विषयों की लगभग दो हज़ार पुस्तकें वितरित की हैं । इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध लेखकों से 200 मौलिक ग्रंथ भी लिखवाए जाएंगे । विश्वविद्यालयों में क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की योजना के अंतर्गत ये पाठ्य-पुस्तकें तैयार कराई जा रही हैं ।

हिंदी वैज्ञानिक साहित्य परिषद की स्थापना :

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के कुछ तरुण वैज्ञानिकों ने "हिंदी वैज्ञानिक साहित्य परिषद" नामक संस्था की स्थापना की है । यह संस्था हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य का सृजन करेगी । संस्था की ओर से समय-समय पर संगोष्ठियाँ आदि का आयोजन भी किया जाएगा जिनमें हिंदी में मूलरूप से लिखे गए अथवा अनूदित निबंध पढ़े जाएंगे । परिषद ने वैज्ञानिक विषयों के प्रामाणिक ग्रंथों का अनुवाद-कार्य भी हाथ में लिया है ।

हिंदी शिक्षण योजना की परीक्षाओं में मौखिक परीक्षा समाप्त :

एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार भारत सरकार ने हिंदी शिक्षण योजना की 'प्रवीण' और 'प्राज्ञ' परीक्षाओं के लिए मौखिक परीक्षा को समाप्त करने का निश्चय किया है । उक्त निर्णय आगामी जून में होने वाली परीक्षाओं से लागू होगा ।

*राजधानी में

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से स्थानीय हंसराज कालेज में 20 अप्रैल को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध विभिन्न कालेजों के प्रधानाचार्यों तथा प्राध्यापकों ने एकमत से स्वीकार किया कि दिल्ली विश्वविद्यालय में परीक्षा का माध्यम तुरंत हिंदी कर दिया जाना चाहिए । पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की कठिनाई को नगण्य बताते हुए डा० करन्दीकर ने बताया कि बम्बई विश्वविद्यालय में सन् 1962 तक एलोपैथी की शिक्षा मराठी भाषा के माध्यम से दी जाती रही है और आज भी वहां के ग्रंथालय में एलोपैथी से संबंधित अनेक मराठी ग्रंथ विद्यमान हैं । डा० मेहता ने गुजरात विश्वविद्यालय का उदाहरण दे हुए कहा कि वहां विज्ञान और कानून सहित सभी विषय गुजराती के माध्यम से पढ़ाए जाते हैं । गोष्ठी में पास किए गए एक प्रस्ताव में दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा संबंधित अधिकारियों से अनुरोध किया गया है कि जुलाई, 1969 से प्रत्येक कक्षा की परीक्षा में हिंदी को वैकल्पिक माध्यम स्वीकार किया जाए ।

- भारतीय भाषाओं की समाचार एजेंसी हिन्दुस्तान समाचार सहकारी समिति की साधारण सभा की 13वीं बैठक सोमवार 21 अप्रैल को मंडी हाउस, नई दिल्ली में हुई । बैठक का उद्घाटन करते हुए गृह मंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण ने कहा : जनसाधारण के विचारों का सही प्रतिबिंब हमारे भाषायी पत्रों में ही मिलता है अत: लोकतंत्र के विकास की दृष्टि से भारतीय भाषाओं की समाचार एजेंसियों का महत्व निर्विवाद है ।

- लाला श्रीराम की स्मृति में 26 अप्रैल, 1969 को दिल्ली क्लाथ मिल नाट्य कला मंदिर में एक अखिल भारतीय कवि - सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि - सम्मेलन की अध्यक्षता हिंदी के प्रसिद्ध कवि डा० रामधारी सिंह दिनकर ने की । नगर-निगम दिल्ली के महापौर लाला हंसराज गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

* प्रादेशिक अंचल में

हिंदी के शासकीय प्रयोग में एकरूपता का प्रयास

18 अप्रैल को दिल्ली में हिंदी राज्यों के मुख्य मंत्रियों की एक बैठक हुई जिसमें हिंदी के शासकीय प्रयोग में एकरूपता लाने की समस्या पर विचार विमर्श हुआ । बैठक में यह तय हुआ कि इस संबंध में एकसम्मिलित प्रयास किया जाना चाहिए । बैठक में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्रियों ने भाग लिया । यह निश्चय किया गया कि सभी हिंदी राज्यों के संबंधित सचिवों की बैठक शीघ्र ही बुलाई जाए जिसमें इस विषय की सारी समस्याओं पर विस्तार से विचार किया जाए । उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री चंद्र भानु गुप्त ने पत्रकारों को बताया : सभी राज्यों में हिंदी के विकास के लिए सरकार की ओर से कार्य हो रहा है । उसमें समन्वय लाने से विकास की प्रगति काफी तेज हो जाएगी और भाषा में एकरूपता भी आएगी ।

केन्द्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव

भारतीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष श्री के० हनुमंतैया ने, झांसी में आयोजित एक समारोह में सुझाव दिया कि सरकार को हिंदी भाषा के विकास के लिए एक केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना करनी चाहिए । उन्होंने कहा कि राष्ट्रभाषा घोषित होने के तत्काल बाद यदि हिंदी भाषी प्रदेश हिंदी का प्रयोग करने लग जाते तो आज एक नई पीढ़ी का निर्माण हो जाता । हिंदी राष्ट्र भाषा है तथा सरकारी काम-काज की भी भाषा है किन्तु उसकी यथोचित उन्नति के लिए प्रयत्न करना होगा ।

सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अनिवार्य

बिहार के लोक शिक्षा निदेशक श्री एन०एस० नागेन्द्रनाथ ने एक परिपत्र द्वारा शिक्षा-विभाग के सभी अधिकारियों को आदेश दिया है कि सरकारी कार्यों में हिंदी का शतप्रतिशत प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाय।

परिपत्र में कहा गया है कि पूर्व निदेशों के अनुसार सरकारी कामों में हिंदी का प्रयोग नहीं करना सरकारी नीति के विरुद्ध माना जाएगा अत: इस आदेश का कड़ाई से पालन किया जाए ।

विविध समाचार

- संस्कृत के विद्वानों को प्रोत्साहन देने की एक योजना के अंतर्गत राजस्थान सरकार ने 1968-69 के लिए 2500 रुपये का पुरस्कार कलकत्ता के श्री श्रीनिवास शास्त्री को दिया है । श्री श्रीकृष्ण शर्मा को जीवनयापन-वृत्ति के रूप में 1200 रुपये दिया गया है ।
- पंजाब विधान परिषद् में वित्त मंत्री श्री कृष्ण कांत ने बताया कि म्युनिसिपल समितियों को आदेश दिया गया है कि वे अपना काम गुरुमुखी लिपि में करें ।
- कमला नेहरू नर्सरी स्कूल, रायबरेली का शिलान्यास करते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस बात पर जोर दिया कि भाषा को सीखने का भार उत्तर और दक्षिण के लोगों द्वारा समान रूप से उठाया जाना चाहिए । यदि दक्षिण भारतीय राष्ट्रभाषा हिंदी सीखते हैं तो उत्तर भारतीयों को भी कोई दक्षिण भारतीय भाषा सीखनी चाहिए ।
- अन्नामलै विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान उच्च अध्ययन केन्द्र ने भारतीय भाषाओं के द्विभाषी कोश तैयार करने की योजना बनाई है । इन द्विभाषी कोशों में सम्पर्क भाषा अंग्रेजी होगी । यह केन्द्र इस समय विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रमाण-पत्र और डिप्लोमा के अंशकालिक पाठ्यक्रम चला रहा है । केन्द्र में इस समय तमिल, तेलुगु, कन्नड़ मलयालम, बंगला और हिंदी के अध्यापन की व्यवस्था है । केन्द्र में बोलचाल की तमिल सीखने के लिए आठ सप्ताह का पाठ्यक्रम शुरू किया गया था । इस पाठ्यक्रम से लगभग एक सौ विदेशियों ने लाभ उठाया है ।

* विश्वविद्यालयों में

सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाएं हों :

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित उपकुलपतियों के सम्मेलन में यह निश्चय किया गया कि सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाओं को बनाया जाए। तीन दिवसीय सम्मेलन का समापन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने बताया : हम छात्रों को उनकी भाषा में बोलना व लिखना सिखाना चाहते हैं। लेकिन इसके साथ - साथ उन्हें अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान का भी लाभ उठाना चाहिए और इसके लिए अंग्रेजी की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर हिंदी भाषी राज्यों के उपकुलपतियों की एक बैठक हुई। इस बैठक में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें तैयार करने पर विचार-विमर्श हुआ। सम्मेलन में उच्च शिक्षा के लिए हिंदी माध्यम के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई और विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों के लिए गर्मियों में प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने पर विचार किया गया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयका दीक्षांत समारोह

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का 51 वां दीक्षांत समारोह 30 मार्च को सम्पन्न हुआ। इसमें लगभग साढ़े तीन हजार छात्र-छात्राओं को विभिन्न विषयों में उपाधियां प्रदान की गईं। विभिन्न विषयों में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या 150 थी। इस अवसर पर 72 मेधावी छात्र-छात्राओं को स्वर्णपदक तथा रजतपदक भी प्रदान किए गए। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के चांसलर काशी नरेश श्री विभूति नारायण सिंह ने की और दीक्षांत भाषण जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा0 मोहन सिंह मेहता ने दिया।

* विदेशों में

जापान में हिंदी का अध्ययन

पूर्वी देशों में जापान के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंध प्राचीन काल से रहे हैं अतः भारत के जनमानस को समझने के लिए जापान के लोग हमेशा उत्सुक रहे हैं । भारत के जनमानस को प्रतिबिंबित करने वाली हिंदी भाषा के प्रति उनका प्रेम इस बात का प्रमाण है ।

हिन्दुस्तानी और तमिळ पढ़ाने की व्यवस्था वहां सर्वप्रथम सन् 1909 में टोकियो के विदेशी भाषा विद्यालय में की गई थी । सन् 1911 में इन दोनों भाषाओं के लिए अलग-अलग विभाग स्थापित हो गए । कुछ वर्ष बाद तमिळ का अध्यापन, संभवतः उपयुक्त अध्यापक न मिल सकने के कारण रुक गया किंतु हिंदी का अध्ययन - अध्यापन अनवरत चलता रहा । हिंदी विभाग के स्नातकों में सर्वश्री मिज़ुनो, इजूमी, ताकाहाशी गाम्पो, ओतानी, ओगावा और सावा को जापान में भारतीय विद्याओं के विद्वान के रूप में आज भी आदर प्राप्त है । यह बात उल्लेखनीय है कि शुरू-शुरू में वहां हिंदी और उर्दू में भेद नहीं किया जाता था और विद्यार्थी को देवनागरी तथा फारसी दोनों लिपियां सिखाई जाती थीं ।

हिंदी अध्यापकों की कमी वहां हमेशा रही है । प्रारंभिक दिनों में हिंदी अध्यापन के लिए प्रायः प्रवासी भारतीय क्रांतिकारियों अथवा व्यापारियों की सेवाएं उपलब्ध होती थीं । टोकियो विद्यालय में प्रारंभिक काल में जिन विदेशी सज्जनों ने कार्य किया उनके नाम इस प्रकार हैं - सर्वश्री दौलत सिंह चिट्ठराजी, पटल, हेनरी डूमंड, सावरकर, बेरलास तथा बदरुल्सलाम फजुली । द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विद्यालय का हिन्दुस्तानी विभाग ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी भारतीयों की गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था । नेता जी सुभाष चंद्र बोस भी एक बार विभाग में पधारे थे और उनसे प्रभावित होकर विभाग के अनेक जापानी स्नातकों ने आज़ाद हिंद फौज में दुभाषिये का काम सहर्ष स्वीकार किया था ।

सन् 1945 में प्रोफेसर दोइ क्यूया की नियुक्ति हिंदी विभाग में हुई और हिंदी तथा उर्दू विभाग अलग-अलग हो गए। प्रो0 दोइ सन् 1953-55 में विशेष अध्ययन के लिए इलाहबाद विश्वविद्यालय में रहे। सन् 1948 के बाद भारतिय दूतावास के अधिकारियों के परिवार से श्रीमतीरत्नम, श्रीमती लाल और कु0 प्रेमलता ने विभाग में हिंदी पढ़ाने का काम किया। जयपुर के श्री कृपालसिंह शेखावत भी, जो जापानी चित्रकला का अध्ययन करने वहां गए थे, कुछ समय तक हिंदी का अध्यापन करते रहे। भारतीय दूतावास के सैनिक सचिव कर्नल खन्ना की पत्नी ने तो अवैतनिक रूप से सप्ताह में आठ-आठ घंटे पढ़ाकर विभाग की इतनी सेवा की कि उनका आभार प्रकट करने के लिए विभाग की ओर से प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी को 'खन्ना रजत पदक' दिया जाता है। विभाग में इस समय प्रो0 दोइ के अतिरिक्त श्री तानाका तथा श्रीमती यामादा नियमित रूप से काम कर रहे हैं। श्री तानाका ने भारत में कुछ समय रह कर श्री अज्ञेय की कृतियों का विशेष अध्ययन किया है।

जापान में हिंदी के अध्ययन - अध्यापन का दूसरा केन्द्र ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग है। इसकी स्थापना सन् 1922 में हुई थी और लगभग प्रारंभ से ही यहां हिंदी का अध्यापन होने लगा था।

सन् 1923 से सन् 1963 तक श्री सावा हिंदी विभाग का संचालन करते रहे। उन्होंने हिंदी जापानी शब्द संग्रह तथा जापानी में हिंदी भाषा का व्याकरण भी लिखा है जो जापान में ही प्रकाशित हुआ। इस विभाग को जिन भारतीयों की सेवाएं प्राप्त हुईं उनके नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री महादेव, अतरलाल जैन, मदन लाल, संतराम वर्मा, रामसिंह गुलेरिया, राधेश्याम खैतान तथा जगदीश दवे। सन् 1966 में वहां डा0 लक्ष्मीधर मालवीय की नियुक्ति हुई। डा0 मालवीय के अतिरिक्त इस समय वहां सर्वश्री कोगा, कुवा जिमा, तानीगुरा और मिजोकामी स्थायी रूप से अध्यापक पद पर काम कर रहे हैं।

इन दो विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त टोकियो विश्वविद्यालय तथा क्योतो विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी हिंदी वैकल्पिक विषय है । टोकियो के एशियाई अफ्रीकी भाषाओं के विद्यापीठ में तथा एशियाई अर्थशास्त्र अनुसंधान विद्यापीठ में भी हिंदी पढ़ाई जाती है ।

(धर्मयुग में प्रकाशित डा0 लक्ष्मीधर मालवीय के लेख से साभार)

पश्चिमी जर्मनी में भारतीय साहित्य के प्रति रुचि :

पश्चिमी जर्मनी के हारवर्ड विश्वविद्यालय में भारत, इस्लाम संस्कृति तथा तुलनात्मक धर्म की प्राध्यापिका डा0 कुमारी अन्नामारिया शिमेल, मिर्ज़ा गालिब के जीवन तथा उनकी रचनाओं पर एक पुस्तक लिख रही हैं । उनका विश्वास है कि उक्त पुस्तक जर्मनी के लोगों को मिर्ज़ा गालिब की रचनाओं से परिचय कराने में बहुत सहायक होगी । डा0 अन्नामरिया शिमेल उर्दू, फारसी, तुर्की और सिंधी भाषाओं की विदुषी हैं ।

- गोयथे की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक "फाउस्ट" का अनुवाद अब तक दो भारतीय भाषाओं में हो चुका है ।

- प्रसिद्ध जर्मन लेखिका अन्ना सेवार्स के एक प्रसिद्ध उपन्यास का (जिस के शीर्षक का भावार्थ है "उसके सिर के लिए इनाम") तमिल अनुवाद हाल ही में मद्रास की एक प्रकाशन-संस्था ने प्रकाशित किया है ।

- पश्चिमी जर्मनी की प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था हार्स्ट एर्डमान ने स्टुटगार्ट के विदेश संबंध संस्थान के सहयोग से "आध्यात्मिक मिलन" विषयक पुस्तकमाला का प्रकाशन आरंभ किया है । इस पुस्तक माला में अब तक 22 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । एक पुस्तक का नाम है "भारत के श्रेष्ठ समकालीन लेखकों द्वारा कथा चित्रण" । एक अन्य पुस्तक "भारतीय और जर्मन" शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है ।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र "यूनेस्को कूरियर" विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है। प्रति मास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9.50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10.50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध सम्पादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णापुरम, नई दिल्ली-22 को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें।

भाषा (त्रैमासिक)

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं कीसमस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण हैं। मूल्य एक प्रति 3.00 रुपये, वार्षिक :10.00 रुपये। प्राप्ति स्थान : प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-6.

===0000===

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. **अपना हृदय सबल बनाइए :** ले० वी जेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5-00
2. **सिखों का इतिहास :** ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. **हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक** पृ० 165 मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. **व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश** पृ० 324 मूल्य 4-50
2. **शब्दार्थ मीमांसा :** ले० रामचन्द्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. **शांति-रक्षा अंक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 148 मूल्य 4-50
2. **द्विवेदी स्मृति विशेषांक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 270 मूल्य 12-50
3. **संकलन** पृ० 580 मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)

वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. **मानक देवनागरी**
3. **Standard Devanagari Script**
4. **Devanagari Through the Ages**
5. **देवनागरी लेखन विधि चार्ट**
6. **परिवर्धित देवनागरी चार्ट**
7. **Standardisation of Hindi Spelling**
8. **हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण**

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

सं. आर. एन.
817/66

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3

अंक 10

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 13817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 जून, 1969 अंक 10

- 0 भाषा संगम
- 0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं
- 0 हिंदी
  - * भारत सरकार में राजधानी में
  - * प्रादेशिक अंचल में
- 0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था

मेरा नम्र लेकिन दृढ़ अभिप्राय है कि जब तक हम हिंदी भाषा को राष्ट्रीय और अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नहीं देते, तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक हैं। इस सम्मेलन द्वारा भारत वर्ष के इस बड़े प्रश्न का निराकरण हो जाए, ऐसी मेरी आशा और प्रभु प्रति प्रार्थना है।

(हिंदी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन (सन् 1918) में, सभापति पद से दिए गए भाषण से)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

० भाषा संगम :

महाराष्ट्र में समान त्रिभाषा सूत्र लागू होगा :

महाराष्ट्र सरकार ने पश्चिम महाराष्ट्र और मराठवाड़ा क्षेत्रों में पहली कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा के अध्ययन को अनिवार्य घोषित किया है । इन क्षेत्रों में तथा विदर्भ में समान त्रिभाषा सूत्र लागू करने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है । मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्रों में पांचवीं कक्षा से अंग्रेजी और हिंदी अनिवार्य विषय हैं, किंतु पश्चिम महाराष्ट्र में केवल हिंदी पांचवीं कक्षा से अनिवार्य है और अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय माना गया है ।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में तुलसी की जीवनी :

महाकवि तुलसीदास की चतुर्थ जन्म-शताब्दी के अवसर पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में महाकवि की जीवनी प्रकाशित की जाएगी । यह पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट की योजना के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है ।

जर्नल आफ दि इंजीनियर्स (इंडिया) का हिंदी खंड :

इंस्टिट्यूशन आफ इंजीनियर्स (इंडिया) के जर्नल के हिंदी खंड का प्रकाशन इस वर्ष से अंतर्राष्ट्रीय आकार में नई सजधज के साथ होने लगा है । इस जर्नल के हिंदी खंड का प्रकाशन सर्वप्रथम सितंबर 1949 में त्रैमासिक अंग्रेजी जर्नल के एक विभाग के रूप में हुआ था । उस समय इसके सम्पादक बम्बई लोक निर्माण विभाग के अवकाश प्राप्त अधीक्षक इंजीनियर श्री नरहरि सदाशिव जोशी थे । सन् 1961 से इस पत्रिका का हिंदी खंड स्वतंत्र रूप से वर्ष में तीन बार, अप्रैल अगस्त और दिसम्बर में प्रकाशित होता है । हिंदी खंड विभाग सलाहकार श्री ब्रजमोहन लाल एम० आई० ई० की देख-रेख में 3। 17 ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-4 से प्रकाशित होता है । पत्रिका का वार्षिक चंदा 7-50 रुपए और एक प्रति की कीमत 2-50 रुपए है ।

इंजीनियरी की विभिन्न शाखाओं के छात्रों और अध्यापकों के लिए यह पत्रिका बहुत उपयोगी है और यह इस बात का प्रमाण है कि हिंदी में इंजीनियरी के ज्ञान को वहन करने की पूर्ण क्षमता है ।

कुरुक्षेत्र पुस्तकालय का विस्तार

कुरुक्षेत्र के सुप्रसिद्ध पुस्तकालय के लिए 23 लाख रुपये की लागत से नये भवन का निर्माण किया जा रहा है । इस पुस्तकालय में हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, पंजाबी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों के अतिरिक्त फ्रेंच, रूसी, स्पेनी और जर्मन आदि भाषाओं की लगभग एक लाख पुस्तकें हैं जिनका मूल्य चालीस लाख रुपये के लगभग है ।

हिंदी, उर्दू तथा बंगला विश्व की प्रमुख भाषाएं :

विश्व में पांच करोड़ से अधिक जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी, उर्दू तथा बंगला भी सम्मिलित हैं । अन्य भाषाओं के नाम हैं : अंग्रेज़ी, स्पेनी, रूसी, जर्मन, जापानी, चीनी, इंडोनेशियाई, पुर्तगाली, फ्रेंच, अरबी और इतालवी ।

इंगलैंड में भारतीय भाषाओं के अध्ययन की सुविधा :

लंदन के मिडलैंड्स और समीपवर्ती क्षेत्र के स्कूलों में हिंदी, उर्दू और पंजाबी की पढ़ाई की व्यवस्था की जा रही है । यहां के मैट्रिकुलेशन बोर्ड ने निर्णय किया है कि यदि इन भाषाओं के पढ़ने वाले छात्रों की संख्या पर्याप्त हुई, तो बोर्ड इन भाषाओं में प्रश्न-पत्र दिया करेगा और इन भाषाओं में उत्तर लिखने की भी अनुमति देगा । यह सुविधा प्रवासी भारतीयों की मांग को देखते हुए दी गई है ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा का प्रचारक शिविर

उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, कटक, के तत्वावधान में 20-5-69 से 22-5-69 तक एक हिंदी प्रचारक शिविर का आयोजन किया गया। गांधी राष्ट्रभवन, कटक में आयोजित इस समारोह में लगभग 32 प्रचारकों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन राज्य के हिंदी शिक्षा अधिकारी श्री राधाकां मिश्र की अध्यक्षता में हुआ। शिविर में प्रचारकों ने हिंदी प्रचार से संबंधित समस्याओं पर विचार-विनिमय किया और यह प्रस्ताव पास किया कि उड़ीसा शिक्षा बोर्ड माइनर और मैट्रिक परीक्षाओं में हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की व्यवस्था करें।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी दक्षिण भारत हिंदी प्रचारक सभा की अध्यक्ष निर्वाचित :

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को आगामी 3 वर्षों के लिए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। कांग्रेस अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा और संसद सदस्य श्री चंद्रशेखर सभा के उपाध्यक्ष चुने गए हैं।

" गांधी हिंदी दर्शन " का प्रकाशन:

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने चार खंडों में "गांधी हिंदी दर्शन " एक ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय किया है। ग्रंथ के सम्पादक मंडल में काका कालेलकर, श्रीमन्नारायण, हरिभाऊ उपाध्याय, वियोगी हरि, बनारसी दास चतुर्वेदी जैसे प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक होंगे।

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति का उपाधि वितरण समारोह :

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति का तीसरा उपाधि वितरण समारोह शनिवार 12 जुलाई, 1969 को समिति के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। केंद्रीय शिक्षा मंत्री डा0 वी0 के0 आर0 वी0 राव ने दीक्षांत भाषण दिया और मैसूर के उप शिक्षा मंत्री श्री एम0 एन0 कौ[illegible]य्यय सोगी ने समारोह की अध्यक्षता की।

गांधी शताब्दी के उपलक्ष्य में हिंदी सेवियों का सम्मेलन :

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में इंदौर में, गांधी शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया । हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, संसद सदस्य सेठ गोविन्द दास ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और अध्यक्षता पं० हरिभाऊ उपाध्याय ने की ।

"हिंदी विश्वकोश" के ग्यारहवें खंड का विमोचन :

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, द्वारा तैयार किए गए "हिंदी विश्वकोश" के ग्यारहवें खंड का विमोचन 20 जून को विट्ठलभाई पटेल भवन में आयोजित एक समारोह में, उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने किया । समारोह में भाषण करते हुए उपप्रधान मंत्री ने कहा कि हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी न चलना खेदजनक है ।

इस विश्वकोश के कुल बारह खंड होंगे । बारहवां और अंतिम खंड इस वर्ष के अंत तक प्रकाशित हो जाएगा । छः हजार पृष्ठों के इस विश्वकोश में कला, विज्ञान आदि लगभग 8000 विषयों की प्रामाणिक जानकारी दी गई हैं । बारहों खंडों के पूरे सेट की कीमत 360/- रुपये है ।

डालमिया पुरस्कार के लिए पुस्तकें आमंत्रित :

हरजीमल डालमिया पुरस्कार के लिए मौलिक साहित्य तथा दर्शन की पुस्तकें आमंत्रित की गई हैं । साहित्य के अंतर्गत काव्य, नाटक, लक्षणग्रंथ, आलोचनात्मक निबंध तथा उपन्यास और दर्शन के अंतर्गत विविध दर्शन, वेद, पुराण, धर्म, ईश्वर, जीव और मन संबंधी मीमांसा, अध्यात्म तथा आचार शास्त्र को लिया जाएगा । प्रत्येक ग्रंथ की पांच प्रतियां 31 दिसंबर 1969 तक पुरस्कार मंत्री, हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति, हमदर्द बिल्डिंग 10 दरियागंज, दिल्ली-6 के पते पर भेजी जानी चाहिए ।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

हिंदी के उच्च अध्ययन के लिए शिक्षा मंत्रालय की छात्रवृत्ति योजना :

भारत सरकार ने निर्णय किया है कि अहिंदी भाषी राज्यों के छात्रों को मैट्रिक से आगे हिंदी का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति देने की योजना 1969-70 में भी जारी रखी जाएगी । इस योजना के अंतर्गत छात्रवृत्तियों की कुलसंख्या 1000 है । इनमें से आंध्र प्रदेश के लिए 205, गुजरात के लिए 54, कश्मीर के लिए 9, असम के लिए 3, केरल के लिए 95, तमिलनाडु के लिए 190, महाराष्ट्र के लिए 104, मैसूर के लिए 133, उड़ीसा के लिए 46, पंजाब के लिए 28, पश्चिम बंगाल के लिए 92, मणिपुर के लिए 2, त्रिपुरा के लिए 3 छात्रवृत्तियां होंगी । अंडमान और निकोबार, चंडीगढ़, दादरा और नागरहवेली, गोवा, दमण और दीव, उत्तर पूर्व सीमांत क्षेत्र तथा पांडिचेरी के लिए एक-एक छात्रवृत्ति निर्धारित की गई है ।

इन छात्रवृत्तियों के लिए आवेदन पत्र और विस्तृत जानकारी राज्यों के शिक्षा निदेशालयों से प्राप्त होगी । आवेदन पत्र देने की अंतिम तारीख की सूचना भी छात्रों को राज्यों के शिक्षा निदेशालयों से प्राप्त हो सकेगी ।

भारतीय भाषाओं के विकास के लिए केंद्रीय भाषा संस्थान की स्थापना :

राज्यों के शिक्षा निदेशकों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने बंगलौर में बताया कि केन्द्रीय सरकार ने सभी भारतीय भाषाओं के प्रचार एवं विकास के लिए एक केन्द्रीय भाषा संस्थान की स्थापना करने का निर्णय किया है । इस अवसर पर उन्होंने सुझाव दिया कि माध्यमिक स्तर पर भाषा प्रयोगशालाएं स्थापित की जाएं जिनमें मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाएं सीखने के सरल तरीकों की भी खोज की जाए ।

हिंदी समिति के निर्णय :

सूचना और प्रसारण मंत्रालय की हिंदी समिति की बैठक 12 और 14 मई को नई दिल्ली में हुई। सूचना तथा प्रसारण और संचार मंत्री श्री सत्य नारायण सिंह ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए :–

(1) आकाशवाणी के शब्दकोश को उसके वर्तमान रूप में शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाए तथा उसके संशोधन और परिवर्धन का काम बाद में किया जाए।

(2) मंत्रालय के "हिंदी यूनिट" को आत्मनिर्भर बनाने के लिए योग्य कर्मचारियों और अधिकारियों की संख्या में वृद्धि की जाए।

(3) ऐसी व्यवस्था की जाए कि संसद की जो कार्रवाई हिंदी में होती है, उसकी रिपोर्टिंग मूल रूप में हिंदी में ही की जा सके।

(4) आकाशवाणी के "साहित्य समारोह" और "सर्वभाषा कवि सभा" जैसे कार्यक्रमों में, विभिन्न भारतीय भाषाओं के कार्यक्रमों को, पहले की तरह, हिंदी रूपांतर सहित प्रस्तुत किया जाए।

(5) "सामयिकी" कार्यक्रम के लिए वार्ताएँ मूलरूप से हिंदी में लिखाई जाएँ।

(6) विभिन्न भाषाओं के जो कार्यक्रम हिंदी के माध्यम से अथवा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से प्रसारित होते हैं, उनमें से चुने हुए कार्यक्रमों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाए।

केन्द्रीय भाषा संस्थान का कार्यक्रम :

केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने श्रीनगर में पत्रकारों को बताया कि केन्द्रीय भाषा संस्थान शीघ्र ही मैसूर में काम आरंभ कर देगा। उन्होंने बताया कि प्रत्येक भारतीय भाषा की उत्तम पुस्तकों का अनुवाद अन्य भाषाओं में कराने का एक कार्यक्रम भी शुरू किया जा रहा है। फिलहाल, प्रत्येक भाषा की दस पुस्तकें चुनी जाएँगी।

पत्राचार पाठ्यक्रम का नया सत्र :

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के तत्वावधान में पत्राचार द्वारा हिंदी शिक्षण के पाठ्यक्रम का दूसरा सत्र सितंबर 1969 से शुरू हो रहा है। इसमें विदेशों में रहने वाले लोग भी शामिल हो सकते हैं। पाठ्यक्रम में शामिल होने वाले छात्रों को हर पखवाड़े डाक से पाठ्य-सामग्री भेजी जाएगी। पढ़ाई का माध्यम अंग्रेज़ी होगा।

"हिंदी प्रवेश" पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष होगी। दूसरे वर्ष के अंत में इसकी परीक्षा देश-विदेश के विभिन्न केन्द्रों में होगी। विस्तृत जानकारी के लिए सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग, वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 को लिखें।

बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें आमंत्रित :

भारत सरकार ने सातवीं अखिल भारतीय बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों से पुस्तकें। पांडुलिपियां आमंत्रित की हैं। पुस्तकें खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता के विभिन्न पहलुओं पर लिखी जानी चाहिए। पांडुलिपियां 10 हजार शब्दों या 40 पृष्ठों तक होनी चाहिए। मुद्रित पुस्तकें समुचित चित्रों से सज्जित होनी चाहिए। प्रत्येक प्रविष्टी के लिए 3 रुपये प्रविष्टी शुल्क है। पुस्तकें, असमिया, बंगला, गुजराती, गुरुमुखी, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, सिंधी तमिल, तेलुगु और उर्दू भाषाओं में भेजी जा सकती हैं। प्रतियोगिता में एक-एक हज़ार रुपये के 21 पुरस्कार दिए जाएंगे। पुस्तकें। पांडुलिपियां भेजने की अंतिम तारीख 15 सितंबर 1969 है। विशेष जानकारी के लिए निदेशक, बुनियादी साहित्य, खाद्य कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय, (सामुदायिक विकास और सहकारिता विभाग), कृषि भवन, नई दिल्ली को पत्र लिखें।

* राजधानी में

- दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने पत्रकारों को बताया है कि इस वर्ष 19,333 विद्यार्थियों ने कला विषयों में प्रवेश के लिए नाम रजिस्टर कराया है । इनमें से 17,509 विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हिंदी के माध्यम से मिली है । इस वर्ष हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में 198 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में पास हुए हैं । इसकी तुलना में अंग्रेजी माध्यम वाले 45 विद्यार्थी और बंगला माध्यम वाले 11 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में आए हैं । इसी प्रकार बी०काम पाठ्यक्रम के लिए जिन 7,958 विद्यार्थियों ने नाम रजिस्टर कराए हैं, उनमें से 6,379 का माध्यम हिंदी था । प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालों में 61 का माध्यम हिंदी तथा केवल आठ का माध्यम अंग्रेज़ी था ।

- नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री केदारनाथ साहनी ने समिति की बैठक में कहा है कि निगम के जो अधिकारी हिंदी में काम नहीं करेंगे, उन्हें निगम छोड़ देना पड़ेगा ।

- हिंदी की परीक्षाएं पास करने वाले पुनर्वास विभाग के अहिंदी भाषी कर्मचारियों का प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक वितरण समारोह नई दिल्ली में 26 जून को सम्पन्न हुआ । रोज़गार और पुनर्वास मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री भगवत झा आज़ाद ने मुख्य अतिथि के रूप में भाषण देते हुए कहा कि देश की आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रगति केवल भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही संभव है । हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर भी समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

- भारतीय साहित्य संस्थान के तत्वावधान में 17 जून को नई दिल्ली में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें राजधानी के अनेक कवियों ने भाग लिया । श्री क्षेमचंद्र सुमन ने कवि गोष्ठी की अध्यक्षता की ।

- गांधी शताब्दी समिति की ओर से राज्यों के भाषा सचिवों की एक बैठक 17 जून को नई दिल्ली में हुई। उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने बैठक में भाषण देते हुए कहा : यदि देश को गांधी के रास्ते पर चलना है, तो गांधी शताब्दी वर्ष का सारा काम-काज राष्ट्रभाषा हिंदी में किया जाना चाहिए। राष्ट्रभाषा को अपनाए बिना गांधी शताब्दी समिति विशेष सफल नहीं हो सकती।

दिल्ली प्रशासन के काम-काज में हिंदी के उपयोग की प्रगति :

दिल्ली प्रशासन के 36,000 कर्मचारियों में से अधिकांश हिंदी जानते हैं और हिंदी में काम कर सकते हैं। केवल 179 कर्मचारी हिंदी नहीं जानते हैं। इनमें से 123 ने हिंदी सीखने के लिए 6 महीने की, 51 ने एक साल की और 5 ने 3 महीने की छूट मांगी है। 1967 में हिंदी स्टेनोग्राफरों की संख्या 30 थी। अब यह संख्या 115 हो गई है और जुलाई के अंत तक आशुलिपि का पाठ्यक्रम पूरा होने पर यह संख्या 300 हो जाएगी।

"रसलीन ग्रंथावली" का उद्घाटन :

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, द्वारा तैयार की गई "रसलीन ग्रंथावली" की प्रथमावृत्ति का प्रकाशनोद्घाटन 30 जून, 1969 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में हुआ। कार्यवाहक राष्ट्रपति डा० वराह गिरि वेंकट गिरि ने पुस्तक का उद्घाटन किया। "रसलीन ग्रंथावली" में सैयद गुलाम नबी "रसलीन" बिलग्रामी की रचनाएं संकलित हैं। पुस्तक का सम्पादन श्री सुधाकर पांडेय ने किया है।

देवनागरी में "टैलेक्स" का प्रयोग :

समाचार पत्रों में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार संचार मंत्रालय ने देवनागरी में "टैलेक्स" का प्रयोग करने का निर्णय किया है। फिलहाल, यह सुविधा दिल्ली, लखनऊ, पटना और जयपुर को उपलब्ध होगी। बाद में अन्य शहरों में इसका विस्तार किया जाएगा। अभी तक भारत के विभिन्न नगरों में केवल अंग्रेजी के "टैलेक्स" ही व्यवहार में लाए जाते थे।

* प्रादेशिक अंचल में

असम साहित्य सभा के बरपेटा अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए श्री आनंद चंद्र बरुआ ने कहा : हर एक राज्य में उसकी अपनी भाषा को सर्वोच्च स्थान देने के बाद अखिल भारतीय स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए हिंदी को अपनाना ही उचित होगा । हिंदी भाषा के प्रति द्वेष की भावना का अर्थ है राष्ट्रीय एकता में बाधा डालना ।

- उत्तर प्रदेश सरकार की एक योजना के अंतर्गत पिछले चार वर्षों से मेरठ के सरकारी इंटर कालेज में तमिल और तेलुगु के वर्ग सुचारु रूप से चल रहे हैं । 25 मई को कालेज के प्रिंसिपल श्री ब्रह्म स्वरूप गुप्त की अध्यक्षता में एक समारोह हुआ, जिसमें तमिल और तेलुगु में डिप्लोमा परीक्षा पास करने वाले छात्रों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए ।

- नैनीताल के देवीसिंह विष्ट राजकीय महाविद्यालय में आयोजित एक समारोह में भाषण देते हुए उत्तर प्रदेश के नियोजन मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के लिए पृथक विश्वविद्यालय का कार्यारंभ 1970-71 के शिक्षा सत्र से आरंभ हो जाएगा । उन्होंने कहा विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आवश्यक विधेयक इस वर्ष के अंत तक विधान सभा में प्रस्तुत कर दिया जाएगा ।

- गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, के तत्वावधान में आंध्र, मैसूर और केरल के केंद्रीय विद्यालयों के अहिंदी भाषी अध्यापकों का ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । उपप्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने पाठ्यक्रम के समापन-समारोह में भाषण करते हुए कहा : हिंदी का समुचित विकास होने से देश की भाषा समस्या हल हो सकती है । श्री देसाई ने पाठ्यक्रम में सम्मिलित 33 अध्यापकों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए ।

- पश्चिम रेलवे के अधिकारियों और कर्मचारियों की ओर से रतलाम मंडल कार्यालय में 12 और 13 जून को एक हिंदी उत्सव का आयोजन किया गया । समारोह का उद्घाटन विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने किया । [illegible] मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, मध्यप्रदेश

सरकार, राजस्थान सरकार तथा केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के हिंदी प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई । इस के अतिरिक्त टिप्पण और आलेखन की समस्याओं पर एक परिसंवाद तथा एक कवि-गोष्ठी का आयोजन भी किया गया ।

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद समन्वय समिति, बम्बई, की ओर से हिंदी सीखने वालों के लिए एक पत्राचार पाठ्यक्रम शुरु किया गया है । इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन 7 जून, 1969 को, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने किया । कर्मचारी राज्य बीमा निगम के निदेशक श्री ईश्वर चंद्र सरीन ने समारोह की अध्यक्षता की । हिंदी निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम की प्रगति की चर्चा करते हुए प्रो० चंद्रहासन ने कहा : अब तक 2,000 व्यक्ति इस योजना से लाभ उठा चुके हैं । इनमें से 200 छात्र कलकत्ता के और 200 मद्रास के हैं । विदेशों के अनेक व्यक्ति भी इस योजना से लाभ उठा रहे हैं ।

- राजस्थान सरकार ने, हिंदी में मानक पुस्तकों के निर्माण के लिए एक स्वायत्त बोर्ड की स्थापना की है । इस संस्थान का नाम 'ज्ञान-विज्ञान हिंदी रचना संस्थान' रखा गया है । राज्य के शिक्षा मंत्री श्री शिवचरण माथुर बोर्ड के अध्यक्ष होंगे । राजस्थान के सभी विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों को इस संस्था का सदस्य बनाया गया है । केन्द्रीय सरकार ने मानक पुस्तकों के निर्माण के लिए राज्य को एक करोड़ रुपया स्वीकृत किया है ।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, द्वारा पुस्तकें आमंत्रित :

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (राजस्थान), अजमेर, ने अनिवार्य हिंदी और विशिष्ट हिंदी विषयों के लिए पाठ्य पुस्तकें आमंत्रित की हैं । पुस्तकें बोर्ड के सचिव के पास 15 नवंबर 1969 तक पहुंच जानी चाहिए । विस्तृत जानकारी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर से प्राप्त की जा सकती है ।

शिक्षा विभाग (राजस्थान) की नवसाक्षर साहित्य प्रतियोगिता :

राजस्थान शिक्षा विभाग, बीकानेर, द्वारा नवसाक्षरोपयोगी हिंदी पुस्तकों की 12वीं पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए पांडुलिपियां। पुस्तकें आमंत्रित की गई हैं। पुस्तकें भेजने की अंतिम तारीख 31 दिसंबर, 1969 है। विशेष जानकारी के लिए उप निदेशक, समाज शिक्षा (राजस्थान), बीकानेर से पत्र-व्यवहार करें।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं (अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, जापानी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) में प्रकाशित होता है। प्रति मास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतराष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए हिन्दी संस्करण का वार्षिक चंदा (11 अंक) 9-50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10-50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें।

0 नए प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित मानक ग्रंथ :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने, विश्वविद्यालय स्तर के मानक ग्रंथों की योजना के अंतर्गत अब तक लगभग 150 पुस्तकें और 20 शब्दावलियां तैयार की हैं । 'हिंदी समाचार जगत' के सितंबर 1968 अंक में कुछ पुस्तकों तथा शब्दावलियों की सूची प्रकाशित की गई थी । अन्य पुस्तकों की सूची नीचे दी जा रही है :-

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	मूल्य (रुपये)
चिकित्सा और मानव	रिशी काल्डर	आयुर्विज्ञान	7-70
डा० राबर्ट काख	वर्नर क्वेडन	,,	5-10
माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम	मैकेयौश	,,	4-00
पीड़ा हीन प्रसव	बेल्यौवस्की	,,	10-00
औद्योगिक इलैक्ट्रानिकी के सिद्धांत और प्रयोग	कौन्स और वाशे	इंजीनियरी	7-00
बुनियादी नौशिल्प	के०सी० बौमड्वी	,,	-
कृषि के हानिकारक कीट	आनंद स्वरूप श्रीवास्तव	कृषि	4-00
अवकलन गणित	शांतिनारायण	गणित	8-65
गति विज्ञान भाग-1	ए०स० रेम्से	,,	7-50
गति विज्ञान भाग-2	,,	,,	8-85
शुद्ध घन ज्यामिती प्रवेशिका	जी०एस० महाजनी	,,	4-15
समाकलन गणित	शांतिनारायण	,,	6-55
समीकरण सिद्धांत	डा० श्रीराम सिन्हा	,,	5-35
प्राथमिक संख्या सिद्धांत	प्रौ० जे०पी० उस्पैन्स्की	,,	-
शिक्षण उसकी सामग्री और प्रथम सिद्धांत	टी० पर्सी नुन	शिक्षा	

कशेरुकी प्राणियों की संरचना तथा परिवर्धन भाग-1	एडविन एस० गुडरिच	जीव-विज्ञान	16-35
,, भाग-2	,,	,,	11-00
जाति वर्गों का विकास	चार्ल्स डार्विन	,,	12-50
जीवन की कहानी	रतन सिहं गिल	,,	4-35
धरती और मानव	शिवतोष दास	भूगोल	8-85
वनस्पति भूगोल	डा० वी०एस० वैद्य	,,	3-75
अर्धचालक और उनके उपयोग	ए० एफ० यॉफी	,,	3-75
अश्रव्य ध्वनियां	कुद्र्यावत्सेव	,,	4-80
उल्काएं	वी० फैंडिस्की	,,	2-60
ऊष्मा और ऊष्मागतिकी	डा० वर्मा तथा डा० तिवारी	,,	10-00
दूरीक्षण के सिद्धांत	आर० बी० डीम	,,	6-50
द्रव्य के सामान्य गुण	सिहं, वर्मा तथा राय	,,	8-00
ध्वनि विज्ञान	ललित किशोर सिहं	,,	7-00
ध्वनि विज्ञान	वुड	,,	14-60
प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग	मिचलसन	,,	4-90
प्रकाशिकी	गुप्त तथा राय	,,	10-00
रहस्यमय विश्व	जेम्स जीन्स	,,	2-80
विद्युत और चुम्बकत्व-1	गुप्त तथा तिवारी	,,	4-50
,, -2	,,	,,	11-00
समस्थानिकों के संसार में	वी० मैजन्त्सी	,,	2-90
कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड	फूलदेवसहाय वर्मा	रसायन	4-85

सामान्य रसायन	एल0 पालिंग	रसायन	22-00
दर्शन के सौ वर्ष	जान पासमोर	दर्शन	15-00
भाषा सत्य और तर्कशास्त्र	अल्फ्रेड जूल्स आयर	,,	2-95
मानव बुद्धि संबंधी विवेचन	डेविड ह्यूम	,,	3-50
शुद्ध बुद्धि मीमांसा	कांट	,,	9-00
आधुनिक मनुष्य	एच0 डब्ल्यू0 हावेल	,,	8-25
संस्कृति	बी0 मलिनोवोस्की	,,	2-40
अर्थशास्त्र का स्वरूप और महत्व	एल0 राबिन्स	अर्थशास्त्र	3-87
कराधान - एक सैद्धांतिक विवेचन	एल0 स0 नाथूरामका	,,	5-00
काम धंधा - ब्याज और मुद्रा का सामान्य सिद्धांत	कीन्ज़	,,	7-00
कीन्ज़ गाइड	एल्विन एच0 हैन्सन	,,	5-70
जनसंख्या	ईआन बोवेन	,,	6-00
द्रव्य, व्यापार और विनियोग	जी0डी0एच0 कौले	,,	15-00
पूर्ति और मांग	हर्बर्ट हैंडरसन	,,	3-60
भारत की वित्तीय शासन-व्यवस्था	हरिगोपाल परांजपे	,,	8-50
मूल्य और पूंजी	हिक्स	,,	9-00
राज्य की अर्थव्यवस्था और कर सिद्धांत	रिकार्डो	,,	7-50
समाजसेवा का क्षेत्र भाग-1	आर्थर ई0 फिन्क तथा अन्य	समाज सेवा	9-00
,, ,, ,, ,, भाग-2	,,	,,	8-50

90

हिंदी समाचार जगत

वर्ष
3

अंक
10

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

र[illegible]न संख्या : आर एन 12817/66

[illegible] कौ व[illegible]

[illegible] हिंदी : [illegible] नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 जून, 1969 अंक 10

0 भाषा संगम
उर्दू-वैच्छिक हिंदी संस्थाएं
0 हिंदी
  * भारत सरकार में राजधानी में
  * प्रादेशिक अंचल में
0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था

मेरा नम्र लेकिन दृढ़ अभिप्राय है कि जब तक हम हिंदी भाषा को राष्ट्रीय और अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नहीं देते, तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक हैं। इस सम्मेलन द्वारा भारत वर्ष के इस बड़े प्रश्न का निराकरण हो जाए, ऐसी मेरी आशा और प्रभु प्रति प्रार्थना है।

(हिंदी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन (सन् 1918) में, सभापति पद से दिए गए भाषण से)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक नं0 7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम :

महाराष्ट्र में समान त्रिभाषा सूत्र लागू होग ,

महाराष्ट्र सरकार ने पश्चिम महाराष्ट्र और मराठ वाड़ा क्षेत्रों में पहली कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा के अध्ययन को अनिवार्य घोषित किया है । इन क्षेत्रों में तथा विदर्भ में समान त्रिभाषा सूत्र लागू करने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है । मराठ वाड़ा और विदर्भ क्षेत्रों में पांचवीं कक्षा से अंग्रेजी और हिंदी अनिवार्य विषय हैं, किंतु पश्चिम महाराष्ट्र में केवल हिंदी पांचवी कक्षा से अनिवार्य है और अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय माना गया है ।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में तुलसी की जीवन

महाकवि तुलसीदास की चतुर्थ जन्म-शताब्दी के अवसर पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में महाकवि की जीवनी प्रकाशित की जाएगी । यह पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट की योजना के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है ।

जर्नल आफ दि इंजीनियर्स (इंडिया) का हिंदी खंड :

इंस्टिट्यूशन आफ इंजीनियर्स (इंडिया) के जर्नल के हिंदी खंड का प्रकाशन इस वर्ष से अंतर्राष्ट्रीय आकार में नई सजधज के साथ होने लगा है । इस जर्नल के हिंदी खंड का प्रकाशन सर्वप्रथम सितंबर 1949 में त्रैमासिक अंग्रेजी जर्नल के एक विभाग के रूप में हुआ था । उस समय इसके सम्पादक बम्बई लोक निर्माण विभाग के अवकाश प्राप्त अधीक्षक इंजीनियर श्री नरहरि सदाशिव जोशी थे । सन् 1961 से इस पत्रिका का हिंदी खंड स्वतंत्र रूप से वर्ष में तीन बार, अप्रैल अगस्त और दिसम्बर में प्रकाशित होता है । हिंदी खंड विभाग सलाहकार श्री ब्रजमोहन लाल एम० आई० ई० की देख-रेख में 3/17 ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-4 से प्रकाशित होता है । पत्रिका का वार्षिक चंदा 7-50 रुपए और एक प्रति की कीमत 2-50 रुपए है ।

इंजीनियरी की विभिन्न शाखाओं के छात्रों और अध्यापकों के लिए यह पत्रिका बहुत उपयोगी है और यह इस बात का प्रमाण है कि हिंदी में इंजीनियरी के ज्ञान को वहन करने की पूर्ण क्षमता है ।

कुरुक्षेत्र पुस्तकालय का विस्तार :

कुरुक्षेत्र के सुप्रसिद्ध पुस्तकालय के लिए 23 लाख रुपये की लागत से नये भवन का निर्माण किया जा रहा है । इस पुस्तकालय में हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, पंजाबी, तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों के अतिरिक्त फ्रेंच, रूसी, स्पैनी, और जर्मन आदि भाषाओं की लगभग एक लाख पुस्तकें हैं जिनका मूल्य चालीस लाख रुपये के लगभग है ।

हिंदी, उर्दू तथा बंगला विश्व की प्रमुख भाषाएं

[illegible] अधिक जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी, उर्दू तथा बंगला भी सम्मिलित हैं । अन्य भाषाओं के नाम हैं : अंग्रेजी, स्पैनी, रूसी, जर्मन, जापानी, चीनी, इंडोनेशियाई, पुर्तगाली, फ्रेंच, अरबी और इतालवी ।

इंगलैंड में भारतीय भाषाओं के अध्ययन की सुविधा :

लंदन के मिडलैंड्स और समीपवर्ती क्षेत्र के स्कूलों में हिंदी, उर्दू और पंजाबी की पढ़ाई की व्यवस्था की जा रही है । यहां के मैट्रिकुलेशन बोर्ड ने निर्णय किया है कि यदि इन भाषाओं के पढ़ने वाले छात्रों की संख्या पर्याप्त हुई, तो बोर्ड इन भाषाओं में प्रश्न-पत्र दिया करेगा और इन भाषाओं में उत्तर लिखने की भी अनुमति देगा । यह सुविधा प्रवासी भारतीयों की मांग को देखते हुए दी गई है ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा का प्रचारक शिविर

उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, कटक, के तत्वावधान में 20-5-69 से 22-5-69 तक एक हिंदी प्रचारक शिविर का आयोजन किया गया। गांधी राष्ट्रभवन, कटक में आयोजित इस समारोह में लगभग 32 प्रचारकों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन राज्य के हिंदी शिक्षा अधिकारी श्री राधाकांत मिश्र की अध्यक्षता में हुआ। शिविर में प्रचारकों ने हिंदी प्रचार से संबंधित समस्याओं पर विचार-विनिमय किया और यह प्रस्ताव पास किया कि उड़ीसा शिक्षा बोर्ड माइनर और मैट्रिक परीक्षाओं में हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की व्यवस्था करें।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी दक्षिण भारत हिंदी प्रचारक सभा की अध्यक्षा निर्वाचित :

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को आगामी 3 वर्षों के लिए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का अध्यक्षा निर्वाचित किया गया है। कांग्रेस अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा और संसद सदस्य श्री चंद्रशेखर सभा के उपाध्यक्ष चुने गए हैं।

" गांधी हिंदी दर्शन " का प्रकाशन:

विदर्भ प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने चार खंडों में "गांधी हिंदी दर्शन" नामक ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय किया है। ग्रंथ के सम्पादक मंडल में काका कालेलकर, श्रीमन्नारायण, हरिभाऊ उपाध्याय, वियोगी हरि, बनारसी दास चतुर्वेदी जैसे प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक होंगे।

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति का उपाधि वितरण समारोह :

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति का तीसरा उपाधि वितरण समारोह शनिवार 12 जुलाई, 1969 को समिति के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। केंद्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने दीक्षांत भाषण दिया और मैसूर के उप शिक्षा मंत्री श्री एम० एन० कोट्टूवसय्य सोगी ने समारोह की अध्यक्षता की।

गांधी शताब्दी के उपलक्ष्य में हिंदी सेवियों का सम्मेलन :

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में इंदौर में, गांधी शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया । हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, संसद सदस्य सेठ गोविन्द दास ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और अध्यक्षता पं० हरिभाऊ उपाध्याय ने की ।

'हिंदी विश्वकोश' के ग्यारहवें खंड का विमोचन :

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, द्वारा तैयार किए गए 'हिंदी विश्वकोश' के ग्यारहवें खंड का विमोचन 20 जून को विट्ठलभाई पटेल भवन में आयोजित एक समारोह में, उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने किया । समारोह में भाषण करते हुए उपप्रधान मंत्री ने कहा कि हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी न चलना खेदजनक है ।

इस विश्वकोश के कुल बारह खंड होंगे । बारहवां और अंतिम खंड इस वर्ष के अंत तक प्रकाशित हो जाएगा । छ: हजार पृष्ठों के इस विश्वकोश में कला, विज्ञान आदि लगभग 8000 विषयों की प्रामाणिक जानकारी दी गई हैं । बारहों खंडों के पूरे सेट की कीमत 360/- रुपये है ।

डालमिया पुरस्कार के लिए पुस्तकें आमंत्रित :

हरजीमल डालमिया पुरस्कार के लिए मौलिक साहित्य तथा दर्शन की पुस्तकें आमंत्रित की गई हैं । साहित्य के अंतर्गत काव्य, नाटक, लक्षणग्रंथ, आलोचनात्मक निबंध तथा उपन्यास और दर्शन के अंतर्गत विविध दर्शन, वेद, पुराण, धर्म, ईश्वर, जीव और मन संबंधी मीमांसा, अध्यात्म तथा आचार शास्त्र को लिया जाएगा । प्रत्येक ग्रंथ की पांच प्रतियां, 31 दिसंबर 1969 तक पुरस्कार मंत्री, हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति, हमदर्द बिल्डिंग 10 दरियागंज, दिल्ली-6 के पते पर भेजी जानी चाहिए ।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

हिंदी के उच्च अध्ययन के लिए शिक्षा मंत्रालय की छात्रवृत्ति योजना :

भारत सरकार ने निर्णय किया है कि अहिंदी भाषी राज्यों के छात्रों को मैट्रिक से आगे हिंदी का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति देने की योजना 1969-70 में भी जारी रखी जाएगी । इस योजना के अंतर्गत छात्रवृत्तियों की कुलसंख्या 1000 है । इनमें से आंध्रप्रदेश के लिए 205, गुजरात के लिए 54, कश्मीर के लिए 9, असम के लिए 3, केरल के लिए 95, तमिलनाडु के लिए 190, महाराष्ट्र के लिए 104, मैसूर के लिए 133, उड़ीसा के लिए 46, पंजाब के लिए 28, पश्चिम बंगाल के लिए 92, मणिपुर के लिए 2, त्रिपुरा के लिए 3 छात्रवृत्तियां होंगी । अंडमान और निकोबार, चंडीगढ़, दादरा,और नागरहवेली, गोवा, दमण और दीव, उत्तर पूर्व सीमांत क्षेत्र तथा पांडिचेरी के लिए एक-एक छात्रवृत्ति निर्धारित की गई है ।

इन छात्रवृत्तियों के लिए आवेदन पत्र और विस्तृत जानकारी राज्यों के शिक्षा निदेशालयों से प्राप्त होगी । आवेदन पत्र देने की अंतिम तारीख की सूचना भी छात्रों को राज्यों के शिक्षा निदेशालयों से प्राप्त हो सकेगी ।

भारतीय भाषाओं के विकास के लिए केंद्रीय भाषा संस्थान की स्थापना :

राज्यों के शिक्षा निदेशकों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने बंगलौर में बताया कि केंद्रीय सरकार ने सभी भारतीय भाषाओं के प्रचार एवं विकास के लिए एक केन्द्रीय भाषा संस्थान की स्थापना करने का निर्णय किया है । इस अवसर पर उन्होंने सुझाव दिया कि माध्यमिक स्तर पर भाषा प्रयोगशालाएं स्थापित की जाएं जिनमें मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाएं सीखने के सरल तरीकों की भी खोज की जाए ।

हिंदी समिति के निर्णय :

सूचना और प्रसारण मंत्रालय की हिंदी समिति की बैठक 12 और 14 मई को नई दिल्ली में हुई । सूचना तथा प्रसारण और संचार मंत्री श्री सत्य नारायण सिंह ने बैठक की अध्यक्षता की । बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए :-

(1) आकाशवाणी के शब्दकोश को उसके वर्तमान रूप में शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाए तथा उसके संशोधन और परिवर्धन का काम बाद में किया जाए ।

(2) मंत्रालय के "हिंदी यूनिट" को आत्मनिर्भर बनाने के लिए योग्य कर्मचारियों और अधिकारियों की संख्या में वृद्धि की जाए ।

(3) ऐसी व्यवस्था की जाए कि संसद की जो कार्रवाई हिंदी में होती है, उसकी रिपोर्टिंग मूल रूप में हिंदी में ही की जा सके ।

(4) आकाशवाणी के "साहित्य समारोह" और "सर्वभाषा कवि सभा" जैसे कार्यक्रमों में, विभिन्न भारतीय भाषाओं के कार्यक्रमों को, पहले की तरह, हिंदी रूपांतर सहित प्रस्तुत किया जाए ।

(5) "सामयिकी" कार्यक्रम के लिए वार्ताएं मूलरूप से हिंदी में लिखाई जाएं ।

(6) विभिन्न भाषाओं के जो कार्यक्रम हिंदी के माध्यम से अथवा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से प्रसारित होते हैं, उन में से चुने हुए कार्यक्रमों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाए ।

केन्द्रीय भाषा संस्थान का कार्यक्रम :

केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने श्रीनगर में पत्रकारों को बताया कि केन्द्रीय भाषा संस्थान शीघ्र ही मैसूर में काम आरंभ कर देगा । उन्होंने बताया कि प्रत्येक भारतीय भाषा की उत्तम पुस्तकों का अनुवाद अन्य भाषाओं में कराने का एक कार्यक्रम भी शुरू किया जा रहा है । फिलहाल, प्रत्येक भाषा की दस पुस्तकें चुनी जाएंगी ।

पत्राचार पाठ्यक्रम का नया सत्र :

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में पत्राचार द्वारा हिंदी शिक्षण के पाठ्यक्रम का दूसरा सत्र सितम्बर, 1969 से शुरु हो रहा है । इसमें विदेशों में रहने वाले लोग भी शामिल हो सकते हैं । पाठ्यक्रम में शामिल होने वाले छात्रों को हर पखवाड़े डाक से पाठ्य-साम्ग्री भेजी जाएगी । पढ़ाई का माध्यम अंग्रेज़ी होगा ।

"हिंदी प्रवेश" पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष होगी । दूसरे वर्ष के अंत में इसकी परीक्षा देश-विदेश के विभिन्न केन्द्रों में होगी । विस्तृत जानकारी के लिए सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग, वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 को लिखें ।

बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें आमंत्रित :

भारत सरकार ने सातवीं अखिल भारतीय बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों से पुस्तकें। पांडुलिपियां आमंत्रित की हैं । पुस्तकें खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता के विभिन्न पहलुओं पर लिखी जानी चाहिए । पांडुलिपियां 10 हजार शब्दों या 40 पृष्ठों तक होनी चाहिए । मुद्रित पुस्तकें समुचित चित्रों से सज्जित होनी चाहिए । प्रत्येक प्रविष्टी के लिए 3 रुपये प्रविष्टी शुल्क है । पुस्तकें, असमिया, बंगला, गुजराती, गुरुमुखी, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू भाषाओं में भेजी जा सकती हैं । प्रतियोगिता में एक-एक हजार रुपये के 21 पुरस्कार दिए जाएंगे । पुस्तकें। पांडुलिपियां भेजने की अंतिम तारीख 15 सितंबर 1969 है । विशेष जानकारी के लिए निदेशक, बुनियादी साहित्य, खाद्य कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय (सामुदायिक विकास और सहकारिता विभाग), कृषि भवन, नई दिल्ली को पत्र लिखें ।

* राजधानी में

- दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने पत्रकारों को बताया है कि इस वर्ष 19,388 विद्यार्थियों ने कला विषयों में प्रवेश के लिए नाम रजिस्टर कराया है । इनमें से 17,509 विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हिंदी के माध्यम से मिली है । इस वर्ष हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में 193 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में पास हुए हैं । इसकी तुलना में अंग्रेजी माध्यम वाले 45 विद्यार्थी और बंगला माध्यम वाले 11 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में आए हैं । इसी प्रकार बी०काम पाठ्यक्रम के लिए जिन 7,958 विद्यार्थियों ने नाम रजिस्टर कराए हैं, उनमें से 6,379 का माध्यम हिंदी था । प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालों में 61 का माध्यम हिंदी तथा केवल आठ का माध्यम अंग्रेज़ी था ।

- नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री केदारनाथ साहनी ने समिति की बैठक में कहा है कि निगम के जो अधिकारी हिंदी में काम नहीं करेंगे, उन्हें निगम छोड़ देना पड़ेगा ।

- हिंदी की परीक्षाएं पास करने वाले पुनर्वास विभाग के अहिंदी भाषी कर्मचारियों का प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक वितरण समारोह नई दिल्ली में 26 जून को सम्पन्न हुआ । रोज़गार और पुनर्वास मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री भगवत झा आज़ाद ने मुख्य अतिथि के रूप में भाषण देते हुए कहा कि देश की आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रगति केवल भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही संभव है । हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर भी समारोह में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

- भारतीय साहित्य संस्थान के तत्वावधान में 17 जून को नई दिल्ली में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें राजधानी के अनेक कवियों ने भाग लिया । श्री क्षेमचंद्र सुमन ने कवि गोष्ठी की अध्यक्षता की ।

- गांधी शताब्दी समिति की ओर से राज्यों के भाषा सचिवों की एक बैठक 17 जून को नई दिल्ली में हुई । उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने बैठक में भाषण देते हुए कहा : यदि देश को गांधी के रास्ते पर चलाना है, तो गांधी शताब्दी वर्ष का सारा काम-काज राष्ट्रभाषा हिंदी में किया जाना चाहिए । राष्ट्रभाषा को अपनाए बिना गांधी शताब्दी समिति विशेष सफल नहीं हो सकती ।

दिल्ली प्रशासन के काम-काज में हिंदी के उपयोग की प्रगति :

दिल्ली प्रशासन के 36,000 कर्मचारियों में से अधिकांश हिंदी जानते हैं और हिंदी में काम कर सकते हैं । केवल 179 कर्मचारी हिंदी नहीं जानते हैं । इनमें से 123 ने हिंदी सीखने के लिए 6 महीने की, 51 ने एक साल की और 5 ने 3 महीने की छूट मांगी है । 1967 में हिंदी स्टेनोग्राफरों की संख्या 30 थी । अब यह संख्या 115 हो गई है और जुलाई के अंत तक आशुलिपि का पाठ्यक्रम पूरा होने पर यह संख्या 300 हो जाएगी ।

"रसलीन ग्रंथावली" का उद्घाटन :

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा तैयार की गई "रसलीन ग्रंथावली" की प्रथमावृत्ति का प्रकाशनोद्घाटन 30 जून, 1969 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में हुआ । कार्यवाहक राष्ट्रपति डा० वराह गिरि वेंकट गिरि ने पुस्तक का उद्घाटन किया । "रसलीन ग्रंथावली" में सैयद गुलाम नबी "रसलीन" बिलग्रामी की रचनाएं संकलित हैं । पुस्तक का सम्पादन श्री सुधाकर पांडेय ने किया है ।

देवनागरी में "टेलेक्स" का प्रयोग :

समाचार पत्रों में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार संचार मंत्रालय ने देवनागरी में "टेलेक्स" का प्रयोग करने का निर्णय किया है । फिलहाल, यह सुविधा दिल्ली, लखनऊ, पटना और जयपुर को उपलब्ध होगी । बाद में अन्य शहरों में इसका विस्तार किया जाएगा । अभी तक भारत के विभिन्न नगरों में केवल अंग्रेजी के "टेलेक्स" ही व्यवहार में लाए जाते थे ।

* प्रादेशिक अंचल में

असम साहित्य सभा के बरपेटा अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए श्री आनंद चंद्र बरुआ ने कहा : हर एक राज्य में उसकी अपनी भाषा को सर्वोच्च स्थान देने के बाद अखिल भारतीय स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए हिंदी को अपनाना ही उचित होगा । हिंदी भाषा के प्रति द्वेष की भावना का अर्थ है राष्ट्रीय एकता में बाधा डालना ।

- उत्तर प्रदेश सरकार की एक योजना के अंतर्गत पिछले चार वर्षों से मेरठ के सरकारी इंटर कालेज में तमिल और तेलुगु के वर्ग सुचारु रूप से चल रहे हैं । 25 मई को कालेज के प्रिंसिपल श्री ब्रह्म स्वरूप गुप्त की अध्यक्षता में एक समारोह हुआ, जिसमें तमिल और तेलुगु में डिप्लोमा परीक्षा पास करने वाले छात्रों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए ।

- नैनीताल के देवीसिंह विष्ट राजकीय महाविद्यालय में आयोजित एक समारोह में भाषण देते हुए उत्तरप्रदेश के नियोजन मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के लिए पृथक विश्वविद्यालय का कार्यारंभ 1970-71 के शिक्षा सत्र से आरंभ हो जाएगा । उन्होंने कहा विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आवश्यक विधेयक इस वर्ष के अंत तक विधान सभा में प्रस्तुत कर दिया जाएगा ।

- गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, के तत्वावधान में आंध्र, मैसूर और केरल के केंद्रीय विद्यालयों के अहिंदी भाषी अध्यापकों का ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । उप प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने पाठ्यक्रम के समापन-समारोह में भाषण करते हुए कहा : हिंदी का समुचित विकास होने से देश की भाषा समस्या हल हो सकती है । श्री देसाई ने पाठ्यक्रम में सम्मिलित 33 अध्यापकों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए ।

- पश्चिम रेलवे के अधिकारियों और कर्मचारियों की ओर से रतलाम मंडल कार्यालय में 12 और 13 जून को एक हिंदी उत्सव का आयोजन किया गया । समारोह का उद्घाटन विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा0 शिवमंगल

सरकार, राजस्थान सरकार तथा केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के हिंदी प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त टिप्पण और आलेखन की समस्याओं पर एक परिसंवाद तथा एक कवि गोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद समन्वय समिति, बम्बई की ओर से हिंदी सीखने वालों के लिए एक पत्राचार पाठ्यक्रम शुरु किया गया है। इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन 7 जून, 1969 को, केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने किया। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के निदेशक श्री ईश्वर चंद्र सरीन ने समारोह की अध्यक्षता की। हिंदी निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम की प्रगति की चर्चा करते हुए प्रो० चंद्रहासन ने कहा : अब तक 2,000 व्यक्ति इस योजना से लाभ उठा चुके हैं। इनमें से 200 छात्र कलकत्ता के और 200 मद्रास के हैं। विदेशों के अनेक व्यक्ति भी इस योजना से लाभ उठा रहे हैं।

- राजस्थान सरकार ने, हिंदी में मानक पुस्तकों के निर्माण के लिए एक स्वायत्त बोर्ड की स्थापना की है। इस संस्थान का नाम 'ज्ञान-विज्ञान हिंदी रचना संस्थान' रखा गया है। राज्य के शिक्षा मंत्री श्री शिव चरण माथुर बोर्ड के अध्यक्ष होंगे। राजस्थान के सभी विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों को इस संस्था का सदस्य बनाया गया है। केन्द्रीय सरकार ने मानक पुस्तकों के निर्माण के लिए राज्य को एक करोड़ रुपया स्वीकृत किया है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, द्वारा पुस्तकें आमंत्रित :

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (राजस्थान) अजमेर ने अनिवार्य हिंदी और विशेष हिंदी विषयों के लिए पाठ्य पुस्तकें आमंत्रित की हैं। पुस्तकें बोर्ड के सचिव के पास 15 नवंबर 1969 तक पहुंच जानी चाहिए। विस्तृत जानकारी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, से प्राप्त की जा सकती है।

शिक्षा विभाग (राजस्थान) की नवसाक्षर साहित्य प्रतियोगिता :

राजस्थान शिक्षा विभाग, बीकानेर, द्वारा नवसाक्षरोपयोगी हिंदी पुस्तकों की 12वीं पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए पांडुलिपियां।पुस्तकें आमंत्रित की गई हैं। पुस्तकें भेजने की अंतिम तारीख 31 दिसंबर 1969 है। विशेष जानकारी के लिए उप निदेशक, समाज शिक्षा (राजस्थान), बीकानेर से पत्र-व्यवहार करें।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं (अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, जापानी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) में प्रकाशित होता है। प्रति मास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए हिन्दी संस्करण का वार्षिक चंदा (11 अंक) 9-50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10-50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चेक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें।

0 नए प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित मानक ग्रंथ :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने, विश्वविद्यालय स्तर के मानक ग्रंथों की योजना के अंतर्गत अब तक लगभग 150 पुस्तकें और 20 शब्दावलियां तैयार की हैं। "हिंदी समाचार जगत" के सितंबर 1968 अंक में कुछ पुस्तकों तथा शब्दावलियों की सूची प्रकाशित की गई थी। अन्य पुस्तकों की सूची नीचे दी जा रही है :-

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	मूल्य (रुपये)
चिकित्सा और मानव	रिशी काल्डर	आयुर्विज्ञान	7-70
डा0 राबर्ट कोख	वर्नर क्वेडन	,,	5-10
माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम	मैक्यीश	,,	4-00
पीड़ा हीन प्रसव	बेल्वॉव्स्की	,,	10-00
औद्योगिक इलेक्ट्रानिकी के सिद्धांत और प्रयोग	कीन्स और वार्श	इंजीनियरी	7-00
बुनियादी नौशिल्प	के0सी0 बौमस्बी	,,	-
कृषि के हानिकारक कीट	आनंद स्वरूप श्रीवास्तव	कृषि	4-00
अवकलन गणित	शांतिनारायण	गणित	8-65
गति विज्ञान भाग-1	ए0एस0 रैम्से	,,	7-50
गति विज्ञान भाग-2	,,	,,	8-85
शुद्ध घन ज्यामिती प्रवेशिका	जी0एस0 महाजनी	,,	4-15
समाकलन गणित	शांतिनारायण	,,	6-55
समीकरण सिद्धांत	डा0 श्रीराम सिन्हा	,,	5-35
प्राथमिक संख्या सिद्धांत	प्रो0 जे0पी0 उस्पेन्स्की	,,	-
शिक्षण उसकी सामग्री और प्रश्न सिद्धांत	टी0 पर्सी नुन	शिक्षा	

कशेरुकी प्राणियों की संरचना तथा परिवर्धन भाग-1	एडविन एस0 गुडरिच	जीव-विज्ञान	16-35
,, भाग-2	,,	,,	11-00
जाति वर्गों का विकास	चार्ल्स डार्विन	,,	12-50
जीवन की कहानी	रतन सिंह गिल	,,	4-35
धरती और मानव	शिवतोष दास	भूगोल	8-85
वनस्पति भूगोल	डा0 वी0एस0 वैच	,,	3-75
अर्धचालक और उनके उपयोग	ए0 एफ0 योफी	,,	3-75
अश्रव्य ध्वनियाँ	कुइरयावत्सेव	,,	4-80
उल्काएं	वी0 फेडिस्की	,,	2-60
ऊष्मा और ऊष्मागतिकी	डा0 वर्मा तथा डा0 तिवारी	,,	10-00
दूरीक्षण के सिद्धांत	आर0 बी0 डोम	,,	6-50
द्रव्य के सामान्य गुण	सिंह, वर्मा तथा राय	,,	8-00
ध्वनि विज्ञान	ललित किशोर सिंह	,,	7-00
ध्वनि विज्ञान	वुड	,,	14-60
प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग	मिचलसन	,,	4-90
प्रकाशिकी	गुप्त तथा राय	,,	10-00
रहस्यमय विश्व	जेम्स जीन्स	,,	2-80
विद्युत और चुम्बकत्व-1	गुप्त तथा तिवारी	,,	4-50
,, -2	,,	,,	11-00
समस्थानिकों के संसार में	वी0 मैजन्त्सी	,,	2-90
कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड	फूलदेवसहाय वर्मा	रसायन	4-85

सामान्य रसायन	एल0 पालिंग	रसायन	22-00
दर्शन के सौ वर्ष	जान पासमोर	दर्शन	15-00
भाषा सत्य और तर्कशास्त्र	अल्फ्रेड जूल्स आयर	,,	2-95
मानव बुद्धि संबंधी विवेचन	डेविड ह्यूम	,,	3-50
शुद्ध बुद्धि मीमांसा	कांट	,,	9-00
आधुनिक मनुष्य	एच0 डब्ल्यू0 हावेल	,,	8-25
संस्कृति	बी0 मलिनोवोस्की	,,	2-40
अर्थशास्त्र का स्वरूप और महत्व	एल0 राबिन्स	अर्थशास्त्र	3-87
कराधान - एक सैद्धांतिक विवेचन	एल0 एस0 नाथूरामका	,,	5-00
काम धंधा - ब्याज और मुद्रा का सामान्य सिद्धांत	कीन्ज़	,,	7-00
कीन्ज़ गाइड	एल्विन एच0 हैन्सन	,,	5-70
जनसंख्या	इआन बोवेन	,,	6-00
द्रव्य, व्यापार और विनियोग	जी0डी0एच0 कोले	,,	15-00
पूर्ति और मांग	हर्बर्ट हेंडरसन	,,	3-60
भारत की वित्तीय शासन-व्यवस्था	हरिगोपाल परांजपे	,,	8-50
मूल्य और पूंजी	हिक्स	,,	9-00
राज्य की अर्थव्यवस्था और कर सिद्धांत	रिकार्डो	,,	7-50
समाजसेवा का क्षेत्र भाग-1	आर्थर ई0 फिन्क तथा अन्य	समाज सेवा	9-00
,, ,, ,, ,, भाग-2	,,	,,	8-50

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar

9 — 1 — '10

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3

अंक 11

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या आर एन 12817/66

जय हिंदी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 जुलाई 1969 अंक 11

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

- भारत सरकार में
- पादेशिक अंचल में
- विदेशों में
- राजधानी में
- विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

गांधीजी ने कहा था -

पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा जो हम कर सकते हैं, वह यह कि हम देशी भाषाओं को अपनाएं, हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसके स्वाभाविक पद पर पुन: प्रतिष्ठित करें और सभी प्रांत अपना-अपना समस्त कार्य अपनी देशी भाषाओं में तथा राष्ट्र का कार्य हिंदी में प्रारंभ कर दें ।...

(देखिए पृष्ठ 4)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, वैस्ट ब्लाक 7,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम

गांधी जी ने कहा था -

समाज की हम जो सब से बड़ी सेवा कर सकते हैं, वह यह है कि हमने अंग्रेजी की शिक्षा के प्रति जो अंधविश्वासपूर्ण सम्मान करना सीखा है उससे स्वयं मुक्त हों और समाज को मुक्त करें । अंग्रेजी हमारे स्कूलों तथा हमारे कालेजों में शिक्षा का माध्यम है । यह देश की अंतरभाषा बनती जा रही है । हमारे सर्वोत्तम विचार इसी में व्यक्त किए जाते हैं । लार्ड चैम्सफोर्ड ने यह आशा व्यक्त की है कि अंग्रेजी कुछ ही दिनों में उच्च परिवारों की मातृभाषा बन जाएगी । अंग्रेजी प्रशिक्षण के बारे में इस प्रकार के विश्वास ने हमें गुलाम बना दिया है । इसने हमें सच्ची राष्ट्रीय सेवा के अयोग्य बना दिया है । यदि हम स्वभाव से बाध्य न होते, तो हम यह अवश्य ही देख सकते थे कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने के कारण हमारी प्रतिभा एकांतिक हो गई है और हम जनता से दूर जा खड़े हैं । इससे राष्ट्र का सर्वोत्तम मस्तिष्क निष्क्रिय होगया है और जनता को नये उपलब्ध विचारों का लाभ नहीं मिल पाया । हमने ये पिछले 60 वर्ष विचित्र शब्दों तथा उनके उच्चारणों को सीखने में ही व्यतीत कर दिए हैं, तथ्यों को आत्मसात् नहीं किया । हमें अपने माता-पिताओं से जो शिक्षा मिली थी, उसके आधार पर हमने नया निर्माण नहीं किया है, बल्कि उस शिक्षा को ही लगभग भुला दिया है । इतिहास में इस (मूर्खता) की तुलना नहीं है । यह एक दारुण राष्ट्रीय विपत्ति है । पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम इस स्थिति से पीछे हटें, देशी भाषाओं को अपनाएं, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसके स्वाभाविक पद पर पुनः प्रतिष्ठित करें और सभी प्रांत अपना-अपना समस्त कार्य अपनी देशी भाषाओं में तथा राष्ट्र का कार्य हिंदी में प्रारंभ कर दें । हमें तब तक विश्राम नहीं लेना चाहिए जब तक हमारे स्कूलों और कालेजों में हमें देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाती । हमारे लिए अपने अंग्रेज मित्रों के निमित्त भी अंग्रेजी में बोलना आवश्यक

नहीं होना चाहिए । ऐसा दिन अवश्य ही जल्दी आना चाहिए, जब कि हमारी विधान सभाओं में राष्ट्रीय मामलों पर देशी भाषाओं में या हिन्दी में जहां जो भी उपयुक्त हो, बहस की जाएगी । अब तक तो जन-साधारण उन की कार्रवाई से अपरिचित हो रहे हैं ।

(अखिल भारतीय समाज सेवा सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन में 31-12-1917 को दिए गए भाषण से उद्धृत)

द्रविड़ों और अन्य भारतीयों के बीच लगभग न पटने वाली खाई पड़ गई है । निश्चय ही हिंदी भाषा इसे पाटने वाला छोटे से छोटा और कारगर सेतु है । अंग्रेजी कभी उसका स्थान नहीं ले सकती । जब सुसंस्कृत लोगों की साधारण भाषा हिंदी हो जाएगी, तब शीघ्र ही हिंदी का शब्द-भंडार आम जनता में फैल जाएगा । हिंदी में कोई ऐसी अवर्णनीय वस्तु है जिससे वह सीखने में सबसे आसान होती है । और कारण चाहे जो हो, हिंदी व्याकरण के साथ जितनी छूट ली जा सकती है, उतनी मैंने और किसी भाषा के व्याकरण के साथ ली जाती नहीं देखी । परिणामस्वरूप हिंदी सीखने में मात्र स्मरण-शक्ति का ही काम है । इसीलिए मैं कहता हूं कि राष्ट्रीय काम करने के लिए हिंदी का ज्ञान नितांत आवश्यक है ।

(श्री हनुमंतराव के नाम गांधीजी का पत्र - महादेवी देसाई की हस्तलिखित डायरी से उद्धृत)

तमिलनाड सरकार तमिल को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कृतसंकल्प

तमिलनाड सरकार ने एक आदेश जारी करके कालेजों के प्रिंसिपलों से कहा है कि वे तमिलभाषी छात्रों को अंग्रेजी माध्यम वाले कालेजों में प्रवेश न दें । जिन छात्रों ने हाई स्कूल तक की शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त की है, वे भी कालेजों में अंग्रेजी माध्यम की मांग अधिकार के रूप में नहीं कर सकते । राज्य सरकार ने यह कदम इसलिए उठाया है, ताकि तमिल को जल्दी से जल्दी कालेज स्तर की शिक्षा का माध्यम बनाया जा सके ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण भारतीय भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ने इस वर्ष से दक्षिण भारतीय भाषाओं के शिक्षण के लिए कक्षाएं चलाने का निश्चय किया है । यह कार्यक्रम गांधी शताब्दी समारोह तथा सभा की रजत-जयंती के एक अंग के रूप में शुरू किया जाएगा । कक्षाएं उत्तर और दक्षिण भारत के अनेक केन्द्रों में चलाई जाएंगी । परीक्षाओं के नाम प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, कोविद और दक्षिण भाषा विशारद होंगे । शिक्षा का माध्यम मुख्यतः हिंदी होगा, किंतु आवश्यक होने पर अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से भी भाषा सिखाई जा सकेगी ।

47वां बंगला साहित्य सम्मेलन

अखिल भारतीय बंगला साहित्य सम्मेलन का 47वां अधिवेशन श्रीनगर में सम्पन्न हुआ । जम्मू व कश्मीर के राज्यपाल श्री भगवान सहाय ने अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं, विशेष कर उत्तर भारत की भाषाओं के लिए समान लिपि होनी चाहिए जिससे लोगों को दूसरी भाषाओं का साहित्य समझने में सुविधा हो । अधिवेशन में बंगला के पांच सौ साहित्यकारों ने भाग लिया ।

प्रेमचंद जयंती समारोह

सचिवालय हिंदी परिषद, लखनऊ शाखा द्वारा आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उत्तरप्रदेश के जेलमंत्री श्री अजित प्रताप सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के निर्माताओं में प्रेमचंद का स्थान मूर्धन्य है । महान् उपन्यासकार को श्रद्धांजलि देते हुए उन्होंने कहा : प्रेमचंद जी शोषित और प्रताड़ित मानवता के हित की रक्षा के लिए सदा संघर्ष करते रहे और इस प्रकार उन्होंने समाजवादी समाज की स्थापना के लिए वातावरण तैयार किया ।

0 हिंदी

भारत सरकार में

भारतीय भाषा संस्थान का उद्घाटन

केंद्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने 17 जुलाई को बंगलौर में भारतीय भाषा संस्थान का उद्घाटन किया । मैसूर विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थापित इस संस्थान का उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाएं बोलने वालों में भावात्मक एकता को प्रोत्साहन देना है । अपने भाषण में शिक्षा मंत्री ने कहा : सरकार ने भारतीय भाषाओं के विकास के लिए अनेक कदम उठाए हैं । प्रत्येक राज्य में भाषा संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं जो राज्य की भाषा के अध्ययन एवं विकास के लिए कार्य करेंगे । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने अनेक विषयों की तकनीकी शब्दावली के निर्माण का काम लगभग पूरा कर लिया है । इससे भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखने की गति तीव्र होगी । भाषा संस्थान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा मंत्री महोदय ने कहा : यह संस्थान भारतीय भाषाओं के चतुर्दिक विकास के लिए कार्य करेगा और साथ ही उन भाषाओं को सीखने के लिए ऐसे नवीन तरीकों की जांच करेगा जिनसे कम समय में शिक्षा पूरी की जा सकेगी और अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं को सीखने तथा विज्ञान, टैक्नालोजी आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिक समय मिल सकेगा ।

हिंदी में टैलेक्स सेवा का समारंभ

हिंदी में टैलेक्स सेवा के शुभारंभ के उपलक्ष्य में 8 जुलाई, 1969, को डाकतार भवन, नई दिल्ली, में एक समारोह का आयोजन किया गया । सूचना व प्रसारण और संचार मंत्री श्री सत्यनारायण सिंह ने टैलेक्स सेवा का उद्घाटन किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा : सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वर्णमाला प्रायः एक ही है, केवल लिपि का अंतर है । देवनागरी टैलीप्रिंटर का इस्तेमाल प्रायः

सभी भारतीय भाषाओं में संदेशों के आदान-प्रदान के लिए किया जा सकता है । बंगला, असमिया आदि भाषाओं में, जिनकी अपनी अलग लिपियां हैं, संदेशों को देवनागरी में लिप्यंतरण करके भेजा जा सकता है । इससे उनके समझने में कोई कठिनाई नहीं आएगी । फिलहाल दिल्ली, जयपुर, लखनऊ और पटना केन्द्रों में टैलेक्स सेवा उपलब्ध होगी । जैसे-जैसे दूसरे स्थानों से इसकी मांग आएगी, इसका विस्तार किया जाएगा ।

हिंदी टंकण और आशुलिपि में कुशलता के लिए पुरस्कार

भारत सरकार ने केंद्रीय सरकार के अराजपत्रित कर्मचारियों को हिंदी टंकण और आशुलिपि में विशेष कुशलता प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार देने का निर्णय किया है । ये पुरस्कार उन कर्मचारियों को दिए जाएंगे जो हिंदी टंकण में 97 प्रतिशत और हिंदी आशुलिपि में 95 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे ।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार की योजना

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने विदेशों में हिंदी के प्रचार की एक व्यापक योजना तैयार की है । इस योजना के अंतर्गत विदेशों में हिंदी कक्षाएं चलाने के लिए पूर्णकालिक और अंशकालिक हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति की जाएगी । विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी पढ़ाने के लिए तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी-अध्ययन-पीठ की स्थापना के लिए भारत के विद्वान् भेजे जाएंगे । इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में 25 लाख रुपये की व्यवस्था की गई है । अबतक विदेशों में हिंदी के प्रचार का काम भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की देखरेख में होता था, इस वर्ष से यह कार्य शिक्षा मंत्रालय की देखरेख में होगा ।

इस समय हिंदी के अध्ययन की सुविधाएं निम्नलिखित देशों में प्राप्त हैं : यूनाइटेड किंगडम, अमरीका, सोवियत रूस, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, बेल्जियम, डेनमार्क, **स्विटज़रलैंड**, हंगरी, रूमानिया, यूगोस्लाविया, स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड, गियाना, **ट्रिनिडाड**, केनिया, घाना, बेहरीन, अदन, ईरान, मारीशस, श्रीलंका, सिक्किम, नेपाल, फिजी, सिंगापुर, थाइलैंड, हांगकांग, चीन और जापान ।

* राजधानी में

- केन्द्रीय शिक्षा और युवक सेवा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने केन्द्रीय सलाहकार समिति की बैठक में बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संकल्प पर शिक्षा मंत्रालय एक विस्तृत स्पष्टीकरण तैयार कर रहा है । इसमें बताया जाएगा कि संकल्प की विभिन्न सिफारिशों को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए जा चुके हैं और भविष्य में क्या किया जाएगा ।
- भारत सरकार ने, राष्ट्रीय एकता परिषद की सिफारिशों के अनुसरण में शिक्षा शास्त्रियों की एक समिति गठित करने का निर्णय किया है । इस समिति में 40 शिक्षा शास्त्री, युवक तथा छात्र नेता शामिल किए जाएंगे । यह समिति विभिन्न समुदायों में एकता और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से पाठ्य-विवरणों और पाठ्य-पुस्तकों की जांच करेगी । सरकार ने राष्ट्रीय एकता की भावना को जन आंदोलन का रूप देने के उद्देश्य से प्रसिद्ध लेखकों की एक समिति गठित करने का भी निर्णय किया है । इस समिति में भारतीय भाषाओं के 28 प्रसिद्ध लेखक होंगे । इन दोनों समितियों के अध्यक्ष शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव होंगे ।
- प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा0 सुनीतिकुमार चैटर्जी को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है । यह स्थान डा0 ज़ाकिर हुसैन के निधन के कारण खाली हुआ था । आंध्र विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रोफेसर के0आर0 श्रीनिवास आयंगार को अकादेमी का उपाध्यक्ष चुना गया है ।

*·प्रादेशिक अंचल में

तमिलनाडु

- गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के दक्षिण क्षेत्र की ओर से हिंदी टंकण कला और आशुलिपि प्रशिक्षण सत्र में उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार वितरित करने के लिए 8 जुलाई को शास्त्री भवन, मद्रास में एक समारोह का आयोजन किया गया । समारोह की अध्यक्षता डा0 एन0 चंद्रकांत मुदलियार ने की । गृह मंत्रालय के उप सचिव श्री प्रेमनाथ घोर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । टंकण तथा आशुलिपि केन्द्र के प्रशिक्षक श्री विश्वनाथ ने केन्द्र की प्रगति का विवरण देते हुए कहा कि अब तक इस केन्द्र से 1033 कर्मचारी टंकण कला में तथा 77 कर्मचारी आशुलिपि परीक्षा में योग्यता प्राप्त कर चुके हैं ।

पश्चिम बंगाल

- बंगला के प्रमुख लेखक स्व0 बंकिम चंद्र चैटर्जी की जयंती के अवसर पर उनके जन्मस्थान नैहट्टी में एक समारोह का आयोजन किया गया । रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति डा0 रमा चौधरी ने समारोह की अध्यक्षता की । समारोह के विभिन्न वक्ताओं ने सरकार से अपील की कि बंकिम बाबू के घर को सरकारी अधिकार में ले लिया जाए और उसकी सुरक्षा की व्यवस्था की जाए ।

पंजाब

- पंजाब सरकार ने राज्य के सभी सरकारी स्कूलों में 'सच्चर फार्मूला और पेप्सू फार्मूला' रद्द करके त्रिभाषा फार्मूला लागू कर दिया है । यह निर्णय मंत्रिमंडल की 2 जुलाई की बैठक को लिया गया । इसके अनुसार पंजाबी पहली कक्षा से ही अनिवार्य भाषा होगी और सरकारी स्कूलों में सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम पंजाबी रहेगा । हिंदी चौथी कक्षा से और अंग्रेजी छठी कक्षा से शुरू होगी । नया भाषा फार्मूला तत्काल लागू हो जाएगा । जो बच्चे सच्चर फार्मूले के अंतर्गत हिंदी लेकर दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ रहे हैं उन्हें चौथी कक्षा से पंजाबी के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी ।

- पंजाब प्रदेश कांग्रेस और विधायक दल की कार्य समितियों ने एक प्रस्ताव पास करके राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि पंजाब के सभी स्कूल-कालेजों में सभी स्तरों पर हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाए और शिक्षा का माध्यम पंजाबी हो। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि प्राइवेट स्कूलों को शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने की छूट दी जाए।

हरियाणा

- हरियाणा के मुख्य संसदीय सचिव ने एक सभा में भाषण देते हुए यह घोषणा की कि राज्य के स्कूलों में सच्चर फार्मूला लागू करने का निश्चय किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि हरियाणा में सरकारी अनुदान प्राप्त निजी स्कूलों को शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने की पूरी स्वतंत्रता होगी।

उत्तरप्रदेश

- शिक्षा मंत्री श्री रामजी लाल सहाय ने विधान सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय स्तर की विभिन्न विषयों पर 29 पुस्तकें तैयार की जा चुकी हैं। इनमें कुछ मौलिक हैं और कुछ अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए राज्य में एक स्वायत्त पाठ्य-पुस्तक निगम की स्थापना की जा रही है।
- कानपुर नगर महापालिका की ओर से हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी तथा उर्दू के प्रसिद्ध कवि हजरत नशूर वाहिदी का नागरिक अभिनंदन किया गया।

राजस्थान

- राजस्थान विद्यापीठ के तत्वावधान में आयोजित एक समारोह में भाषण करते हुए केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने इस बात पर जोर दिया कि देश में भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखें।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग ने, स्टेट इन्स्टीट्यूट आफ लैंग्वेज़ज के तत्वावधान में सन् 1964 से 1969 तक प्रकाशित अथवा लिखित सर्वश्रेष्ठ तीन पुस्तकों पर 700 रुपए 500 रुपये और 300 रुपये के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार देने का निश्चय किया है। प्रकाशित पुस्तक की छः प्रतियां अथवा पांडुलिपि की तीन प्रतियां शिक्षा निदेशक, हिमाचल प्रदेश, शिमला के पास 30 सितंबर 1969 तक पहुंच जानी चाहिए। पुरस्कारों के लिए निम्नलिखित तीन वर्गों की पुस्तकों पर विचार होगा :

(1) हिमाचली संस्कृति पर आधारित पुस्तकें जो ग्यारह वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी हों।

(2) हिमाचल प्रदेश के इतिहास एवं संस्कृति पर आधारित पुस्तकें जिनमें उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, जीवनवृत्त एवं यात्रा-विवरण सम्मिलित हैं।

(3) हिमाचली भाषा एवं साहित्य के विकास तथा अनुसंधान पर आधारित पुस्तकें। पुस्तकों की भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होनी चाहिए, परन्तु प्रदेश की किसी बोली की, देवनागरी लिपि में लिखी गई पुस्तकों पर भी पुरस्कार के लिए विचार किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश के निवासी ही भाग ले सकते हैं।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पैनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, जापानी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है। प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थानों के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9-50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10-50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें।

विश्वविद्यालयों में

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण की प्रगति

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण की समिति तथा समन्वय समिति की बैठक जयपुर में 14 जुलाई से 16 जुलाई तक हुई। पांच हिन्दी भाषी राज्यों के प्रतिनिधियों ने उसमें भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की। राज्य मंत्री महोदय ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय स्तर की हिंदी पुस्तकों के निर्माण के लिए पांच हिंदी भाषी राज्यों में स्वायत्त बोर्ड 31 अगस्त तक काम करने लग जाएंगे। इसके बाद विश्वविद्यालयीन शिक्षा के लिए हिंदी पुस्तकों के निर्माण में कठिनाई नहीं होगी। बाद में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मंत्री महोदय ने कहा : इस समय मानविकी विषयों की 812 पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं।

1968-69 में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए बिहार तथा राजस्थान को पांच-पांच लाख रुपये, उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा को दो-दो लाख रुपये और मध्यप्रदेश को एक लाख रुपये दिए गए थे। चालू वित्त वर्ष में प्रत्येक हिंदी भाषी राज्य को चार-चार लाख रुपये दिए गए। चौथी योजना की अवधि में प्रत्येक राज्य को एक-एक करोड़ रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा।

हिंदी भाषी राज्यों के उपकुलपतियों की स्थायी समिति द्वारा एक पैनेल ने 396 पुस्तकों को मौलिक लेखन के लिए और 2062 पुस्तकों को अनुवाद के लिये स्वीकार किया है। पैनेल ने वर्तमान हिंदी साहित्य का सर्वेक्षण करने के बाद 812 पुस्तकों को उच्चस्तरीय घोषित करते हुए इन्हें स्वीकार करने का सुझाव दिया है।

* विदेशों में

अमरीका में गालिब शताब्दी

अमरीका की कई संस्थाओं ने गालिब शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठियों - मुशायरों और कवि की रचनाओं के अंग्रेजी अनुवादों की अनेक योजनाएं तैयार की हैं । एशिया सोसायटी आफ न्यूयार्क की अनुषंगी संस्था एशियन लिट्रेचर प्रोग्राम ने गालिब की रचनाओं और उनके पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनाई है । पत्रों का अनुवाद बोस्टन विश्वविघालय में विश्वधर्म के प्राध्यापक डा0 सऊद रहबर कर रहे हैं । पत्रों के अनुवाद के साथ पुस्तक में एक लंबी भूमिका भी रहेगी, जिसमें गालिब के व्यक्तित्व की एक झांकी भी प्रस्तुत की जाएगी । कविताओं का अनुवाद कार्य अमरीका के सात प्रमुख कवियों ने सम्पन्न किया है । संस्था की निदेशक श्रीमती बोनी क्राउन के अनुसार ये कवि गालिब के कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित हैं । अनुवाद-प्रकाशन के अतिरिक्त हावर्ड विश्वविघालय के फाग आर्ट म्यूजियम ने गालिब से संबंधित रचनाओं, कविताओं तथा चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया है ।

सोवियत संघ में गालिब की लोकप्रियता

सोवियत संघ में गालिब शताब्दी समारोह बड़े पैमाने पर मनाया गया । मास्को, ताशकंद, दुशान्बे तथा अन्य कई नगरों में अकादमी सत्र तथा विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया ।

मिर्जा गालिब की रचनाओं के प्रसिद्ध विद्वान् श्री मलिकराम ने, जो शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने के लिए सोवियत संघ गए थे, बताया कि सोवियत संघ में दीवाने गालिब की तीन प्राचीन पांडुलिपियां हैं । एक पांडुलिपि 1321 हिजरी की है, एक 1322 हिजरी की और तीसरी अपूर्ण है । उन्होंने कहा कि सोवियत विद्वानों को गालिब के विषय में गहरी जानकारी है ।

शुक सप्तती का जर्मन में अनुवाद

संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध रचना 'शुक सप्तती' का जर्मन भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ है। ग्रंथ का अनुवाद पूर्वी जर्मनी के विद्वान् प्रो0 वोल्फगांग मारगेनरॉट ने अनेक प्राचीन पांडुलिपियों के अध्ययन के बाद किया है। पुस्तक के क्लिष्ट प्रसंगों को स्पष्ट करने के लिए विस्तृत टिप्पणियां, शब्दार्थ तथा मुहावरों के अर्थ भी दिए गए हैं।

पांच मराठी कहानियों का जर्मन में अनुवाद

पूर्व और पश्चिम के विचारों के आदान-प्रदान के उद्देश्य से यूनेस्को ने एशियाई साहित्य के अनुवाद का एक कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी हाल ही में मराठी साहित्य की पांच कहानियों का जर्मन में अनुवाद किया गया है। अनुवादक हैं बम्बई विश्वविद्यालय के जर्मन विभाग के अध्यक्ष डा0 आर0जी0 परांजपे। पुस्तक की प्रस्तावना मैन्ज़ विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग के प्रो0 जार्ज बुद्रुश ने लिखी है।

ब्रिटेन में गालिब शताब्दी समारोह

उर्दू के महाकवि गालिब की स्मृति में, ब्रिटेन में गालिब शताब्दी समारोह आयोजित किए गए। समारोहों का शुभारंभ 11 जुलाई को एक मुशायरे से हुआ। यह मुशायरा डोमीनियन सिनेमा, साउथ हाल में आयोजित हुआ और उसमें लगभग 2000 दर्शक सम्मिलित हुए। इसमें प्रमुख भारतीय अभिनेताओं तथा शायरों ने भाग लिया।

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	मूल्य
अंतर्राष्ट्रीय विधि भाग 1	फ विंक	राजनीति	17-00
,, ,,	,,	,,	13-25
आधुनिक शासन प्रणालियां	कृष्णकांत मिश्र	,,	10-90
राज्य की दार्शनिक विचारधारा		,,	6-00
यूनानी राजनीति विचारधारा		,,	--
राष्ट्रों के मध्य राजनीति		,,	--
यूनानी राजनीति सिद्धांत		,,	--
भारतीय विदेश नीति के आधार		,,	--
आधुनिक राज्य		,,	--
सामाजिक मनोविज्ञान	वी0रु0वणीकरण	मनोविज्ञान	3-50
विकास मनोविज्ञान भाग 1	हालर्क	,,	7-65
,, ,, भाग 2	,,	,,	9-00
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	एम0एस0 शाह	मनोविज्ञान	--
चीनी पुनजागरण	हूशीह	इतिहास	2-25
जापान का इतिहास	के0एस0 लातूरेत	,,	7-25
पूर्व एशिया का आधुनिक इतिहास भाग-1	हैराल्ड एम0 विनाक	,,	8-50
भाग-2	,, ,,	,,	5-50
प्राचीन भारत में संघटित जीवन	डा0 आर0सी0 मजूमदार	,,	8-00
प्राचीन भारत का इतिहास	डा0 ओमप्रकाश	,,	11-75
भारतीय परंपरा	हुमायूं कबीर	,,	2-50
चीन का इतिहास	ली चीं तुंग	,,	--
ऐतिहासिक स्थानावली	वी0के0 माथुर	इतिहास	--

मंत्री मंडलीय शासन	लास्की	राजनीति	--

हिंदीतर भाषाओं के ग्रंथ

परिमित अंतर्कलन (गुजराती)	गुलाबभाई देसाई	गणित	6-75
प्राचीन भारत मां शिक्षण (गुजराती)	डा0 अल्तेकर	शिक्षा	7-75
उच्च प्रायोगिक भौतिकशास्त्र ,,	वर्सनोंधातथा फ्लिंट	भौतिकी	25-00
द्रव स्थिति विज्ञान ,,	ए0एस0 रैम्से	,,	7-50
समाजलक्षी तत्वज्ञाननी रूपरेखा ,,	जे0एम0 मैकेन्ज़ी	दर्शन	6-00
आर्थिक आयोजनानो सिद्धांत ,,	डब्ल्यू ए0 लुई	अर्थशास्त्र	3-75
आधुनिक जापान नो संक्षिप्त इतिहास ,,	जी0सी0 एलेन	,,	5-70
औद्योगिक कल्याणनो प्रवेशिका ,,	आर0आर0हाकिन्स	,,	7-00
केन्द्रीय बैंकिंग ,,	एम0एच0 काक	,,	7-50
आधुनिक बैंकिंग ,,	आर0एस0 सेयर्स	,,	6-25
जान मैनार्ड कीन्ज़ दा अर्थशास्त्र(पंजाबी)	डडली डिलाई	,,	14-00
राज्य बंधारणनो कायदानो परिचय(गुजराती)	डो0वी0 डिसी	राजनीति	12-50
राजनीति विज्ञान अते संगठन दे मूल सिद्धांत (पंजाबी)	गुरुमुख निहालसिंह	,,	10-25
विश्व सभ्यता दा इतिहास (पंजाबी)	जैम्स ई0 स्वेन	,,	10-00
राजनीति सिद्धांत दा इतिहास ,,	जी0एच0 सबीन	,,	--
इंगलैंडना बंधारणनो इतिहास(गुजराती)	के0सी0 देसाई	इतिहास	14-00
गुजरातनो प्राचीन इतिहास ,,	हरिप्रसाद जी0 शास्त्री	,,	9-00
मध्यपूर्व भारत का इतिहास (पंजाबी)	--	,,	--

गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाश्य 'भाषा' का

गांधी विशेषांक

संपोदन समिति : श्री रामधारी सिंह दिनकर
डा0 हरिवंशराय 'बच्चन', राय धर्मवीर थापर, श्री कान्ति चौधुरी
प्रो0 ए0 चन्द्रशेखर, श्री जीवन नायक (सचिव) संपादक श्रीमती तारा तिक्कू

---

1. भारतीय भाषाएं और गांधीजी : गांधीजी द्वारा विभिन्न भाषाओं के
   में दिए गए भाषणों तथा लेखों का संकलन ।
2. सुप्रसिद्ध कवि श्री भवानीप्रसाद मिश्र की ओजस्वी कविता ।
3. सर्वश्री डा0 जाकिर हुसैन, इन्दिरा गांधी, खान अब्दुल गफ्फार खां, सर्व
   राजगोपालाचारी, रामधारीसिंह 'दिनकर', वियोगी हरि तथा सेठ गोवि
   दास के गांधीजी के संबंध में लिखे अविस्मरणीय संस्मरण तथा लेख ।
4. हिंदी के प्रगतिशील कवि डा0 शिवमंगलसिंह 'सुमन' की काव्यमय श्रद्धांजलि
5. भारतीय कवियों की श्रद्धांजलि : गांधी के संबंध में लिखी चौदह भारतीय
   भाषाओं के कवियों की रचनाएं : हिंदी लिप्यंतरण सहित ।

प्रकाशन तिथि	सितम्बर, 1969
मूल्य	एक प्रति 3 रुपये
वार्षिक	10 रुपये अथवा 23 शिलिंग 4 पैंस या 3 डालर 60 सैंट
बिक्री व्यवस्था	प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दि

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
Haridwar

२-1-79

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3

अंक 11

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या आर एन 12817/66

जय हिंदी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 जुलाई 1969 अंक 11

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

- * भारत सरकार में
- * प्रादेशिक अंचल में
- * विदेशों में
- * राजधानी में
- * विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

गांधीजी ने कहा था -

पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा जो हम कर सकते हैं, वह यह कि हम देशी भाषाओं को अपनाएं, हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसके स्वाभाविक पद पर पुन: प्रतिष्ठित करें और सभी प्रांत अपना-अपना समस्त कार्य अपनी देशी भाषाओं में तथा राष्ट्र का कार्य हिंदी में प्रारंभ कर दें।..

(देखिए पृष्ठ 4).

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, वेस्ट ब्लाक 7,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम

गांधी जी ने कहा था -

समाज की हम जो सब से बड़ी सेवा कर सकते हैं, वह यह है कि हमने अंग्रेजी की शिक्षा के प्रति जो अंधविश्वासपूर्ण सम्मान करना सीखा है उससे स्वयं मुक्त हों और समाज को मुक्त करें। अंग्रेजी हमारे स्कूलों तथा हमारे कालेजों में शिक्षा का माध्यम है। यह देश की आंतरभाषा बनती जा रही है। हमारे सर्वोत्तम विचार इसी में व्यक्त किए जाते हैं। लार्ड चैम्सफोर्ड ने यह आशा व्यक्त की है कि अंग्रेजी कुछ ही दिनों में उच्च परिवारों की मातृभाषा बन जाएगी। अंग्रेजी प्रशिक्षण के बारे में इस प्रकार के विश्वास ने हमें गुलाम बना दिया है। इसने हमें सच्ची राष्ट्रीय सेवा के अयोग्य बना दिया है। यदि हम स्वभाव से बाध्य न होते, तो हम यह अवश्य ही देख सकते थे कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने के कारण हमारी प्रतिभा एकांतिक हो गई है और हम जनता से दूर जा खड़े हैं। इससे राष्ट्र का सर्वोत्तम मस्तिष्क निष्क्रिय होगया है और जनता को नये उपलब्ध विचारों का लाभ नहीं मिल पाया। हमने ये पिछले 60 वर्ष विचित्र शब्दों तथा उनके उच्चारणों को सीखने में ही व्यतीत कर दिए हैं, तथ्यों को आत्मसात् नहीं किया। हमें अपने माता-पिताओं से जो शिक्षा मिली थी, उसके आधार पर हमने नया निर्माण नहीं किया है, बल्कि उस शिक्षा को ही लगभग भुला दिया है। इतिहास में इस (मूर्खता) की तुलना नहीं है। यह एक दारुण राष्ट्रीय विपत्ति है। पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम इस स्थिति से पीछे हटें, देशी भाषाओं को अपनावें, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसके स्वाभाविक पद पर पुनः प्रतिष्ठित करें और सभी प्रांत अपना-अपना समस्त कार्य अपनी देशी भाषाओं में तथा राष्ट्र का कार्य हिंदी में प्रारंभ कर दें। हमें तब तक विश्राम नहीं लेना चाहिए जब तक हमारे स्कूलों और कालेजों में हमें देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाती। हमारे लिए अपने अंग्रेज मित्रों के निमित्त भी अंग्रेजी में बोलना आवश्यक

नहीं होना चाहिए । ऐसा दिन अवश्य ही जल्दी आना चाहिए, जब कि हमारी विधान सभाओं में राष्ट्रीय मामलों पर देशी भाषाओं में या हिन्दी में जहां भी उपयुक्त हो, बहस की जाएगी । अबतक तो जन-साधारण उन की कार्रवाई से अपरिचित ही रहे हैं ।

(अखिल भारतीय समाज सेवा सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन में 31-12-1917 को दिए गए भाषण से उद्धृत)

द्रविड़ों और अन्य भारतीयों के बीच लगभग न पटने वाली खाई पड़ गई है । निश्चय ही हिंदी भाषा इसे पाटने वाला छोटे से छोटा और कारगर सेतु है । अंग्रेजी कभी उसका स्थान नहीं ले सकती । जब सुसंस्कृत लोगों की साधारण भाषा हिंदी हो जाएगी, तब शीघ्र ही हिंदी का शब्द-भंडार आम जनता में फैल जाएगा । हिंदी में कोई ऐसी अवर्णनीय वस्तु है जिससे वह सीखने में सबसे आसान होती है । और कारण चाहे जो हो, हिंदी व्याकरण के साथ जितनी छूट ली जा सकती है, उतनी मैंने और किसी भाषा के व्याकरण के साथ ली जाती नहीं देखी । परिणामस्वरूप हिंदी सीखने में मात्र स्मरण-शक्ति का ही काम है । इसीलिए मैं कहता हूं कि राष्ट्रीय काम करने के लिए हिंदी का ज्ञान नितांत आवश्यक है ।

(श्री हनुमंतराव के नाम गांधीजी का पत्र - महादेवी देसाई की हस्तलिखित डायरी से उद्धृत)

तमिलनाड सरकार तमिल को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कृतसंकल्प

तमिलनाड सरकार ने एक आदेश जारी करके कालेजों के प्रिंसिपलों से कहा है कि वे तमिलभाषी छात्रों को अंग्रेजी माध्यम वाले कालेजों में प्रवेश न दें । जिन छात्रों ने हाई स्कूल तक की शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त की है, वे भी कालेजों में अंग्रेजी माध्यम की मांग अधिकार के रूप में नहीं कर सकते । राज्य सरकार ने यह कदम इसलिए उठाया है, ताकि तमिल को जल्दी से जल्दी कालेज स्तर की शिक्षा का माध्यम बनाया जा सके ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण भारतीय भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ने इस वर्ष से दक्षिण भारतीय भाषाओं के शिक्षण के लिए कक्षाएं चलाने का निश्चय किया है । यह कार्यक्रम गांधी शताब्दी समारोह तथा सभा की रजत-जयंती के एक अंग के रूप में शुरू किया जाएगा। कक्षाएं उतर और दक्षिण भारत के अनेक केन्द्रों में चलाई जाएंगी । परीक्षाओं के नाम प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, कोविद और दक्षिण भाषा विशारद होंगे। शिक्षा का माध्यम मुख्यतः हिंदी होगा, किंतु आवश्यक होने पर अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से भी भाषा सिखाई जा सकेगी ।

47वां बंगला साहित्य सम्मेलन

अखिल भारतीय बंगला साहित्य सम्मेलन का 47वां अधिवेशन श्रीनगर में सम्पन्न हुआ । जम्मू व कश्मीर के राज्यपाल श्री भगवान सहाय ने अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं, विशेष कर उतर भारत की भाषाओं के लिए समान लिपि होनी चाहिए जिससे लोगों को दूसरी भाषाओं का साहित्य समझने में सुविधा हो । अधिवेशन में बंगला के पांच सौ साहित्यकारों ने भाग लिया।

प्रेमचंद जयंती समारोह

सचिवालय हिंदी परिषद्, लखनऊ शाखा द्वारा आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उतरप्रदेश के जेलमंत्री श्री अजित प्रताप सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के निर्माताओं में प्रेमचंद का स्थान मूर्धन्य है । महान् उपन्यासकार को श्रद्धांजलि देते हुए उन्होंने कहा : प्रेमचंद जी शोषित और प्रताड़ित मानवता के हित की रक्षा के लिए सदा संघर्ष करते रहे और इस प्रकार उन्होंने समतावादी समाज की स्थापना के लिए वातावरण तैयार किया ।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

भारतीय भाषा संस्थान का उद्घाटन

केंद्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने 17 जुलाई को बंगलौर में भारतीय भाषा संस्थान का उद्घाटन किया । मैसूर विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थापित इस संस्थान का उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाएं बोलने वालों में भावात्मक एकता को प्रोत्साहन देना है । अपने भाषण में शिक्षा मंत्री ने कहा : सरकार ने भारतीय भाषाओं के विकास के लिए अनेक कदम उठाए हैं । प्रत्येक राज्य में भाषा संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं जो राज्य की भाषा के अध्ययन एवं विकास के लिए कार्य करेंगे । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने अनेक विषयों की तकनीकी शब्दावली के निर्माण का काम लगभग पूरा कर लिया है । इससे भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखने की गति तीव्र होगी । भाषा संस्थान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा मंत्री महोदय ने कहा : यह संस्थान भारतीय भाषाओं के चतुर्दिक विकास के लिए कार्य करेगा और साथ ही उन भाषाओं को सीखने के लिए ऐसे नवीन तरीकों की जांच करेगा जिनसे कम समय में शिक्षा पूरी की जा सकेगी और अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं को सीखने तथा विज्ञान, टेक्नोलोजी आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिक समय मिल सकेगा ।

हिंदी में टेलेक्स सेवा का समारंभ

हिंदी में टेलेक्स सेवा के शुभारंभ के उपलक्ष्य में 8 जुलाई, 1969, को डाकतार भवन, नई दिल्ली, में एक समारोह का आयोजन किया गया । सूचना व प्रसारण और संचार मंत्री श्री सत्यनारायण सिंह ने टेलेक्स सेवा का उद्घाटन किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा : सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वर्णमाला प्रायः एक ही है, केवल लिपि का अंतर है । देवनागरी टेलीप्रिंटर का इस्तेमाल प्रायः

सभी भारतीय भाषाओं में संदेशों के आदान-प्रदान के लिए किया जा सकता है । बंगला, असमिया आदि भाषाओं में, जिनकी अपनी अलग लिपियां हैं, संदेशों को देवनागरी में लिप्यंतरण करके भेजा जा सकता है । इससे उनके समझने में कोई कठिनाई नहीं आएगी । फिलहाल दिल्ली, जयपुर, लखनऊ और पटना केन्द्रों में टैलेक्स सेवा उपलब्ध होगी । जैसे-जैसे दूसरे स्थानों से इसकी मांग आएगी, इसका विस्तार किया जाएगा ।

हिंदी टंकण और आशुलिपि में कुशलता के लिए पुरस्कार

भारत सरकार ने केंद्रीय सरकार के अराजपत्रित कर्मचारियों को हिंदी टंकण और आशुलिपि में विशेष कुशलता प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार देने का निर्णय किया है । ये पुरस्कार उन कर्मचारियों को दिए जाएंगे जो हिंदी टंकण में 97 प्रतिशत और हिंदी आशुलिपि में 95 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे ।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार की योजना

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने विदेशों में हिंदी के प्रचार की एक व्यापक योजना तैयार की है । इस योजना के अंतर्गत विदेशों में हिंदी कक्षाएं चलाने के लिए पूर्णकालिक और अंशकालिक हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति की जाएगी । विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी पढ़ाने के लिए तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी-अध्ययन-पीठ की स्थापना के लिए भारत के विद्वान् भेजे जाएंगे । इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में 25 लाख रुपये की व्यवस्था की गई है । अबतक विदेशों में हिंदी के प्रचार का काम भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की देखरेख में होता था, इस वर्ष से यह कार्य शिक्षा मंत्रालय की देखरेख में होगा ।

इस समय हिंदी के अध्ययन की सुविधाएं निम्नलिखित देशों में प्राप्त हैं : युनाइटेड किंगडम, अमरीका, सोवियत रूस, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, बेल्जियम, डेनमार्क, स्विटज़रलैंड, हंगरी, रूमानिया, यूगोस्लाविया, स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड, गियाना, ट्रिनिडाड, केनिया, घाना, बेहरीन, अदन, ईरान, मारीशस, श्रीलंका, सिक्किम, नेपाल, फिजी, सिंगापुर, थाइलैंड, हांगकांग, चीन और जापान ।

* राजधानी में

- केन्द्रीय शिक्षा और युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने केन्द्रीय सलाहकार समिति की बैठक में बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संकल्प पर शिक्षा मंत्रालय एक विस्तृत स्पष्टीकरण तैयार कर रहा है। इसमें बताया जाएगा कि संकल्प की विभिन्न सिफारिशों को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए जा चुके हैं और भविष्य में क्या किया जाएगा।
- भारत सरकार ने, राष्ट्रीय एकता परिषद की सिफारिशों के अनुसरण में शिक्षा शास्त्रियों की एक समिति गठित करने का निर्णय किया है। इस समिति में 40 शिक्षा शास्त्री, युवक तथा छात्र नेता शामिल किए जाएंगे। यह समिति विभिन्न समुदायों में एकता और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से पाठ्य-विवरणों और पाठ्य-पुस्तकों की जांच करेगी। सरकार ने राष्ट्रीय एकता की भावना को जन आंदोलन का रूप देने के उद्देश्य से प्रसिद्ध लेखकों की एक समिति गठित करने का भी निर्णय किया है। इस समिति में भारतीय भाषाओं के 28 प्रसिद्ध लेखक होंगे। इन दोनों समितियों के अध्यक्ष शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव होंगे।
- प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा० सुनीतिकुमार चैटर्जी को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। यह स्थान डा० ज़ाकिर हुसैन के निधन के कारण खाली हुआ था। आंध्र विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रोफेसर के०आर० श्रीनिवास आयंगार को अकादेमी का उपाध्यक्ष चुना गया है।

* प्रादेशिक अंचल में

तमिलनाडु

- गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के दक्षिण क्षेत्र की ओर से हिंदी टंकण कला और आशुलिपि प्रशिक्षण सत्र में उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार वितरित करने के लिए 8 जुलाई को शास्त्री भवन, मद्रास में एक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता डा० एन० चंद्रकांत मुदलियार ने की। गृह मंत्रालय के उप सचिव श्री प्रेमनाथ धीर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। टंकण तथा आशुलिपि केन्द्र के प्रशिक्षक श्री विश्वनाथ ने केन्द्र की प्रगति का विवरण देते हुए कहा कि अब तक इस केन्द्र से 1033 कर्मचारी टंकण कला में तथा 77 कर्मचारी आशुलिपि परीक्षा में योग्यता प्राप्त कर चुके हैं।

पश्चिम बंगाल

- बंगला के प्रमुख लेखक स्व० बंकिम चंद्र चैटर्जी की जयंती के अवसर पर उनके जन्मस्थान नैहट्टी में एक समारोह का आयोजन किया गया। रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति डा० रमा चौधरी ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के विभिन्न वक्ताओं ने सरकार से अपील की कि बंकिम बाबू के घर को सरकारी अधिकार में ले लिया जाए और उसकी सुरक्षा की व्यवस्था की जाए।

पंजाब

- पंजाब सरकार ने राज्य के सभी सरकारी स्कूलों में 'सच्चर फार्मूला और पेप्सू फार्मूला' रद्द करके त्रिभाषा फार्मूला लागू कर दिया है। यह निर्णय मंत्रिमंडल की 2 जुलाई को बैठक में लिया गया। इसके अनुसार पंजाबी पहली कक्षा से ही अनिवार्य भाषा होगी और सरकारी स्कूलों में सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम पंजाबी रहेगा। हिंदी चौथी कक्षा से और अंग्रेजी छठी कक्षा से शुरू होगी। नया भाषा फार्मूला तत्काल लागू हो जाएगा। जो बच्चे सच्चर फार्मूले के अंतर्गत हिंदी लेकर दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ रहे हैं उन्हें चौथी कक्षा से पंजाबी के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी।

- पंजाब प्रदेश कांग्रेस और विधायक दल की कार्य समितियों ने एक प्रस्ताव पास करके राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि पंजाब के सभी स्कूल-कालेजों में सभी स्तरों पर हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाए और शिक्षा का माध्यम पंजाबी हो । प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि प्राइवेट स्कूलों को शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने की छूट दी जाए ।

हरियाणा

- हरियाणा के मुख्य संसदीय सचिव ने एक सभा में भाषण देते हुए यह घोषणा की कि राज्य के स्कूलों में सच्चर फार्मूला लागू करने का निश्चय किया गया है । उन्होंने यह भी बताया कि हरियाणा में सरकारी अनुदान प्राप्त निजी स्कूलों को शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने की पूरी स्वतंत्रता होगी ।

उत्तरप्रदेश

- शिक्षा मंत्री श्री रामजी लाल सहाय ने विधान सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय स्तर की विभिन्न विषयों पर 29 पुस्तकें तैयार की जा चुकी हैं । इनमें कुछ मौलिक हैं और कुछ अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद । उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए राज्य में एक स्वायत पाठ्य-पुस्तक निगम की स्थापना की जा रही है ।
- कानपुर नगर महापालिका की ओर से हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी तथा उर्दू के प्रसिद्ध कवि हजरत नशूर वाहिदी का नागरिक अभिनंदन किया गया ।

राजस्थान

- राजस्थान विद्यापीठ के तत्वावधान में आयोजित एक समारोह में भाषण करते हुए केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने इस बात पर जोर दिया कि देश में भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिए । उन्होंने शिक्षकों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखें ।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग ने, स्टेट इन्स्टीट्यूट आफ़ लैंग्वेजेज के तत्वावधान में सन् 1964 से 1969 तक प्रकाशित अथवा लिखित सर्वश्रेष्ठ तीन पुस्तकों पर 700 रुपये, 500 रुपये और 300 रुपये के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार देने का निश्चय किया है। प्रकाशित पुस्तक की छः प्रतियां अथवा पांडुलिपि की तीन प्रतियां शिक्षा निदेशक, हिमाचल प्रदेश, शिमला के पास 30 सितंबर 1969 तक पहुंच जानी चाहिए। पुरस्कारों के लिए निम्नलिखित तीन वर्गों की पुस्तकों पर विचार होगा :

(1) हिमाचली संस्कृति पर आधारित पुस्तकें जो ग्यारह वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी हों।

(2) हिमाचल प्रदेश के इतिहास एवं संस्कृति पर आधारित पुस्तकें जिनमें उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, जीवनवृत्त एवं यात्रा-विवरण सम्मिलित हैं।

(3) हिमाचली भाषा एवं साहित्य के विकास तथा अनुसंधान पर आधारित पुस्तकें। पुस्तकों की भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होनी चाहिए, परन्तु प्रदेश की किसी बोली की, देवनागरी लिपि में लिखी गई पुस्तकों पर भी पुरस्कार के लिए विचार किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश के निवासी ही भाग ले सकते हैं।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, जापानी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है। प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11अंक) 9-50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10-50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे

विश्वविद्यालयों में

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण की प्रगति

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण की समिति तथा समन्वय समिति की बैठक जयपुर में 14 जुलाई से 16 जुलाई तक हुई । पांच हिन्दी भाषी राज्यों के प्रतिनिधियों ने उसमें भाग लिया । बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की । राज्य मंत्री महोदय ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय स्तर की हिंदी पुस्तकों के निर्माण के लिए पांच हिंदी भाषी राज्यों में स्वायत बोर्ड 31 अगस्त तक काम करने लग जाएंगे । इसके बाद विश्वविद्यालयीन शिक्षा के लिए हिंदी पुस्तकों के निर्माण में कठिनाई नहीं होगी । बा में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मंत्री महोदय ने कहा : इस समय मानविकी विषयों की 812 पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं ।

1968-69 में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए बिहार तथा राजस्थान को पांच-पांच लाख रुपये, उतरप्रदेश तथा हरियाणा को दो-दो लाख रुपये और मध्यप्रदेश को एक लाख रुपये दिए गए थे । चालू वित्त वर्ष में प्रत्येक हिंद भाषी राज्य को चार-चार लाख रुपये दिए गए । चौथी योजना की अवधि में प्रत्येक राज्य को एक-एक करोड़ रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा ।

हिंदी भाषी राज्यों के उपकुलपतियों की स्थायी समिति द्वारा एक पैनेल ने 396 पुस्तकों को मौलिक लेखन के लिए और 2062 पुस्तकों को अनुवाद के लिये स्वीकार किया है । पैनेल ने वर्तमान हिंदी साहित्य का सर्वेक्षण करने के बाद 812 पुस्तकों को उच्चस्तरीय घोषित करते हुए इन्हें स्वीकार करने का सुझाव दिया है ।

* विदेशों में

अमरीका में गालिब शताब्दी

अमरीका की कई संस्थाओं ने गालिब शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठियों - मुशायरों और कवि की रचनाओं के अंग्रेजी अनुवादों की अनेक योजनाएं तैयार की हैं। एशिया सोसायटी आफ न्यूयार्क की अनुषंगी संस्था एशियन लिट्रेचर प्रोग्राम ने गालिब की रचनाओं और उनके पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनाई है। पत्रों का अनुवाद बोस्टन विश्वविद्यालय में विश्वधर्मों के प्राध्यापक डा0 सऊद रहबर कर रहे हैं। पत्रों के अनुवाद के साथ पुस्तक में एक लंबी भूमिका भी रहेगी, जिसमें गालिब के व्यक्तित्व की एक झांकी भी प्रस्तुत की जाएगी। कविताओं का अनुवाद कार्य अमरीका के सात प्रमुख कवियों ने सम्पन्न किया है। संस्था की निदेशक श्रीमती बौनी क्राउन के अनुसार ये कवि गालिब के कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित हैं। अनुवाद-प्रकाशन के अतिरिक्त हावर्ड विश्वविद्यालय के फाग आर्ट म्यूज़ियम ने गालिब से संबंधित रचनाओं, कविताओं तथा चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया है।

सोवियत संघ में गालिब की लोकप्रियता

सोवियत संघ में गालिब शताब्दी समारोह बड़े पैमाने पर मनाया गया। मास्को, ताशकंद, दुशान्वे तथा अन्य कई नगरों में अकादमी सत्र तथा विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

मिर्जा गालिब की रचनाओं के प्रसिद्ध विद्वान श्री मलिकराम ने, जो शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने के लिए सोवियत संघ गए थे, बताया कि सोवियत संघ में दीवाने गालिब की तीन प्राचीन पांडुलिपियां हैं। एक पांडुलिपि 1321 हिजरी की है, एक 1322 हिजरी की और तीसरी अपूर्ण है। उन्होंने कहा कि सोवियत विद्वानों को गालिब के विषय में गहरी जानकारी है।

शुक सप्तती का जर्मन में अनुवाद

संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध रचना 'शुक सप्तती' का जर्मन भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ है । ग्रंथ का अनुवाद पूर्वी जर्मनी के विद्वान् प्रो0 वॉल्फगांग मारगेनरोट ने अनेक प्राचीन पांडुलिपियों के अध्ययन के बाद किया है । पुस्तक के क्लिष्ट प्रसंगों को स्पष्ट करने के लिए विस्तृत टिप्पणियां, शब्दार्थ तथा मुहावरों के अर्थ भी दिए गए हैं ।

पांच मराठी कहानियों का जर्मन में अनुवाद

पूर्व और पश्चिम के विचारों के आदान-प्रदान के उद्देश्य से यूनेस्को ने एशियाई साहित्य के अनुवाद का एक कार्यक्रम शुरू किया है । इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी हाल ही में मराठी साहित्य की पांच कहानियों का जर्मन में अनुवाद किया गया है । अनुवादक हैं बम्बई विश्वविद्यालय के जर्मन विभाग के अध्यक्ष डा0 आर0जी0 परांजपे । पुस्तक की प्रस्तावना मैन्ज़ विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग के प्रो0 जार्ज बुद्रुश ने लिखी है ।

ब्रिटेन में गालिब शताब्दी समारोह

उर्दू के महाकवि गालिब की स्मृति में, ब्रिटेन में गालिब शताब्दी समारोह आयोजित किए गए । समारोहों का शुभारंभ 11 जुलाई को एक मुशायरे से हुआ । यह मुशायरा डोमीनियन सिनेमा, साउथ हाल में आयोजित हुआ और इसमें लगभग 2000 दर्शक सम्मिलित हुए । इसमें प्रमुख भारतीय अभिनेताओं तथा शायरों ने भाग लिया ।

0. नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	मूल्य
अंतर्राष्ट्रीय विधि भाग 1	फ विंक	राजनीति	17-00
,, ,,	,,	,,	13-25
आधुनिक शासन प्रणालियां	कृष्णकांत मिश्र	,,	10-90
राज्य की दार्शनिक विचारधारा		,,	6-00
यूनानी राजनीति विचारधारा		,,	--
राष्ट्रों के मध्य राजनीति		,,	--
यूनानी राजनीति सिद्धांत		,,	--
भारतीय विदेश नीति के आधार		,,	--
आधुनिक राज्य		,,	--
सामाजिक मनोविज्ञान	वी0रु0वणीकरण	मनोविज्ञान	3-50
विकास मनोविज्ञान भाग 1	हालके	,,	7-65
,, ,, भाग 2	,,	,,	9-00
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	एम0ए0 शाह	मनोविज्ञान	--
चीनी पुनर्जागरण	हूशीह	इतिहास	2-25
जापान का इतिहास	के0एस0 लातूरैत	,,	7-25
पूर्व एशिया का आधुनिक इतिहास भाग-1	हैराल्ड एम0 विनाक	,,	8-50
भाग-2	,, ,,	,,	5-50
प्राचीन भारत में संघटित जीवन	डा0 आर0सी0 मजूमदार	,,	8-00
प्राचीन भारत का इतिहास	डा0 ओमप्रकाश	?,	11-75
भारतीय परंपरा	हुमायूं कबीर	,,	2-50
चीन का इतिहास	ली चीं तुंग	,,	--
ऐतिहासिक स्थानावली	बी0के0 माथुर	इतिहास	--

मंत्री मंडलीय शासन	लास्की	राजनीति	--

हिंदीतर भाषाओं के ग्रंथ

परिपित अंतकलिन (गुजराती)	गुलाबभाई देसाई	गणित	6-75
प्राचीन भारत मां शिक्षण (गुजराती)	डा० अल्तेकर	शिक्षा	7-75
उच्च प्रायोगिक भौतिकशास्त्र ,,	वर्सनीध्वातथा फ्लिंट	भौतिकी	25-00
द्रव स्थिति विज्ञान ,,	ए०एस० रैम्से	,,	7-50
समाजलक्षी तत्वज्ञाननी रूपरेखा ,,	जे०एम० पैकेन्जी	दर्शन	6-00
आर्थिक आयोजनानी सिद्धांत ,,	डब्ल्यू ए० लुई	अर्थशास्त्र	3-75
आधुनिक जापान नो संक्षिप्त इतिहास ,,	जी०सी० एलेन	,,	5-70
औद्योगिक कल्याणनी प्रवेशिका ,,	आर०आर०डाफिन्स	,,	7-00
केन्द्रीय बैंकिंग ,,	एम०एच० काक	,,	7-50
आधुनिक बैंकिंग ,,	आर०एस० सेयर्स	,,	6-25
जान मैनार्ड कीन्ज़ दा अर्थशास्त्र(पंजाबी)	डडली डिलाई	,,	14-00
राज्य बंधारनो कायदानों परिचय(गुजराती)	डी०वी० डिसी	राजनीति	12-50
राजनीति विज्ञान अते संगठन दे मूल सिद्धांत (पंजाबी)	गुरुमुख निहालसिंह	,,	10-25
विश्व सभ्यता दा इतिहास (पंजाबी)	जेम्स ई० स्वैन	,,	10-00
राजनीति सिद्धांत दा इतिहास ,,	जी०एच० सलीन	,,	--
इंगलैंडना बधारणनो इतिहास(गुजराती)	के०सी० देसाई	इतिहास	14-00
गुजरातनो प्राचीन इतिहास ,,	हरिप्रसाद जी० शास्त्री	,,	9-00
मध्यपूर्व भारत का इतिहास (पंजाबी)	--	,,	--

गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाश्य 'भाषा' का

गांधी विशेषांक

संपादन समिति : श्री रामधारी सिंह दिनकर
डा0 हरिवंशराय 'बच्चन', राय धर्मवीर थापर, श्री कान्ति चौधुरी
प्रो0 ए0 चन्द्रशेखर श्री जीवन नायक (सचिव) संपादक श्रीमती तारा तिक्कू

----

1. भारतीय भाषाएं और गांधीजी : गांधीजी द्वारा विभिन्न भाषाओं के संबं
   में दिए गए भाषणों तथा लेखों का संकलन ।
2. सुप्रसिद्ध कवि श्री भवानीप्रसाद मिश्र की ओजस्वी कविता ।
3. सर्वश्री डा0 जाकिर हुसैन, इन्दिरा गांधी, खान अब्दुल गफ्फारखां, चक्रवर्ती
   राजगोपालाचारी, रामधारी सिंह 'दिनकर', वियोगी हरि तथा सेठ गोवि
   दास के गांधीजी के संबंध में लिखे अविस्मरणीय संस्मरण तथा लेख ।
4. हिंदी के प्रगतिशील कवि डा0 शिवमंगलसिंह 'सुमन' की काव्यमय श्रद्धांजलि ।
5. भारतीय कवियों की श्रद्धांजलि : गांधी के संबंध में लिखी चौदह भारतीय
   भाषाओं के कवियों की रचनाएं : हिंदी लिप्यंतरण सहित ।

प्रकाशन तिथि	सितम्बर, 1969
मूल्य	एक प्रति 3 रुपये
वार्षिक	10 रुपये अथवा 23 शिलिंग 4 पैंस या 3 डालर 60 सैंट
बिक्री व्यवस्था	प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दि

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 11

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा मंत्रालय

भारत सरकार

813/115

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या आर एन 12817/66

जय हिंदी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 जुलाई 1969 अंक 11

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

- भारत सरकार में
- राजधानी में
- प्रादेशिक अंचल में
- विश्वविद्यालयों में
- विदेशों में

0 नए प्रकाशन

गांधीजी ने कहा था -

पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा जो हम कर सकते हैं, वह यह कि हम देशी भाषाओं को अपनाएं, हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसके स्वाभाविक पद पर पुन: प्रतिष्ठित करें और सभी प्रांत अपना-अपना समस्त कार्य अपनी देशी भाषाओं में तथा राष्ट्र का कार्य हिंदी में प्रारंभ कर दें ।..

(देखिए पृष्ठ 4).

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, वेस्ट ब्लाक 7,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम

गांधी जी ने कहा था -

समाज की हम जो सब से बड़ी सेवा कर सकते हैं, वह यह है कि हमने अंग्रेजी की शिक्षा के प्रति जो अंधविश्वासपूर्ण सम्मान करना सीखा है उससे स्वयं मुक्त हों और समाज को मुक्त करें । अंग्रेजी हमारे स्कूलों तथा हमारे कालेजों में शिक्षा का माध्यम है । यह देश की आंतरभाषा बनती जा रही है । हमारे सर्वोत्तम विचार इसी में व्यक्त किए जाते हैं । लार्ड चेम्सफोर्ड ने यह आशा व्यक्त की है कि अंग्रेजी कुछ ही दिनों में उच्च परिवारों की मातृभाषा बन जाएगी । अंग्रेजी प्रशिक्षण के बारे में इस प्रकार के विश्वास ने हमें गुलाम बना दिया है । इसने हमें सच्ची राष्ट्रीय सेवा के अयोग्य बना दिया है । यदि हम स्वभाव से बाध्य न होते, तो हम यह अवश्य ही देख सकते थे कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने के कारण हमारी प्रतिभा एकांतिक हो गई है और हम जनता से दूर जा खड़े हैं । इससे राष्ट्र का सर्वोत्तम मस्तिष्क निष्क्रिय होगया है और जनता को नये उपलब्ध विचारों का लाभ नहीं मिल पाया । हमने ये पिछले 60 वर्ष विचित्र शब्दों तथा उनके उच्चारणों को सीखने में ही व्यतीत कर दिए हैं, तथ्यों को आत्मसात् नहीं किया । हमें अपने माता-पिताओं से जो शिक्षा मिली थी, उसके आधार पर हमने नया निर्माण नहीं किया है, बल्कि उस शिक्षा को ही लगभग भुला दिया है । इतिहास में इस (मूर्खता) की तुलना नहीं है । यह एक दारुण राष्ट्रीय विपत्ति है । पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम इस स्थिति से पीछे हटें, देशी भाषाओं को अपनाएं, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसके स्वाभाविक पद पर पुनः प्रतिष्ठित करें और सभी प्रांत अपना-अपना समस्त कार्य अपनी देशी भाषाओं में तथा राष्ट्र का कार्य हिंदी में प्रारंभ कर दें । हमें तब तक विश्राम नहीं लेना चाहिए जब तक हमारे स्कूलों और कालेजों में हमें देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाती । हमारे लिए अपने अंग्रेज-मित्रों के निमित्त भी अंग्रेजी में बोलना आवश्यक

नहीं होना चाहिए । ऐसा दिन अवश्य ही जल्दी आना चाहिए, जब कि हमारी विधान सभाओं में राष्ट्रीय मामलों पर देशी भाषाओं में या हिन्दी में जहां जो भी उपयुक्त हो, बहस की जाएगी । अबतक तो जन-साधारण उन की कार्रवाई से अपरिचित ही रहे हैं ।

(अखिल भारतीय समाज सेवा सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन में 31-12-1917
को दिए गए भाषण से उद्धृत)

द्रविड़ों और अन्य भारतीयों के बीच लगभग न पटने वाली खाई पड़ गई है । निश्चय ही हिंदी भाषा इसे पाटने वाला छोटे से छोटा और कारगर सेतु है । अंग्रेजी कभी उसका स्थान नहीं ले सकती । जब सुसंस्कृत लोगों की साधारण भाषा हिंदी हो जाएगी, तब शीघ्र ही हिंदी का शब्द-भंडार आम जनता में फैल जाएगा । हिंदी में कोई ऐसी अवर्णनीय वस्तु है जिससे वह सीखने में सबसे आसान होती है । और कारण चाहे जो हो, हिंदी व्याकरण के साथ जितनी छूट ली जा सकती है, उतनी मैंने और किसी भाषा के व्याकरण के साथ ली जाती नहीं देखी । परिणामस्वरूप हिंदी सीखने में मात्र स्मरण-शक्ति का ही काम है । इसीलिए मैं कहता हूं कि राष्ट्रीय काम करने के लिए हिंदी का ज्ञान नितांत आवश्यक है ।

(श्री हनुमंतराव के नाम गांधीजी का पत्र - महादेवी देसाई की
हस्तलिखित डायरी से उद्धृत)

तमिलनाड सरकार तमिल को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कृतसंकल्प

तमिलनाड सरकार ने एक आदेश जारी करके कालेजों के प्रिंसिपलों से कहा है कि वे तमिलभाषी छात्रों को अंग्रेजी माध्यम वाले कालेजों में प्रवेश न दें । जिन छात्रों ने हाई स्कूल तक की शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त की है, वे भी कालेजों में अंग्रेजी माध्यम की मांग अधिकार के रूप में नहीं कर सकते । राज्य सरकार ने यह [illegible] इसलिए उठाया है, ताकि तमिल को जल्दी से जल्दी कालेज स्तर की शिक्षा का माध्यम बनाया जा सके ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण भारतीय भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ने इस वर्ष से दक्षिण भारतीय भाषाओं के शिक्षण के लिए कक्षाएं चलाने का निश्चय किया है। यह कार्यक्रम गांधी शताब्दी समारोह तथा सभा की रजत-जयंती के एक अंग के रूप में शुरू किया जाएगा। कक्षाएं उत्तर और दक्षिण भारत के अनेक केन्द्रों में चलाई जाएंगी। परीक्षाओं के नाम प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, कोविद और दक्षिण भाषा विशारद होंगे। शिक्षा का माध्यम मुख्यत: हिंदी होगा, किंतु आवश्यक होने पर अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से भी भाषा सिखाई जा सकेगी।

47वां बंगला साहित्य सम्मेलन

अखिल भारतीय बंगला साहित्य सम्मेलन का 47वां अधिवेशन श्रीनगर में सम्पन्न हुआ। जम्मू व कश्मीर के राज्यपाल श्री भगवान सहाय ने अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं, विशेष कर उत्तर भारत की भाषाओं के लिए समान लिपि होनी चाहिए जिससे लोगों को दूसरी भाषाओं का साहित्य समझने में सुविधा हो। अधिवेशन में बंगला के पांच सौ साहित्यकारों ने भाग लिया।

प्रेमचंद जयंती समारोह

सचिवालय हिंदी परिषद, लखनऊ शाखा द्वारा आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उत्तरप्रदेश के जलमंत्री श्री अजित प्रताप सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के निर्माताओं में प्रेमचंद का स्थान मूर्धन्य है। महान् उपन्यासकार को श्रद्धांजलि देते हुए उन्होंने कहा : प्रेमचंद जी शोषित और प्रताड़ित मानवता के हित की रक्षा के लिए सदा संघर्ष करते रहे और इस प्रकार उन्होंने समाजवादी समाज की स्थापना के लिए वातावरण तैयार किया।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

भारतीय भाषा संस्थान का उद्घाटन

केंद्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने 17 जुलाई को बंगलौर में भारतीय भाषा संस्थान का उद्घाटन किया । मैसूर विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थापित इस संस्थान का उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाएं बोलने वालों में भावात्मक एकता को प्रोत्साहन देना है । अपने भाषण में शिक्षा मंत्री ने कहा : सरकार ने भारतीय भाषाओं के विकास के लिए अनेक कदम उठाए हैं । प्रत्येक राज्य में भाषा संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं जो राज्य की भाषा के अध्ययन एवं विकास के लिए कार्य करेंगे । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने अनेक विषयों की तकनीकी शब्दावली के निर्माण का काम लगभग पूरा कर लिया है । इससे भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखने की गति तीव्र होगी । भाषा संस्थान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा मंत्री महोदय ने कहा : यह संस्थान भारतीय भाषाओं के चतुर्दिक विकास के लिए कार्य करेगा और साथ ही उन भाषाओं को सीखने के लिए ऐसे नवीन तरीकों की जांच करेगा जिनसे कम समय में शिक्षा पूरी की जा सकेगी और अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं को सीखने तथा विज्ञान, टैक्नालौजी आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिक समय मिल सकेगा ।

हिंदी में टैलेक्स सेवा का समारंभ

हिंदी में टैलेक्स सेवा के शुभारंभ के उपलक्ष्य में 8 जुलाई, 1969, को डाकतार भवन, नई दिल्ली, में एक समारोह का आयोजन किया गया । सूचना व प्रसारण और संचार मंत्री श्री सत्यनारायण सिंह ने टैलेक्स सेवा का उद्घाटन किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा : सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वर्णमाला प्राय: एक ही है, केवल लिपि का अंतर है । देवनागरी टैलीप्रिंटर का इस्तैमाल प्राय:

सभी भारतीय भाषाओं में संदेशों के आदान-प्रदान के लिए किया जा सकता है। बंगला, असमिया आदि भाषाओं में, जिनकी अपनी अलग लिपियां हैं, संदेशों को देवनागरी में लिप्यंतरण करके भेजा जा सकता है। इससे उनके समझने में कोई कठिनाई नहीं आएगी। फिलहाल दिल्ली, जयपुर, लखनऊ और पटना केन्द्रों में टेलेक्स सेवा उपलब्ध होगी। जैसे-जैसे दूसरे स्थानों से इसकी मांग आएगी, इसका विस्तार किया जाएगा।

हिंदी टंकण और आशुलिपि में कुशलता के लिए पुरस्कार

भारत सरकार ने केंद्रीय सरकार के अराजपत्रित कर्मचारियों को हिंदी टंकण और आशुलिपि में विशेष कुशलता प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार देने का निर्णय किया है। ये पुरस्कार उन कर्मचारियों को दिए जाएंगे जो हिंदी टंकण में 97 प्रतिशत और हिंदी आशुलिपि में 95 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार की योजना

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने विदेशों में हिंदी के प्रचार की एक व्यापक योजना तैयार की है। इस योजना के अंतर्गत विदेशों में हिंदी कक्षाएं चलाने के लिए पूर्णकालिक और अंशकालिक हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति की जाएगी। विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी पढ़ाने के लिए तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी-अध्ययन-पीठ की स्थापना के लिए भारत के विद्वान् भेजे जाएंगे। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में 25 लाख रुपये की व्यवस्था की गई है। अबतक विदेशों में हिंदी के प्रचार का काम भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की देखरेख में होता था, इस वर्ष से यह कार्य शिक्षा मंत्रालय की देखरेख में होगा।

इस समय हिंदी के अध्ययन की सुविधाएं निम्नलिखित देशों में प्राप्त हैं: युनाइटेड किंगडम, अमरीका, सोवियत रूस, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, बेल्जियम, डैनमार्क, स्विटज़रलैंड, हंगरी, रूमानिया, यूगोस्लाविया, स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड, गियाना, ट्रिनिडाड, कैनिया, घाना, बेहरीन, अदन, ईरान, मारीशस, श्रीलंका, सिक्किम, नैपाल, फिजी, सिंगापुर, थाइलैंड, हांगकांग, चीन और जापान।

* राजधानी में

- केन्द्रीय शिक्षा और युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने केन्द्रीय सलाहकार समिति की बैठक में बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संकल्प पर शिक्षा मंत्रालय एक विस्तृत स्पष्टीकरण तैयार कर रहा है । इसमें बताया जाएगा कि संकल्प की विभिन्न सिफारिशों को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए जा चुके हैं और भविष्य में क्या किया जाएगा ।
- भारत सरकार ने, राष्ट्रीय एकता परिषद की सिफारिशों के अनुसरण में शिक्षा शास्त्रियों की एक समिति गठित करने का निर्णय किया है । इस समिति में 40 शिक्षा शास्त्री, युवक तथा छात्र नेता शामिल किए जाएंगे । यह समिति विभिन्न समुदायों में एकता और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से पाठ्य-विवरणों और पाठ्य-पुस्तकों की जांच करेगी । सरकार ने राष्ट्रीय एकता की भावना को जन आंदोलन का रूप देने के उद्देश्य से प्रसिद्ध लेखकों की एक समिति गठित करने का भी निर्णय किया है । इस समिति में भारतीय भाषाओं के 28 प्रसिद्ध लेखक होंगे । इन दोनों समितियों के अध्यक्ष शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव होंगे ।
- प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा० सुनीतिकुमार चैटर्जी को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है । यह स्थान डा० ज़ाकिर हुसैन के निधन के कारण खाली हुआ था । आंध्र विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रोफेसर के०आर० श्रीनिवास आयंगार को अकादेमी का उपाध्यक्ष चुना गया है ।

* प्रादेशिक अंचल में

तमिलनाडु

- गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के दक्षिण क्षेत्र की ओर से हिंदी टंकण कला और आशुलिपि प्रशिक्षण सत्र में उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार वितरित करने के लिए 8 जुलाई को शास्त्री भवन, मद्रास में एक समारोह का आयोजन किया गया । समारोह की अध्यक्षता डा0 एन0 चंद्रकांत मुदलियार ने की । गृह मंत्रालय के उप सचिव श्री प्रेमनाथ धोर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । टंकण तथा आशुलिपि केन्द्र के प्रशिक्षक श्री विश्वनाथ ने केन्द्र की प्रगति का विवरण देते हुए कहा कि अब तक इस केन्द्र से 1033 कर्मचारी टंकण कला में तथा 77 कर्मचारी आशुलिपि परीक्षा में योग्यता प्राप्त कर चुके हैं ।

पश्चिम बंगाल

- बंगला के प्रमुख लेखक स्व0 बंकिम चंद्र चैटर्जी की जयंती के अवसर पर उनके जन्मस्थान नैहट्टी में एक समारोह का आयोजन किया गया । रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति डा0 रमा चौधरी ने समारोह की अध्यक्षता की । समारोह के विभिन्न वक्ताओं ने सरकार से अपील की कि बंकिम बाबू के घर को सरकारी अधिकार में ले लिया जाए और उसकी सुरक्षा की व्यवस्था की जाए ।

पंजाब

- पंजाब सरकार ने राज्य के सभी सरकारी स्कूलों में 'सच्चर फामूला और पैप्सू फामूला' रद्द करके त्रिभाषा फामूला लागू कर दिया है । यह निर्णय मंत्रिमंडल की 2 जुलाई की बैठक को लिया गया । इसके अनुसार पंजाबी पहली कक्षा से ही अनिवार्य भाषा होगी और सरकारी स्कूलों में सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम पंजाबी रहेगा । हिंदी चौथी कक्षा से और अंग्रेजी छठी कक्षा से शुरू होगी । नया भाषा फामूला तत्काल लागू हो जाएगा । जो बच्चे सच्चर फामूले के अंतर्गत हिंदी लेकर दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ रहे हैं उन्हें चौथी कक्षा से पंजाबी के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी ।

- पंजाब प्रदेश कांग्रेस और विधायक दल की कार्य समितियों ने एक प्रस्ताव पास करके राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि पंजाब के सभी स्कूल-कालेजों में सभी स्तरों पर हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाए और शिक्षा का माध्यम पंजाबी हो। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि प्राइवेट स्कूलों को शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने की छूट दी जाए।

हरियाणा

- हरियाणा के मुख्य संसदीय सचिव ने एक सभा में भाषण देते हुए यह घोषणा की कि राज्य के स्कूलों में सच्चर फामूला लागू करने का निश्चय किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि हरियाणा में सरकारी अनुदान प्राप्त निजी स्कूलों को शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने की पूरी स्वतंत्रता होगी।

उत्तरप्रदेश

- शिक्षा मंत्री श्री रामजी लाल सहायक ने विधान सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय स्तर की विभिन्न विषयों पर 29 पुस्तकें तैयार की जा चुकी हैं। इनमें कुछ मौलिक हैं और कुछ अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए राज्य में एक स्वायत्त पाठ्य-पुस्तक निगम की स्थापना की जा रही है।
- कानपुर नगर महापालिका की ओर से हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी तथा उर्दू के प्रसिद्ध कवि हजरत नशूर वाहिदी का नागरिक अभिनंदन किया गया।

राजस्थान

- राजस्थान विद्यापीठ के तत्वावधान में आयोजित एक समारोह में भाषण करते हुए केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने इस बात पर जोर दिया कि देश में भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखें।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग ने, स्टेट इन्स्टीट्यूट आफ लैंग्वेज़ज के तत्वावधान में सन् 1964 से 1969 तक प्रकाशित अथवा लिखित सर्वश्रेष्ठ तीन पुस्तकों पर 700 रुपए 500 रुपये और 300 रुपये के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार देने का निश्चय किया है । प्रकाशित पुस्तक की छ: प्रतियां अथवा पांडुलिपि की तीन प्रतियां शिक्षा निदेशक, हिमाचल प्रदेश, शिमला के पास 30 सितंबर 1969 तक पहुंच जानी चाहिए । पुरस्कारों के लिए निम्नलिखित तीन वर्गों की पुस्तकों पर विचार होगा :

(1) हिमाचली संस्कृति पर आधारित पुस्तकें जो ग्यारह वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी हों ।

(2) हिमाचल प्रदेश के इतिहास एवं संस्कृति पर आधारित पुस्तकें जिनमें उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, जीवनवृत्त एवं यात्रा-विवरण सम्मिलित हैं ।

(3) हिमाचली भाषा एवं साहित्य के विकास तथा अनुसंधान पर आधारित पुस्तकें । पुस्तकों की भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होनी चाहिए, परन्तु प्रदेश की किसी बोली की, देवनागरी लिपि में लिखी गई पुस्तकों पर भी पुरस्कार के लिए विचार किया जाएगा । इस प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश के निवासी ही भाग ले सकते हैं ।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र "यूनेस्को कूरियर" विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, जापानी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है । प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं । इसमें अंतराष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधीसमाचार लेख:, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं । इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है ।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है । सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए । शैक्षिक संस्थानों के लिए वार्षिक चंदा (11अंक) 9-50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10-50 रुपये । ग्राहक बनने के लिए प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक 8, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें । चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें ।

*विश्वविद्यालयों में

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण की प्रगति

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण की समिति तथा समन्वय समिति की बैठक जयपुर में 14 जुलाई से 16 जुलाई तक हुई। पांच हिन्दी भाषी राज्यों के प्रतिनिधियों ने उसमें भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की। राज्य मंत्री महोदय ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय स्तर की हिंदी पुस्तकों के निर्माण के लिए पांच हिंदी भाषी राज्यों में स्वायत बोर्ड 31 अगस्त तक काम करने लग जाएंगे। इसके बाद विश्वविद्यालयीन शिक्षा के लिए हिंदी पुस्तकों के निर्माण में कठिनाई नहीं होगी। बाद में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मंत्री महोदय ने कहा : इस समय मानविकी विषयों की 812 पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं।

1968-69 में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए बिहार तथा राजस्थान को पांच-पांच लाख रुपये, उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा को दो-दो लाख रुपये और मध्यप्रदेश को एक लाख रुपये दिए गए थे। चालू वित्त वर्ष में प्रत्येक हिंदी भाषी राज्य को चार-चार लाख रुपये दिए गए। चौथी योजना की अवधि में प्रत्येक राज्य को एक-एक करोड़ रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा।

हिंदी भाषी राज्यों के उपकुलपतियों की स्थायी समिति द्वारा एक पैनेल ने 396 पुस्तकों को मौलिक लेखन के लिए और 2062 पुस्तकों को अनुवाद के लिये स्वीकार किया है। पैनेल ने वर्तमान हिंदी साहित्य का सर्वेक्षण करने के बाद 812 पुस्तकों को उच्चस्तरीय घोषित करते हुए इन्हें स्वीकार करने का सुझाव दिया है।

* विदेशों में

अमरीका में गालिब शताब्दी

अमरीका की कई संस्थाओं ने गालिब शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठियां - मुशायरों और कवि की रचनाओं के अंग्रेजी अनुवादों की अनेक योजनाएं तैयार की हैं । एशिया सोसायटी आफ न्यूयार्क की अनुषंगी संस्था एशियन लिटरेचर प्रोग्राम ने गालिब की रचनाओं और उनके पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनाई है । पत्रों का अनुवाद बोस्टन विश्वविद्यालय में विश्वधर्मों के प्राध्यापक डा0 सऊद रहबर कर रहे हैं । पत्रों के अनुवाद के साथ पुस्तक में एक लंबी भूमिका भी रहेगी, जिसमें गालिब के व्यक्तित्व की एक झांकी भी प्रस्तुत की जाएगी । कविताओं का अनुवाद कार्य अमरीका के सात प्रमुख कवियों ने सम्पन्न किया है । संस्था की निदेशक श्रीमती बोनी क्राउन के अनुसार ये कवि गालिब के कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित हैं । अनुवाद-प्रकाशन के अतिरिक्त हावर्ड विश्वविद्यालय के फाग आर्ट म्यूज़ियम ने गालिब से संबंधित रचनाओं, कविताओं तथा चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया है ।

सोवियत संघ में गालिब की लोकप्रियता

सोवियत संघ में गालिब शताब्दी समारोह बड़े पैमाने पर मनाया गया । मास्को, ताशकंद, दुशान्बे तथा अन्य कई नगरों में अकादमी सत्र तथा विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया ।

मिर्जा गालिब की रचनाओं के प्रसिद्ध विद्वान् श्री मलिकराम ने, जो शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने के लिए सोवियत संघ गए थे, बताया कि सोवियत संघ में दीवाने गालिब की तीन प्राचीन पांडुलिपियां हैं । एक पांडुलिपि 1321 हिजरी की है, एक 1322 हिजरी की और तीसरी अपूर्ण है । उन्होंने कहा कि सोवियत विद्वानों को गालिब के विषय में गहरी जानकारी है ।

शुक सप्तती का जर्मन में अनुवाद

संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध रचना 'शुक सप्तती का जर्मन भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ है । ग्रंथ का अनुवाद पूर्वी जर्मनी के विद्वान् प्रो0 वोल्फगांग मारगेनराट ने अनेक प्राचीन पांडुलिपियों के अध्ययन के बाद किया है । पुस्तक के क्लिष्ट प्रसंगों को स्पष्ट करने के लिए विस्तृत टिप्पणियां, शब्दार्थ तथा मुहावरों के अर्थ भी दिए गए हैं ।

पांच मराठी कहानियों का जर्मन में अनुवाद

पूर्व और पश्चिम के विचारों के आदान-प्रदान के उद्देश्य से यूनेस्को ने एशियाई साहित्य के अनुवाद का एक कार्यक्रम शुरू किया है । इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी हाल ही में मराठी साहित्य की पांच कहानियों का जर्मन में अनुवाद किया गया है । अनुवादक हैं बम्बई विश्वविद्यालय के जर्मन विभाग के अध्यक्ष डा0 आर0जी0 परांजपे । पुस्तक की प्रस्तावना मैन्ज़ विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग के प्रो0 जार्ज बुद्रुश ने लिखी है ।

ब्रिटेन में गालिब शताब्दी समारोह

उर्दू के महाकवि गालिब की स्मृति में, ब्रिटेन में गालिब शताब्दी समारोह आयोजित किए गए । समारोहों का शुभारंभ 11 जुलाई को एक मुशायरे से हुआ । यह मुशायरा डोमीनियन सिनेमा, साउथ हाल में आयोजित हुआ और उसमें लगभग 2000 दर्शक सम्मिलित हुए । इसमें प्रमुख भारतीय अभिनेताओं तथा शायरों ने भाग लिया ।

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	मूल्य
अंतराष्ट्रीय विधि भाग 1	फ विंक	राजनीति	17-00
,, ,,	,,	,,	13-25
आधुनिक शासन प्रणालियां	कृष्णकांत मिश्र	,,	10-90
राज्य की दार्शनिक विचारधारा		,,	6-00
यूनानी राजनीति विचारधारा		,,	--
राष्ट्रों के मध्य राजनीति		,,	--
यूनानी राजनीति सिद्धांत		,,	--
भारतीय विदेश नीति के आधार		,,	--
आधुनिक राज्य		,,	--
सामाजिक मनोविज्ञान	वी0रु0वणीकरण	मनोविज्ञान	3-50
विकास मनोविज्ञान भाग 1	हालर्क	,,	7-65
,, ,, भाग 2	,,	,,	9-00
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	एम0ए0 शाह	मनोविज्ञान	--
चीनी पुनर्जागरण	हूशीह	इतिहास	2-25
जापान का इतिहास	के0एस0 लातूरेत	,,	7-25
पूर्व एशिया का आधुनिक इतिहास भाग-1	हैराल्ड एम0 विनाक	,,	8-50
भाग-2	,, ,,	,,	5-50
प्राचीन भारत में संघटित जीवन	डा0 आर0सी0 मजूमदार	,,	8-00
प्राचीन भारत का इतिहास	डा0 ओमप्रकाश	?,	11-75
भारतीय परंपरा	हुमायूं कबीर	,,	2-50
चीन का इतिहास	ली चीं तुंग	,,	--
ऐतिहासिक स्थानावली	वी0के0 माथुर	इतिहास	--

मंत्री मंडलीय शासन	लास्की	राजनीति	--

हिंदीतर भाषाओं के ग्रंथ

परिमित अंतर्कलन (गुजरात)	गुलाबभाई देसाई	गणित	6-75
प्राचीन भारत मां शिक्षण (गुजराती)	डा० अल्तेकर	शिक्षा	7-75
उच्च प्रायोगिक भौतिकशास्त्र ,,	वर्सनोव तथा फ्लिंट	भौतिकी	25-00
द्रव स्थिति विज्ञान ,,	ए०एस० रैम्से	,,	7-50
समाजलक्षी तत्वज्ञाननी रूपरेखा ,,	जे०एम० मैकेन्ज़ी	दर्शन	6-00
आर्थिक आयोजनानो सिद्धांत ,,	डब्ल्यू ए० लुई	अर्थशास्त्र	3-75
आधुनिक जापान नो संक्षिप्त इतिहास ,,	जी०सी० एलेन	,,	5-70
औद्योगिक कल्याणनी प्रवेशिका ,,	आर०आर० हाप्किन्स	,,	7-00
केन्द्रीय बैंकिंग ,,	एम०एच० काक	,,	7-50
आधुनिक बैंकिंग ,,	आर०एस० सैयर्स	,,	6-25
जान मेनार्ड कीन्ज़ दा अर्थशास्त्र(पंजाबी)	डुडली डिलाई	,,	14-00
राज्य बंधारणो कायदानो परिचय(गुजराती)	डी०वी० हिसो	राजनीति	12-50
राजनीति विज्ञान अते संगठन दे मूल सिद्धांत (पंजाबी)	गुरुमुख निहालसिंह	,,	10-25
विश्व सभ्यता दा इतिहास (पंजाबी)	जेम्स ई० स्वैन	,,	10-00
राजनीति सिद्धांत दा इतिहास ,,	जी०एच० सबीन	,,	--
इंग्लैंडना बंधारणनो इतिहास(गुजराती)	के०सी० देसाई	इतिहास	14-00
गुजरातनो प्राचीन इतिहास ,,	हरिप्रसाद जी० शास्त्री	,,	9-00
मध्यपूर्व भारत का इतिहास (पंजाबी)	--	,,	--

गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाश्य `भाषा` का

गांधी विशेषांक

संपादन समिति : श्री रामधारी सिंह दिनकर
डा0 हरिवंशराय `बच्चन`, राय धर्मवीर थापर, श्री कान्ति चौधुरी
प्रो0 ए0 चन्द्रहासन, श्री जीवन नायक (सचिव) संपादक श्रीमती तारा तिक्कू

----

1. भारतीय भाषाएं और गांधीजी : गांधीजी द्वारा विभिन्न भाषाओं के संबं में दिए गए भाषणों तथा लेखों का संकलन ।
2. सुप्रसिद्ध कवि श्री भवानीप्रसाद मिश्र की ओजस्वी कविता ।
3. सर्वश्री डा0 जाकिर हुसैन, इन्दिरा गांधी, खान अब्दुल गफ्फार खां, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, रामधारी सिंह `दिनकर`, वियोगी हरि तथा सेठ गोविं दास के गांधीजी के संबंध में लिखे अविस्मरणीय संस्मरण तथा लेख ।
4. हिंदी के प्रगतिशील कवि डा0 शिवमंगल सिंह `सुमन` की काव्यमय श्रद्धांजलि ।
5. भारतीय कवियों की श्रद्धांजलि : गांधी के संबंध में लिखी चौदह भारतीय भाषाओं के कवियों की रचनाएं : हिंदी लिप्यंतरण सहित ।

प्रकाशन तिथि	सितम्बर, 1969
मूल्य	एक प्रति 3 रुपये
वार्षिक	10 रुपये अथवा 23 शिलिंग 4 पैंस या 3 डालर 60 सेंट
बिक्री व्यवस्था	प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar

हिंदी
समाचार
जगत

वर्ष
३

अंक 12

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा मंत्रालय

भारत सरकार

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar

जय हिंदी जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या . आर0एन0 12817/66

जय हिन्दी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अगस्त 69 अंक 12

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में

गांधी जी ने कहा था -

अंग्रेजी सीखने के पीछे लाखों रुपया खर्च करने के बावजूद गिने चुने लोग ही इस भाषा को सीख सके हैं और ऐसा होने पर भी उस भाषा पर पूर्ण अधिकार रखने वाले लोग तो इक्के-दुक्के ही होते हैं। इस भाषाको सीखने के लिए जो प्रयत्न करना पड़ता है उसे देखता हूं तो मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि उससे देश का तेज क्षीण हो रहा है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, (शिक्षा मंत्रालय) वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम

गांधी जी ने कहा था - (पृष्ठ 3 से आगे)

इस प्रश्न के भीतर भारत की उन्नति के बीज निहित हैं। जिस राष्ट्र ने अपनी भाषा का अनादर किया है उस राष्ट्र के लोग अपनी राष्ट्रीयता खो बैठते हैं। हम में से अधिकांश लोगों की यही हालत होगई है। पृथ्वी पर हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है जहां मां-बाप अपने बच्चों के साथ मातृभाषा में न बोलकर, अपने बच्चों को मातृभाषा की बनिस्बत अंग्रेजी में लिखना पसंद करेंगे। मैं अंग्रेजी से द्वेष नहीं करता। मुझे यह भी लगता है कि कुछ कामों के लिए कुछ लोगों को अंग्रेजी सीखनी है। हम लोगों में दुभाषिये का काम करने के लिए (कुछ लोगों को) अंग्रेजी सीखनी चाहिए। और मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि इसके लिए अंग्रेजी का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। लेकिन अन्य कार्यों के लिए, अदालतों और केंद्रीय विधान सभाओं में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी होनी चाहिए। इसके अलावा दूसरी भाषा में काम-काज चलाने से राष्ट्र को नुकसान पहुंचता है। जबतक हम इस तत्व को ग्रहण नहीं कर लेते तब तक हमारी सारी मेहनत बेकार जाएगी। इसी से मैंने पिछले वर्ष यह कहा था कि हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन बम्बई में किया गया होता तो अच्छा होता। हम देखते हैं कि ऐसा किया गया है। अधिवेशन इस मास की 18, 19 और 20 तारीख को होगा। पं0 मालवीय जी ने अधिवेशन की अध्यक्षता करना स्वीकार कर लिया है। इसलिए आप लोग अधिवेशन की मदद करें। मंत्रियों ने बताया है कि इस अधिवेशन पर 10,000 रुपया खर्च होगा। इस में आप जितनी सहायता देंगे वह सम्मेलन को दी गई सहायता मानी जाएगी। वैसे यह कोई ऊंचे दर्जे की सहायता नहीं है। ऊंचे दर्जे की मदद तो वह कही जाएगी कि जो लोग यहां उपस्थित हैं वे जल्दी ही इस भाषा को सीख लें

रात को एक-एक घंटे किसी शिक्षक के पास बैठकर सीखने से कुछ ही समय में यह भाषा सीखी जा सकती है। मैं अब अधिक समय नहीं लेना चाहता। (बम्बई में, हिंदी साहित्य सम्मेलन की एक सभा में (18-4-1919 से पूर्व) दिए गए भाषण से उद्धृत)

हम से गलतियाँ हो जाती हैं

जिस समय माननीय सिन्हा क्षतिपूर्ति विधेयक (इंडेम्निटी बिल) पर बोल रहे थे, वे शब्दों के प्रयोग में गड़बड़ा गए। सर जार्ज लाउण्डेज ने उन्हें टोका लेकिन परम श्रेष्ठ सभापति ने यह कह कर उनका बचाव किया कि जबान की चूक है। तत्पश्चात् श्री सिन्हा ने ये स्पष्ट तथा शालीन शब्द कहे: "आपके लिए यह समझना कठिन है कि इस परिषद में विदेशी जबान बोलने में हमें क्या कठिनाई होती है। हमसे गलतियाँ हो जाती हैं।" बात बिलकुल सही है। हमसे अपनी मातृभाषा में बोलते समय भी गलतियाँ हो जाती हैं लेकिन वे इतनी हास्यास्पद नहीं होतीं जितनी कि जब हम विदेशी जबान में बोलने की कोशिश करते हैं। प्रो० यदुनाथ सरकार ने कहा है कि हमारे अंग्रेजी में बोलने और सोचने से हमारे दिमाग पर इतना बोझ पड़ता है कि हम उससे कभी पूरे तौर पर मुक्त नहीं हो पाते।

(यंग इंडिया - 8-10-1919 से उद्धृत)

कांग्रेस की कार्यवाही हिंदी में हो

अंग्रेजी में होने के कारण अध्यक्ष के भाषण की प्रभावशीलता में कमी आ जाती है। उन्हें लगभग 15,000 लोगों के सामने एक विदेशी भाषा में अपना भाषण पढ़ते देखकर दुख होता था। उनमें से सातवां भाग भी उनकी अंग्रेजी को न समझ सकता था। कांग्रेस की कार्रवाई से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होगया है कि समस्त कार्रवाई नहीं तो उसका अधिकांश हिंदी में चलाया जाना चाहिए। यदि हम जनसाधारण के लिए काम करना और उन्हीं में से प्रतिनिधि लेना चाहते हैं तो हमारे सामने एक यही मार्ग रह गया है।

मध्यप्रदेश, संयुक्त प्रदेश, दिल्ली, पंजाब और बिहार में केवल हिन्दुस्तानी ही बोली जाती है और मद्रास प्रेसीडेंसी के अलावा भारत के सभी दूसरे भागों में हिंदी सामान्यतः समझी जाती है क्योंकि इस भाषा का और अन्य प्रांतों की देशी भाषाओं का स्रोत एक ही है । एकमात्र मद्रास के कारण कठिनाई उत्पन्न होती है और उस प्रेसीडेंसी के कुछ सौ प्रतिनिधियों के लिए, उन हजारों प्रतिनिधियों पर जो अंग्रेजी नहीं समझ सकते किंतु जो थोड़ी या बहुत हिन्दुस्तानी समझ सकते हैं, और जबर्दस्ती करना उचित होगा । एकमात्र सीधा, कम खर्चीला और राजनीतिक दृष्टि से उचित मार्ग यह है कि कांग्रेस की कार्रवाई मुख्यतः हिंदुस्तानी में चलाई जाए और द्रविड़ भाषाएं बोलने वाले सदस्यों को अंग्रेजी में या तमिल या तेलुगु में बोलने की स्वतंत्रता हो । मैं मानता हूं कि कुछ साल तक विषय-समिति की कार्रवाई अंग्रेजी में चलती रहे, परंतु यदि हम कांग्रेस के द्वारा देश को ठीक तरह की राजनैतिक शिक्षा देना चाहते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को यह बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि यह कार्य केवल हिंदी के माध्यम से ही किया जा सकता है । इसलिए मेरा विश्वास है कि मद्रास के जो लोग अखिल भारतीय सार्वजनिक कार्य करना चाहते हैं और कांग्रेस के प्रतिनिधि होने की महत्वाकांक्षा रखते हैं, वे जल्दी ही हिंदी सीख लेंगे । उन्हें मद्रास प्रेसीडेंसी में हिंदी सीखने की सुविधाएं प्राप्त हैं और यदि वे हिंदी पढ़ना अभी आरंभ कर दें और प्रतिदिन कम से कम एक घंटा नियमित रूप से खर्च करें तो साल के अंत तक वे सामान्यतः कांग्रेस की कार्रवाई को समझ सकेंगे ।

(यंग इंडिया - 7-1-1920 से उद्धृत)

0 शैक्षिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण में हिंदी के अध्ययन की प्रगति

दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार कार्य में अनेक संस्थाएं इस समय काम कर रही हैं। प्रतिवर्ष हजारों छात्र इन परीक्षाओं की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। हमारे क्षेत्रीय अधिकारी (दक्षिण) ने दक्षिण भारत की कुछ हिंदी संस्थाओं की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित छात्रों के आंकड़े भेजे हैं जिन्हें हम पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दे रहे हैं :-

मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलोर-4

	1965	1966	1967	1968	जून 1969 तक
प्रथमा	11858	15361	13859	8422	4557
मध्यमा	8993	11618	10718	6549	3574
प्रवेश	2675	4154	4186	3458	1483
उत्तमा	894	1519	1707	1628	625
रत्न	362	541	741	801	493

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, चैमरपैट, बंगलोर-16

प्रथमा	3157	6106	5965	5480	1460
मध्यमा	1466	2809	3593	3013	1051
उत्तमा	665	1437	1676	1289	369
भाषा भूषण	292	541	651	555	179
भाषा प्रवीण (पूर्वार्द्ध)	135	305	312	359	106
भाषा प्रवीण (उत्तरार्द्ध)	28	174	151	247	81

मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति, बंगलौर-11

प्रथमा	7485	6866	6927	5057	2866
मध्यमा	5122	4601	5395	4250	2162
राजभाषा	2497	2411	2866	2380	1184
राजभाषा प्रकाश	1129	1330	1683	1892	706
राजभाषा विज्ञान	985	1418	1393	1784	897

केरल हिंदी प्रचार सभा, त्रिवेन्द्रम

प्रथमा	2687	2971	2765	2056	985
दूसरी	2495	2083	2263	1855	237
राष्ट्रभाषा	1060	943	1015	926	191
प्रवेश	831	956	1901	1413	401
एंट्रेंस	1914	700	--	--	-
भूषण-प्रथम	2644	2065	60	--	330
भूषण-द्वितीय	2775	1900	2382	921	533
साहित्याचार्य प्रथम	246	259	247	573	263
साहित्याचार्य द्वितीय	36	172	174	731	297

हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद

नागरी बोध	2045	3599	3172	3327	1654
प्रवेश	4274	6976	5940	6324	2673
प्रथमा	4008	7434	7402	7634	2878
मध्यमा	3812	7296	6888	5747	2080
उत्तमा	3461	6644	8615	7864	2429
विशारद	1775	3641	5859	6886	2216
भूषण	1310	2656	3399	3696	1626

विद्वान-प्रथम	--	666	1605	1460	708
विद्वान-द्वितीय	--	--	736	842	406
विद्वान-सम्पूर्ण	431	902	735	517	250

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

प्रवेशिका	--	12269	12322	11135	4010
पूर्वार्द्ध	--	8642	7969	7203	2852
उत्तरार्द्ध	--	5072	6960	6575	2664
प्रवीण	--	10810	11621	10973	4417
प्रवीण (मौखिक)	--	1263	2237	1899	610

प्रचारक शिविर तथा सम्मेलन का आयोजन

असम राष्ट्रभाषा प्रचारसमिति, शिलांग की ओर से 19 तथा 20 जुलाई को गोलाघाट में एक प्रचारक शिविर तथा सम्मेलन का आयोजन हुआ । इसमें लगभग 40 प्रचारकों ने भाग लिया । प्रचारक सम्मेलन की अध्यक्षता असम साहित्य सभा के सभापति श्री आनंद चंद्र बरुआ ने की । जोरहाट के हिन्दी तथा असमिया भाषा के विद्वान् श्री बापचंद्र महंत, असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र नाथ शर्मा तथा श्रीमती कैशदा महंत प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

अखिल भारतीय हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् 5 तथा 6 अक्टूबर, 1969 को देश भर में 40 से अधिक केन्द्रों पर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है । प्रतियोगिता के केन्द्र दक्षिण भारत में मद्रास, तिरुचिरापल्ली, तूतीकोरिन, पांडिचेरी, त्रिवेन्द्रम, एरणाकुलम, हैदराबाद आदि नगरों में भी रहेंगे । विजेताओं को प्रथम पुरस्कार में 101 रुपए नकद, पदक और चलशील्ड, द्वितीय पुरस्कार में 51 रुपए नकद, और पदक, तृतीयपुरस्कार में 31 रुपए नकद व पदक आदि दिए जाएंगे । अहिन्दी भाषी प्रतियोगियों को तथा नए कुंजीपटल के टाइपराइटर पर अधिकतम

विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रों पर प्रथम आने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप पदक दिए जाएंगे । 50 शब्द या उससे अधिक शब्द की गति से टाइप करने वालों को प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे । प्रतियोगिता में सरकारी कर्मचारी तथा गैर-सरकारी व्य सभी सम्मिलित हो सकते हैं । इच्छुक व्यक्ति नियमों आदि की जानकारी के लिए परिषद् के कार्यालय एक्स0वाई0 सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-22 से सम्पर्क कर सकते हैं ।

हिंदी पत्र-व्यवहार प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् नईदिल्ली की ओर से 15 नवंबर 1969 से 19 जनवरी 1970 तक एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है । इस प्रतियोगिता के अधीन हिंदी भाषी राज्यों के उन सरकारी कर्मचारियों को पुरस्का दिए जाएंगे जो केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को हिंदी में अधिकतम पत्र लिखेंगे । राजपत्रित अधिकारियों और अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए अलग-अलग पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है । इस प्रतियोगिता में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, बिहार, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र शासनों के सचिवालय के सभी कर्मचारी और अधिकारी भाग ले सकेंगे । विशेष विवरण के लिए परिषद् के मंत्री से एक्स0वाई0 68 के पते पर पत्र-व्यवहार करें ।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

प्रादेशिक भाषाओं में कानूनों के अनुवाद के लिए निदेश

केंद्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन ने आज लोकसभा में बताया कि सरकार ने राज्यों से आग्रह किया है कि वे राज्यों के कानूनों को अपनी भाषा में अनूदित कराएं। एक संसद सदस्य द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया : संसद में विधेयकों को हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में तैयार कराने का काम आरंभ होगया है। विधेयकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने की व्यवस्था भी कर ली गई है। राज्यों के कानूनों का अनुवाद वहां की प्रादेशिक भाषा में कराने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। कुछ राज्य सरकारों ने इस दिशा में कदम उठाए हैं और आशा है कि कालांतर में अन्य राज्य सरकारें भी अपनी भाषाओं में कानून बनाएंगी।

संस्कृत दिवस का आयोजन

इस वर्ष 27 अगस्त का दिन देश भर में संस्कृत दिवस के रूप में मनाया गया। राजधानी में इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं ने समारोहों का आयोजन किया। संसदीय संस्कृत परिषद् की ओर से मावलंकर हाल में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय पर्यटन मंत्री डा० कर्ण सिंह ने की। शिक्षामंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। अपने भाषण में डा० राव ने कहा : "संस्कृत भाषा देश के एक भाग को दूसरे भाग से जोड़ने वाली भाषा है।" श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के तत्वावधान में आयोजित समारोह में, दिल्ली के उप राज्यपाल डा० आदित्यनाथ झा ने कहा : संस्कृत विश्व की भाषा है, विदेशी विद्वानों ने भी संस्कृत की उल्लेखनीय सेवा की है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डा० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय ने इस बात पर जोर दिया कि पाठ्यक्रम में संस्कृत को अनिवार्य विषय बना दिया जाना चाहिए। आर्य समाज दीवानहाल, श्री रामदल संस्कृत महाविद्यालय, आयुर्वेद विद्यापीठ तथा राजधानी की अन्य अनेक शिक्षण संस्थाओं ने भी संस्कृत दिवस के उपलक्ष में समारोहों का आयोजन किया।

४. राजधानी में

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का रजत जयंती समारोह

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का रजत जयंती समारोह रविवार 17 अगस्त, 1969 को राजधानी में बड़ी धूमधाम से मनाया गया । समारोह का उद्घाटन वरिष्ठ नेता श्री मोरारजी देसाई ने किया और अध्यक्षता संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास ने की । अपने भाषण में श्री मोरारजी देसाई ने कहा : "हिन्दी को जो स्थान मिला चाहिए था, वह नहीं मिला, यह तथ्य हमें स्वीकार करना चाहिए । हमें निष्ठा, श्र और निश्चय से उसे उसका स्थान दिलाना होगा । जबतक हिंदी को वह स्थान नहीं मिलता, देश पूरे माने में एक नहीं बन सकेगा क्योंकि पूरे देश को जोड़ने का एकमात्र साधन हिंदी भाषा ही है । जब लोगों की भाषामें राज्य न चला तो वह राज्य कैसा ? इस अवसर पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार, डा0 नगेन्द्र, डा0 विजयेन्द्र स्नातक और वैद्य गुरुदत्त को ताम्रपत्र तथा 21 अन्य साहित्यकारों को सम्मानपत्र भेंट किए गए ।

संशोधित नागरी टाइप की प्रदर्शनी

नरेन्द्र श्रीवास्तव नामक एक युवक ने अभी हाल ही में देवनागरी के सुधरे हुए टाइपों की एक प्रदर्शनी दिल्ली में की । इससे पहले वे इसी प्रकार की प्रदर्शनी पेरिस में कर चुके हैं । श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव 18 मास पूर्व टाइपोग्राफी विषय पर फ्रांस सरकार की शत्रवृत्ति लेकर फ्रांस गए थे जहां उन्होंने कु0 सिलविया मूर के सहयोगसे संशोधित देवनागरी लिपि की पहली प्रदर्शनी का आयोजन किया था । कु0 सिलविया अंतर्राष्ट्रीय टाइपोग्राफी एसोसिएशन की ओर से आजकल भारत आई हैं । यहां वे देवनागरी के मूल स्रोत के बारे में अनुसंधान करेंगी । श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव, भारत सरकार को अपने टाइप दिखाने के बाद जर्मनी जाएंगे जहां वे यूनेस्को के तत्वावधान में एक प्रदर्शनी का आयोजन करेंगे ।

तुलसी जयंती समारोह

रामचरित मानस के यशस्वी लेखक गोस्वामी तुलसीदास की जयंती 20 अगस्त को राजधानी की अनेक संस्थाओं द्वारा मनाई गई। नागरी प्रचारिणी सभा की दिल्ली शाखा की ओर से इस अवसर पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मलयालम के महाकवि श्री शंकर कुरुप्प ने की। स्वतंत्र भारत मिल हायर सेकैंडरी स्कूल में भी एक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार ने की। 24 अगस्त को मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में आयोजित एक समारोह में दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा ने घोषणा की कि दिल्ली में तुलसी स्मारक तथा तुलसी भवन के निर्माण की योजना विचाराधीन है। इस समारोह का उद्घाटन उप-राज्यपाल डा0 आदित्यनाथ झा ने किया। सूचना, प्रसारण तथा संचार मंत्री श्री सत्यनारायण सिन्हा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व कार्यालय शाखा की ओर से भी 28 अगस्त, 1969 को कार्यालय के मनोरंजन भवन में तुलसी जयंती समारोह मनाया गया। महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व श्री डी0डी0 ढींगरा ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह में रामचरित मानस की चौपाइयों के सस्वर पाठ की एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

महात्मा गांधी और हिंदी विषय पर विचार गोष्ठी

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन शक्तिनगर मंडल की ओर से 'महात्मा गांधी और हिन्दी' विषय पर 10 अगस्त को एक गोष्ठी का आयोजन किया। प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक आचार्य कालेलकर ने गोष्ठी में भाषण देते हुए कहा : हिन्दी उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाली सबसे बड़ी कड़ी है। यदि यह कड़ी बची रही तो देश को मजबूत बनाया जा सकता है। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने की।

नवोदित साहित्य संघ का उद्घाटन

नवोदित लेखकों एवं कवियों की एक नई संस्था 'नवोदित साहित्यकार संघ' का नई दिल्ली में 17 अगस्त को उद्घाटन हुआ । नवभारत टाइम्स के प्रधान संपादक श्री अक्षय कुमार जैन ने संस्था का उद्घाटन किया । इस अवसर पर एक काव्य संध्या का आयोजन भी किया गया जिसमें अनेक नवोदित कवियों ने भाग लिया ।

रामचरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने की तैयारी

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने के लिए एक करोड़ रुपया संग्रह करने का निश्चय किया गया है । इस प्रयोजन के लिए एक समिति का गठन किया गया है जिसके अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी होंगे । दिल्ली के उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा, मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा, महापौर ला० हंसराज गुप्त, डा० बच्चन, डा० दिनकर तथा केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन इस समिति के सदस्य चुने गए हैं । केन्द्रीय वित राज्य मंत्री श्री कृष्णचंद्र पंत समिति के संयोजक हैं ।

केंद्रीय विद्यालयों में हिंदी शिक्षाका माध्यम होगी

श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ द्वारा संस्थापित केन्द्रीय विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने आशा प्रकट की है कि भविष्य में सभी केन्द्रीय विद्यालयों में हिंदी को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपना लिया जाएगा । समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की ।

* प्रादेशिक अंचल में

महाराष्ट्र

सर्वभाषा कवि सम्मेलन

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद-समन्वय समिति तथा भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में स्वाधीनता दिवस के अवसर पर बंबई में एक सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध गीतकार श्री भरत व्यास ने की और उसका संचालन श्री रामनिरख मनहर ने किया । इस में हिंदी, मराठी, तेलुगु, गुजराती, संस्कृत, उर्दू आदि भाषाओं के कवियों ने भाग लिया ।

तुलसी जयंती समारोह

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय, बंबई की ओर से 20 अगस्त 1969 को तुलसी जयंती समारोह का आयोजन किया गया । पश्चिम रेलवे के मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री टी0पी0 सुब्रमण्यम ने समारोह की अध्यक्षता की और रिज़र्व बैंक आफ इंडिया के हिन्दी अधिकारी डा0 पी0 जयरामन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए ।

पंजाब

पंजाब प्रादेशिक भारतीय साहित्य परिषद, की कार्यकारिणी की बैठक लुधियाना में 9 सितंबर को हुई । इस अवसर पर साहित्यकारों की एक गोष्ठी भी हुई और सायंकाल एक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया । गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए परिषद के महामंत्री श्री रत्नसिंह शांडिल्य ने कहा : सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि स्वीकार करने से भाषाओं में आदान-प्रदान अधिक होगा ।

हरियाणा

हरियाणा सरकार ने निश्चय किया है कि पंजाब और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत और हिंदी की परीक्षाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त करनेवाले उम्मीदवारों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे । करनाल जिला भाषा विभाग के इंचार्ज के कथनानुसार जिला स्तर पर तथा राज्य स्तर पर उन्हें सम्मान के लिए विशेष

समारोह आयोजित किए जाएंगे तथा हिंदी के क्षेत्र में उनकी सेवाओं को ध्यान में रख हुए उन्हें विशेष सहायता दी जाएगी ।

उत्तरप्रदेश

तुलसी शोध संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव

उत्तरप्रदेश की एक साहित्यिक संस्था तुलसी स्मारक समिति ने तुलसी शोध संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव रखा है । मालूम हुआ है कि इस संस्थान के लिए लखनऊ में उपयुक्त स्थान की खोज की जा रही है । उक्त शोध संस्थान तुलसी साहित्य के विद्वानों, शोध छात्रों तथा विचारकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा ।

तुलसी स्मारक समिति की स्थापना 15 वर्ष पूर्व हुई थी । समिति महाकवि तुलसी के जन्मस्थान राजापुर में विशाल स्मारक भवन का निर्माण कर रही है जिसका लगभग पूरा हो चुका है ।

पंत हीरक जयंती की तैयारी

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत की हीरक जयंती मनाने के लिए श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई है । समिति आगामी मई मास में श्री पंत की 70वीं वर्षगांठ मनाने का प्रबंध करेगी । इस अवसर पर सारे देश में जयंती समारोहों का आयोजन किया जाएगा तथा पंतजी को अभिनन्दनग्रंथ भी भेंट किया जाए

हिंदी सतर्कता समितियों का गठन किया जाए

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन ने निश्चय किया है कि प्रत्येक हिंदी भाषी राज्य में हिंदी सतर्कता समिति गठित की जाए जो प्रशासन के कार्य में हिंदी के व्यवहा की प्रगति पर नजर रखे । कुछ समय पहले भोपाल में मध्यप्रदेश के विधायकों की सभा में एक समिति का गठन किया गया है ।

* विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं में साहित्य का निर्माण

विश्वविद्यालयों की सहायता से भारतीय भाषाओं में साहित्य के निर्माण के लिए शिक्षा मंत्रालय ने कई योजनाएं तैयार की हैं जिन्हें शीघ्र ही व्यावहारिक रूप दिया जाएगा। योजनाओं का लक्ष्य विश्वविद्यालयों की शिक्षा का माध्यम बदलने के लिए तैयार करना है।

देश के कुल 86 विश्वविद्यालयों में से, जिनमें कुछ संभावित विश्वविद्यालय भी सम्मिलित हैं 52 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जिनमें अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जा चुका है। इन 52 विश्वविद्यालयों में से 39 कई अथवा सभी पाठ्यक्रमों में हिंदी को अध्यापन का माध्यम बना चुके हैं। इन पाठ्यक्रमों में बी०ए०, बी०एस्सी०, बी०काम०, एम०ए०, एम०काम० तथा एल० एल०बी० के पाठ्यक्रम शामिल हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं में कन्नड़, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, उड़िया, उर्दू, तेलुगु तथा पंजाबी विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम है। तीन विश्वविद्यालयों में सभी पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षा का माध्यम संस्कृत है।

भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए भारत सरकार ने जो योजना बनाई है उसके अंतर्गत प्रत्येक राज्य सरकार को एक करोड़ रुपये की राशि अनुदान में दी जाएगी।

एक अन्य योजना के अंतर्गत भारतीय विद्या भवन की ग्रंथमाला 'हिस्ट्री एंड कल्चर आफ इंडियन पीपुल' के 10 खंडों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का निश्चय किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने चौथी योजना के प्रत्येक वर्ष में 100 फैलोशिप प्रदान करने का विचार किया है। ये फैलोशिप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण उन स्नातकोत्तर छात्रों को दी जाएंगी जिन्होंने विदेशी भाषाओं से पुस्तकें अनूदित करने का निश्चित प्रशिक्षण लेने के बाद क्षेत्रीय भाषाओं में मौलिक ग्रंथ लिखने अथवा अनुवाद करने का काम प्रारम्भ कर दिया है।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, स्पैनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होती है। प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदिप्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणनासंसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। यह निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9.50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10.50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध सम्पादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें।

भाषा (त्रैमासिक)

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण हैं। मूल्य एक प्रति 3.00 रुपये, वार्षिक : 10.00 रुपये। प्राप्ति स्थान : प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-6.

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

2-1-70

हिंदी समाचार जगत

वर्ष   अंक
3   12

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा मंत्रालय

भारत सरकार

हिंदी [illegible]

रजिस्ट्रेशन संख्या आर0एन0 12817।66

जय हिन्दी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अगस्त 69 अंक 12

0 भाषा संगम
0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं
0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

गांधी जी ने कहा था -

अंग्रेजी सीखने के पीछे लाखों रुपया खर्च करने के बावजूद गिने चुने लोग ही इस भाषा को सीख सके हैं और ऐसा होने पर भी उस भाषा पर पूर्ण अधिकार रखने वाले लोग तो इक्के-दुक्के ही होते हैं । इस भाषाको सीखने के लिए जो प्रयत्न करना पड़ता है उसे देखता हूं तो मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि उससे देश का तेज क्षीण हो रहा है ।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, (शिक्षा मंत्रालय) वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम

गांधी जी ने कहा था - (पृष्ठ 3 से आगे)

इस प्रश्न के भीतर भारत की उन्नति के बीज निहित हैं । जिस राष्ट्र ने अपनी भाषा का अनादर किया है उस राष्ट्र के लोग अपनी राष्ट्रीयता खो बैठते हैं । हम में से अधिकांश लोगों की यही हालत होगई है । पृथ्वी पर हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है जहां मां-बाप अपने बच्चों के साथ मातृभाषा में न बोलकर, अपने बच्चों को मातृभाषा की बनिस्बत अंग्रेजी में लिखना पसंद करेंगे । मैं अंग्रेजी से द्वेष नहीं करता । मुझे यह भी लगता है कि कुछ कामों के लिए कुछ लोगों को अंग्रेजी सीखनी है । हम लोगों में दुभाषिये का काम करने के लिए (कुछ लोगों को) अंग्रेजी सीखनी चाहिए । और मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि इसके लिए अंग्रेजी का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए । लेकिन अन्य कार्यों के लिए, अदालतों और केंद्रीय विधान सभाओं में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी होनी चाहिए । इसके अलावा दूसरी भाषा में काम-काज चलाने से राष्ट्र को नुकसान पहुंचता है । जबतक हम इस तत्व को ग्रहण नहीं कर लेते तब तक हमारी सारी मेहनत बेकार जाएगी । इसी से मैंने पिछले वर्ष यह कहा था कि हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन बम्बई में किया गया होता तो अच्छा होता । हम देखते हैं कि ऐसा किया गया है । अधिवेशन इस मास की 18, 19 और 20 तारीख को होगा । पं० मालवीय जी ने अधिवेशन की अध्यक्षता करना स्वीकार कर लिया है । इसलिए आप लोग अधिवेशन की मदद करें । मंत्रियों ने बताया है कि इस अधिवेशन पर 10,000 रुपया खर्च होगा । इस में आप जितनी सहायता देंगे वह सम्मेलन को दी गई सहायता मानी जाएगी । वैसे यह कोई ऊंचे दर्जे की सहायता नहीं है । ऊंचे दर्जे की मदद तो वह कही जाएगी कि जो लोग यहां उपस्थित हैं वे जल्दी ही इस भाषा को सीख लें

रात को एक-एक घंटे किसी शिक्षक के पास बैठकर सीखने से कुछ ही समय में यह भाषा सीखी जा सकती है । मैं अब अधिक समय नहीं लेना चाहता । (बम्बई में, हिंदी साहित्य सम्मेलन की एक सभा में (18-4-1919 से पूर्व) दिए गए भाषण से उद्धृत)

हम से गलतियां हो जाती हैं

जिस समय माननीय सिन्हा क्षतिपूर्ति विधेयक (इंडेम्निटी बिल) पर बोल रहे थे, वे शब्दों के प्रयोग में गड़बड़ा गए । सर जार्ज लाउण्डेज ने उन्हें टोका लेकिन परम श्रेष्ठ सभापति ने यह कह कर उनका बचाव किया कि जबान की चूक है । तत्पश्चात् श्री सिन्हा ने ये स्पष्ट तथा शालीन शब्द कहे : "आपके लिए यह समझना कठिन है कि इस परिषद में विदेशी जबान बोलने में हमें क्या कठिनाई होती है । हमसे गलतियां हो जाती हैं ।" बात बिलकुल सही है । हमसे अपनी मातृभाषा में बोलते समय भी गलतियां हो जाती हैं लेकिन वे इतनी हास्यास्पद नहीं होतीं जितनी कि जब हम विदेशी जबान में बोलने की कोशिश करते हैं । प्रो० यदुनाथ सरकार ने कहा है कि हमारे अंग्रेजी में बोलने और सोचने से हमारे दिमाग पर इतना बोझ पड़ता है कि हम उससे कभी पूरे तौर पर मुक्त नहीं हो पाते ।

(यंग इंडिया - 8-10-1919 से उद्धृत)

कांग्रेस की कार्यवाही हिंदी में हो

अंग्रेजी में होने के कारण अध्यक्ष के भाषण की प्रभावशीलता में कमी आ जाती है । उन्हें लगभग 15,000 लोगों के सामने एक विदेशी भाषा में अपना भाषण पढ़ते देखकर दुख होता था । उनमें से सातवां भाग भी उनकी अंग्रेजी को न समझ सकता था कांग्रेस की कार्रवाई से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होगया है कि समस्त कार्रवाई नहीं त उसका अधिकांश हिंदी में चलाया जाना चाहिए । यदि हम जनसाधारण के लिए काम करना और उन्हीं में से प्रतिनिधि लेना चाहते हैं तो हमारे सामने एक यही मार्ग रह गया है ।

मध्यप्रदेश, संयुक्त प्रदेश, दिल्ली, पंजाब और बिहार में केवल हिन्दुस्तानी ही बोली जाती है और मद्रास प्रेसीडेंसी के अलावा भारत के सभी दूसरे भागों में हिंदी सामान्यत: समझी जाती है क्योंकि इस भाषा का और अन्य प्रांतों की देशी भाषाओं का स्रोत एक ही है। एकमात्र मद्रास के कारण कठिनाई उत्पन्न होती है और उस प्रेसीडेंसी के कुछ सौ प्रतिनिधियों के लिए, उन हजारों प्रतिनिधियों पर जो अंग्रेजी नहीं समझ सकते किंतु जो थोड़ी या बहुत हिन्दुस्तानी समझ सकते हैं, और जबर्दस्ती करना उचित न होगा। एकमात्र सीधा, कम खर्चीला और राजनीतिक दृष्टि से उचित मार्ग यह है कि कांग्रेस की कार्रवाई मुख्यत: हिंदुस्तानी में चलाई जाए और द्रविड़ भाषाएं बोलने वाले सदस्यों को अंग्रेजी में या तमिल या तेलुगु में बोलने की स्वतंत्रता हो। मैं मानता हूं कि कुछ साल तक विषय-समिति की कार्रवाई अंग्रेजी में चलती रहे, परंतु यदि हम कांग्रेस के द्वारा देश को ठीक तरह की राजनैतिक शिक्षा देना चाहते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को यह बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि यह कार्य केवल हिंदी के माध्यम से ही किया जा सकता है। इसलिए मेरा विश्वास है कि मद्रास के जो लोग अखिल भारतीय सार्वजनिक कार्य करना चाहते हैं और कांग्रेस के प्रतिनिधि होने की महत्वाकांक्षा रखते हैं, वे जल्दी ही हिंदी सीख लें। उन्हें मद्रास प्रेसीडेंसी में हिंदी सीखने की सुविधाएं प्राप्त हैं और यदि वे हिंदी पढ़ना अभी आरंभ कर दें और प्रतिदिन कम से कम एक घंटा नियमित रूप से खर्च करें तो साल के अंत तक वे सामान्यत: कांग्रेस की कार्रवाई को समझ सकेंगे।

(यंग इंडिया - 7-1-1920 से उद्धृत)

0 सैक्षिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण में हिंदी के अध्ययन की प्रगति

दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार कार्य में अनेक संस्थाएं इस समय काम कर रही हैं। प्रतिवर्ष हजारों छात्र इन परीक्षाओं की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। हमारे क्षेत्रीय अधिकारी (दक्षिण) ने दक्षिण भारत की कुछ हिंदी संस्थाओं को विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित छात्रों के आंकड़े भेजे हैं जिन्हें हम पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दे रहे हैं :-

मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलौर-4

	1965	1966	1967	1968	जून 1969 तक
प्रथमा	11358	15361	13359	8422	4557
मध्यमा	8993	11618	10718	6549	3574
प्रवेश	2675	4154	4186	3458	1483
उत्तमा	894	1519	1707	1628	625
रत्न	362	541	741	801	493

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, चैमरपेट, बंगलौर-16

प्रथमा	3157	6106	5965	5480	1460
मध्यमा	1466	2809	3593	3013	1051
उत्तमा	665	1437	1676	1289	369
भाषा भूषण	292	541	851	555	179
भाषा प्रवीण(पूर्वार्द्ध)	135	305	312	359	106
भाषा प्रवीण(उत्तरार्द्ध)	28	174	151	247	81

मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति, बंगलौर-11

प्रथमा	7485	6866	6927	5057	2866
मध्यमा	5122	4601	5395	4250	2162
राजभाषा	2497	2411	2866	2380	1184
राजभाषा प्रकाश	1129	1330	1683	1892	706
राजभाषा विज्ञान	985	1418	1393	1734	897

केरल हिंदी प्रचार सभा, त्रिवेन्द्रम

प्रथमा	2687	2971	2765	2056	985
दूसरी	2495	2083	2263	1855	237
राष्ट्रभाषा	1060	943	1015	926	191
प्रवेश	831	956	1901	1413	401
एंट्रेंस	1914	709	--	--	--
भूषण-प्रथम	2644	2065	60	--	380
भूषण-द्वितीय	2775	1900	2382	921	583
साहित्याचार्य प्रथम	246	259	247	573	263
साहित्याचार्य द्वितीय	36	172	174	731	297

हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद

नागरी बोध	2045	3599	3172	3327	1654
प्रवेश	4274	6976	5940	6324	2673
प्रथमा	4008	7434	7402	7634	2878
मध्यमा	3812	7296	6888	5747	2080
उत्तमा	3461	6644	8615	7864	2429
विशारद	1775	3641	5859	6886	2216
भूषण	1310	2656	3399	3696	1626

विद्वान-प्रथम	--	666	1605	1460	708
विद्वान-द्वितीय	--	--	736	842	406
विद्वान-सम्पूर्ण	431	902	735	517	250

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

प्रवेशिका	--	12269	12322	11135	4010
पूर्वार्द्ध	--	8642	7969	7203	2852
उत्तरार्द्ध	--	5072	6960	6575	2664
प्रवीण	--	10810	11621	10973	4417
प्रवीण (मौखिक)	--	1263	2237	1899	610

प्रचारक शिविर तथा सम्मेलन का आयोजन

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, शिलांग की ओर से 19 तथा 20 जुलाई को गोलाघाट में एक प्रचारक शिविर तथा सम्मेलन का आयोजन हुआ । इसमें लगभग 40 प्रचारकों ने भाग लिया । प्रचारक सम्मेलन की अध्यक्षता असम साहित्य सभा के सभापति श्री आनंद चंद्र बरुआ ने की । जोरहाट के हिन्दी तथा असमिया भाषा के विद्वान् श्री बापचंद्र महंत, असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र नाथ शर्मा तथा श्रीमती कैशदा महंत प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

अखिल भारतीय हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् 5 तथा 6 अक्टूबर, 1969 को देश भर में 40 से अधिक केन्द्रों पर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है । प्रतियोगिता के केन्द्र दक्षिण भारत में मद्रास, तिरुचिरापल्ली, तूतीकोरिन, पांडिचेरी, त्रिवेन्द्रम, एरणाकुलम, हैदराबाद आदि नगरों में भी रहेंगे । विजेताओं को प्रथम पुरस्कार में 101 रुपए नकद, पदक और चलशील्ड, द्वितीय पुरस्कार में 51 रुपए नकद, और पदक, तृतीय पुरस्कार में 31 रुपए नकद व पदक आदि दिए जाएंगे । अहिन्दी भाषी प्रतियोगियों को तथा नए कुंजीपटल के टाइपराइटर पर अधिकतम गति से टाइप करने वाले प्रतियोगियों को विशेष पुरस्कार दिए जाएंगे ।

विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रों पर प्रथम आने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप पदक दिए जाएंगे। 50 शब्द या उससे अधिक शब्द की गति से टाइप करने वालों को प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे। प्रतियोगिता में सरकारी कर्मचारी तथा गैर-सरकारी व्यक्ति भी सम्मिलित हो सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति नियमों आदि की जानकारी के लिए परिषद् के कार्यालय एक्स0वाई0 सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-22 से सम्पर्क कर सकते हैं।

हिंदी पत्र-व्यवहार प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् नई दिल्ली की ओर से 15 नवंबर 1969 से 19 जनवरी 1970 तक एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता के अधीन हिंदी भाषी राज्यों के उन सरकारी कर्मचारियों को पुरस्कार दिए जाएंगे जो केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को हिंदी में अधिकतम पत्र लिखें। राजपत्रित अधिकारियों और अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए अलग-अलग पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है। इस प्रतियोगिता में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, बिहार, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र शासनों के सचिवालय के सभी कर्मचारी और अधिकारी भाग ले सकेंगे। विशेष विवरण के लिए परिषद् के मंत्री से एक्स0वाई0 68 के पते पर पत्र-व्यवहार करें।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

प्रादेशिक भाषाओं में कानूनों के अनुवाद के लिए निदेश

केंद्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन ने आज लोकसभा में बताया कि सरकार ने राज्यों से आग्रह किया है कि वे राज्यों के कानूनों को अपनी भाषा में अनूदित कराएं। एक संसद सदस्य द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया : संसद में विधेयकों को हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में तैयार कराने का काम आरंभ होगया है। विधेयकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की व्यवस्था भी क ली गई है। राज्यों के कानूनों का अनुवाद वहां की प्रादेशिक भाषा में कराने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। कुछ राज्य सरकारों ने इस दिशा में कदम उठाए हैं और आशा है कि कालांतर में अन्य राज्य सरकारें भी अपनी भाषाओं में कानून बनाएंगी।

संस्कृत दिवस का आयोजन

इस वर्ष 27 अगस्त का दिन देश भर में संस्कृत दिवस के रूप में मनाया गया। राजधानी में इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं ने समारोहों का आयोजन किया। संसदीय संस्कृत परिषद् की ओर से मावलंकार हाल में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय पर्यटन मंत्री डा0 कर्ण सिंह ने की। शिक्षामंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। अपने भाषण में डा0 राव ने कहा : "संस्कृत भाषा देश के एक भाग को दूसरे भाग से जोड़ने वाली भाषा है।" श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के तत्वावधान में आयोजित समारोह में, दिल्ली के उपराज्यपाल डा0 आदित्यनाथ झा ने कहा : संस्कृत विश्व की भाषा है, विदेशी विद्वानों ने भी संस्कृत की उल्लेखनीय सेवा की है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डा0 सुनीतिकुमार चटोपाध्याय ने इस बात पर जोर दिया कि पाठ्यक्रम में संस्कृत को अनिवार्य विषय बना दिया जाना चाहिए। आर्य समाज दीवानहाल, श्री रामदल संस्कृत महाविद्यालय, आयुर्वेद विद्यापीठ तथा राजधानी की अन्य अनेक शिक्षण संस्थाओं ने भी संस्कृत दिवस

राजधानी में

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का रजत जयंती समारोह

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का रजत जयंती समारोह रविवार 17 अगस्त, 1969 को राजधानी में बड़ी धूमधाम से मनाया गया । समारोह का उद्घाटन वरिष्ठ नेता श्री मोरारजी देसाई ने किया और अध्यक्षता संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास ने की । अपने भाषण में श्री मोरारजी देसाई ने कहा : "हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला, यह तथ्य हमें स्वीकार करना चाहिए । हमें निष्ठा, श्र और निश्चय से उसे उसका स्थान दिलाना होगा । जबतक हिंदी को वह स्थान नहीं मिलता, देश पूरे माने में एक नहीं बन सकेगा क्योंकि पूरे देश को जोड़ने का एकमात्र साधन हिंदी भाषा ही है । सब लोगों की भाषा में राज्य न चला तो वह राज्य कैसा ? इस अवसर पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार, डा० नगेन्द्र, डा० विजयेन्द्र स्नातक और वैद्य गुरुदत्त को ताम्रपत्र तथा 21 अन्य साहित्यकारों को सम्मानपत्र भेंट किए गए ।

संशोधित नागरी टाइप की प्रदर्शनी

नरेन्द्र श्रीवास्तव नामक एक युवक ने अभी हाल ही में देवनागरी के सुधरे हुए टाइपों की एक प्रदर्शनी दिल्ली में की । इससे पहले वे इसी प्रकार की प्रदर्शनी पैरिस में कर चुके हैं । श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव 18 मास पूर्व टाइपोग्राफी विषय पर फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति लेकर फ्रांस गए थे जहां उन्होंने कु० सिलविया मूर के सहयोग से संशोधित देवनागरी लिपि की पहली प्रदर्शनी का आयोजन किया था । कु० सिलविया अंतर्राष्ट्रीय टाइपोग्राफी एसोसिएशन की ओर से आजकल भारत आई हैं । यहां वे देवनागरी के मूल स्रोत के बारे में अनुसंधान करेंगी । श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव, भारत सरकार को अपने टाइप दिखाने के बाद जर्मनी जाएंगे जहां वे यूनेस्को के तत्वावधान में एक प्रदर्शनी का आयोजन करेंगे ।

तुलसी जयंती समारोह

रामचरित मानस के यशस्वी लेखक गोस्वामी तुलसीदास की जयंती 20 अगस्त को राजधानी की अनेक संस्थाओं द्वारा मनाई गई । नागरी प्रचारिणी सभा की दिल्ली शाखा की ओर से इस अवसर पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मलयालम के महाकवि श्री शंकर कुरुप्प ने की । स्वतंत्र भारत मिल हायर सेकेंडरी स्कूल में भी एक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार ने की । 24 अगस्त को मौलाना आजाद मैडिकल कालेज में आयोजित एक समारोह में दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा ने घोषणा की कि दिल्ली में तुलसी स्मारक तथा तुलसी भवन के निर्माण की योजना विचाराधीन है । इस समारोह का उद्घाटन उप-राज्यपाल डा0 आदित्यनाथ झा ने किया । सूचना, प्रसारण तथा संचार मंत्री श्री सत्यनारायण सिन्हा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व कार्यालय शाखा की ओर से भी 28 अगस्त, 1969 को कार्यालय के मनोरंजन भवन में तुलसी जयंती समारोह मनाया गया । महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व श्री डी0डी0 ढींगरा ने समारोह की अध्यक्षता की । समारोह में रामचरित मानस की चौपाइयों के सस्वर पाठ की एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

महात्मा गांधी और हिंदी विषय पर विचार गोष्ठी

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन शक्तिनगर मंडल की ओर से 'महात्मा गांधी और हिन्दी' विषय पर 10 अगस्त को एक गोष्ठी का आयोजन किया । प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक आचार्य कालेलकर ने गोष्ठी में भाषण देते हुए कहा : हिन्दी उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाली सबसे बड़ी कड़ी है। यदि यह कड़ी बची रही तो देश को मजबूत बनाया जा सकता है । गोष्ठी की अध्यक्षता श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने की ।

नवोदित साहित्य संघ का उद्घाटन

नवोदित लेखकों एवं कवियों की एक नई संस्था 'नवोदित साहित्यकार संघ' का नई दिल्ली में 17 अगस्त को उद्घाटन हुआ । नवभारत टाइम्स के प्रधान संपादक श्री अक्षय कुमार जैन ने संस्था का उद्घाटन किया । इस अवसर पर एक काव्य संध्या का आयोजन भी किया गया जिसमें अनेक नवोदित कवियों ने भाग लिया ।

रामचरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने की तैयारी

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने के लिए एक करोड़ रुपया संग्रह करने का निश्चय किया गया है । इस प्रयोजन के लिए एक समिति का गठन किया गया है जिसके अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी होंगे । दिल्ली के उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा, मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा, महापौर ला० हंसराज गुप्त, डा० बच्चन, डा० दिनकर तथा केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन इस समिति के सदस्य चुने गए हैं । केन्द्रीय वित राज्य मंत्री श्री कृष्णचंद्र पंत समिति के संयोजक हैं ।

केंद्रीय विद्यालयों में हिंदी शिक्षाका माध्यम होगी

श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ द्वारा संस्थापित केन्द्रीय विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने आशा प्रकट की है कि भविष्य में सभी केन्द्रीय विद्यालयों में हिंदी को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपना लिया जाएगा । समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की ।

* प्रादेशिक अंचल में

महाराष्ट्र

सर्वभाषा कवि सम्मेलन

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद-समन्वय समिति तथा भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में स्वाधीनता दिवस के अवसर पर बंबई में एक सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध गीतकार श्री भरत व्यास ने की और उसका संचालन श्री रामनिरख मनहर ने किया । इस में हिंदी, मराठी, तेलुगु, गुजराती, संस्कृत, उर्दू आदि भाषाओं के कवियों ने भाग लिया ।

तुलसी जयंती समारोह

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय, बंबई की ओर से 20 अगस्त 1969 को तुलसी जयंती समारोह का आयोजन किया गया । पश्चिम रेलवे के मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री टी०पी० सुब्रमण्यम ने समारोह की अध्यक्षता की और रिज़र्व बैंक आफ इंडिया के हिन्दी अधिकारी डा० पी० जयरामन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए ।

पंजाब

पंजाब प्रादेशिक भारतीय साहित्य परिषद्, की कार्यकारिणी की बैठक लुधियाना में 9 सितंबर को हुई । इस अवसर पर साहित्यकारों की एक गोष्ठी भी हुई और सायंकाल एक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया । गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए परिषद् के महामंत्री श्री रत्नसिंह शांडिल्य ने कहा : सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि स्वीकार करने से भाषाओं में आदान-प्रदान अधिक होगा ।

हरियाणा

हरियाणा सरकार ने निश्चय किया है कि पंजाब और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत और हिंदी की परीक्षाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे । करनाल जिला भाषा विभाग के इंचार्ज के [illegible] जिला स्तर पर तथा राज्य स्तर पर उनके सम्मान के लिए विशेष

समारोह आयोजित किए जाएंगे तथा हिंदी के क्षेत्र में उनकी सेवाओं को ध्यान में रख हुए उन्हें विशेष सहायता दी जाएगी ।

उतरप्रदेश

तुलसी शोध संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव

उतरप्रदेश की एक साहित्यिक संस्था तुलसी स्मारक समिति ने तुलसी शोध संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव रखा है । मालूम हुआ है कि इस संस्थान के लिए लखनऊ में उपयुक स्थान की खोज की जारही है । उक्त शोध संस्थान तुलसी साहित्य के विद्वानों, शोध छात्रों तथा जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा ।

तुलसी स्मारक समिति की स्थापना 15 वर्ष पूर्व हुई थी । समिति महाकवि तुलसी के जन्मस्थान राजापुर में विशाल स्मारक भवन का निर्माण कर रही है जिसका लगभग पूरा हो चुका है ।

पंत हीरक जयंती की तैयारी

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत की हीरक जयंती मनाने के लिए श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई है । समिति आगामी मई मास श्री पंत की 70वीं वर्षगांठ मनाने का प्रबंध करेगी । इस अवसर पर सारे देश में जयंती समारोहों का आयोजन किया जाएगा तथा पंतजी को अभिनन्दनग्रंथ भी भेंट किया जा

हिंदी सतर्कता समितियों का गठन किया जाए

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन ने निश्चय किया है कि प्रत्येक हिंदी भाषी राज्य में हिंदी सतर्कता समिति गठित की जाए जो प्रशासन के कार्य में हिंदी के व्यवहा की प्रगति पर नजर रखे । कुछ समय पहले भोपाल में मध्यप्रदेश के विधायकों की सभा एक समिति का गठन किया गया है ।

* विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं में साहित्य का निर्माण

विश्वविद्यालयों की सहायता से भारतीय भाषाओं में साहित्य के निर्माण के लिए शिक्षा मंत्रालय ने कई योजनाएं तैयार की हैं जिन्हें शीघ्र ही व्यावहारिक रूप दिया जाएगा। योजनाओं का लक्ष्य विश्वविद्यालयों को शिक्षा का माध्यम बदलने के लिए तैयार करना है।

देश के कुल 88 विश्वविद्यालयों में से, जिनमें कुछ संभावित विश्वविद्यालय भी सम्मिलित हैं 52 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जिनमें अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जा चुका है। इन 52 विश्वविद्यालयों में से 39 कई अथवा सभी पाठ्यक्रमों में हिंदी को अध्यापन का माध्यम बना चुके हैं। इन पाठ्यक्रमों में बी०ए०, बी०एससी०, बी०कॉम०, एम०ए०, एम०कॉम० तथा एल० एल०बी० के पाठ्यक्रम शामिल हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं में कन्नड़, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, उड़िया, उर्दू, तेलुगु तथा पंजाबी विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम है। तीन विश्वविद्यालयों में सभी पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षा का माध्यम संस्कृत है।

भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए भारत सरकार ने जो योजना बनाई है उसके अंतर्गत प्रत्येक राज्य सरकार को एक करोड़ रुपये की राशि अनुदान में दी जाएगी।

एक अन्य योजना के अंतर्गत भारतीय विद्या भवन की ग्रंथमाला "हिस्ट्री एंड कल्चर आफ इंडियन पीपुल" के 10 खंडों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का निश्चय किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने चौथी योजना के प्रत्येक वर्ष में 100 फैलोशिप प्रदान करने का विचार किया है। ये फैलोशिप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण उन स्नातकोत्तर छात्रों को दी जाएंगी जिन्होंने विदेशी भाषाओं से पुस्तकें अनूदित करने का निश्चित प्रशिक्षण लेने के बाद क्षेत्रीय भाषाओं में मौलिक ग्रंथ लिखने अथवा अनुवाद करने का काम प्रारम्भ कर दिया है।

----00----

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होती है। प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्री दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदिप्रस्तुत किए जाते हैं। इसकी गणनासंसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। यह निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9.50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10.50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए प्रबंध सम्पादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें। चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पै अधिक भेजें।

भाषा (त्रैमासिक)

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदा का एक मात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण है। मूल्य एक प्रति 3.00 रुपये, वार्षिक : 10.00 रुपये। प्राप्ति स्थान : प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-6.

हिंदी

समाचार

जगत

12

वर्ष

3

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा मंत्रालय

भारत सरकार

रजिस्ट्रेशन संख्या आर०एन० 12817/66त्र

जय हिन्दी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अगस्त 69 अंक 12

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

गांधी जी ने कहा था -

अंग्रेजी सीखने के पीछे लाखों रुपया खर्च करने के बावजूद गिने चुने लोग ही इस भाषा को सीख सके हैं और ऐसा होने पर भी उस भाषा पर पूर्ण अधिकार रखने वाले लोग तो इक्के-दुक्के ही होते हैं। इस भाषा को सीखने के लिए जो प्रयत्न करना पड़ता है उसे देखता हूं तो मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि उससे देश का तेज क्षीण हो रहा है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, (शिक्षा मंत्रालय) वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली-22 से प्रकाशित

0 भाषा संगम

गांधी जी ने कहा था - (पृष्ठ 3 से आगे)

इस प्रश्न के भीतर भारत की उन्नति के बीज निहित हैं। जिस राष्ट्र ने अपनी भाषा का अनादर किया है उस राष्ट्र के लोग अपनी राष्ट्रीयता खो बैठते हैं। हम में से अधिकांश लोगों की यही हालत होगई है। पृथ्वी पर हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है जहां मां-बाप अपने बच्चों के साथ मातृभाषा में न बोलकर, अपने बच्चों को मातृभाषा की बनिस्बत अंग्रेजी में लिखना पसंद करेंगे। मैं अंग्रेजी से द्वेष नहीं करता। मुझे यह भी लगता है कि कुछ कामों के लिए कुछ लोगों को अंग्रेजी सीखनी है। हम लोगों में दुभाषिये का काम करने के लिए (कुछ लोगों को) अंग्रेजी सीखनी चाहिए। और मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि इसके लिए अंग्रेजी का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। लेकिन अन्य कार्यों के लिए, अदालतों और केंद्रीय विधान सभाओं में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी होनी चाहिए। इसके अलावा दूसरी भाषा में काम-काज चलाने से राष्ट्र को नुकसान पहुंचता है। जब तक हम इस तत्व को ग्रहण नहीं कर लेते तब तक हमारी सारी मेहनत बेकार जाएगी। इसी से मैंने पिछले वर्ष यह कहा था कि हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन बम्बई में किया गया होता तो अच्छा होता। हम देखते हैं कि ऐसा किया गया है। अधिवेशन इस मास की 18, 19 और 20 तारीख को होगा। पं० मालवीय जी ने अधिवेशन की अध्यक्षता करना स्वीकार कर लिया है। इसलिए आप लोग अधिवेशन की मदद करें। मंत्रियों ने बताया है कि इस अधिवेशन पर 10,000 रुपया खर्च होगा। इस में आप जितनी सहायता देंगे वह सम्मेलन को दी गई सहायता मानी जाएगी। वैसे यह कोई ऊंचे दर्जे की सहायता नहीं है। ऊंचे दर्जे की मदद तो वह कही जाएगी कि जो लोग यहां उपस्थित हैं वे जल्दी ही इस भाषा को सीख हैं

रात को एक-एक घंटे किसी शिक्षक के पास बैठकर सीखने से कुछ ही समय में यह भाषा सीखी जा सकती है । मैं अब अधिक समय नहीं लेना चाहता । (बम्बई में, हिंदी साहित्य सम्मेलन की एक सभा में (18-4-1919 से पूर्व) दिए गए भाषण से उद्धृत)

हम से गलतियां हो जाती हैं

जिस समय माननीय सिन्हा क्षतिपूर्ति विधेयक (इंडेम्निटी बिल) पर बोल रहे थे, वे शब्दों के प्रयोग में गड़बड़ा गए । सर जार्ज लाउण्डेज ने उन्हें टोका लेकिन परम श्रेष्ठ सभापति ने यह कह कर उनका बचाव किया कि जबान की चूक है । तत्पश्चात् श्री सिन्हा ने ये स्पष्ट तथा शालीन शब्द कहे : "आपके लिए यह समझना कठिन है कि इस परिषद में विदेशी जबान बोलने में हमें क्या कठिनाई होती है । हमसे गलतियां हो जाती हैं ।" बात बिल्कुल सही है । हमसे अपनी मातृभाषा में बोलते समय भी गलतियां हो जाती हैं लेकिन वे इतनी हास्यास्पद नहीं होतीं जितनी कि जब हम विदेशी जबान में बोलने की कोशिश करते हैं । प्रो० यदुनाथ सरकार ने कहा है कि हमारे अंग्रेजी में बोलने और सोचने से हमारे दिमाग पर इतना बोझ पड़ता है कि हम उससे कभी पूरे तौर पर मुक्त नहीं हो पाते ।

(यंग इंडिया - 8-10-1919 से उद्धृत)

कांग्रेस की कार्यवाही हिंदी में हो

अंग्रेजी में होने के कारण अध्यक्ष के भाषण की प्रभावशीलता में कमी आ जाती है । उन्हें लगभग 15,000 लोगों के सामने एक विदेशी भाषा में अपना भाषण पढ़ते देखकर दुख होता था । उनमें से सातवां भाग भी उनकी अंग्रेजी को न समझ सकता था । कांग्रेस की कार्रवाई से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होगया है कि समस्त कार्रवाई नहीं तो उसका अधिकांश हिंदी में चलाया जाना चाहिए । यदि हम जनसाधारण के लिए काम करना और उन्हीं में से प्रतिनिधि लेना चाहते हैं तो हमारे सामने एक यही मार्ग रह गया है ।

मध्यप्रदेश, संयुक्त प्रदेश, दिल्ली, पंजाब और बिहार में केवल हिन्दुस्तानी ही बोली जाती है और मद्रास प्रेसीडेंसी के अलावा भारत के सभी दूसरे भागों में हिंदी सामान्यत: समझी जाती है क्योंकि इस भाषा का और अन्य प्रांतों की देशी भाषाओं का स्रोत एक ही है। एकमात्र मद्रास के कारण कठिनाई उत्पन्न होती है और उस प्रेसीडेंसी के कुछ सौ प्रतिनिधियों के लिए, उन हजारों प्रतिनिधियों पर जो अंग्रेजी नहीं समझ सकते किंतु जो थोड़ी या बहुत हिन्दुस्तानी समझ सकते हैं, और जबर्दस्ती करना उचित न होगा। एकमात्र सीधा, कम खर्चीला और राजनीतिक दृष्टि से उचित मार्ग यह है कि कांग्रेस की कार्रवाई मुख्यत: हिंदुस्तानी में चलाई जाए और द्रविड़ भाषाएं बोलने वाले सदस्यों को अंग्रेजी में या तमिल या तेलुगु में बोलने की स्वतंत्रता हो। मैं मानता हूं कि कुछ साल तक विषय-समिति की कार्रवाई अंग्रेजी में चलती रहे, परंतु यदि हम कांग्रेस के द्वारा देश को ठीक तरह की राजनीतिक शिक्षा देना चाहते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को यह बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि यह कार्य केवल हिंदी के माध्यम से ही किया जा सकता है। इस लिए मेरा विश्वास है कि मद्रास के जो लोग अखिल भारतीय सार्वजनिक कार्य करना चाहते हैं और कांग्रेस के प्रतिनिधि होने की महत्वाकांक्षा रखते हैं, वे जल्दी ही हिंदी सीख लें। उन्हें मद्रास प्रेसीडेंसी में हिंदी सीखने की सुविधाएं प्राप्त हैं और यदि वे हिंदी पढ़ना अभी आरंभ कर दें और प्रतिदिन कम से कम एक घंटा नियमित रूप से खर्च करें तो साल के अंत तक वे सामान्यत: कांग्रेस की कार्रवाई को समझ सकेंगे।

(यंग इंडिया - 7-1-1920 से उद्धृत)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण में हिंदी के अध्ययन की प्रगति

दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार कार्य में अनेक संस्थाएं इस समय काम कर रही हैं। प्रतिवर्ष हजारों छात्र इन परीक्षाओं की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। हमारे क्षेत्रीय अधिकारी (दक्षिण) ने दक्षिण भारत की कुछ हिंदी संस्थाओं की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित छात्रों के आंकड़े भेजे हैं जिन्हें हम पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दे रहे हैं :-

मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलोर-4

	1965	1966	1967	1968	जून 1969 तक
प्रथमा	11858	15861	13359	8422	4557
मध्यमा	8993	11618	10718	6549	3574
प्रवेश	2675	4154	4186	3459	1488
उत्तमा	894	1519	1707	1628	625
रत्न	362	541	741	801	493

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, चेमरपेट, बंगलोर-16

प्रथमा	3157	6106	5965	5480	1460
मध्यमा	1466	2809	3593	3013	1051
उत्तमा	665	1437	1676	1289	369
भाषा भूषण	292	541	651	555	179
भाषा प्रवीण(पूर्वार्द्ध)	135	305	312	359	106
भाषा प्रवीण(उत्तरार्द्ध)	28	174	151	247	81

मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति, बंगलौर-11

प्रथमा	7485	6866	6927	5057	2866
मध्यमा	5122	4601	5395	4250	2162
राजभाषा	2497	2411	2866	2380	1184
राजभाषा प्रकाश	1129	1330	1683	1892	706
राजभाषा विशारद	985	1418	1393	1784	897

केरल हिंदी प्रचार सभा, त्रिवेन्द्रम

प्रथमा	2687	2971	2765	2056	985
दूसरी	2495	2083	2253	1855	287
राष्ट्रभाषा	1060	943	1015	926	191
प्रवेश	831	956	1901	1413	401
एंट्रेंस	1914	709	---	--	-
भूषण-प्रथम	2644	2065	60	—	330
भूषण-द्वितीय	2775	1900	2382	921	533
साहित्याचार्य प्रथम	246	259	247	573	263
साहित्याचार्य द्वितीय	36	172	174	731	297

हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद

नागरी बोध	2045	3599	3172	3327	1654
प्रवेश	4274	6976	5940	6324	2673
प्रथमा	4008	7434	7402	7634	2878
मध्यमा	3312	7296	6888	5747	2089
उत्तमा	3461	6644	8615	7864	2429
विशारद	1775	3641	5859	6886	2216
भूषण	1310	2656	3399	3696	1626

विद्वान-प्रथम	--	666	1605	1460	708
विद्वान-द्वितीय	--	--	736	842	406
विद्वान-सम्पूर्ण	431	902	735	517	250

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

प्रवेशिका	--	12269	12322	11135	4010
पूर्वार्द्ध	--	8642	7969	7203	2852
उत्तरार्द्ध	--	5072	6960	6575	2664
प्रवीण	--	10810	11621	10973	4417
प्रवीण (मौखिक)	--	1263	2237	1899	610

प्रचारक शिविर तथा सम्मेलन का आयोजन

असम राष्ट्रभाषा प्रचारसमिति, शिलांग की ओर से 19 तथा 20 जुलाई को गोलाघाट में एक प्रचारक शिविर तथा सम्मेलन का आयोजन हुआ । इसमें लगभग 40 प्रचारकों ने भाग लिया । प्रचारक सम्मेलन की अध्यक्षता असम साहित्य सभा के सभापति श्री आनंद चंद्र बरुआ ने की । जोरहाट के हिन्दी तथा असमिया भाषा के विद्वान् श्री बापचंद्र महंत, असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र नाथ शर्मा तथा श्रीमती कैशदा महंत प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

अखिल भारतीय हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् 5 तथा 6 अक्टूबर, 1969 को देश भर में 40 से अधिक केन्द्रों पर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है । प्रतियोगिता के केन्द्र दक्षिण भारत में मद्रास, तिरुच्चिरापल्ली, तूतीकोरिन, पांडिचेरी, त्रिवेन्द्रम, एरणाकुलम, हैदराबाद आदि नगरों में भी रहेंगे । विजेताओं को प्रथम पुरस्कार में 101 रुपए नकद, पदक और चलशील्ड, द्वितीय पुरस्कार में 51 रुपए नकद, और पदक, तृतीयपुरस्कार में 31 रुपए नकद वपदक आदि दिए जाएंगे । अहिन्दी भाषी प्रतियोगियों को तथा नए कुंजीपटल के टाइपराइटर पर अधिकतम गति से टाइप करने वाले प्रतियोगियों को विशेष पुरस्कार दिए जाएंगे ।

विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रों पर प्रथम आने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप पदक दिए जाएंगे। 50 शब्द या उससे अधिक शब्द की गति से टाइप करने वालों को प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे। प्रतियोगिता में सरकारी कर्मचारी तथा गैर-सरकारी व्यक्ति सभी सम्मिलित हो सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति नियमों आदि की जानकारी के लिए परिषद् के कार्यालय एक्स0वाई0 सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-22 से सम्पर्क कर सकते हैं।

हिंदी पत्र-व्यवहार प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् नई दिल्ली की ओर से 15 नवंबर 1969 से 19 जनवरी 1970 तक एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता के अधीन हिंदी भाषी राज्यों के उन सरकारी कर्मचारियों को पुरस्कार दिए जाएंगे जो केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को हिंदी में अधिकतम पत्र लिखें। राजपत्रित अधिकारियों और अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए अलग-अलग पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है। इस प्रतियोगिता में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, बिहार, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र शासनों के सचिवालय के सभी कर्मचारी और अधिकारी भाग ले सकेंगे। विशेष विवरण के लिए परिषद् के मंत्री से एक्स0वाई0 68 के पते पर पत्र-व्यवहार करें।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

प्रादेशिक भाषाओं में कानूनों के अनुवाद के लिए निदेश

केंद्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन ने आज लोकसभा में बताया कि सरकार ने राज्यों से आग्रह किया है कि वे राज्यों के कानूनों को अपनी भाषा में अनूदित करायें । एक संसद सदस्य द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया : संसद में विधेयकों को हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में तैयार कराने का काम प्रारंभ हो गया है । विधेयकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने की व्यवस्था भी कर ली गई है । राज्यों के कानूनों का अनुवाद वहां की प्रादेशिक भाषा में कराने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है । कुछ राज्य सरकारों ने इस दिशा में कदम उठाए हैं और आशा है कि कालांतर में अन्य राज्य सरकारें भी अपनी भाषाओं में कानून बनाएंगी ।

संस्कृत दिवस का आयोजन

इस वर्ष 27 अगस्त का दिन देश भर में संस्कृत दिवस के रूप में मनाया गया । राजधानी में इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं ने समारोहों का आयोजन किया । संसदीय संस्कृत परिषद् की ओर से मावलंकार हाल में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय पर्यटन मंत्री डा0 कर्ण सिंह ने की । शिक्षामंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए । अपने भाषण में डा0 राव ने कहा : "संस्कृत भाषा देश के एक भाग को दूसरे भाग से जोड़ने वाली भाषा है ।" श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के तत्वावधान में आयोजित समारोह में, दिल्ली के उप राज्यपाल डा0 आदित्यनाथ झा ने कहा : संस्कृत विश्व की भाषा है, विदेशी विद्वानों ने भी संस्कृत की उल्लेखनीय सेवा की है । साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डा0 सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय ने इस बात पर जोर दिया कि पाठ्यक्रम में संस्कृत को अनिवार्य विषय बना दिया जाना चाहिए । आर्य समाज दीवानहाल, श्री रामदल संस्कृत महाविद्यालय, आयुर्वेद विद्यापीठ तथा राजधानी की अन्य अनेक शिक्षण संस्थाओं ने भी संस्कृत दिवस के उपलक्ष में समारोहों का आयोजन किया ।

* राजधानी में

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का रजत जयंती समारोह

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का रजत जयंती समारोह रविवार 17 अगस्त, 1969 को राजधानी में बड़ी धूमधाम से मनाया गया । समारोह का उद्घाटन वरिष्ठ नेता श्री मोरारजी देसाई ने किया और अध्यक्षता संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास ने की । अपने भाषण में श्री मोरारजी देसाई ने कहा : "हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला, यह तथ्य हमें स्वीकार करना चाहिए । हमें निष्ठा, श्र और निश्चय से उसे उसका स्थान दिलाना होगा । जबतक हिंदी को वह स्थान नहीं मिलता, देश पूरे माने में एक नहीं बन सकेगा क्योंकि पूरे देश को जोड़ने का एकमात्र साधन हिंदी भाषा ही है । जब लोगों की भाषामें राज्य न चला तो वह राज्य कैसा ? इस अवसर पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार, डा० नगेन्द्र, डा० विजयेन्द्र स्नातक और वैद्य गुरुदत्त को ताम्रपत्र तथा 21 अन्य साहित्यकारों को सम्मानपत्र भेंट किए गए ।

संशोधित नागरी टाइप की प्रदर्शनी

नरेन्द्र श्रीवास्तव नामक एक युवक ने अभी हाल ही में देवनागरी के सुधरे हुए टाइपों की एक प्रदर्शनी दिल्ली में की । इससे पहले वे इसी प्रकार की प्रदर्शनी पेरिस में कर चुके हैं । श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव 18 मास पूर्व टाइपोग्राफी विषय पर फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति लेकर फ्रांस गए थे जहां उन्होंने कु० सिलविया मूर के सहयोगसे संशोधित देवनागरी लिपि की पहली प्रदर्शनी का आयोजन किया था । कु० सिलविया अंतर्राष्ट्रीय टाइपोग्राफी एसोसिएशन की ओर से आजकल भारत आई हैं । यहां वे देवनागरी के मूल स्रोत के बारे में अनुसंधान करेंगी । श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव, भारत सरकार को अपने टाइप दिखाने के बाद जर्मनी जायेंगे जहां वे यूनेस्को के तत्वावधान में एक प्रदर्शनी का आयोजन करेंगे ।

तुलसी जयंती समारोह

रामचरित मानस के यशस्वी लेखक गोस्वामी तुलसीदास की जयंती 20 अगस्त को राजधानी की अनेक संस्थाओं द्वारा मनाई गई। नागरी प्रचारिणी सभा की दिल्ली शाखा की ओर से इस अवसर पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मलयालम के महाकवि श्री शंकर कुरुप्प ने की। स्वतंत्र भारत मिल हायर सेकेंडरी स्कूल में भी एक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार ने की। 24 अगस्त को मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में आयोजित एक समारोह में दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा ने घोषणा की कि दिल्ली में तुलसी स्मारक तथा तुलसी भवन के निर्माण की योजना विचाराधीन है। इस समारोह का उद्घाटन उप राज्यपाल डा० आदित्यनाथ झा ने किया। सूचना, प्रसारण तथा संचार मंत्री श्री सत्यनारायण सिन्हा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व कार्यालय शाखा की ओर से भी 28 अगस्त, 1969 को कार्यालय के मनोरंजन भवन में तुलसी जयंती समारोह मनाया गया। महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व श्री डी०डी० ढींगरा ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह में रामचरित मानस की चौपाइयों के सस्वर पाठ की एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

महात्मा गांधी और हिंदी विषय पर विचार गोष्ठी

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन शक्तिनगर मंडल की ओर से 'महात्मा गांधी और हिन्दी' विषय पर 10 अगस्त को एक गोष्ठी का आयोजन किया। प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक आचार्य कालेलकर ने गोष्ठी में भाषण देते हुए कहा : हिन्दी उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाली सबसे बड़ी कड़ी है। यदि यह कड़ी बनी रही तो देश को मजबूत बनाया जा सकता है। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने की।

नवोदित साहित्य संघ का उद्घाटन

नवोदित लेखकों एवं कवियों की एक नई संस्था 'नवोदित साहित्यकार संघ' का नई दिल्ली में 17 अगस्त को उद्घाटन हुआ। नवभारत टाइम्स के प्रधान संपादक श्री अक्षय कुमार जैन ने संस्था का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एक काव्य संध्या का आयोजन भी किया गया जिसमें अनेक नवोदित कवियों ने भाग लिया।

रामचरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने की तैयारी

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने के लिए एक करोड़ रुपया संग्रह करने का निश्चय किया गया है। इस प्रयोजन के लिए एक समिति का गठन किया गया है जिसके अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी होंगे। दिल्ली के उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा, मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा, महापौर ला० हंसराज गुप्त, डा० बच्चन, डा० दिनकर तथा केन्द्रीय शिक्षामंत्रालय में राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन इस समिति के सदस्य चुने गए हैं। केन्द्रीय वित राज्य मंत्री श्री कृष्णचंद्र पंत समिति के संयोजक हैं।

केंद्रीय विद्यालयों में हिंदी शिक्षा का माध्यम होगी

श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ द्वारा संस्थापित केन्द्रीय विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने आशा प्रकट की है कि भविष्य में सभी केन्द्रीय विद्यालयों में हिंदी को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपना लिया जाएगा। समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्तदर्शन ने की।

* प्रादेशिक अंचल में

महाराष्ट्र

सर्व भाषा कवि सम्मेलन

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद-समन्वय समिति तथा भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में स्वाधीनता दिवस के अवसर पर बंबई में एक सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध गीतकार श्री भरत व्यास ने की और उसका संचालन श्री रामनिरख मनहर ने किया । इस में हिंदी, मराठी, तेलुगु, गुजराती, संस्कृत, उर्दू आदि भाषाओं के कवियों ने भाग लिया ।

तुलसी जयंती समारोह

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय, बंबई की ओर से 20 अगस्त 1969 को तुलसी जयंती समारोह का आयोजन किया गया । पश्चिम रेलवे के मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री टी०पी० सुब्रह्मण्यम ने समारोह की अध्यक्षता की और रिज़र्व बैंक आफ इंडिया के हिन्दी अधिकारी डा० पी० जयरामन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए ।

पंजाब

पंजाब प्रादेशिक भारतीय साहित्य परिषद्, की कार्यकारिणी की बैठक लुधियाना में 9 सितंबर को हुई । इस अवसर पर साहित्यकारों की एक गोष्ठी भी हुई और सायंकाल एक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया । गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए परिषद् के महामंत्री श्री रत्नसिंह शांडिल्य ने कहा : सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि स्वीकार करने से भाषाओं में आदान-प्रदान अधिक होगा ।

हरियाणा

हरियाणा सरकार ने निश्चय किया है कि पंजाब और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत और हिंदी की परीक्षाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त करनेवाले उम्मीदवारों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे । करनाल जिला भाषा विभाग के इंचार्ज के कथनानुसार जिला स्तर पर तथा राज्य स्तर पर उनके सम्मान के लिए विशेष

समारोह आयोजित किए जाएंगे तथा हिंदी के क्षेत्र में उनकी सेवाओं को ध्यान में रखे हुए उन्हें विशेष सहायता दी जाएगी ।

उत्तरप्रदेश

तुलसी शोध संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव

उत्तरप्रदेश की एक साहित्यिक संस्था तुलसी स्मारक समिति ने तुलसी शोध संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव रखा है । मालूम हुआ है कि इस संस्थान के लिए लखनऊ में उपयुक् स्थान की खोज की जारही है । उक्त शोध संस्थान तुलसी साहित्य के विद्वानों, शोध छात्रों तथा विचारकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा ।

तुलसी स्मारक समिति की स्थापना 15 वर्ष पूर्व हुई थी । समिति महाकवि तुलसी के जन्मस्थान राजापुर में विशाल स्मारक भवन का निर्माण कर रही है जिसका लगभग पूरा हो चुका है ।

पंत हीरक जयंती की तैयारी

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत की हीरक जयंती मनाने के लिए श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई है । समिति आगामी मई मास में श्री पंत की 70वीं वर्षगांठ मनाने का प्रबंध करेगी । इस अवसर पर सारे देश में जयंती समारोहों का आयोजन किया जाएगा तथा पंतजी को अभिनन्दनग्रंथ भी भेंट किया जाए

हिंदी सतर्कता समितियों का गठन किया जाए

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन ने निश्चय किया है कि प्रत्येक हिंदी भाषी राज्य में हिंदी सतर्कता समिति गठित की जाए जो प्रशासन के कार्य में हिंदी के व्यवहा की प्रगति पर नजर रखे । कुछ समय पहले भोपाल में मध्यप्रदेश के विधायकों की सभा में एक समिति का गठन किया गया है ।

* विश्वविद्यालयों में
भारतीय भाषाओं में साहित्य का निर्माण

विश्वविद्यालयों की सहायता से भारतीय भाषाओं में साहित्य के निर्माण के लिए शिक्षा मंत्रालय ने कई योजनाएं तैयार की हैं जिन्हें शीघ्र ही व्यावहारिक रूप दिया जाएगा । योजनाओं का लक्ष्य विश्वविद्यालयों को शिक्षा का माध्यम बदलने के लिए तैयार करना है ।

देश के कुल 86 विश्वविद्यालयों में से, जिनमें कुछ संभावित विश्वविद्यालय भी सम्मिलित हैं 52 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जिनमें अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जा चुका है । इन 52 विश्वविद्यालयों में से 39 कई अथवा सभी पाठ्यक्रमों में हिंदी को अध्यापन का माध्यम बना चुके हैं । इन पाठ्यक्रमों में बी०ए०, बी०एससी०, बी०काम०, एम०ए०, एम०काम० तथा एल० एल०बी० के पाठ्यक्रम शामिल हैं । विभिन्न भारतीय भाषाओं में कन्नड़, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, उड़िया, उर्दू, तेलुगु तथा पंजाबी विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम है । तीन विश्वविद्यालयों में सभी पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षा का माध्यम संस्कृत है ।

भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए भारत सरकार ने जो योजना बनाई है उसके अंतर्गत प्रत्येक राज्य सरकार को एक करोड़ रुपये की राशि अनुदान में दी जाएगी ।

एक अन्य योजना के अंतर्गत भारतीय विद्या भवन की ग्रंथमाला 'हिस्ट्री एंड कल्चर आफ इंडियन पीपुल' के 10 खंडों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का निश्चय किया गया है । इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने चौथी योजना के प्रत्येक वर्ष में 100 फैलोशिप प्रदान करने का विचार किया है । ये फैलोशिप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण उन स्नातकोत्तर छात्रों को दी जाएंगी जिन्होंने विदेशी भाषाओं से पुस्तकें अनूदित करने का निश्चित प्रशिक्षण लेने के बाद क्षेत्रीय भाषाओं में मौलिक ग्रंथ लिखने अथवा अनुवाद करने का काम प्रारम्भ कर दिया है ।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' विश्व की 11 भाषाओं में (अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, स्पेनी रूसी, जर्मन, इतालवी, अरबी, हिब्रू, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होती है ; प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं । इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं । इसकी गणनासंसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है । यह निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली प्रमुख पत्रिका है ।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है । सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए । शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9,50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10,50 रुपये । ग्राहक बनने के लिए प्रबंध सम्पादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली को अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजें । चैक अथवा ड्राफ्ट से भेजने पर 75 पैसे अधिक भेजें ।

भाषा (त्रैमासिक)

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र मंच । समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण हैं । मूल्य एक प्रति 3.00 रुपये, वार्षिक : 10.00 रुपये । प्राप्ति स्थान : प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-6.

8/3/69

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 1

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 13317/68

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 सितंबर, 1968 अंक 1

- 0 भाषा संगम
- 0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (परीक्षाओं की मान्यता)
- 0 हिंदी
  - * भारत सरकार में
  - * राजधानी में
  - * प्रादेशिक अंचल में
  - * विश्वविद्यालयों में
  - * विदेशों में
- 0 नए प्रकाशन

प्रिय पाठकों,

आपका 'हिंदी समाचार जगत' इस मास तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

इस अवसर पर हम आपका अभिनंदन करते हैं, और आपके सहयोग और सुझावों के लिए धन्यवाद देते हैं। खेद है कि इस पत्रक को हम अब तक मुद्रित रूप में प्रस्तातु नहीं कर सके। आशा है, इस वर्ष हमें अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता मिल जाएगी।

- संपादक

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

संसदीय संस्कृत परिषद

संस्कृत के विकास को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से "संसदीय संस्कृत परिषद नामक एक नई संस्था स्थापित की गई है। वर्तमान और भूतपूर्व संसद सदस्य इस संस्था के सदस्य बन सकते हैं। पर्यटन और सिविल विमानन मंत्री डा0 कर्ण सिंह परिषद के अध्यक्ष चुने गए हैं। श्री सी0 के0 भट्टाचार्य उपाध्यक्ष, श्री रघुवीर शास्त्री - सचिव तथा श्री टी0 विश्वनाथन - कोषाध्यक्ष चुने गए हैं। सर्वश्री नाथ पै, ओमप्रकाश त्यागी, अनंतत्रिपाठी शर्मा, बेनीशंकर शर्मा और के0 पी0 मल्लिकार्जुनुडु कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं।

केरल के स्कूलों में कोंकणी

केरल सरकार ने कोंकणी भाषा प्रचार सभा कोचीन को अनुमति दे दी है कि वह मट्टानचेरी के तिरुमाल देवस्वोम प्राथमिक स्कूलों में इस शैक्षिक वर्ष से कोंकणी भाषा की पढ़ाई चालू कर सकती है।

बच्चों के लिए बंगला सचित्र कोश

बंगला के बाल-साहित्य लेखकों की एक सहकारी संस्था 'लेखक समवाय समिति' बच्चों के लिए दस हजार शब्दों का एक सचित्र कोश तैयार कर रही है। इसके लिए शब्दों का चयन पांचवीं से आठवीं कक्षाओं की बंगला पाठ्यपुस्तकों से किया गया है।

तेलुगु अकादेमी

आंध्र प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री टी0 पी0 राघवुलु ने विधान सभा में कहा है कि सरकार ने तेलुगु अकादेमी की स्थानपा के लिए आदेश जारी कर दिए हैं। अकादेमी का एक काम विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा प्रकाशन होगा। अगले छः वर्षों में पाठ्य पुस्तकें तैयार करने की एक करोड़ रुपये की परियोजना के लिए केन्द्रीय सरकार 75 लाख रुपये का अनुदान देगी।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिंदी परीक्षाओं की मान्यता - प्रेस विज्ञप्ति

देश के विभिन्न भागों में अनेक स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं काफी समय से हिंदी की परीक्षाएं चला रही हैं । इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण उम्मीदवारों को ऐसी सरकारी नौकरियों के लिए पात्र बनाने के लिए जिनमें अन्य बुनियादी योग्यताओं के साथ हिंदी की योग्यताएं भी निर्धारित की गई हैं, भारत सरकार ने हिंदी शिक्षा समिति की सिफारिश पर और लोक सेवा आयोग की स्वीकृति से कुछ स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की परीक्षाओं को मान्यता देने का निश्चय किया और तदनुसार 1960 में इस संबंध में एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई । इस प्रेस विज्ञप्ति द्वारा विभिन्न परीक्षाओं को 31 दिसंबर, 1963 तक ही मान्यता दी गई थी । समय-समय पर इन परीक्षाओं की मान्यता-अवधि बढ़ाई जाती रही है । पिछली बार शिक्षा मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 5-12-64 द्वारा, जिसे बाद में इस मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 20-3-65 तथा दिनांक 19-9-66 द्वारा संशोधित किया गया था, कुछ परीक्षाओं की मान्यता अवधि 31 दिसंबर, 1966 तक बढ़ाई गई थी । इन परीक्षाओं को 31-12-66 से आगे मान्यता देने के प्रश्न पर शिक्षा मंत्रालय में पुनः विचार किया गया और हिंदी शिक्षा समिति की सिफारिश और लोक सेवा आयोग की अनुमति से भारत सरकार ने विभिन्न परीक्षाओं की मान्यता अवधि संलग्न अनुबंध के अनुसार बढ़ा दी है ।

भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि इन संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं की मान्यता केवल समकक्ष परीक्षाओं के लिए निर्धारित हिंदी के स्तर तक ही सीमित है और इन परीक्षाओं को उन 'पूर्ण' प्रमाण-पत्रों या डिग्री परीक्षाओं जिनके हिंदी स्तर के समकक्ष इनको दिखाया गया है, के बराबर नहीं माना जाएगा ।

संस्था का नाम	परीक्षाओं के नाम जिन्हें मान्यता दी गई है।	बराबर की परीक्षा में हिंदी का निर्धारित स्तर	अवधि जिस तक मान्यता दी गई है
1	2	3	4
1. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	प्रथमा	एस०एल०सी०	1969 तक
	मध्यमा(विशारद)	बी०ए०	
	उत्तमा(साहित्यरत्न)	बी०ए०आनर्स(हिंदी में)	
2. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	परिचय	एस०एल०सी०	,,
	कोविद	इण्टर	
	रत्न	बी०ए०	
3. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास	प्रवेशिका	एस०एल०सी०	,,
	विशारद	इण्टर	
	प्रवीण	बी०ए०	
4. हिंदी विद्यापीठ, देवघर	प्रवेशिका	एस०एल०सी०	,,
	साहित्य भूषण	इण्टर	
	साहित्यालंकार	बी०ए०	
5. महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना	प्रबोध	एस०एल०सी०	,,
	प्रवीण	इण्टर	
	पण्डित	बी०ए०	
6. हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद	विशारद	एस०एल०सी०	,,
	भूषण	इण्टर	
	विद्वान	बी०ए०	
7. बंबई हिंदी विद्यापीठ, बंबई	उत्तमा	एस०एल०सी०	1969 तक
	भाषा रत्न	इंटर	,,
	साहित्य सुधाकर	बी०ए०	
8. गुजरात विद्यापीठ	तीसरी	एस०एल०सी०	1969 तक
	विनीत	इंटर	,,
	सेवक	बी०ए०	,,

1	2	3	4
9. असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गौहाटी	प्रबोध विशारद प्रवीण	एस०एल०सी० इण्टर बी०ए०	1969 तक
10. हिंदुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई	तीसरी काबिल विद्वान	एस०एल०सी० इण्टर बी०ए०	,,
11. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलौर	प्रवेश उत्तमा	एस०एल०सी० इण्टर	1967 तक
12. केरल हिंदी प्रचार, त्रिवेंद्रम	प्रवेश भूषण	एस०एल०सी० इण्टर	1969 तक
13. मणिपुर हिंदी परिषद्, इम्फाल	प्रवेश विशारद	एस०एल०सी० इण्टर	,,

मंगलाप्रसाद पारितोषिक

हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से 1200 रुपए का मंगलाप्रसाद पारितोषिक हिंदी की उत्कृष्ट मौलिक रचना पर गत 45 वर्षों से दिया जा रहा है। यह पुरस्कार काव्य, निबंध, इतिहास, समाज शास्त्र, दर्शन, तात्त्विक-विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान पर बारी-बारी से प्रतिवर्ष दिया जाता है। संवत् 2017 का पारितोषिक श्री राय गोविन्द चंद की इतिहास विषयक पुस्तक 'प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन' पर प्रदान किया गया है। संवत् 2020 के लिए यह पारितोषिक श्री रमेशचंद्र कपूर की पुस्तक 'परमाणु विखण्डन' पर दिया गया है। दोनों पारितोषिक सम्मेलन के आगामी दीक्षांत समारोह में प्रदान किए जाएंगे।

हिंदी साहित्य सम्मेलन की 'उत्तमा' परीक्षा

जबलपुर विश्वविद्यालय की शिक्षा परिषद तथा कार्यसमिति ने यह निर्णय किया है कि हिंदी साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा उत्तीर्ण व्यक्ति जबलपुर विश्वविद्यालय में हिंदी, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विषयों में एम०ए० के लिए प्रवेश ले सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए सम्मेलन के परीक्षायोजक से संपर्क स्थापित किया जा सकता है।

0हिंदी

* भारत सरकार में

भारत सरकार के विभिन्न विभाग और कार्यालय अपनी गतिविधियों और कार्यों से जनता को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से विभागीय पत्रिकाएं प्रकाशित करते हैं । कुछ पत्रिकाओं में रचनात्मक ललित साहित्य भी प्रकाशित होता है । ऐसी हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाओं में से कुछ का विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

प्रकाशन विभाग, सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय :

आजकल (मासिक)

सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पत्रिका । कविता, कहानी, एकांकी, निबंध आदि विभिन्न विधाओं की उत्कृष्ट रचनाएं तथा देश की सांस्कृतिक गतिविधियों पर लेख आदि छापे जाते हैं । एक प्रति का मूल्य 60 पैसे; वार्षिक मूल्य सात रु०। संपादक: श्रीकेशव गोपाल निगम। पता:पटियाला हाउस, नई दिल्ली-1.

योजना (पाक्षिक)

इस पत्रिका में राष्ट्र की विभिन्न योजनाओं की गतिविधियों के विवरण छपते हैं । कहानी, कविता आदि रोचक साहित्य को भी स्थान दिया जाता है । एक प्रति 25 पैसे; वार्षिक मूल्य 5 रुपए । प्रधान संपादक : श्री यतीन्द्रलाल विरमानी । पता: योजना भवन, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली ।

कुरुक्षेत्र (मासिक)

सामुदायिक विकास और सहकारिता के क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत करने वाली सचित्र मासिक पत्रिका । पंचायतों, ग्राम विकास खंडों तथा विस्तार सेवा संस्थाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी । संपादक श्री महेन्द्रपाल सिंह । एक प्रति 25 पैसे; वार्षिक मूल्य 2.50 रुपए । पता: खाद्य कृषि सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली.

बालभारती (मासिक)

बच्चों की लोकप्रिय मासिक पत्रिका । बालोपयोगी कहानियां, कविताएं, एकांकी, लेख, चित्र तथा विभिन्न प्रकार की अन्य रोचक सामग्री प्रकाशित होती है ।

संपादिका: श्रीमती सावित्री देवी वर्मा । एक प्रति 35 पैसे, वार्षिक मूल्य 4 रु० ।
पता: पटियाला हाउस, नई दिल्ली.

अन्य पत्रिकाएं

गोसंवर्धन (मासिक)

केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद्, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली से प्रकाशित तकनीकी पत्रिका । एक प्रति 30 पैसे ।

शर्करा (त्रैमासिक)

नैशनल शुगर इंस्टिट्यूट, खाद्य, कृषि और सहकारितामंत्रालय (खाद्य विभाग), कानपुरसे प्रकाशित । शर्करा (चीनी) के उत्पादन आदि से संबंधित तकनीकी विषयों के लेख छपते हैं । एक प्रति का मूल्य दो रुपए ।

सैनिक समाचार (साप्ताहिक)

जन संपर्क निदेशालय(रक्षा मंत्रालय)नई दिल्ली से प्रति सप्ताह प्रकाशित । फौजी भाइयों के लिए कहानियां, लेख, समाचार, चित्र आदि प्रकाशित होते हैं । स्थल-सेना, नौसेना और वायुसेना के विभिन्न कार्यकलापों के विवरण भी छापे जाते हैं । एक प्रति 36 पैसे; वार्षिक 12 रुपए ।

उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका (मासिक)

विधि मंत्रालय, विधायी विभाग, नई दिल्ली से प्रकाशित । उच्चतम न्यायालय के निर्णयों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित होते हैं । एक प्रति चार रुपए । वार्षिक मूल्य: 45 रुपए ।

भारतीय रेल (मासिक)

रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली से प्रकाशित । भारतीय रेलों तथा विदेशी रेलों के समाचार आदि छपते हैं । एक प्रति 60 पैसे; वार्षिक मूल्य: 6 रुपए ।

आदिम जाति की भाषाओं । बोलियों और उप-भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का परिवर्धन :-

1961 के

एक सामान्य लिपि के रूप में स्वीकृत करने का प्रस्ताव किया था । उसके अनुसार भारत सरकार (शिक्षा मंत्रालय) ने विशेषज्ञों के परामर्श से देवनागरी लिपि का परिवर्धन किया है और उसमें हिन्दीतर भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों के लिए ऐसे नवीन प्रतीकों का समावेश कर दिया है, जो पहले नहीं थे ।

देश में भी अनेक आदिम जातीय भाषाएं और उप-भाषाएं हैं जिनके बोलने वालों की संख्या लाखों में है और जिनमें प्रचुर लोक साहित्य उपलब्ध है यद्यपि इनकी अपनी लिपि नहीं है । संविधान की अष्टम अनुसूचि में उल्लिखित 14 प्रमुख भाषाओं के अतिरिक्त अनेक ऐसी भाषाएं हैं जिनका साहित्य उच्च स्तर का है । उनकी अपनी लिपि नहीं है । यदि है तो संतोषप्रद नहीं है । शिक्षा मंत्रालय ने निर्णय किया है कि ऐसी आदिम जातीय भाषाओं और उप-भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग करने की दृष्टि से देवनागरी की क्षमता की जांच की जाए और आवश्यकतानुसार उसमें उक्त भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों के लिए उपयुक्त प्रतीकों का समावेश किया जाए । इस परियोजना के प्रथम चरण में आदिम जाति की जो भाषाएं, बोलियां और उप-भाषाएं चुनी गई हैं उनके नाम हैं-- संथाली, भीली, गोंडी, मुंडारी, हो और कुडुख (ओरांव) तथा मणिपुरी, त्रिपुरी और कोंकणी । इस कार्य में सलाह देने के लिए राज्य सरकारों के परामर्श से एक विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति की जा चुकी है । समिति सर्वप्रथम उक्त भाषाओं की ध्वनियों के संदर्भ में नए प्रतीक सुझाएगी । योजना के दूसरे चरण में उक्त भाषाओं के लोकप्रिय साहित्य को देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जाएगा ।

10

*राजधानी में

हिंदी दिवस समारोह

संसदीय हिंदी परिषद की ओर से संसद भवन के केन्द्रीय हाल में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया । केन्द्रीय संचार और संसद कार्य मंत्री डा० रामसुभग सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की । इस अवसर पर भाषण करते हुए केन्द्रीय परिवहन मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने कहा : हिंदी बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा है । इसे सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि इसके बिना भावनात्मक एकता संभव नहीं है ।

गांधी युग पुराण का उद्घाटन :

23 अगस्त 1968 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने गांधी युग पुराण के 4 खंडों का उद्घाटन किया । गांधी विचारधारा के सुप्रसिद्ध विद्वान काका कालेलकर ने समारोह की अध्यक्षता की । शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में कहा कि गांधी युग पुराण की रचना समयोचित एवं सराहनीय है ।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका

यूनेस्को कूरियर

मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री के लिए प्रशंसनीय

एक प्रति : एक रुपया
वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये
पुस्तकालयों के लिए : 9-50 रुपये

वार्षिक ग्राहक बनाने के लिए प्रचारकों को विशेष छूट
ग्राहक बनने तथा एजेंसी के नियमों के लिए लिखें :
प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिन्दी),
वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

* प्रादेशिक अंचल में

मद्रास

मद्रास सरकार की भाषा नीति के कारण हिंदी प्रचार को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति के लिए तथा मद्रास में हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य को निरंतर चालू रखने के लिए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास ने एक योजना बनाई है। इसके अंतर्गत मद्रास राज्य में एकल-शिक्षक हिंदी स्कूल खोले जाएंगे जो स्वैच्छिक रूप से हिन्दी वर्ग चलाएंगे।

मैसूर

- कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा धारवाड़ की ओर से अगस्त, 1968 को एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन सम्मिलित हुए। स्थानीय हिंदी सेवियों तथा हिंदी अध्यापकों ने हिंदी-प्रचार की समस्याओं पर निदेशक से विचार-विनिमय किया।

- मैसूर विश्वविद्यालय की मानस हिंदी परिषद की ओर से 11-8-68 को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन के सम्मान में आयोजित एक सभा में प्राध्यापक श्री राजेश्वरैया ने मैसूर में हिंदी के प्रचार का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि मैसूर में सन् 1930 के पहले से ही हिंदी का प्रचार हो रहा है। विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग से अब तक साठ छात्र हिंदी एम० ए० और तीन छात्र पी०एच०डी० कर चुके हैं। इस समय 19 छात्र एम०ए० की तैयारी कर रहे हैं और 21 छात्र पी०एच०डी० उपाधि के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं। समारोह में भाषण करते हुए प्रो० ए० चन्द्रहासन ने कहा : भारतीय भाषाओं की आपस में कोई होड़ नहीं है। उनका मुकाबला अंग्रेजी से है। एक भाषा की उन्नति से दूसरी भाषा को लाभ होगा। प्रत्येक क्षेत्र में प्रशासन तथा उच्च शिक्षा की भाषा क्षेत्रीय भाषा होगी और हिंदी से सम्पर्क भाषा का काम लिया जाएगा।

गुजरात

सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभविद्यानगर के हिंदी विभाग की हिंदी साहित्य समिति के तत्वावधान में 1 अगस्त, 1968 को तुलसी जयंती मनाई गई। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल ने की। इस अवसर पर हिंदी विभाग की ओर से प्रकाशित "तुलसी: तत्व और दृष्टि" नामक ग्रंथ का उपकुलपति महोदय ने विमोचन किया।

नेफा

ज्ञात हुआ है कि उत्तर पूर्वी सीमांत प्रदेश (नेफा) में हिन्दी आम बोल-चाल की भाषा हो गई है। वहां के आदिवासी विभिन्न बोलियां बोलते हैं लेकिन एक दूसरे से बात करने के लिए उनकी अन्य कोई समान भाषा नहीं है। हाल ही में, नेफा का दौरा करके लौटने वाले पत्रकारों के एक दल का यह अनुभव है। दल के लोगों ने देखा कि वहां अधिकारीगण और स्थानीय लोग परस्पर हिंदी में बात करते हैं।

हरियाणा

वार्षिक पुरस्कार योजना

हरियाणा सरकार के भाषा विभाग ने अपनी वार्षिक पुरस्कार योजना के अंतर्गत वैज्ञानिक, तकनीकी तथा साहित्यिक रचनाओं पर पुरस्कार देने के लिए पुस्तकें आमंत्रित की हैं। रचनाएं 1 अप्रैल 1967 से 31 मार्च 1968 के बीच लिखित या प्रकाशित होनी चाहिए। प्रकाशित पुस्तकों की छः और हस्तलिखित पुस्तकों की 3 प्रतियां निदेशक, भाषा विभाग, हरियाणा, 1580 सैक्टर 18-डी चंडीगढ़ के पास 30 सितंबर तक पहुंच जानी चाहिए। योजना के अंतर्गत सर्वोत्तम पुस्तक पर 1000 रुपये, सामान्यतः उत्तम पुस्तक पर 800 रुपये और द्वितीय श्रेणी की पुस्तकों पर 500 रुपये पुरस्कार स्वरूप दिए जाते हैं। यह प्रतियोगिता केवल उन्हीं लेखकों तक सीमित है जो हरियाणा के निवासी हैं अथवा इस प्रदेश में पैदा हुए हैं।

* विश्वविद्यालयों में

काशी हिंदू विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम

काशी हिंदू विश्वविद्यालय कोर्ट ने 12 अगस्त 1967 की अपनी विशेष बैठक में यह प्रस्ताव पास किया था कि पांच वर्ष की अवधि में स्नातक कक्षाओं से लेकर उच्चतर कक्षाओं तक हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न किया जाएगा। शिक्षा आयोग की 1966 की रिपोर्ट में भी इसे स्वीकार किया गया था। विश्वविद्यालय ने इस दिशा में काफी प्रगति की है। कोर्ट के निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए कई ठोस कदम उठाए गए हैं। इस प्रश्न पर विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों तथा विद्या-परिषद (एकेडेमिक कौंसिल) ने भी विचार किया है। पूर्व-विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम (कला एवं विज्ञान संकाय) बी०ए० बी०एस-सी०, बी० काम० बी०एस-सी (कृषि) बी० फार्म० तथा तकनीकी शिक्षा के पहले और दूसरे वर्ष (सम्मिलित पाठ्यक्रम) से अंग्रेज़ी हटा दी गई है। बी० ए०, बी० काम०, बी०एस-सी०, तथा एम० ए० के कुछ विषयों में भी अंग्रेज़ी तथा हिंदी दोनों माध्यमों से शिक्षा देने की सुविधा है। छात्रों की सुविधा के लिए कृषि-संकाय में स्नातक श्रेणी तक की शिक्षा हिंदी तथा अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में देने की व्यवस्था की गई है। इनमें से किसी भी माध्यम का चुनाव करने के लिए छात्र स्वतंत्र होंगे। इस बात पर भी विचार किया जा रहा है कि प्रौद्योगिकी, आयुर्विज्ञान तथा विधि संकायों में भी हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए।

हिंदी में इन सभी विषयों की पाठ्य-पुस्तकों को उपलब्ध कराने के लिए हिंदी प्रकाशन मण्डल एवं हिंदी एककों की स्थापना की योजना भी विद्या परिषद तथा कार्यकारी परिषद द्वारा स्वीकृत की जा चुकी है। आवश्यक धनराशि के लिए भारत सरकार से अनुरोध किया गया है। प्रकाशन मंडल, विद्या परिषद तथा उसकी तदर्थ समिति की देख-रेख में माध्यम-परिवर्तन को आवश्यक दिशा प्रदान करेगा।

(उपकुलपति की वार्षिक रिपोर्ट पर आधारित)

* विदेशों में

श्रीलंका में हिंदी

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की कोलम्बो शाखा द्वारा आयोजित हिंदी परीक्षाओं में इस वर्ष 50 विद्यार्थी बैठे हैं। अधिकांश विद्यार्थी सिंहली भाषा-भाषी हैं। हिन्दी प्रचार सभा का दावा है कि अब तक कम से कम 5000 विद्यार्थी सभा की विभिन्न परीक्षाएं पास कर चुके हैं। इस समय लगभग 100 विद्यार्थी सभा द्वारा आयोजित विभिन्न कक्षाओं में हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। कोलम्बो स्थित भारतीय हाई कमीशन के कार्यालय में भी हिन्दी की कक्षाएँ चलती हैं।

सोवियत संघ में महाभारत के नए अनुवाद

तुर्कमान विज्ञान अकादमी ने सन् 1955 से 1963 के बीच महाभारत के रूसी अनुवाद के सात भाग प्रकाशित किए हैं। ये अनुवाद अकादमीशियन बोरिस सिमरनोव द्वारा किए गए हैं। श्री सिमरनोव के इस कार्य में रूस में बहुत दिलचस्पी ली जा रही है और विशेषज्ञों तथा पाठकों ने इन रचनाओं को उच्च स्तरीय माना है।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

मारिशस हिंदी प्रचारिणी सभा के मंत्री श्री स0 म0 भगत ने एक वक्तव्य में कहा है कि भारत में शीघ्र ही हिंदी का एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए ताकि लोगों को मालूम हो सके कि विश्व भर में हिंदी को कितना उच्च स्थान प्राप्त है। यह काम सरकार को नहीं बल्कि हिंदी हितैषियों को करना चाहिए। उन्होंने बताया कि हिंदी अपने स्वाभाविक और सहज गुणों के कारण भारत के इस छोर से उस छोर तक फैली हुई है। विदेशों में भी इसका प्रचार और आदर है। विशिष्ट गुणों के कारण अन्य भाषा-भाषियों के लिए हिंदी में विशेष आकर्षण है।

0 नए प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

आयोग के प्रकाशन अनुभाग से अथवा उसकी देखरेख में अब तक डेढ़ सौ से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं । नीचे 1967-68 में प्रकाशित पुस्तकों की सूची दी जा रही है । विस्तृत जानकारी तथा पुस्तकों की प्राप्ति के लिए प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (प्रकाशन) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) कर्जन रोड, बैरक्स, नई दिल्ली से पत्र व्यवहार किया जा सकता है :-

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	मूल्य (रुपये)
अपना हृदय सबल बनाइए	वी0 जेलेनिन	आयुर्विज्ञान	5-00
मानव व्याधिकी	महेन्द्र प्रकाश गर्ग	आयुर्विज्ञान	11-70
प्राथमिक सूक्ष्मदर्शीय खनिज विज्ञान	सुधाकर मोतीलाल चौधरी	इंजीनियरी	5-00
वैद्युत औद्योगिकी भाग-1	एच0 काटन	,,	7-75
आधुनिक सर्वेक्षण भाग-1	प्रीतम दास फूल चंद साहनी	,,	6-25
निर्माण सामग्री	प्रो0 आर0एस0 देशपांडे	,,	5-50
बीज गणित	डब्लू0 एल0 फेरार	बीजगणित	9-00
रूपांतर कलन	डा0 ब्रजमोहन	गणित	4-50
कशेरुकी प्राणि जगत	एच0 एल0 हिमान	जीव-विज्ञान	18-00
पौधों का जीवन	कीबल	,,	5-00
व्यापारिक फल और तरकारी उत्पादन	कुस	,,	20-00
द्रव्यों की सामर्थ्य के मूल तत्व	स्टीफन तिमोशेन्को तथा डी0 एच0 यंग	भौतिकी	10-50
भारतीय विज्ञान के कर्णधार	डा0 सत्य प्रकाश	,,	30-00
इक्कीसवीं शती के समाचार	एम0 वासिल्येव तथा एस0 गुश्चेव	,,	8-00

वैज्ञानिक शब्दावली- [illegible] और [illegible]	डा० ओम प्रकाश शर्मा		9-30
प्रायोगिक भौतिकी	डा० वर्मा, डा० गुप्ता आदि	भौतिकी	8-25
ग्रह-उपग्रह	पैट्रिक मूर		5-00
[illegible] कैमिस्ट्री	एल० पालिंग	रसायन	16-00
[illegible] अर्थशास्त्र	डब्ल्यू० हैगन ब्रूस	अर्थशास्त्र	5-60
जान मेनार्ड कीन्स का अर्थशास्त्र	डी० डिलार्ड	,,	13-00
उद्योग का नियंत्रण	राबिन्सन तथा डेनिन्सन	,,	5-50
आधुनिक अधिकोषण	आर० एस० सेयर्स	,,	3-70
अर्थशास्त्र का परिचय	ए० केर्यान्क्रास	,,	12-50
अल्प विकसित देशों का अर्थशास्त्र	पी० टी० बौअर तथा एस० यामी	,,	6-75
प्रतिस्पर्धा उद्योग	ई०ए०जी० राबिन्सन	,,	3-60
भारत में मुद्रा और बैंकिंग विकास	डा० अवध बिहारी मिश्र	,,	4-00
अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र	आर० एफ० हैराड	,,	3-40
प्राचीन भारत का इतिहास	डा० ओम प्रकाश	इतिहास	11-75
रशिया की विकासोन्मुख एकता	प्रो० एस०यू० पुणताम्बेकर	,,	9-00
सत्रहवीं शताब्दी का यौरप	डेविड आग	,,	14-25
समाज दर्शन	महादेव प्रसाद	समाज-विज्ञान	5-20
राजनीति विज्ञान के मूल सिद्धान्त	नवीन नारायण अग्रवाल	राजनीति	10-00
सोवियत समाज-वादी गणराज्य का संविधान	अनु० भगवती प्रसाद राय	,,	0-95
आधुनिक शासन प्रणालियां	कृष्णकांत मिश्र	,,	10-90
विकास मनोविज्ञान भाग-1	हरलॉक	मनोविज्ञान	7-65

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अथवा उसकी देख-रेख में प्रकाशित शब्दावलियां :

	मूल्य		मूल्य
आयुर्विज्ञान शब्दावली-1	8-75	मानविकी शब्दावली-1	2-25
आयुर्विज्ञान शब्दावली-2	4-50	मानविकी शब्दावली-2	0-90
इंजीनियरी शब्दावली-1	0-80	मानविकी शब्दावली-3	0-80
इंजीनियरी शब्दावली-2	0-80	मानविकी शब्दावली-4	1-10
इंजीनियरी शब्दावली-3	1-80	विज्ञान शब्दावली-1	7-25
कृषि शब्दावली-1	2-50	विज्ञान शब्दावली-2	1-80
पदनाम शब्दावली	--	विज्ञान शब्दावली-3	1-75
प्रशासन शब्दावली	--	सैनिक प्रशासन शब्दावली	--
		स्नातकोत्तर रसायन शब्दावली	3-00
		भौतिक पारिभाषिक कोष	--

अक्षर प्रकाशन, 2/36 अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
रंगदर्शी	नेमिचंद्र जैन	20-00
स्थायी साहित्य मूल्य और मूल्यांकन	डा0 राम विलास शर्मा	7-00
फेन्स के इधर उधर	ज्ञान रंजन	4-00
एक फ्लैट सैलाब	मन्नू भंडारी	4-00
बांदी	गुलाम कुद्दूस	6-00
उतरती ज्वार की सीपियां	राजेन्द्र अवस्थी	6-00
मंत्र-विद्ध	राजेन्द्र यादव	3-50

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास लें० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – लें० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं ।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं ।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित । संपादक: परशुराम शर्मा
महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

14-1-

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 3 अंक 1

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 सितंबर, 1968 अंक 1

0 भाषा संस

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (परीक्षाओं की मान्यता)

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में

* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

प्रिय पाठकों,

आपका 'हिंदी समाचार जगत' इस मास तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

इस अवसर पर हम आपका अभिनंदन करते हैं, और आपके सहयोग और सुझावों के लिए धन्यवाद देते हैं। खेद है कि इस पत्रक को हम अब तक मुद्रित रूप में प्रस्ततु नहीं कर सके। आशा है, इस वर्ष हमें अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता मिल जाएगी।

- संपादक

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

संसदीय संस्कृत परिषद

संस्कृत के विकास को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से "संसदीय संस्कृत परिषद" नामक एक नई संस्था स्थापित की गई है । वर्तमान और भूतपूर्व संसद सदस्य इस संस्था के सदस्य बन सकते हैं । पर्यटन और सिविल विमानन मंत्री डा० कर्ण सिंह परिषद के अध्यक्ष चुने गए हैं । श्री टी० के० भट्टाचार्य उपाध्यक्ष, श्री रघुवीर शास्त्री - सचिव तथा श्री टी० विश्वनाथन - कोषाध्यक्ष चुने गए हैं । रवींद्र नाथ पै, ओमप्रकाश त्यागी, आंतत्रिपाठी शर्मा, बेनीशंकर शर्मा और के० पी० मल्लिकार्जुनुडु कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं ।

केरल के स्कूलों में कोंकणी

केरल सरकार ने कोंकणी भाषा प्रचार सभा कोचीन को अनुमति दे दी है कि वह मट्टानचेरी के तिरुमाल देवस्वोम प्राथमिक स्कूलों में इस शैक्षिक वर्ष से कोंकणी भाषा की पढ़ाई चालू कर सकती है ।

बच्चों के लिए बंगला सचित्र कोश

बंगला के बाल-साहित्य लेखकों की एक सहकारी संस्था 'लेखक समवाय समिति' बच्चों के लिए दस हजार शब्दों का एक सचित्र कोश तैयार कर रही है । इसके लिए शब्दों का चयन पांचवीं से आठवीं कक्षाओं की बंगला पाठ्यपुस्तकों से किया गया है ।

तेलुगु अकादेमी

आंध्र प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री टी० पी० राघवुलु ने विधान सभा में कहा है कि सरकार ने तेलुगु अकादेमी की स्थानपा के लिए आदेश जारी कर दिए हैं । अकादेमी का एक काम विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा प्रकाशन होगा । अगले छः वर्षों में पाठ्य पुस्तकें तैयार करने की एक करोड़ रुपये की परियोजना के लिए केंद्रीय सरकार 75 लाख रुपये का अनुदान देगी ।

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिंदी परीक्षाओं की मान्यता - प्रेस विज्ञप्ति

देश के विभिन्न भागों में अनेक स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं काफी समय से हिंदी की परीक्षाएं चला रही हैं । इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण उम्मीदवारों को ऐसी सरकारी नौकरियों के लिए पात्र बनाने के लिए जिनमें अन्य सुनिश्चित योग्यताओं के साथ हिंदी की योग्यताएं भी निर्धारित की गई हैं, भारत सरकार ने हिंदी शिक्षा समिति की सिफारिश पर और लोक सेवा आयोग की स्वीकृति से कुछ स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की परीक्षाओं को मान्यता देने का निश्चय किया और तदनुसार 1960 में इस संबंध में एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई । इस प्रेस विज्ञप्ति द्वारा विभिन्न परीक्षाओं को 31 दिसंबर, 1963 तक ही मान्यता दी गई थी । समय-समय पर इन परीक्षाओं की मान्यता-अवधि बढ़ाई जाती रही है । पिछली बार शिक्षा मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 5-12-64 द्वारा, जिसे बाद में इस मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 29-3-65 तथा दिनांक 19-8-66 द्वारा संशोधित किया गया था, कुछ परीक्षाओं की मान्यता अवधि 31 दिसंबर, 1966 तक बढ़ाई गई थी । इन परीक्षाओं को 31-12-66 से आगे मान्यता देने के प्रश्न पर शिक्षा मंत्रालय में पुनः विचार किया गया और हिंदी शिक्षा समिति की सिफारिश और लोक सेवा आयोग की अनुमति से भारत सरकार ने विभिन्न परीक्षाओं की मान्यता अवधि संलग्न अनुबंध के अनुसार बढ़ा दी है ।

भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि इन संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं की मान्यता केवल समकक्ष परीक्षाओं के लिए निर्धारित हिंदी के स्तर तक ही सीमित है और इन परीक्षाओं को उन पूर्ण प्रमाण-पत्रों या डिग्री परीक्षाओं जिनके हिंदी स्तर के समकक्ष इनको दिखाया गया है, के बराबर नहीं माना जाएगा ।

संस्था का नाम	परीक्षाओं के नाम जिन्हें मान्यता दी गई है।	बराबर की परीक्षा में हिंदी का निर्धारित स्तर	अवधि जिस तक मान्यता दी गई है
1	2	3	4
1. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	प्रथमा	एस०एल०सी०	1969 तक
	मध्यमा (विशारद)	बी०ए०	
	उत्तमा (साहित्यरत्न)	बी०ए०आनर्स (हिंदी में)	
2. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	परिचय	एस०एल०सी०	,,
	कोविद	इण्टर	
	रत्न	बी०ए०	
3. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास	प्रवेशिका	एस०एल०सी०	,,
	विशारद	इण्टर	
	प्रवीण	बी०ए०	
4. हिंदी विद्यापीठ, देवघर	प्रवेशिका	एस०एल०सी०	,,
	साहित्य भूषण	इण्टर	
	साहित्यालंकार	बी०ए०	
5. महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना	प्रबोध	एस०एल०सी०	,,
	प्रवीण	इण्टर	
	पण्डित	बी०ए०	
6. हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद	विशारद	एस०एल०सी०	,,
	भूषण	इण्टर	
	विद्वान	बी०ए०	
7. बंबई हिंदी विद्यापीठ, बंबई	उत्तमा	एस०एल०सी०	1969 तक
	भाषा रत्न	इंटर	,,
	साहित्य सुधाकर	बी०ए०	
8. गुजरात विद्यापीठ	तीसरी	एस०एल०सी०	1969 तक
	विनीत	इंटर	,,
	सेवक	बी०ए०	,,

1	2	3	4
9. असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गौहाटी	प्रबोध विशारद प्रवीण	एस०एल०सी० इण्टर बी०ए०	1969 तक
10. हिंदुस्तानी प्रचार सभा, बंबई	तीसरी काबिल विद्वान	एस०एल०सी० इण्टर बी०ए०	,,
11. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलोर	प्रवेश उत्तमा	एस०एल०सी० इण्टर	1967 तक
12. केरल हिंदी प्रचार, त्रिवेंद्रम	प्रवेश भूषण	एस०एल०सी० इण्टर	1969 तक
13. मणिपुर हिंदी परिषद्, इम्फाल	प्रबोध विशारद	एस०एल०सी० इण्टर	,,

मंगलाप्रसाद पारितोषिक

हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से 1200 रुपए का मंगलाप्रसाद पारितोषिक हिंदी की उत्कृष्ट मौलिक रचना पर गत 45 वर्षों से दिया जा रहा है। यह पुरस्कार काव्य, निबंध, इतिहास, समाज शास्त्र, दर्शन, तात्त्विक-विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान पर बारी-बारी से प्रतिवर्ष दिया जाता है। संवत् 2017 का पारितोषिक श्री राय गोविन्द चंद की इतिहास विषयक पुस्तक 'प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन' पर प्रदान किया गया है। संवत् 2020 के लिए यह पारितोषिक श्री रमेशचंद्र कपूर की पुस्तक 'परमाणु विखण्डन' पर दिया गया है। दोनों पारितोषिक सम्मेलन के आगामी दीक्षांत समारोह में प्रदान किए जाएँगे।

हिंदी साहित्य सम्मेलन की 'उत्तमा' परीक्षा

जबलपुर विश्वविद्यालय की शिक्षा परिषद तथा कार्यसमिति ने यह निर्णय किया है कि हिंदी साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा उत्तीर्ण व्यक्ति जबलपुर विश्वविद्यालय में हिंदी, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विषयों में एम०ए० के लिए प्रवेश ले सकते हैं। पूर्ण विवरण के लिए सम्मेलन के परीक्षायोजक से संपर्क स्थापित किया जा सकता है।

0हिंदी

* भारत सरकार में

भारत सरकार के विभिन्न विभाग और कार्यालय अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों से जनता को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से विभागीय पत्रिकाएं प्रकाशित करते हैं । कुछ पत्रिकाओं में रचनात्मक ललित साहित्य भी प्रकाशित होता है । ऐसी हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाओं में से कुछ का विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

प्रकाशन विभाग, सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय :

आजकल (मासिक)

सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पत्रिका । कविता, कहानी, एकांकी, निबंध आदि विभिन्न विधाओं की उत्कृष्ट रचनाएं तथा देश की सांस्कृतिक गतिविधियों पर लेख आदि छापे जाते हैं । एक प्रति का मूल्य 60 पैसे; वार्षिक मूल्य सात रु0। संपादक: श्री केशव गोपाल निगम। पता: पटियाला हाउस, नई दिल्ली-1,

योजना (पाक्षिक)

इस पत्रिका में राष्ट्र की विभिन्न योजनाओं की गतिविधियों के विवरण छपते हैं । कहानी, कविता आदि रोचक साहित्य को भी स्थान दिया जाता है । एक प्रति 25 पैसे; वार्षिक मूल्य 5 रुपए । प्रधान संपादक : श्री योगेन्द्रलाल विरमानी । पता: योजना भवन, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली ।

कुरुक्षेत्र (मासिक)

सामुदायिक विकास और सहकारिता के क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत करने वाली सचित्र मासिक पत्रिका । पंचायतों, ग्राम विकास खंडों तथा विस्तार सेवा संस्थाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी । संपादक श्री महेन्द्रपाल सिंह । एक प्रति 25 पैसे; वार्षिक मूल्य 2.50 रुपए । पता खाद्य कृषि सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली.

बालभारती (मासिक)

बच्चों की लोकप्रिय मासिक पत्रिका । बालोपयोगी कहानियां, कविताएं, एकांकी, लेख, चित्र तथा विभिन्न प्रकार की अन्य रोचक सामग्री प्रकाशित होती है ।

संपादिका: श्रीमती सावित्री देवी वर्मा । एक प्रति 25 पैसे, वार्षिक मूल्य 4 रु० ।
पता: पटियाला हाउस, नई दिल्ली.

अन्य पत्रिकाएं

गोसंवर्धन (मासिक)

केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद्, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली से प्रकाशित तकनीकी पत्रिका । एक प्रति 30 पैसे ।

शर्करा (त्रैमासिक)

नैशनल शुगर इंस्टिट्यूट, खाद्य, कृषि और सहकारितामंत्रालय (खाद्य विभाग), कानपुरसे प्रकाशित । शर्करा (चीनी) के उत्पादन आदि से संबंधित तकनीकी विषयों के लेख छपते हैं । एक प्रति का मूल्य दो रुपए ।

सैनिक समाचार (साप्ताहिक)

जन संपर्क निदेशालय(रक्षा मंत्रालय)नई दिल्ली से प्रति सप्ताह प्रकाशित । फौजी भाइयों के लिए कहानियां, लेख, समाचार, चित्र आदि प्रकाशित होते हैं । स्थल-सेना, नौसेना और वायुसेना के विभिन्न कार्यकलापों के विवरण भी छापे जाते हैं । एक प्रति 36 पैसे; वार्षिक 12 रुपए ।

उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका (मासिक)

विधि मंत्रालय, विधायी विभाग, नई दिल्ली से प्रकाशित । उच्चतम न्यायालय के निर्णयों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित होते हैं । एक प्रति चार रुपए । वार्षिक मूल्य: 45 रुपए ।

भारतीय रेल (मासिक)

रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली से प्रकाशित । भारतीय रेलों तथा विदेशी रेलों के समाचार आदि छपते हैं । एक प्रति 60 पैसे; वार्षिक मूल्य: 6 रुपए ।

आदिम जाति की भाषाओं / बोलियों और उप-भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का परिवर्धन :-

1961 के राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ने समस्त भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी को

एक सामान्य लिपि के रूप में स्वीकृत करने का प्रस्ताव किया था । उसके अनुसार भारत सरकार (शिक्षा मंत्रालय) ने विशेषज्ञों के परामर्श से देवनागरी लिपि का परिवर्धन किया है और उसमें हिन्दीतर भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों के लिए ऐसे नवीन प्रतीकों का समावेश कर दिया है, जो पहले नहीं थे ।

देश में ऐसी अनेक आदिम जातीय भाषाएं और उप-भाषाएं हैं जिनके बोलने वालों की संख्या लाखों में है और जिनमें प्रचुर लोक साहित्य उपलब्ध है यद्यपि इनकी अपनी लिपि नहीं है । संविधान की अष्टम अनुसूचि में उल्लिखित 14 प्रमुख भाषाओं के अतिरिक्त अनेक ऐसी भाषाएं हैं जिनका साहित्य उच्च स्तर का है । उनकी अपनी लिपि नहीं है ! यदि है तो संतोषप्रद नहीं है । शिक्षा मंत्रालय ने निर्णय किया है कि ऐसी आदिम जातीय भाषाओं और उप-भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग करने की दृष्टि से देवनागरी की क्षमता की जांच की जाए और आवश्यकतानुसार उसमें उक्त भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों के लिए उपयुक्त प्रतीकों का समावेश किया जाए । इस परियोजना के प्रथम चरण में आदिम जाति की जो भाषाएं बोलियां और उप-भाषाएं चुनी गई हैं उनके नाम हैं-- संथाली, भीली, गोंडी, मुंडारी, हो और कुड़ुख (ओरांव) तथा मणिपुरी, त्रिपुरी और कोंकणी । इस कार्य में सलाह देने के लिए राज्य सरकारों के परामर्श से एक विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति की जा चुकी है । समिति सर्वप्रथम उक्त भाषाओं की ध्वनियों के संदर्भ में नए प्रतीक सुझाएगी । योजना के दूसरे चरण में उक्त भाषाओं के लोकप्रिय साहित्य को देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जाएगा ।

10

* राजधानी में

हिंदी दिवस समारोह

संसदीय हिंदी परिषद की ओर से संसद भवन के केन्द्रीय हाल में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया । केन्द्रीय संचार और संसद कार्य मंत्री डा० रामसुभग सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की । इस अवसर पर भाषण करते हुए केन्द्रीय परिवहन मंत्री डा० वी०के०आर०वी० राव ने कहा : हिंदी बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा है । इसे सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि इसके बिना भावनात्मक एकता संभव नहीं है ।

गांधी युग पुराण का उद्घाटन :

23 अगस्त 1968 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने गांधी युग पुराण के 4 खंडों का उद्घाटन किया । गांधी विचारधारा के सुप्रसिद्ध विद्वान काका कालेलकर ने समारोह की अध्यक्षता की । शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में कहा कि गांधी युग पुराण की रचना समयोचित एवं सराहनीय है ।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका

यूनेस्को कूरियर

मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री के लिए प्रशंसनीय
एक प्रति : एक रुपया
वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये
पुस्तकालयों के लिए : 9-50 रुपये
वार्षिक ग्राहक बनाने के लिए प्रचारकों को विशेष छूट
ग्राहक बनने तथा एजेंसी के नियमों के लिए लिखें :
प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिन्दी),
वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

* प्रादेशिक अंचल में

मद्रास

मद्रास सरकार की भाषा नीति के कारण हिंदी प्रचार को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति के लिए तथा मद्रास में हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य को निरंतर चालू रखने के लिए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास ने एक योजना बनाई है । इसके अंतर्गत मद्रास राज्य में एकल-शिक्षक हिंदी स्कूल खोले जाएँगे जो स्वैच्छिक रूप से हिन्दी पढ़ाएँगे ।

मैसूर

- कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा धारवाड़ की ओर से अगस्त, 1968 को एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन सम्मिलित हुए । स्थानीय हिंदी सेवियों तथा हिंदी अध्यापकों ने हिंदी-प्रचार की समस्याओं पर निदेशक से विचार-विनिमय किया ।

- मैसूर विश्वविद्यालय की मानस हिंदी परिषद की ओर से 11-8-68 को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन के सम्मान में आयोजित एक सभा में प्राध्यापक श्री राजेश्वरैया ने मैसूर में हिंदी के प्रचार का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि मैसूर में सन् 1930 के पहले से ही हिंदी का प्रचार हो रहा है । विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग से अब तक साठ छात्र हिंदी एम० ए० और तीन छात्र पी०एच०डी० कर चुके हैं । इस समय 19 छात्र एम०ए० की तैयारी कर रहे हैं और 21 छात्र पी०एच०डी० उपाधि के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं । समारोह में भाषण करते हुए प्रो० ए० चन्द्रहासन ने कहा : भारतीय भाषाओं की आपस में कोई होड़ नहीं है । उनका मुकाबला अंग्रेजी से है । एक भाषा की उन्नति से दूसरी भाषा को लाभ होगा । प्रत्येक क्षेत्र में प्रशासन तथा उच्च शिक्षा की भाषा क्षेत्रीय भाषा होगी और हिंदी से सम्पर्क भाषा का काम लिया जाएगा ।

गुजरात

सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभविद्यानगर के हिंदी विभाग की हिंदी साहित्य समिति के तत्वावधान में 1 अगस्त, 1968 को तुलसी जयंती मनाई गई। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल ने की। इस अवसर पर हिंदी विभाग की ओर प्रकाशित "शोध: तत्व और दृष्टि" नामक ग्रंथ का उपकुलपति महोदय ने विमोचन किया।

नेफा

ज्ञात हुआ है कि उत्तर पूर्वी सीमांत प्रदेश (नेफा) में हिन्दी आम बोलचाल की भाषा हो गई है। वहां के आदिवासी विभिन्न बोलियां बोलते हैं लेकिन एक दूसरे से बात करने के लिए उनकी अन्य कोई समान भाषा नहीं है। हाल ही में, नेफा का दौरा करके लौटने वाले पत्रकारों के एक दल का यह अनुभव है। दल के लोगों ने देखा कि वहां अधिकारीगण और स्थानीय लोग परस्पर हिंदी में बात करते हैं।

हरियाणा

वार्षिक पुरस्कार योजना

हरियाणा सरकार के भाषा विभाग ने अपनी वार्षिक पुरस्कार योजना के अंतर्गत वैज्ञानिक, तकनीकी तथा साहित्यिक रचनाओं पर पुरस्कार देने के लिए पुस्तकें आमंत्रित की हैं। रचनाएं 1 अप्रैल 1967 से 31 मार्च 1968 के बीच लिखित या प्रकाशित होनी चाहिए। प्रकाशित पुस्तकों की छः और हस्तलिखित पुस्तकों की 3 प्रतियां निदेशक, भाषा विभाग, हरियाणा, 1580 सैक्टर 18-डी चंडीगढ़ के पास 30 सितंबर तक पहुंच जानी चाहिए। योजना के अंतर्गत सर्वोत्तम पुस्तक पर 1000 रुपये, सामान्यतः उत्तम पुस्तक पर 800 रुपये और द्वितीय श्रेणी की पुस्तकों पर 500 रुपये पुरस्कार स्वरूप दिए जाते हैं। यह प्रतियोगिता केवल उन्हीं लेखकों तक सीमित है जो हरियाणा के निवासी हैं अथवा इस प्रदेश में पैदा हुए हैं।

* विश्वविद्यालयों में

काशी हिंदू विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम

काशी हिंदू विश्वविद्यालय कोर्ट ने 12 अगस्त 1967 को अपनी विशेष बैठक में यह प्रस्ताव पास किया था कि पांच वर्ष की अवधि में स्नातक कक्षाओं से लेकर उच्चतर कक्षाओं तक हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न किया जाएगा । शिक्षा आयोग की 1966 की रिपोर्ट में भी इसे स्वीकार किया गया था । विश्वविद्यालय ने इस दिशा में काफी प्रगति की है । कोर्ट के निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए कई ठोस कदम उठाए गए हैं । इस प्रश्न पर विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों तथा विद्या-परिषद (एकेडेमिक कौंसिल) ने भी विचार किया है । पूर्व-विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम (कला एवं विज्ञान संकाय) बी०ए० बी०एस-सी०, बी० काम० बी०एस-सी० (कृषि) बी० फार्म० तथा तकनीकी शिक्षा के पहले और दूसरे वर्ष (सम्मिलित पाठ्यक्रम) से अंग्रेज़ी हटा दी गई है । बी० ए०, बी० काम०, बी०एस-सी०, तथा एम० ए० के कुछ विषयों में भी अंग्रेज़ी तथा हिंदी दोनों माध्यमों से शिक्षा देने की सुविधा है । छात्रों की सुविधा के लिए कृषि-संकाय में स्नातक श्रेणी तक की शिक्षा हिंदी तथा अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में देने की व्यवस्था की गई है । इनमें से किसी भी माध्यम का चुनाव करने के लिए छात्र स्वतंत्र होंगे । इस बात पर भी विचार किया जा रहा है कि प्रौद्योगिकी, आयुर्विज्ञान तथा विधि संकायों में भी हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ।

हिंदी में इन सभी विषयों की पाठ्य-पुस्तकों को उपलब्ध कराने के लिए हिंदी प्रकाशन मण्डल एवं हिंदी एककों की स्थापना की योजना भी विद्या परिषद तथा कार्यकारी परिषद द्वारा स्वीकृत की जा चुकी है । आवश्यक धनराशि के लिए भारत सरकार से अनुरोध किया गया है । प्रकाशन मंडल, विद्या परिषद तथा उसकी तदर्थ समिति की देख-रेख में माध्यम-परिवर्तन को आवश्यक दिशा प्रदान करेगा ।

(उपकुलपति की वार्षिक रिपोर्ट पर आधारित)

* विदेशों में

श्रीलंका में हिंदी

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की कोलम्बो शाखा द्वारा आयोजित हिंदी परीक्षाओं में इस वर्ष 50 विद्यार्थी बैठे हैं । अधिकांश विद्यार्थी सिंहली भाषा-भाषी हैं । हिन्दी प्रचार सभा का दावा है कि अब तक कम से कम 5000 विद्यार्थी सभा की विभिन्न परीक्षाएं पास कर चुके हैं । इस समय लगभग 100 विद्यार्थी सभा द्वारा आयोजित विभिन्न कक्षाओं में हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं । कोलम्बो स्थित भारतीय हाई कमीशन के कार्यालय में भी हिन्दी की कक्षाएं चलती हैं ।

सोवियत संघ में महाभारत के नए अनुवाद

तुर्कमान विज्ञान अकादमी ने सन् 1955 से 1963 के बीच महाभारत के रूसी अनुवाद के सात भाग प्रकाशित किए हैं । ये अनुवाद अकादमी-सदस्य बोरिस स्मिरनोव द्वारा किए गए हैं । श्री स्मिरनोव के इस कार्य में रूस में बहुत दिलचस्पी ली जा रही है और विशेषज्ञों तथा पाठकों ने इन रचनाओं को उच्च स्तरीय माना है ।

अंतराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

मारिशस हिंदी प्रचारिणी सभा के मंत्री श्री स० म० भगत ने एक वक्तव्य में कहा है कि भारत में शीघ्र ही हिंदी का एक अंतराष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए ताकि लोगों को मालूम हो सके कि विश्व भर में हिंदी को कितना उच्च स्थान प्राप्त है । यह काम सरकार को नहीं बल्कि हिंदी हितैषियों को करना चाहिए । उन्होंने बताया कि हिंदी अपने स्वाभाविक और सहज गुणों के कारण भारत के इस छोर से उस छोर तक फैली हुई है । विदेशों में भी इसका प्रचार और आदर है । विशिष्ट गुणों के कारण अन्य भाषा-भाषियों के लिए हिंदी में विशेष आकर्षण है ।

0 नए प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

आयोग के प्रकाशन अनुभाग से अथवा उसकी देखरेख में अब तक छह सौ से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं । नीचे 1967-68 में प्रकाशित पुस्तकों की सूची दी जा रही है । विस्तृत जानकारी तथा पुस्तकों की प्राप्ति के लिए प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (प्रकाशन) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) कर्जन रोड, बैरेक्स, नई दिल्ली से पत्र व्यवहार किया जा सकता है :-

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	मूल्य (रुपये)
अपना हृदय सबल बनाइए	पी0 जैलेनिन	आयुर्विज्ञान	5-00
मानव व्याधिकी	महेन्द्र प्रकाश गर्ग	आयुर्विज्ञान	11-70
प्राथमिक सूक्ष्मदर्शीय खनिज विज्ञान	सुधाकर मोतीलाल चौधरी	इंजीनियरी	5-00
वैद्युत औद्योगिकी भाग-1	एस0 काटन	,,	7-75
आधुनिक सर्वेक्षण भाग-1	प्रीतम दास बूल चंद साहनी	,,	6-25
निर्माण सामग्री	प्रो0 आर0एस0 देशपांडे	,,	5-50
बीज गणित	डब्ल्यू0 एल0 फेरार	बीजगणित	9-00
रूपांतर कलन	डा0 ब्रजमोहन	गणित	4-50
अकशेरुकी प्राणि जगत	एच0 एल0 हिमान	जीव-विज्ञान	18-00
पौधों का जीवन	कीबल	,,	5-00
व्यापारिक फल और तरकारी उत्पादन	क्रुस	,,	20-00
द्रव्यों की सामर्थ्य के मूल तत्व	स्टीफन तिमोशेन्को तथा डी0 एच0 यंग	भौतिकी	10-50
भारतीय विज्ञान के कर्णधार	डा0 सत्य प्रकाश	,,	30-00
इक्कीसवीं शती के समाचार	एम0 वासिल्येव तथा एस0 गुश्चेव	,,	8-00

वैज्ञानिक शब्दावली- इतिहास और सिद्धांत	डा० ओम प्रकाश शर्मा		9-80
प्रायोगिक भौतिकी	डा० वर्मा, डा० गुप्ता आदि	भौतिकी	8-25
ग्रह-उपग्रह	पैट्रिक मूर		5-00
कालिज केमिस्ट्री	एल० पालिंग	रसायन	15-00
सामाजिक अर्थशास्त्र	डब्ल्यू० हैगन बुश	अर्थशास्त्र	5-60
जान मेनार्ड कीन्स का अर्थशास्त्र	डी० डिलार्ड	,,	13-00
उद्योग का नियंत्रण	राबिन्सन तथा डेनिसन	,,	5-50
आधुनिक अधिकोषण	आर० एस० सेयर्स	,,	3-70
अर्थशास्त्र का परिचय	ए० कैर्न क्रास	,,	12-50
अल्प विकसित देशों का अर्थशास्त्र	पी० टी० बौवर तथा एस० यामी	,,	6-75
प्रतिस्पर्धा उद्योग	ई०ए०जी० राबिन्सन	,,	3-60
भारत में मुद्रा और बैंकिंग विकास	डा० अवध बिहारी मिश्र	,,	4-00
अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र	आर० एफ० हैरार्ड	,,	3-40
प्राचीन भारत का इतिहास	डा० ओम प्रकाश	इतिहास	11-75
एशिया की विकासोन्मुख सत्ता	प्रो० एस०वी० पुन्ताम्बेकर	,,	9-00
सत्रहवीं शताब्दी का योरप	डेविड आग	,,	14-25
समाज दर्शन	महादेव प्रसाद	समाज-विज्ञान	5-30
राजनीति विज्ञान के मूल सिद्धान्त	नवीन नारायण अग्रवाल	राजनीति	10-00
सोवियत समाज-वादी गणराज्य का संविधान	अनु० भगवती प्रसाद राय	,,	0-95
आधुनिक शासन प्रणालियाँ	कृष्णकांत मिश्र	,,	10-90
विकास मनोविज्ञान भाग-1	हर्लाक	मनोविज्ञान	7-65

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अथवा उसकी देख-रेख में प्रकाशित शब्दावलियाँ :

	मूल्य		मूल्य
वायुविज्ञान शब्दावली-1	8-75	मानविकी शब्दावली-1	2-25
वायुविज्ञान शब्दावली-2	4-50	मानविकी शब्दावली-2	0-90
इंजीनियरी शब्दावली-1	0-80	मानविकी शब्दावली-3	0-50
इंजीनियरी शब्दावली-2	0-80	मानविकी शब्दावली-4	1-10
इंजीनियरी शब्दावली-3	1-80	विज्ञान शब्दावली-1	7-25
कृषि शब्दावली-1	2-50	विज्ञान शब्दावली-2	1-80
पदनाम शब्दावली	--	विज्ञान शब्दावली-3	1-75
प्रशासन शब्दावली	--	समेकित प्रशासन शब्दावली	--
		स्नातकोत्तर रसायन शब्दावली	3-00
		भौतिक पारिभाषिक कोश	--

अक्षर प्रकाशन, 2/36 अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
रंगदर्शी	नेमिचंद्र जैन	20-00
स्थायी साहित्य मूल्य और मूल्यांकन	डा0 राम विलास शर्मा	7-00
फ़ेन्स के इधर उधर	ज्ञान रंजन	4-00
एक प्लेट सैलाब	मन्नू भंडारी	4-00
बांदी	गुलाम कुद्दूस	6-00
उतरते ज्वार की सीपियां	राजेन्द्र अवस्थी	6-00
मंत्र-विद्ध	राजेन्द्र यादव	3-50

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए ले० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

12.

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 2 अंक

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर स् 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अक्तूबर, 1968 अंक 2

- 0 भाषा संगम
- 0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (बंबई हिंदी विद्यापीठ, बम्बई)
- 0 हिंदी
  - * भारत सरकार में
  - * राजधानी में
  - * प्रादेशिक अंचल में
  - * विश्वविद्यालयों में
  - * विदेशों में
- 0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था -

----- जो स्थान इस समय अनुचित ढंग से अंग्रेजी भोग रही है वह स्थान हिंदी को मिलना चाहिए। ------ शिक्षित वर्ग की एक भाषा अवश्य होनी चाहिए और वह हिंदी ही हो सकती है। हिंदी के द्वारा करोड़ों व्यक्तियों में आसानी से काम किया जा सकता है। इसलिए उसे उचित स्थान मिलने में जितनी देर हो रही है उतना ही देश का नुकसान हो रहा है। -----

मोतीहारी, चम्पारन - 13-7-1917 - आश्रम कोष के लिए परिपत्र से उद्धृत

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली 22 से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

नेहरू बाल-पुस्तकमाला :

राष्ट्रीय एकता को लक्ष्य में रखते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रमुख भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य की 100 पुस्तकें प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इसे "नेहरू बाल पुस्तकमाला" का नाम दिया गया है। योजना के अंतर्गत चुनी गई पुस्तकों को सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में एक साथ प्रकाशित किया जाएगा। प्रत्येक पुस्तक की कीमत और सज्जा एक-सी होगी। केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारें इन पुस्तकों की लगभग एक लाख प्रतियां खरीदेंगी। प्रारंभ में 11 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए पुस्तकें तैयार की जाएंगी। बाद में इससे छोटे और बड़े आयुवर्गों के बच्चों के लिए भी ऐसी ही पुस्तकें प्रकाशित की जाएंगी। पुस्तकों का विषय भारत की सांस्कृतिक विरासत, इतिहास, लोक कथा, त्यौहार, विकास कार्य, संविधान, स्वाधीनता आंदोलन तथा वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान होगा।

संस्कृत साहित्य के विद्वानों का सम्मान

संस्कृत और वैदिक साहित्य के पांच प्रख्यात विद्वानों का बम्बई में एक अक्तूबर को विशेष समारोह में सम्मान किया गया। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री ने नारियल, दुशाला, माला और एक हजार रुपये वेदमूर्ति श्रीकृष्णमूर्ति भट्ट, वेदमूर्ति कृष्ण भट्ट, बापूभट्ट परांजपे, वेदमूर्ति दत्तू भट्ट जोशी, वेदमूर्ति गोविन्द भट्ट. काशीनाथ थारप और वेदमूर्ति बापूदेव भट्ट विनायक देव को भेंट किए। अब तक महाराष्ट्र के 31 संस्कृत विद्वानों को सम्मानित किया जा चुका है।

अखिल भारतीय भाषा कवि सम्मेलन

दिल्ली स्थित तमिल संघ की ओर से गांधी जन्म-दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय भाषा कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता शिक्षा मंत्रालय के राज्य-मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने की। सम्मेलन में हिंदी तमिल तथा अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों ने भाग लिया।

-0-

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएँ

बंबई हिंदी विद्यापीठ, बंबई :

जन-जागृति और राष्ट्रीय भावना के पोषण तथा विकास के लिए संपूर्ण देश में एक राष्ट्रभाषा और एक राष्ट्रलिपि के महत्व को ध्यान में रख कर राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और समृद्धि के लिए 12 अक्तूबर 1938 को विद्यापीठ की स्थापना हुई थी । संस्था की स्थापना में सर्वश्री डा0 राजबहादुर सिंह, स्व0 रामनाथ जा0 पोद्दार, डा0 मोती चंद्र तथा भानु कुमार जैन का प्रमुख हाथ रहा है । स्थापना-काल में श्रीमती रमाबाई तक्कूर एवं श्रीमती लीलावती मुंशी तथा नगर के अन्य अहिंदी भाषी प्रचारकों का बहुमूल्य सहयोग उल्लेखनीय है । अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्था पिछले तीस वर्षों से अध्यापन, परीक्षा-संचालन, व्याख्यानमाला, वादविवाद प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, संगोष्ठी, शिविर आदि अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृति कार्यक्रमों का आयोजन करती रही है । विद्यापीठ की विभिन्न प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :-

परीक्षा-संचालन - प्रारंभ में विद्यापीठ की ओर से चार परीक्षाएं - प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा और भाषारत्न - संचालित की जाती थीं । पहले वर्ष कुल 198 परीक्षार्थी प्रथमा परीक्षा में बैठे थे । मार्च 1940 की परीक्षा में परीक्षार्थियों की संख्या 1900 तक पहुंच गई । इस समय विद्यापीठ (1) हिंदी प्रवेश, (2) हिंदी प्रथमा, (3) हिंदी मध्यमा, (4) हिंदी उत्तमा, (5) हिंदी भाषारत्न, (6) साहित्य सुधाकर और (7) साहित्य रत्नाकर (नौ खंडों में) - संचालित करती है । इनमें से हिंदी उत्तमा, हिंदी भाषारत्न और साहित्य सुधाकर परीक्षाओं को, भारत सरकार द्वारा क्रमशः मैट्रिक, इंटर और बी0ए0 (केवल हिंदी में) के समकक्ष मान्यता प्राप्त है । राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, मैसूर, गोवा, पश्चिम बंगाल सरकारों से भी उन्हें ऐसी ही मान्यता प्राप्त है ।

विद्यापीठ की परीक्षाओं में अब तक लगभग पौने छः लाख परीक्षार्थी सम्मिलित हो चुके हैं । इस समय लगभग 63000 विद्यार्थी प्रति वर्ष परीक्षा में

बैठते हैं । विद्यापीठ का कार्यक्षेत्र अखिल भारत है । पूरे भारत में लगभग 1000 परीक्षा केन्द्र हैं और लगभग इतने ही शिक्षण वर्ग चलते हैं जहां परीक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं । विद्यापीठ के लगभग 4000 प्रचारक, हिंदी अध्यापन कार्य में संलग्न हैं । कुछ प्रचारकों को थोड़ा-बहुत वेतन भी दिया जाता है । शेष अवैतनिक कार्यकर्ता हैं ।

ग्रंथालय - बंबई नगर में विद्यापीठ का अपना पुस्तकालय है जिसमें लगभग 4000 पुस्तकें हैं । विद्यापीठ अपने ग्रंथालय को पूर्ण विकसित करने का प्रयत्न कर रहा है ताकि बंबई के हिंदी पाठकों को आवश्यक पाठ्य-सामग्री प्राप्त हो सके ।

प्रकाशन - विद्यापीठ के द्वारा अब तक 80 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं । इनमें से लगभग 40 पुस्तकें पाठ्यक्रम में हैं । इनके अतिरिक्त बच्चों के लिए विज्ञान-संबंधी पुस्तक 'हवा में उड़ा जाए' तथा रजत जयंती के अवसर पर 'रजत जयंती ग्रंथ' प्रकाशित किया गया है ।

विद्यापीठ का मुखपत्र 'भारती' मासिक पत्रिका है । यह गत 17 वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है । 'भारती' में विशेष रूप से हिंदी प्रचार संबंधी सामग्री एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी लेख प्रकाशित होते हैं । संस्था का अपना मुद्रणालय है, जो 1950 में ही खरीदा गया था । इसमें हिंदी एवं अन्य भाषाओं के मुद्रण की व्यवस्था है ।

संविधान - संस्था के संविधान में सदस्यों की अलग-अलग श्रेणियां निर्धारित हैं । प्रति दूसरे वर्ष सभी श्रेणियों के सदस्य उपस्थित होकर कार्यकारिणी समिति का चुनाव करते हैं । इसी भांति प्रति तीसरे वर्ष आजीवन और इससे ऊपर की श्रेणियों के सदस्यों में से निधि संरक्षक मंडल (ट्रस्टीज़) का चुनाव होता है । कार्यकारिणी समिति में हिंदी प्रचारक श्रेणी के सदस्य अपने-अपने क्षेत्रों से प्रतिनिधि चुनकर भेजते हैं । कार्यकारिणी समिति अपनी पहली सभा में पदाधिकारियों का चुनाव करती है । प्रधान मंत्री उपसमितियों के मंत्रियों को नामांकित करता है तथा उपसमितियों के मंत्री अपनी-अपनी समिति के नाम उपस्थित करते हैं । विद्यापीठ

की कुल 6 उप-समितियां हैं, अर्थात् अर्थ समिति, परीक्षा समिति, प्रसार समिति, शिक्षा समिति, प्रकाशन समिति, और सांस्कृतिक समिति ।

श्री सुशील कवळेकर विद्यापीठ के कुलपति और श्री बालकृष्ण गाँसले प्रधान मंत्री हैं । विद्यापीठ का कार्यालय आनंद नगर, फारजेट स्ट्रीट, बम्बई-26 में है ।

--00--

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद

परिषद की ओर से देश भर में 40 से अधिक केन्द्रों पर 6 तथा 7 अक्तूबर को हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम पुरस्कार में 101 रुपये, फलक और चल-शील्ड, द्वितीय पुरस्कार में 51 रुपये तथा फलक और तृतीय पुरस्कार में 31 रुपये और फलक दिए जाएँगे । अहिंदी भाषी प्रतियोगियों को तथा नए कुंजीपटल के टाइपराइटर पर अधिकतम गति से टाइप करने वाले प्रतियोगियों को विशेष पुरस्कार दिए जाएँगे । अधिक जानकारी के लिए परिषद के कार्यालय, एक्स0 वाई0 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23 से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है ।

-केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, बम्बई की समन्वय समिति की ओर से 27 सितंबर को हिंदी में एक वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस में डाक तार विभाग, रेलवे, सीमा शुल्क, श्रम विभाग, जहाज़रानी, खादी ग्रामोद्योग और बीमा निगम के सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया । समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की बम्बई शाखा के मंत्री श्री कांतिलाल जोशी ने की ।

-परिषद की पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय शाखा बम्बई ने 13 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया । हिंदी शिक्षण योजना के क्षेत्रीय अधिकारी श्री प्रयाग नारायण चतुर्वेदी मुख्य अतिथि थे ।

--00--

0 हिंदी

* भारत सरकार में

पत्राचार पाठ्यक्रम

अहिंदी भाषी भारतीयों और विदेशियों को पत्राचार द्वारा हिंदी सिखाने के लिए केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने मार्च, 1968 में जो पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किया था उसकी लोकप्रियता में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। इस वर्ष शुरू किए गए "प्रवेश" के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के लिए प्रारंभ में 520 छात्रों ने प्रवेश लिया था। विदेशी मुद्रा संबंधी कठिनाइयों के कारण कुछ विदेशी छात्र प्रवेश नहीं पा सके थे। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए भारत सरकार ने निर्णय किया कि विदेश स्थित छात्र शुल्क आदि की रकम उस देश की मुद्रा में भारतीय दूतावासों में जमा करा सकते हैं। यह सुविधा मिल जाने से अब लगभग 150 विदेशी छात्रों को इस पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया है। समय पर आवेदन पत्र न भेज सकने के कारण कुछ भारतीय विद्यार्थी प्रवेश से वंचित रह गए थे। उन्हें भी अब पाठ्यक्रम में भर्ती कर लिया गया है। इस प्रकार इस पाठ्यक्रम में अब तक 995 छात्र भर्ती किए जा चुके हैं और उन्हें अब तक 14 पाठ भेजे जा चुके हैं। छात्रों को सहायक पाठ्य-सामग्री भी भेजी गई है। गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध परीक्षा का पाठ्यक्रम कुछ विशेष वर्गों के सरकारी कर्मचारियों के लिए जल्द ही शुरू किया जाएगा। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अध्यापकों को भी इसी पाठ्यक्रम में प्रवेश देने का विचार है।

नाट्यशास्त्र शब्दावली संगोष्ठी :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) के तत्वावधान में नाट्यशास्त्र की शब्दावली पर विचार करने के लिए 7 अक्तूबर से 11 अक्तूबर तक दिल्ली स्थित रवीन्द्र भवन में एक संगोष्ठी में विभिन्न भारतीय भाषाओं के नाट्य शास्त्रवेत्ताओं द्वारा लगभग 1200 शब्दों पर विचार किया गया और उनमें से लगभग 700 शब्दों को अंतिम रूप दिया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन केन्द्रीय

शिक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने आशा व्यक्त की कि शब्दावली का काम पूरा हो जाने के बाद आयोग शब्दकोशों पाठ्य-पुस्तकों और संदर्भ ग्रंथों के निर्माण में तेजी से प्रवृत्त होगा ।

सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक :

भारत सरकार ने सभी मंत्रालयों और विभागों को आदेश दिया है कि मूल शिक्षा और काम के आधार पर, तृतीय श्रेणी तक के सभी कर्मचारियों को, जिनकी आयु 45 वर्ष से कम है, हिंदी भाषा का निर्धारित ज्ञान आवश्यक रूप से प्राप्त कर लेना चाहिए । हिंदी शिक्षा के लिए सरकारी कर्मचारियों को तीन वर्गों में रखा गया है । जिन सरकारी कर्मचारियों की भर्ती के लिए हाई स्कूल या उससे कम की शिक्षा का स्तर निर्धारित है और जो पत्र-व्यवहार का या लिखा-पढ़ी का काम नहीं करते, उन्हें हिंदी की 'प्रबोध' परीक्षा पास करनी होगी । इस वर्ग में कार ड्राइवर, इंजिन ड्राइवर, रिकार्ड छांटने वाले, बिजली की मशीनों पर काम करने वाले, डाकिये, टेलीफोन आपरेटर आदि शामिल किए गए हैं । डाक्टरों, वैज्ञानिकों, सरकारी वर्कशापों के पर्यवेक्षकों और प्रयोगशालाओं के प्रबंधकों को 'हिंदी प्रवीण' परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी । तीसरे वर्ग में वे सभी सरकारी कर्मचारी हैं जिन्हें टिप्पणी-लेखन और पत्र-व्यवहार का काम करना पड़ता है । इन कर्मचारियों को 'हिंदी प्राज्ञ' परीक्षा पास करनी होगी ।

गृह मंत्रालय ने सभी मंत्रालयों तथा विभागों को सूचित किया है कि वे भारत के राजपत्र में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाओं के अंग्रेजी मसौदे के साथ हिंदी का मसौदा अनिवार्य रूप से भेजें । राष्ट्रपति के दिनांक 27-4-1960 के आदेश में कहा गया था कि भारत के राजपत्र के कुछ चुने हुए भागों को हिंदी में भी प्रकाशित करने की व्यवस्था की जाए । इसके अनुसरण में छपाई नियंत्रक ने फरीदाबाद प्रेस में हिंदी की छपाई की पर्याप्त व्यवस्था कर ली है । चूंकि राजभाषा (संशोधन) अधिनियम की धारा 3(3) में संकल्पों, नियमों, अधिसूचनाओं और नोटिसों आदि के लिए अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग को अनिवार्य माना

गया है, राजपत्र में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाएं आदि अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी प्रकाशित की जाएंगी ।

उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका का प्रकाशन :

विधि मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति ने यह निर्णय किया है कि देश के सभी उच्च न्यायालयों के महत्वपूर्ण निर्णयों को हिंदी में प्रकाशित करने के लिए अगले वर्ष जनवरी से 'उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका' प्रकाशित की जाए । यह पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होगी । विधि मंत्रालय से 'उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका' पहले से ही प्रति मास प्रकाशित हो रही है ।

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) ने विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अनुभवी प्रकाशन-संस्थाओं से प्रस्ताव आमंत्रित किए हैं । इस योजना के अंतर्गत भारत सरकार प्रकाशित पुस्तक की एक हज़ार प्रतियां लागत खर्च के तीन गुने मूल्य पर खरीद लेगी । लागत खर्च का आकलन बढ़ी हुई मुद्रण दरों को ध्यान में रखते हुए उदारतापूर्वक किया जाएगा । विस्तृत जानकारी के लिए प्रधान प्रकाशन अधिकारी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय), वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है ।

अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी पर्याय बताने के लिए टेलीफोन सेवा

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के हिंदी सूचना केन्द्र में एक टेलीफोन सेवा शुरू की गई है जिसमें सरकारी कार्यालयों, व्यापारिक संस्थानों तथा अन्य जिज्ञासुओं को अंग्रेजी शब्दों के हिंदी रूपांतर बताए जाते हैं । सूचना टेलीफोन नंबर 7 46 12 से प्राप्त की जा सकती है ।

हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

संघ और कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप देश के भीतर और बाहर हिंदी सीखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इन की सुविधा के लिए यह आवश्यक और उचित माना गया कि हिंदी वर्तनी की मानक पद्धति निर्धारित की जाए ताकि हिंदी शब्दों की वर्तनी में एकरूपता रहे।

शिक्षा-मंत्रालय इस दिशा में 1961 से ही सचेष्ट रहा है और इस कार्य के लिए विशेषज्ञों की एक समिति संगठित की गई थी। इस समिति की सिफारिशों को 1962 में मान्यता दे दी गई थी। तथापि यह जानते हुए कि किसी भी विकासशील भाषा के शब्दों में अनेकरूपता होना स्वाभाविक है। किसी भाषा को कठोर नियमों में नहीं जकड़ा जा सकता और उसे बोलने या लिखने वालों को किसी ऐसे शब्द को जिसके दो या अधिक समानांतर रूप प्रचलित हो चुके हों, एक विशेष रूप में प्रयुक्त करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। ऐसे शब्द रूपों के विषय में किसी विशेषज्ञ समिति द्वारा निर्णय दे देने के बाद भी उनकी ग्राह्यता-अग्राह्यता के संबंध में मतभेद बना ही रहता है। भाषा विषयक कठोर नियम बना देने से उनकी स्वीकार्यता तो संदेहास्पद हो ही जाती है साथ ही भाषा के स्वाभाविक विकास में अवरोध आने का भी डर रहता है। फलतः भाषा गतिशील जीवन्त और सप्राण नहीं रह पाती। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस प्रश्न पर भारत सरकार ने बहुत उदार नीति अपनाई और 1962 के बाद विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर अपना मन्तव्य व्यक्त कर देने के उपरांत भी विविध क्षेत्रों से सुझाव आने के लिए द्वार उन्मुक्त रखे गए हैं।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) द्वारा अब हिंदी 'वर्तनी का मानकीकरण' शीर्षक एक पुस्तिका प्रकाशित की गई है। इस पुस्तिका में विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित नियमों की उदाहरण सहित व्याख्या भी दी गई है। जिज्ञासुओं को उसकी प्रतियां निदेशालय से मिल सकती हैं।

* राजधानी में

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से विजय दशमी के अवसर पर लाल किले में वीर रस के कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि-सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि मंत्री श्री जगजीवन राम ने किया । अध्यक्षता डा० रामधारी सिंह दिनकर ने की । इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा आयोजित हिंदी पत्रक प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए ।

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन दरीबाकलां मंडल की ओर से 23 सितंबर को एक समारोह किया गया । जिसमें केन्द्रीय मंत्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने पर जोर दिया । इस अवसर पर निगम में जनसंघ दल के नेता श्री केदारनाथ साहनी ने बताया कि निगम का 90 प्रतिशत कार्य हिंदी में होने लगा है ।

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने दिल्ली के न्यायालयों तथा नगर निगम कार्यालय में कुछ हिंदी टाइपिस्ट बिठाने की योजना बनाई है । योजना का उद्देश्य यह है कि न्यायालयों और सरकारी कार्यालयों के काम-काज में हिंदी के प्रचलन को बढ़ावा मिले ।

- नई दिल्ली नगरपालिका की नव-निर्वाचित वरिष्ठ उपाध्यक्षा कु० सुरेन्द्र सैनी ने एक भेंट में कहा कि नगरपालिका के कार्य में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है । हिंदी जानने वाले अवर श्रेणी लिपिकों की भर्ती की गई है तथा हिंदी के टाइपराइटर मंगाए गए हैं । चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के साथ पत्र-व्यवहार हिंदी में किया जा रहा है । नगरपालिका के फार्मों का हिंदी अनुवाद किया जा चुका है ।

हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामवृक्ष 'बेनीपुरी' और प्रो० मोहन वल्लभ पंत के निधन पर 'हिंदी समाचार जगत' शोक प्रकट करता है ।

* प्रादेशिक अंचल में

पंजाब :

पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने 1968-69 के पुरस्कारों के लिए 24 अक्तूबर, 1968 तक हिंदी पुस्तकें और पांडुलिपियां आमंत्रित की हैं। पुस्तकें अथवा पांडुलिपियां 1 अप्रैल 1967 से 31 मार्च 1968 तक लिखित अथवा प्रकाशित होनी चाहिए। सर्वोत्तम पुस्तक पर 1000 रुपये, सामान्यतः उत्तम पुस्तक पर 800 रुपये और द्वितीय श्रेणी की पुस्तक पर 500 रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। प्रतियोगिता उन्हीं लेखकों तक सीमित है जिनका जन्म-स्थान पंजाब में है अथवा जो पंजाब के निवासी हैं। विशेष विवरण के लिए निदेशक, भाषा विभाग पंजाब पटियाला से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश :

- हिंदी भवन मेरठ की ओर से 26 सितंबर को एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया था। गोष्ठी में भाषण करते हुए गांधीवादी विचारक काका कालेलकर ने कहा : सारे भारत को एक करना है तो सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी को प्रयोग में लाना होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हिंदी एक दिन सम्पूर्ण एशिया की सम्पर्क भाषा बनेगी।

- हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर के साहित्य के निर्माण के लिए उत्तरप्रदेश में 2 करोड़ रुपये की लागत से एक निगम की शीघ्र स्थापना की जाएगी। हिंदी के अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए इलाहाबाद में एक हिंदी प्रशिक्षण संस्था भी स्थापित की जाएगी। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश सरकार इस प्रस्ताव पर भी विचार कर रही है कि 20 लाख रुपये की लागत से हिंदी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य की 147 विशिष्ट पुस्तकें प्रकाशित की जाएं।

- हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी का कानपुर में उन के 70वें जन्मदिवस के अवसर पर शानदार ढंग से अभिनंदन किया गया। डा० प्रेमनारायण शुक्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न इस समारोह में हिंदी के अनेक साहित्यकार समीक्षक और पत्रकार सम्मिलित हुए।

हरियाणा

– हरियाणा मंत्रिमंडल ने आगामी गणतंत्र दिवस 26 जनवरी से हिन्दी को सभी स्तरों पर राज्य के सरकारी कामकाज की भाषा बनाने का विधिवत निर्णय किया है । उक्त निर्णय के अनुसार सचिवालय, जिला एवं खण्ड स्तर तक सभी सरकारी लिखा-पढ़ी हिंदी भाषा के माध्यम से ही होगी । मंत्रिमंडल की बैठक के उपरांत मुख्यमंत्री चौ० बंसीलाल ने पत्रकारों को बतलाया कि राज्य में सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने की तैयारियां कर ली गयी हैं । केन्द्र के साथ राज्य की सम्पर्क भाषा भी हिन्दी होगी । राज्य सरकारों से उसी भाषा में लिखा-पढ़ी की जायेगी जिसमें दोनों पक्षों को सुविधा हो ।

– प्रशासन के सभी स्तरों पर हिंदी में कामकाज करने के लिए हरियाणा में ज़ोर से तैयारी की जा रही है । चंडीगढ़ में लगभग 300 कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है । प्रशिक्षण की अवधि तीन से चार मास तक है । सरकारी कर्मचारियों को प्रतिदिन काम में आने वाले हिंदी शब्दों से परिचित कराने के लिए सरकार ने चंडीगढ़ में विशेष हिंदी कक्षाओं का प्रबंध किया है । भाषा विभाग ने कर्मचारियों के लिए चार पुस्तकें तैयार की हैं । इनमें से "कार्यालय विधि" नामक पुस्तक छप कर तैयार है और शीघ्र ही कार्यालयों को उपलब्ध हो सकेगी । एक अंग्रेजी-हिंदी शब्द कोश बनाया जा रहा है और राजस्व तथा वित्त विभाग की शब्दावलियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है ।

दिल्ली :

– दिल्ली के बहुत से व्यापारियों तथा व्यापारिक संस्थानों ने दीपावली के अवसर पर अपना काम-काज हिंदी में करना आरंभ किया । बहुत से व्यापारियों ने दीपावली के शुभ-कामना पत्र भी हिंदी में छपाए । दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक आंदोलन चलाया था, यह उसी का सुपरिणाम है ।

* विश्वविद्यालयों में

- सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के छात्रों तथा प्राध्यापकों का एक दल, जो उत्तर भारत में अपनी अध्ययन यात्रा के लिए निकला था, - सितंबर में राजधानी आया । केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कर्मचारियों की ओर से उसके स्वागत में एक सभा का आयोजन किया गया । विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल भी इस अवसर पर उपस्थित थे ।

- जोधपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के छात्रों ने हिंदी साहित्य परिषद नामक संस्था की स्थापना की है । संस्था का उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा० नगेन्द्र ने किया । जोधपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा० मोतीलाल गुप्त ने राजस्थान के अप्रकाशित विपुल साहित्य भंडार पर प्रकाश डाला ।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका
यूनेस्को कूरियर
मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री के लिए प्रशंसनीय
एक प्रति : एक रुपया
वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये
पुस्तकालयों के लिये : 9-50 रुपये
वार्षिक ग्राहक बनाने के लिए प्रचारकों को विशेष छूट
ग्राहक बनने तथा एजेंसी के नियमों के लिए लिखें :
प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22.

* विदेशों में

पूर्वी अफ्रीका में हिंदी :

कैन्या, युगाण्डा और तंजानिया में भारतीय मूल के निवासी काफी संख्या में रहते हैं । वहां के भारतीयों में हिंदी, गुजराती और उर्दू बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है । लोगों की मांग के अनुसार सरकारी स्कूलों में इन सभी भाषाओं के अध्यापन की व्यवस्था की गई थी । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वहां स्वाहिली भाषा को प्राथमिकता मिली है ।

पूर्वी अफ्रीका में हिंदी का प्रचार करने में आर्य समाज का योगदान सबसे अधिक रहा है । आर्य समाज ने नैरोबी में चार, कंपाला में दो, जंजीबार में एक, किसूमू में एक और दार-ए-सलाम में दो स्कूल खोले थे । इनमें हिंदी अनिवार्य थी । नैरोबी में उन बच्चों के लिए भी हिन्दी कक्षाएं चलाई गई थीं जो स्कूल नहीं जाते थे । अफ्रीकन लोगों के लिए भी हिंदी अध्यापन की व्यवस्था की गई थी ।

कुछ उत्साही हिंदी प्रेमियों के प्रयत्न से यहां हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई । इस कार्य में सर्वश्री देवनाथ स्नातक, पं० सत्यपाल, मास्टर बुधीराम आदि का विशेष योगदान रहा ।

हिंदी प्रचार कार्य में पिछले चार-पांच वर्षों से तेजी आ गई है । नैरोबी नगर में हिंदी शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है । मोम्बासा में लगभग पांच वर्ष से हिंदी शिक्षण केन्द्र चल रहा है । यहां बहुत बड़ी संख्या में छात्र हिंदी पढ़ते हैं । वर्धा की परीक्षाएं देने की व्यवस्था भी है ।

तंजानिया की राजधानी दार-ए-सलाम में आर्य समाज की ओर से हिंदी कक्षाएं चलती हैं । इनमें लगभग 300 छात्र-छात्राएं हिंदी पढ़ते हैं । कुछ हिंदी प्रचारिकाएं अपने घर पर हिंदी की सायंकालीन कक्षाएं चलाती हैं ।

0 नए प्रकाशन

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
अपने पार	राजेन्द्र यादव	कहानी संग्रह	116	3-00
सूर्यमुख	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	नाटक	123	3-50
कहानी-स्वरूप और संवेदना	राजेन्द्र यादव	समालोचना	259	15-00
लाल ढांग	कृष्णचंद्र शर्मा भिक्खु	उपन्यास	279	7-00
तंत्रलोक से यंत्रलोक तक	डा० नगेन्द्र	यात्रा संस्मरण	79	3-00
मेरी दृष्टि में	मोरारजी देसाई	राजनैतिक निबंध	182	10-00
कविताएं 1965	अजित कुमार विश्वनाथ त्रिपाठी	कविता संकलन	250	6-00

शकुन प्रकाशन, 3625 सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 :

वीरबल	ललित सहगल	बालोपयोगी उपन्यास	103	2-00
बालक की खोज	शांति भटनागर	,,	100	2-00
अमृत की धारा	विश्वम्भर सहाय प्रेमी	,,	112	2-00
डाकुओं के घेरे में	राम कुमार भ्रमर	,,	96	2-00
दूरबीन की कहानी	वेदमित्र	ज्ञान-विज्ञान	55	2-00
जय जवाहर	वीरेन्द्र मित्र	जीवनी	48	4-00

शिक्षण संस्थान 12-बी प्रहलाद मार्केट, करोलबाग, नई दिल्ली-5 :

आकाश गंगा	मदन मोहन राजेन्द्र	कहानी संग्रह	143	3-00
देश हमारा देश हमारा	जयप्रकाश भारती	बालोपयोगी उपन्यास	112	2-50

राधाकृष्ण प्रकाशन, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6 :

ज्ञान की बातें	मोरारजी देसाई	बालोपयोगी ज्ञान वार्ता	64	1-50
कितने चौराहे	फणीश्वर नाथ रेणु	उपन्यास	144	4-00

बहती गंगा	शिवप्रसाद मिश्र रुद्र काशिकेय	कहानी संग्रह	163	6-00
क्षण और लक्षण	गोविन्द चंद्र पांडे	कविता संग्रह	92	3-00
चलता हुआ लावा	रीश बख्शी	उपन्यास	110	4-50
रोयें रेशे	मोहन राकेश	कहानी संग्रह	185	5-00
आज के साये	मोहन राकेश	,,	181	5-00
आदिम रात्रि की महक	फणीश्वरनाथ रेणु	,,	182	5-00
गंगा बहे न रात	कृष्ण चन्दर	उपन्यास	126	3-50
कुछ जिंदगियां बेमतलब	ओम प्रकाश दीपक	रेखा चित्र	180	6-00
मुद्राराक्षस	सं० सुरेश चंद्र गुप्त	नाटक	256	5-00
राजभवन की सिगरेटदानी	विनोद शर्मा	व्यंग्य लेख	140	3-50
मानस के राम और सीता	द्वारकाप्रसाद मिश्र	समीक्षा	84	2-50
भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना	डा० रामखेलावन पाण्डेय	संस्कृति-इतिहास	272	6-25
यह देश ये लोग	भगवतशरण उपाध्याय	देश परिचय	72	2-00
निराला काव्य का अध्ययन	डा० भगीरथ मिश्र	समालोचना	88	4-00
सुइयों का पैरहन	प्रेमलता वर्मा	कविता संग्रह	96	5-00
दस कहानियां	सं० राजेन्द्र अवस्थी	बालोपयोगी कहानियां	58	3-00
गढ़वाली लोक गीत - एक सांस्कृतिक अध्ययन	गोविन्द चातक	शोध प्रबंध		25-00
यात्रा और यात्रा	किरण जैन	कविता संग्रह	79	4-50
हिंदी का व्यावहारिक रूप	विनय मोहन शर्मा	भाषा विज्ञान	116	5-00
आदिम राग	रवीन्द्र नाथ त्यागी	कविताएं	80	4-50
हिंदी साहित्य - एक आधुनिक परिदृश्य	सच्चिदानन्द वात्स्यायन	समालोचना	203	9-00
विलय	गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार	कविता संग्रह	128	5-00

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए : ले० वी जेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5-00
2. सिखों का इतिहास : ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक पृ० 165 मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश पृ० 324 मूल्य 4-50
2. शब्दार्थ मीमांसा : ले० रामचन्द्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 148 मूल्य 4-50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 270 मूल्य 12-50
3 संकलन पृ० 580 मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)
वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script
4. Devanagari Through the Ages
5. देवनागरी लेखन विधि चार्ट
6. परिवर्धित देवनागरी चार्ट
7. Standardisation of Hindi Spelling
8 हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

28567

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 2

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अक्तूबर, 1968 अंक 2

0 भाषा-संघ

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (बंबई हिंदी विद्यापीठ, बम्बई)

0 हिंदी

- * भारत सरकार में
- * प्रादेशिक अंचल में
- * विदेशों में
- * राजधानी में
- * विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था -

----- जो स्थान इस समय अनुचित ढंग से अंग्रेजी भोग रही है वह स्थान हिंदी को मिलना चाहिए। ----- शिक्षित वर्ग की एक भाषा अवश्य होनी चाहिए और वह हिंदी ही हो सकती है। हिंदी के द्वारा करोड़ों व्यक्तियों में आसानी से काम किया जा सकता है। इसलिए उसे उचित स्थान मिलने में जितनी देर हो रही है उतना ही देश का नुकसान हो रहा है। -----

मोतीहारी, चम्पारन - 13-7-1917 - आश्रम कोष के लिए परिपत्र से उद्धृत

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली 22 से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

नेहरू बाल-पुस्तकमाला :

राष्ट्रीय एकता को लक्ष्य में रखते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रमुख भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य की 100 पुस्तकें प्रकाशित करने का निश्चय किया है । इसे "नेहरू बाल पुस्तकमाला" का नाम दिया गया है । योजना के अंतर्गत चुनी गई पुस्तकों को सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में एक साथ प्रकाशित किया जाएगा । प्रत्येक पुस्तक की कीमत और सज्जा एक-सी होगी । केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारें इन पुस्तकों की लगभग एक लाख प्रतियां खरीदेंगी । प्रारंभ में 11 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए पुस्तकें तैयार की जाएंगी । बाद में इससे छोटे और बड़े आयुवर्गों के बच्चों के लिए भी ऐसी ही पुस्तकें प्रकाशित की जाएंगी । पुस्तकों का विषय भारत की सांस्कृतिक विरासत, इतिहास, लोक कथा, त्यौहार, विकास कार्य, संविधान, स्वाधीनता आंदोलन तथा वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान होगा ।

संस्कृत साहित्य के विद्वानों का सम्मान

संस्कृत और वैदिक साहित्य के पांच प्रख्यात विद्वानों का बम्बई में एक अक्तूबर को विशेष समारोह में सम्मान किया गया । महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री ने नारियल, दुशाला, माला और एक हज़ार रुपये वेदमूर्ति श्रीकृष्णमूर्ति भट्ट, वेदमूर्ति कृष्ण भट्ट, बापूभट्ट परांजपे, वेदमूर्ति दत्त भट्ट जोशी, वेदमूर्ति गोविन्द भट्ट. काशीनाथ थारप और वेदमूर्ति बापूदेव भट्ट विनायक देव को भेंट किए । अब तक महाराष्ट्र के 31 संस्कृत विद्वानों को सम्मानित किया जा चुका है ।

अखिल भारतीय भाषा कवि सम्मेलन

दिल्ली स्थित तमिल संघ की ओर से गांधी जन्म-दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय भाषा कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता शिक्षा मंत्रालय के राज्य-मंत्री प्रो० शेरसिंह ने की । सम्मेलन में हिंदी तमिल तथा अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों ने भाग लिया ।

-0-

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाए

बंबई हिंदी विद्यापीठ, बंबई :

जन-जागृति और राष्ट्रीय भावना के पोषण तथा विकास के लिए संपूर्ण देश में एक राष्ट्रभाषा और एक राष्ट्रलिपि के महत्व को ध्यान में रख कर राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और समृद्धि के लिए 12 अक्तूबर 1938 को विद्यापीठ की स्थापना हुई थी । संस्था की स्थापना में सर्वश्री डा0 राजबहादुर सिंह, स्व0 रामनाथ जा0 पोद्दार, डा0 मोती चंद्र तथा भानु कुमार जैन का प्रमुख हाथ रहा है । स्थापना-काल में श्रीमती रमाबाई तलचूर एवं श्रीमती लीलावती मुंशी तथा नगर के अन्य अहिंदी भाषी प्रचारकों का बहुमूल्य सहयोग उल्लेखनीय है । अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्था पिछले तीस वर्षों से अध्यापन, परीक्षा-संचालन, व्याख्यानमाला, वादविवाद प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, संगोष्ठी, शिविर आदि अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृति कार्यक्रमों का आयोजन करती रही है । विद्यापीठ की विभिन्न प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :-

परीक्षा-संचालन - प्रारंभ में विद्यापीठ की ओर से चार परीक्षाएं - प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा और भाषारत्न - संचालित की जाती थीं । पहले वर्ष कुल 198 परीक्षार्थी प्रथमा परीक्षा में बैठे थे । मार्च 1940 की परीक्षा में परीक्षार्थियों की संख्या 1900 तक पहुंच गई । इस समय विद्यापीठ (1) हिंदी प्रवेश, (2) हिंदी प्रथमा, (3) हिंदी मध्यमा, (4) हिंदी उत्तमा, (5) हिंदी भाषा रत्न, (6) साहित्य सुधाकर और (7) साहित्य रत्नाकर (नौ खंडों में) - संचालित करती है । इनमें से हिंदी उत्तमा, हिंदी भाषारत्न और साहित्य सुधाकर परीक्षाओं को, भारत सरकार द्वारा क्रमश: मैट्रिक, इंटर और बी0ए0 (केवल हिंदी में) के समकक्ष मान्यता प्राप्त है । राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, मैसूर, गोवा, पश्चिम बंगाल सरकारों से भी उन्हें ऐसी ही मान्यता प्राप्त है ।

विद्यापीठ की परीक्षाओं में अब तक लगभग पौने छ: लाख परीक्षार्थी सम्मिलित हो चुके हैं । इस समय लगभग 63000 विद्यार्थी प्रति वर्ष परीक्षा में

बैठते हैं । विद्यापीठ का कार्यक्षेत्र अखिल भारत है । पूरे भारत में लगभग 1000 परीक्षा केन्द्र हैं और लगभग उतने ही शिक्षण वर्ग चलते हैं जहाँ परीक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं । विद्यापीठ के लगभग 4000 प्रचारक हिंदी अध्यापन कार्य में संलग्न हैं । कुछ प्रचारकों को थोड़ा-बहुत वेतन भी दिया जाता है । शेष अवैतनिक कार्यकर्ता हैं ।

ग्रंथालय - बंबई नगर में विद्यापीठ का अपना पुस्तकालय है जिसमें लगभग 4000 पुस्तकें हैं । विद्यापीठ अपने ग्रंथालय को पूर्ण विकसित करने का प्रयत्न कर रही है ताकि बंबई के हिंदी पाठकों को आवश्यक पाठ्य-सामग्री प्राप्त हो सके ।

प्रकाशन - विद्यापीठ के द्वारा अब तक 80 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं । इनमें से लगभग 40 पुस्तकें पाठ्यक्रम में हैं । इनके अतिरिक्त बच्चों के लिए विज्ञान-संबंधी पुस्तक 'हवा में उड़ता जाए' तथा रजत जयंती के अवसर पर 'रजत जयंती ग्रंथ' प्रकाशित किया गया है ।

विद्यापीठ का मुखपत्र 'भारती' मासिक पत्रिका है । यह गत 17 वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है । 'भारती' में विशेष रूप से हिंदी प्रचार संबंधी सामग्री एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी लेख प्रकाशित होते हैं । संस्था का अपना मुद्रणालय है, जो 1950 में ही खरीदा गया था । इसमें हिंदी एवं अन्य भाषाओं के मुद्रण की व्यवस्था है ।

संविधान - संस्था के संविधान में सदस्यों की अलग-अलग श्रेणियाँ निर्धारित हैं । प्रति दूसरे वर्ष सभी श्रेणियों के सदस्य उपस्थित होकर कार्यकारिणी समिति का चुनाव करते हैं । इसी भाँति प्रति तीसरे वर्ष आजीवन और इससे ऊपर की श्रेणियों के सदस्यों में से निधि संरक्षक मंडल (ट्रस्टीज़) का चुनाव होता है । कार्यकारिणी समिति में हिंदी प्रचारक श्रेणी के सदस्य अपने-अपने क्षेत्रों से प्रतिनिधि चुनकर भेजते हैं । कार्यकारिणी समिति अपनी पहली सभा में पदाधिकारियों का चुनाव करती है । प्रधान मंत्री उपसमितियों के मंत्रियों को नामांकित करता है तथा उपसमितियों के मंत्री अपनी-अपनी समिति के नाम उपस्थित करते हैं । विद्यापीठ

की कुल 6 उप-समितियां हैं, अर्थात् अर्थ समिति, परीक्षा समिति, प्रचार समिति, शिक्षा समिति, प्रकाशन समिति, और सांस्कृतिक समिति ।

श्री सुशील कवलेकर विद्यापीठ के कुलपति और श्री बालकृष्ण भोंसले प्रधान मंत्री हैं । विद्यापीठ का कार्यालय आनंद नगर, फारगेट स्ट्रीट, बम्बई-26 में है ।

--00--

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद

-परिषद की ओर से देश भर में 40 से अधिक केन्द्रों पर 6 तथा 7 अक्तूबर को हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम पुरस्कार में 101 रुपये, पदक और चल-शील्ड, द्वितीय पुरस्कार में 51 रुपये तथा पदक और तृतीय पुरस्कार में 31 रुपये और पदक दिए जायेंगे । अहिंदी भाषी प्रतियोगियों को तथा नए रेमिंगटन के टाइपराइटर पर अधिकतम गति से टाइप करने वाले प्रतियोगियों को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे । अधिक जानकारी के लिए परिषद के कार्यालय, एल0 वाई0 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23 से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है ।

-केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, बम्बई की समन्वय समिति की ओर से 27 सितंबर को हिंदी में एक वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस में डाक तार विभाग, रेलवे, सीमा शुल्क, श्रम विभाग, जहाजरानी, खादी ग्रामोद्योग और बीमा निगम के सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया । समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की बम्बई शाखा के मंत्री श्री कांतिलाल जोशी ने की ।

-परिषद की पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय शाखा बम्बई ने 13 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया । हिंदी शिक्षण योजना के क्षेत्रीय अधिकारी श्री प्रयाग नारायण चतुर्वेदी मुख्य अतिथि थे ।

--00--

० हिंदी

* भारत सरकार में

पत्राचार पाठ्यक्रम

अहिंदी भाषी भारतीयों और विदेशियों को पत्राचार द्वारा हिंदी सिखाने के लिए केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने मार्च, 1968 में जो पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किया था उसकी लोकप्रियता में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है । इस वर्ष शुरू किए गए "प्रवेश" के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के लिए प्रारंभ में 520 छात्रों ने प्रवेश लिया था । विदेशी मुद्रा संबंधी कठिनाइयों के कारण कुछ विदेशी छात्र प्रवेश नहीं पा सके थे । इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए भारत सरकार ने निर्णय किया कि विदेश स्थित छात्र शुल्क आदि की रकम उस देश की मुद्रा में भारतीय दूतावासों में जमा करा सकते हैं । यह सुविधा मिल जाने से अब लगभग 150 विदेशी छात्रों को इस पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया है । समय पर आवेदन पत्र न भेज सकने के कारण कुछ भारतीय विद्यार्थी प्रवेश से वंचित रह गए थे । उन्हें भी अब पाठ्यक्रम में भर्ती कर लिया गया है । इस प्रकार इस पाठ्यक्रम में अब तक 995 छात्र भर्ती किए जा चुके हैं और उन्हें अब तक 14 पाठ भेजे जा चुके हैं । छात्रों को सहायक पाठ्य-सामग्री भी भेजी गई है । गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध परीक्षा का पाठ्यक्रम कुछ विशेष वर्गों के सरकारी कर्मचारियों के लिए जल्द ही शुरू किया जाएगा । केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अध्यापकों को भी इसी पाठ्यक्रम में प्रवेश देने का विचार है ।

नाट्यशास्त्र शब्दावली संगोष्ठी :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) के तत्वावधान में नाट्यशास्त्र की शब्दावली पर विचार करने के लिए 7 अक्तूबर से 11 अक्तूबर तक दिल्ली स्थित रवीन्द्र भवन में एक संगोष्ठी में विभिन्न भारतीय भाषाओं के नाट्य शास्त्रवेत्ताओं द्वारा लगभग 1200 शब्दों पर विचार किया गया और उनमें से लगभग 700 शब्दों को अंतिम रूप दिया गया । संगोष्ठी का उद्घाटन केन्द्रीय

शिक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने आशा व्यक्त की कि शब्दावली का काम पूरा हो जाने के बाद आयोग शब्दकोशों पाठ्य-पुस्तकों और संदर्भ ग्रंथों के निर्माण में तेजी से प्रवृत्त होगा।

सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक :

भारत सरकार ने सभी मंत्रालयों और विभागों को आदेश दिया है कि मूल शिक्षा और काम के आधार पर, तृतीय श्रेणी तक के सभी कर्मचारियों को, जिनकी आयु 45 वर्ष से कम है, हिंदी भाषा का निर्धारित ज्ञान आवश्यक रूप से प्राप्त कर लेना चाहिए। हिंदी शिक्षा के लिए सरकारी कर्मचारियों को तीन वर्गों में रखा गया है। जिन सरकारी कर्मचारियों की भर्ती के लिए हाई स्कूल या उससे कम की शिक्षा का स्तर निर्धारित है और जो पत्र-व्यवहार का या लिखा-पढ़ी का काम नहीं करते, उन्हें हिंदी की 'प्रबोध' परीक्षा पास करनी होगी। इस वर्ग में कार ड्राइवर, इंजिन ड्राइवर, रिकार्ड छांटने वाले, बिक्री की मशीनों पर काम करने वाले, डाकिये, टेलीफोन आपरेटर आदि शामिल किए गए हैं। डाक्टरों, वैज्ञानिकों, सरकारी वर्कशापों के पर्यवेक्षकों और प्रयोगशालाओं के प्रबंधकों को 'हिंदी प्रवीण' परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी। तीसरे वर्ग में वे सभी सरकारी कर्मचारी हैं जिन्हें टिप्पणी-लेखन और पत्र-व्यवहार का काम करना पड़ता है। इन कर्मचारियों को 'हिंदी प्राज्ञ' परीक्षा पास करनी होगी।

गृह मंत्रालय ने सभी मंत्रालयों तथा विभागों को सूचित किया है कि वे भारत के राजपत्र में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाओं के अंग्रेजी मसौदे के साथ हिंदी का मसौदा अनिवार्य रूप से भेजें। राष्ट्रपति के दिनांक 27-4-1960 के आदेश में कहा गया था कि भारत के राजपत्र के कुछ चुने हुए भागों को हिंदी में भी प्रकाशित करने की व्यवस्था की जाए। इसके अनुसरण में छपाई नियंत्रक ने फरीदाबाद प्रेस में हिंदी की छपाई की पर्याप्त व्यवस्था कर ली है। चूंकि राजभाषा (संशोधन) अधिनियम की धारा 3(3) में संकल्पों, नियमों, अधिसूचनाओं और नोटिसों आदि के लिए अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग को अनिवार्य माना

गया है, राजपत्र में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाएं आदि अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी प्रकाशित की जाएंगी ।

उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका का प्रकाशन :

विधि मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति ने यह निर्णय किया है कि देश के सभी उच्च न्यायालयों के महत्वपूर्ण निर्णयों को हिंदी में प्रकाशित करने के लिए अगले वर्ष जनवरी से 'उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका' प्रकाशित की जाए । यह पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होगी । विधि मंत्रालय से 'उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका' पहले से ही प्रति मास प्रकाशित हो रही है ।

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) ने विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अनुभवी प्रकाशन-संस्थाओं से प्रस्ताव आमंत्रित किए हैं । इस योजना के अंतर्गत भारत सरकार प्रकाशित पुस्तक की एक हज़ार प्रतियां लागत खर्च के तीन गुने मूल्य पर खरीद लेगी । लागत खर्च का आकलन बढ़ी हुई मुद्रण दरों को ध्यान में रखते हुए उदारतापूर्वक किया जाएगा । विस्तृत जानकारी के लिए प्रधान प्रकाशन अधिकारी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय), वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है ।

अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी पर्याय बताने के लिए टेलीफोन सेवा

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के हिंदी सूचना केन्द्र में एक टेलीफोन सेवा शुरु की गई है जिसमें सरकारी कार्यालयों, व्यापारिक संस्थानों तथा अन्य जिज्ञासुओं को अंग्रेजी शब्दों के हिंदी रूपांतर बताए जाते हैं । सूचना टेलीफोन नंबर 7 46 12 से प्राप्त की जा सकती है ।

हिंदी वर्तनी का मानकीकरण :

संघ और कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप देश के भीतर और बाहर हिंदी सीखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इन की सुविधा के लिए यह आवश्यक और उचित माना गया कि हिंदी वर्तनी की मानक पद्धति निर्धारित की जाए ताकि हिंदी शब्दों की वर्तनी में एकरूपता रहे।

शिक्षा-मंत्रालय इस दिशा में 1961 से ही सचेष्ट रहा है और इस कार्य के लिए विशेषज्ञों की एक समिति संगठित की गई थी। इस समिति की सिफारिशों को 1962 में मान्यता दे दी गई थी। तथापि यह जानते हुए कि किसी भी विकासशी भाषा के शब्दों में अनेकरूपता होना स्वाभाविक है। किसी भाषा को कठोर नियमों में नहीं जकड़ा जा सकता और उसे बोलने या लिखने वालों को किसी ऐसे शब्द को जिसके दो या अधिक समानांतर रूप प्रचलित हो चुके हों, एक विशेष रूप में प्रयुक्त करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। ऐसे शब्द रूपों के विषय में किसी विशेष समिति द्वारा निर्णय दे देने के बाद भी उनकी ग्राह्यता-अग्राह्यता के संबंध में मतभेद बना ही रहता है। भाषा विषयक कठोर नियम बना देने से उनकी स्वीकार्यता तो संदेहास्पद हो ही जाती है साथ ही भाषा के स्वाभाविक विकास में अवरोध आने क भी डर रहता है। फलतः भाषा गतिशील जीवन्त और सप्राण नहीं रह पाती। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस प्रश्न पर भारत सरकार ने बहुत उदार नीति अपनाई और 1962 के बाद विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर अपना मन्तव्य व्यक्त कर देने के उपरांत भी विविध क्षेत्रों से सुझाव आने के लिए द्वार उन्मुक्त रखे गए हैं।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) द्वारा अब हिंदी 'वर्तनी का मानकीकरण' शीर्षक एक पुस्तिका प्रकाशित की गई है। इस पुस्तिका में विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित नियमों की उदाहरण सहित व्याख्या भी दी गई है। जिज्ञासुओं को उसकी प्रतियां निदेशालय से मिल सकती हैं।

* राजधानी में

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से विजय दशमी के अवसर पर लाल किले में वीर रस के कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि-सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि मंत्री श्री जगजीवन राम ने किया । अध्यक्षता डा0 रामधारी सिंह दिनकर ने की । इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा आयोजित हिंदी पत्रक प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए ।

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन दरीबाकलां मंडल की ओर से 23 सितंबर को एक समारोह किया गया । जिसमें केन्द्रीय मंत्री डा0 वी0 के0 आर0 वी0 राव ने हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने पर जोर दिया । इस अवसर पर निगम में जनसंघ दल के नेता श्री केदारनाथ साहनी ने बताया कि निगम का 90 प्रतिशत कार्य हिंदी में होने लगा है ।

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने दिल्ली के न्यायालयों तथा नगर निगम कार्यालय में कुछ हिंदी टाइपिस्ट बिठाने की योजना बनाई है । योजना का उद्देश्य यह है कि न्यायालयों और सरकारी कार्यालयों के काम-काज में हिंदी के प्रचलन को बढ़ावा मिले ।

- नई दिल्ली नगरपालिका की नव-निर्वाचित वरिष्ठ उपाध्यक्षा कु0 सुरेन्द्र सैनी ने एक भेंट में कहा कि नगरपालिका के कार्य में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है । हिंदी जानने वाले अवर श्रेणी लिपिकों की भर्ती की गई है तथा हिंदी के टाइपराइटर मंगाए गए हैं । चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के साथ पत्र-व्यवहार हिंदी में किया जा रहा है । नगरपालिका के फार्मों का हिंदी अनुवाद किया जा चुका है ।

हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामवृक्ष 'बेनीपुरी' और प्रो0 मोहन वल्लभ पंत के निधन पर 'हिंदी समाचार जगत' शोक प्रकट करता है ।

* प्रादेशिक अंचल में

पंजाब :

पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने 1968-69 के पुरस्कारों के लिए 24 अक्तूबर, 1968 तक हिंदी पुस्तकें और पांडुलिपियां आमंत्रित की हैं। पुस्तकें अथवा पांडुलिपियां 1 अप्रैल 1967 से 31 मार्च 1968 तक लिखित अथवा प्रकाशित होनी चाहिए। सर्वोत्तम पुस्तक पर 1000 रुपये, सामान्यत: उत्तम पुस्तक पर 800 रुपये और द्वितीय श्रेणी की पुस्तक पर 500 रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। प्रतियोगिता उन्हीं लेखकों तक सीमित है जिनका जन्म-स्थान पंजाब में है अथवा जो पंजाब के निवासी हैं। विशेष विवरण के लिए निदेशक, भाषा विभाग पंजाब पटियाला से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश :

- हिंदी भवन मेरठ की ओर से 26 सितंबर को एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया था। गोष्ठी में भाषण करते हुए गांधीवादी विचारक काका कालेलकर ने कहा : सारे भारत को एक करना है तो सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी को प्रयोग में लाना होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हिंदी एक दिन सम्पूर्ण एशिया की सम्पर्क भाषा बनेगी।

- हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर के साहित्य के निर्माण के लिए उत्तरप्रदेश में 2 करोड़ रुपये की लागत से एक निगम की शीघ्र स्थापना की जाएगी। हिंदी के अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए इलाहाबाद में एक हिंदी प्रशिक्षण संस्था भी स्थापित की जाएगी। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश सरकार इस प्रस्ताव पर भी विचार कर रही है कि 20 लाख रुपये की लागत से हिंदी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य की 147 विशेष पुस्तकें प्रकाशित की जाएं।

- हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी का कानपुर में उन के 70वें जन्मदिवस के अवसर पर शानदार ढंग से अभिनंदन किया गया। डा० प्रेमनारायण शुक्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न इस समारोह में हिंदी के अनेक साहित्यकार, समीक्षक और पत्रकार सम्मिलित हुए।

हरियाणा

- हरियाणा मंत्रिमंडल ने आगामी गणतंत्र दिवस 26 जनवरी से हिन्दी को सभी स्तरों पर राज्य के सरकारी कामकाज की भाषा बनाने का विधिवत् निर्णय किया है। उक्त निर्णय के अनुसार सचिवालय, जिला एवं खण्ड स्तर तक सभी सरकारी लिखा-पढ़ी हिंदी भाषा के माध्यम से ही होगी। मंत्रिमंडल की बैठक के उपरांत मुख्यमंत्री चौ० बंसीलाल ने पत्रकारों को बतलाया कि राज्य में सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने की तैयारियां कर ली गयी हैं। केन्द्र के साथ राज्य की सम्पर्क भाषा भी हिन्दी होगी। राज्य सरकारों से उसी भाषा में लिखा-पढ़ी की जायेगी जिसमें दोनों पक्षों को सुविधा हो।

- प्रशासन के सभी स्तरों पर हिंदी में कामकाज करने के लिए हरियाणा में ज़ोर से तैयारी की जा रही है। चंडीगढ़ में लगभग 300 कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण की अवधि तीन से चार मास तक है। सरकारी कर्मचारियों को प्रतिदिन काम में आने वाले हिंदी शब्दों से परिचित कराने के लिए सरकार ने चंडीगढ़ में विशेष हिंदी कक्षाओं का प्रबंध किया है। भाषा विभाग ने कर्मचारियों के लिए चार पुस्तकें तैयार की हैं। इनमें से "कार्यालय विधि" नामक पुस्तक छप कर तैयार है और शीघ्र ही कार्यालयों को उपलब्ध हो सकेगी। एक अंग्रेजी-हिंदी शब्द कोश बनाया जा रहा है और राजस्व तथा वित्त विभाग की शब्दावलियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

दिल्ली :

- दिल्ली के बहुत से व्यापारियों तथा व्यापारिक संस्थानों ने दीपावली के अवसर पर अपना काम-काज हिंदी में करना आरंभ किया। बहुत से व्यापारियों ने दीपावली के शुभ-कामना पत्र भी हिंदी में छपाए। दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक आंदोलन चलाया था, यह उसी का सुपरिणाम है।

* विश्वविद्यालयों में

- सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के छात्रों तथा प्राध्यापकों का एक दल, जो उत्तर भारत में अपनी अध्ययन यात्रा के लिए निकला था, - सितंबर में राजधानी आया । केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कर्मचारियों की ओर से उसके स्वागत में एक सभा का आयोजन किया गया । विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल भी इस अवसर पर उपस्थित थे ।

- जोधपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के छात्रों ने हिंदी साहित्य परिषद नामक संस्था की स्थापना की है । संस्था का उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा० नगेन्द्र ने किया । जोधपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा० मोतीलाल गुप्त ने राजस्थान के अप्रकाशित विपुल साहित्य भंडार पर प्रकाश डाला ।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका
यूनेस्को कूरियर
मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री के लिए प्रशंसनीय
एक प्रति : एक रुपया
वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये
पुस्तकालयों के लिये : 9-50 रुपये
वार्षिक ग्राहक बनाने के लिए प्रचारकों को विशेष छूट
ग्राहक बनने तथा एजेंसी के नियमों के लिए लिखें :
प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22,

* विदेशों में

पूर्वी अफ्रीका में हिंदी :

केन्या, युगान्डा और तंजानिया में भारतीय मूल के निवासी काफी संख्या में रहते हैं । यहां के भारतीयों में हिंदी, गुजराती और उर्दू बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है । लोगों की मांग के अनुसार सरकारी स्कूलों में इन सभी भाषाओं के अध्यापन की व्यवस्था की गई थी । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वहां स्वाहिली भाषा को प्राथमिकता मिली है ।

पूर्वी अफ्रीका में हिंदी का प्रचार करने में आर्य समाज का योगदान सबसे अधिक रहा है । आर्य समाज ने नैरोबी में चार, कंपाला में दो, जंजीबार में एक, किसूमू में एक और दार-ए-सलाम में दो स्कूल खोले थे । इनमें हिंदी अनिवार्य थी । नैरोबी में उन बच्चों के लिए भी हिन्दी कक्षाएं चलाई गई थी जो स्कूल नहीं जाते थे । अफ्रीकन लोगों के लिए भी हिंदी अध्यापन की व्यवस्था की गई थी ।

कुछ उत्साही हिंदी प्रेमियों के प्रयत्न से यहां हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई थी । इस कार्य में सर्वश्री देवनाथ स्नातक, पं० सत्यपाल, मास्टर खुशीराम आदि का विशेष योगदान रहा ।

हिंदी प्रचार कार्य में पिछले चार-पांच वर्षों से तेजी आ गई है । नैरोबी नगर में हिंदी शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है । मोम्बासा में लगभग पांच वर्ष से हिंदी शिक्षण केन्द्र चल रहा है । यहां बहुत बड़ी संख्या में छात्र हिंदी पढ़ते हैं । वर्धा की परीक्षाएं देने की व्यवस्था भी है ।

तंजानिया की राजधानी दार-ए-सलाम में आर्य समाज की ओर से हिंदी कक्षाएं चलती हैं । इनमें लगभग 300 छात्र-छात्राएं हिंदी पढ़ते हैं । कुछ हिंदी प्रचारिकाएं अपने घर पर हिंदी की सायंकालीन कक्षाएं चलाती हैं ।

0 नए प्रकाशन

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
अपने पार	राजेन्द्र यादव	कहानी संग्रह	116	3-00
सूर्यमुख	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	नाटक	123	3-50
कहानी-स्वरूप और संवेदना	राजेन्द्र यादव	समालोचना	259	15-00
लाल ढांग	कृष्णचंद्र शर्मा भिक्खु	उपन्यास	279	7-00
तंत्रलोक से यंत्रलोक तक	डा० नगेन्द्र	यात्रा संस्मरण	79	3-00
मेरी दृष्टि में	मोरारजी देसाई	राजनैतिक निबंध	182	10-00
कविताएं 1965	अजित कुमार विश्वनाथ त्रिपाठी	कविता संकलन	250	6-00

शकुन प्रकाशन, 3625 सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
बीरबल	ललित सहगल	बालोपयोगी उपन्यास	103	2-00
बालक की खोज	शांति भटनागर	,,	100	2-00
अमृत की धारा	विश्वम्भर सहाय प्रेमी	,,	112	2-00
डाकुओं के घेरे में	राम कुमार भ्रमर	,,	96	2-00
दूरबीन की कहानी	वेदमित्र	ज्ञान-विज्ञान	55	2-00
जय जवाहर	वीरेन्द्र मिश्र	जीवनी	48	4-00

शिक्षण संस्थान 12-बी प्रहलाद मार्केट, करोलबाग, नई दिल्ली-5 :

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
आकाश गंगा	मदन मोहन राजेन्द्र	कहानी संग्रह	143	3-00
देश हमारा देश हमारा	जयप्रकाश भारती	बालोपयोगी उपन्यास	112	2-50

राधाकृष्ण प्रकाशन, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
ज्ञान की बातें	मोरारजी देसाई	बालोपयोगी ज्ञान वार्ता	64	1-50
कितने चौराहे	फणीश्वर नाथ रेणु	उपन्यास	144	4-00

बहती गंगा	शिवप्रसाद मिश्र रुद्र काशिकेय	कहानी संग्रह	163	6-00
क्षण और लक्षण	गोविन्द चंद्र पांडे	कविता संग्रह	92	3-00
चलता हुआ लावा	रमेश बक्षी	उपन्यास	110	4-50
रोयें रेशे	मोहन राकेश	कहानी संग्रह	185	5-00
आज के साये	मोहन राकेश	,,	181	5-00
आदिम रात्रि की महक	फणीश्वरनाथ रेणु	,,	182	5-00
गंगा बहे न रात	कृश्न चन्दर	उपन्यास	126	3-50
कुछ जिंदगियां बेमतलब	ओम प्रकाश दीपक	रेखा चित्र	180	6-00
मुद्राराक्षस	सं0 सुरेश चंद्र गुप्त	नाटक	256	5-00
राजभवन की सिगरेटदानी	विनोद शर्मा	व्यंग्य लेख	140	3-50
मानस के राम और सीता	द्वारकाप्रसाद मिश्र	समीक्षा	84	2-50
भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना	डा0 रामखेलावन पाण्डेय	संस्कृति-इतिहास	272	6-25
यह देश ये लोग	भगवतशरण उपाध्याय	देश परिचय	72	2-00
निराला काव्य का अध्ययन	डा0 भगीरथ मिश्र	समालोचना	88	4-00
सुइयों का पैरहन	प्रेमलता वर्मा	कविता संग्रह	96	5-00
दस कहानियां	सं0 राजेन्द्र अवस्थी	बालोपयोगी कहानियां	58	3-00
गढ़वाली लोक गीत - एक सांस्कृतिक अध्ययन	गोविन्द चातक	शोध प्रबंध		25-00
यात्रा और यात्रा	किरण जैन	कविता संग्रह	79	4-50
हिंदी का व्यावहारिक रूप	विनय मोहन शर्मा	भाषा विज्ञान	116	5-00
आदिम राग	रवीन्द्र नाथ त्यागी	कविताएं	80	4-50
हिंदी साहित्य - एक आधुनिक परिदृश्य	सच्चिदानन्द वात्स्यायन	समालोचना	203	9-00
विजय	गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार	कविता संग्रह	128	5-00

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए :	ले० वी जेलेनिन	पृ० 142	मूल्य 5-00
2. सिखों का इतिहास :	ले० हरीराम गुप्त	पृ० 304	मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक	पृ० 165	मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश		पृ० 324	मूल्य 4-50
2. शब्दार्थ मीमांसा :	ले० रामचन्द्र वर्मा	पृ० 326	मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ० 148	मूल्य 4-50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ०270	मूल्य 12-50
3 संकलन		पृ० 580	मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)
वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script
4. Devanagari Through the Ages.
5. देवनागरी लेखन विधि चार्ट
6. परिवर्धित देवनागरी चार्ट
7, Standardisation of Hindi Spelling
8 हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

12.4.65

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 3

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मन्त्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर. एन. 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 नवंबर 1968 अंक 3

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिन्दी

- भारत सरकार में
- राजधानी में
- प्रादेशिक अंचल में
- विश्वविद्यालयों में
- विदेशों में

0 नए प्रकाशन

> शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है तब विद्यार्थियों के दिमाग पर सिर्फ उस भाषा के शब्द याद रखने का ही बोझ नहीं पड़ता, परंतु विषय को समझने में भी उन्हें बड़ी कठिनाई होती है। यह तो साफ बात है कि जहां रटने की शक्ति बढ़ती है वहां समझने की शक्ति घट जाती है।
>
> - सरदार पटेल (30-11-1946)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं0 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

गांधी जी ने कहा था -

"विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर जो बोझा पड़ता है वह असह्य है। यह बोझा हमारे बच्चे उठा तो सकते हैं, लेकिन उसकी कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है। वे दूसरा बोझा उठाने के लायक नहीं रह जाते। इससे हमारे स्नातक अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। उनमें खोज करने की शक्ति, विचार करने की शक्ति, साहस, धीरज, वीरता, निर्भयता और अन्य गुण बहुत क्षीण हो जाते हैं। इससे हम नई योजनाएं नहीं बना सकते और यदि बनाते हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर पाते। कुछ लोग, जिनमें उपर्युक्त गुण दिखाई देते हैं, अकाल ही काल के गाल में चले जाते हैं। एक अंग्रेज ने लिखा है कि मूल लेख और सोख्ता कागज के अक्षरों में जो भेद है, वही भेद यूरोप के और यूरोप के बाहर के लोगों में है। इस विचार में जो सचाई है वह कोई एशिया के लोगों की स्वाभाविक अयोग्यता के कारण नहीं है। इसका कारण शिक्षा का योग्य माध्यम चुन लेना है। दक्षिण आफ्रिकी हब्शी साहसी, शरीर से कद्दावर और चरित्रवान् हैं। बाल-विवाह आदि जो दोष हममें हैं वे उनमें नहीं हैं। फिर भी उनकी दशा वैसी ही है जैसी हमारी है। उनकी शिक्षा का माध्यम डच भाषा है। वे भी हमारी तरह डच भाषा को तुरन्त अधिकृत कर लेते हैं और हमारी ही तरह शिक्षा समाप्त होते-होते कमजोर हो जाते हैं। वे भी बहुत हद तक कोरे नकलची निकलते हैं। उनमें भी असली चीज माध्यम रूप में मातृ-भाषा के हटने से लुप्त हुई दीखती है। अंग्रेजी शिक्षा पाए हुए हम लोग ही इस नुकसान का सही अनुमान नहीं लगा पाते। यदि हम यह अनुमान लगा सकें कि जनसाधारण पर हमारा कितना कम असर पड़ा है, तो इसकी कुछ कल्पना हो सकती है। हमारे माता-पिता हमारी शिक्षा के बारे में कभी-कभी कुछ कह देते हैं, वह विचारने लायक होता है। हम जगदीश चन्द्र बसु और राय को देखकर मोहांध हो जाते हैं। मुझे विश्वास है कि हमने 50 वर्ष तक मातृ-भाषा द्वारा शिक्षा पाई होती, तो हममें इतने बसु और राय होते कि उन्हें देखकर हमें अचम्भा न होता।"

- द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन में अध्यक्ष पद से दिए गए भाषण से। दिनांक 20-10-1917.

सौराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति, राजकोट

सौराष्ट्र में हिन्दी प्रचार का कार्य पूज्य बापू की प्रेरणा से सन् 1937 में प्रारम्भ हुआ और काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार सभा नामक संस्था की स्थापना हुई। यह राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से सम्बद्ध थी। 1948 में सौराष्ट्र रचनात्मक समिति की स्थापना होने पर काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार सभा इसमें मिला दी गई। रचनात्मक समिति ने सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति के नाम से अपनी एक उप-समिति बनाई और इस उप-समिति ने 1952 से अपनी परीक्षाएं चलाना प्रारम्भ किया।

सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति की पितृ-संस्था सौराष्ट्र रचनात्मक समिति एक पंजीकृत संस्था है, जो अनेक रचनात्मक कार्यों के साथ-साथ हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी करती है। हिन्दी प्रचार-प्रसार के सारे कार्य-क्रम उसकी अंगभूत समिति सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति की देख-रेख में होता है।

सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति का उद्देश्य भारत के संविधान में दी गई व्याख्या के अनुसार राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार और विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह समिति परीक्षाओं का संचालन, पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था, व्याख्यान माला, प्रचार तालीम वर्ग, भाषण स्पर्धा, निबन्ध स्पर्धा, कवि सम्मेलन आदि अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है

परीक्षा-संचालन :

सौराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति अपनी चार हिंदी परीक्षाएं चलाती है - बालपोथी, हिंदी पहली, दूसरी और तीसरी। पहली तीन परीक्षाएं मैट्रिक के नीचे के स्तर की हैं और 'तीसरी' परीक्षा मैट्रिक के स्तर की है। इसकी मान्यता का प्रश्न भारत सरकार के विचाराधीन है। समिति मैट्रिकोत्तर स्तर की अपनी कोई परीक्षा नहीं चलाती, किन्तु गुजरात की 'विनीत' और 'सेवक' परीक्षाओं के लिए व्यवस्था करती है। हिंदी परीक्षाओं के अतिरिक्त समिति अपनी गुजराती परीक्षा, अनुवाद परीक्षा, मराठी परीक्षा और उर्दू परीक्षा का भी संचालन करती है।

समिति का कार्यक्षेत्र सौराष्ट्र और कच्छ के सात जिले - अमरेली, कच्छ, जामनगर, जूनागढ़, भावनगर, राजकोट और सुरेन्द्र नगर हैं । सौराष्ट्र और कच्छ में समिति की विभिन्न परीक्षाओं के लिए कुल मिलाकर 319 केन्द्र हैं, जिनमें से 127 में 'तीसरी' परीक्षा के लिए अध्यापन और परीक्षा की व्यवस्था है । अध्यापन का कार्य समिति के अवैतनिक प्रचारक करते हैं । परीक्षा संचालन का कार्य परीक्षा समिति की देख-रेख में होता है । प्रति वर्ष हजारों छात्र समिति की परीक्षा में बैठते हैं ।

पुस्तकालय :

समिति के पुस्तकालय में लगभग चार हजार हिन्दी पुस्तकें हैं और वाचनालय में 35 पत्र-पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं । इसके लगभग 100 सदस्य हैं । पुस्तकालय में पुस्तकें खरीदने और पत्र-पत्रिकाएं मंगवाने के लिए समिति को भारत सरकार से अनुदान मिलता है ।

अन्य कार्यक्रम :

समिति प्रतिवर्ष भाषण तथा निबन्ध प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, व्याख्यानमाला तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है । इनमें से कुछ कार्यक्रमों के लिए भारत सरकार की ओर से भी अनुदान मिलता है ।

समिति का कार्यालय राष्ट्रीयशाला, राजकोट के भवन में है । श्री कानजी भाई चौहाण, समिति के परीक्षा मंत्री हैं और श्री नरेन्द्र भाई अंजारिया कार्यालय मंत्री हैं ।

+ + + +

हिंदी के अधिकाधिक यांत्रिक प्रयोग के लिए सुझाव आमंत्रित :

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद ने भारत की समस्त हिंदी सेवी संस्थाओं तथा हिंदी प्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे हिंदी में टेलीप्रिंटर, टाइपराइटर, पता-लेखी आदि यांत्रिक सुविधाओं के विस्तार तथा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में अपने सुझाव भेजें । ये सुझाव परिषद के मंत्री को इस पते पर भेजे जा सकते हैं :- एक्स0 वाई0 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23 ।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

अधिनियमों के अनुवाद-कार्य में प्रगति :

भारत सरकार के अधिनियमों तथा विधि संबंधी अन्य साहित्य के अनुवाद का काम राजभाषा (विधायी) आयोग, विधि मंत्रालय की देख-रेख में हो रहा है। अब तक आयोग द्वारा तैयार किए गए निम्नलिखित केन्द्रीय अधिनियमों के हिंदी पाठ राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 5 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन अधिप्रमाणिकृत किए गए हैं :-

1- भारतीय दण्ड संहिता, 1860 2- भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872
3- संपत्ति अन्तरण अधिनियम, 1882 4- माल विक्रय अधिनियम, 1930
5- दिल्ली (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1964
6- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 7- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951
8- संसद (निरर्हता) निवारण अधिनियम, 1959
9- राष्ट्रपतीय और उपराष्ट्रपतीय निर्वाचन अधिनियम, 1952
10- लोक प्रतिनिधित्व (प्रकीर्ण उपबन्ध) अधिनियम, 1956
11- लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अधिनियम, 1967 | 12- भारतीय संविदा अधिनियम, 1872
13- वैध निविदा (अन्तर्लिखित नोट) अधिनियम, 1964
14- गोवा, दमण और दीव न्यायिक आयुक्त न्यायालय (उच्च न्यायालय के रूप में घोषणा) अधिनियम, 1964
15- केरल राज्य विधान-मण्डल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1964
16- केरल राज्य विधान-मण्डल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1965
17- भूमि अर्जन अधिनियम, 1894 18- भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932
19- दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 20- भारतीय न्यास अधिनियम, 1882
21- परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881 22- सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908
23- द्वि-सदस्य निर्वाचन-क्षेत्र (उत्सादन) अधिनियम, 1961
24- सांख्यिकीय संग्रहण अधिनियम, 1953 | 25- एशियाई विकास बैंक अधिनियम, 1966
26- रेल (सशस्त्र-बल-सदस्य-नियोजन) अधिनियम, 1965

27- गोवा, दमण और दीव (सिविल प्रक्रिया संहिता और माध्यस्थम् अधिनियम,
का विस्तारण) अधिनियम, 1965
28- गोवा, दमण और दीव (आमेलित कर्मचारी) अधिनियम, 1965
29- हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 30- विनिर्दिष्ट अनुतोष अधिनियम, 1963
31- भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 32- परिसीमा अधिनियम, 1963
33- संरक्षक और प्रतिपाल्य अधिनियम, 1890
34- अभ्रक खान श्रम कल्याण निधि अधिनियम, 1946
35- हिन्दू अप्राप्तवयता और संरक्षकता अधिनियम, 1956
36- हिन्दू दत्तक और भरणपोषण अधिनियम, 1956 | 37- उत्प्रवास अधिनियम, 1922
38- नियोजनालय (रिक्तियों की अनिवार्य अधिसूचना) अधिनियम, 1959
39- माध्यस्थम् अधिनियम, 1940 | 40- जयन्ती शिपिंग कम्पनी (प्रबंध ग्रहण) अधिनियम, 1966
41- प्रेस परिषद अधिनियम, 1965 42- दिल्ली प्रशासन अधिनियम, 1966
43- तेलक्षेत्र (विनियमन तथा विकास) अधिनियम, 1948
44- कराधान विधियां (वसूली की कार्यवाहियों का चालू रखा जाना और
विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1964
45- साप्ताहिक अवकाश दिन अधिनियम, 1942 | 46- हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956
47- मेटल कारपोरेशन आफ इण्डिया (उपक्रम का अर्जन) अधिनियम, 1966
48- अन्तर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 | 49- इलायची अधिनियम, 1965
50- मंत्रियों के संबलमों और भत्तों से संबंधित अधिनियम, 1952
51- नियोजक-दायित्व अधिनियम, 1938 | 52- बालक (श्रम गिरवीकरण) अधिनियम, 1933
53- बालक नियोजन अधिनियम, 1938 | 54- औद्योगिक नियोजन (स्थायी आदेश) अधिनियम, 1946
55- डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) अधिनियम, 1948
56- न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 57- व्यवसाय संघ अधिनियम, 1926
58- औद्योगिक विवाद (बैंककारी कम्पनी) विनिश्चय अधिनियम, 1955
59- कोयला खान श्रमिक कल्याण निधि अधिनियम, 1947
60- लोह अयस्क खान श्रमिक कल्याण उपकर अधिनियम, 1961
61- औद्योगिक विवाद (बैंककारी तथा बीमा कम्पनी) अधिनियम, 1949

62- कोयला खान भविष्य-निधि तथा बोनस स्कीम अधिनियम, 1948

63- मजदूरी संदाय अधिनियम, 1936 64- खान अधिनियम, 1952

65- साधारण खण्ड अधिनियम, 1897 66- आयुध अधिनियम, 1959

67- बागान श्रम अधिनियम, 1,951 68- मोटर परिवहन कर्मकार अधिनियम, 1961

69- बीड़ी तथा सिगार कर्मकार (नियोजन की शर्तें) अधिनियम, 1966

इनकी प्राप्ति के लिए प्रकाशन प्रबंधक, सिविल लाइन्स, दिल्ली या राजभाष (विधायी) आयोग, ला इन्स्टीट्यूट बिल्डिंग, भगवानदास रोड़, नई दिल्ली से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है ।

गणित शब्दावली की संगोष्ठी :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में नई दिल्ली में गणित की शब्दावली पर विचार करने के लिए सात दिन की संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने कहा : आयोग, शब्दावली तैयार करने का काम दिसंबर, 1969 तक पूरा कर लेगा । इसके बाद आयोग के विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग मानक ग्रंथों के अनुवाद तथा विभिन्न विषयों की अनुसंधान पत्रिकाओं के प्रकाशन में किया जा सकेग इससे पहले आयोग के अध्यक्ष डा० बाबूराम सक्सेना ने कहा कि आयोग ने विभिन्न विषयों की बुनियादी शब्दावली का काम लगभग पूरा कर लिया है और स्नातक स्तर की पुस्तकें इस शब्दावली की मदद से लिखी जा सकती हैं ।

आकाशवाणी से हिंदी के मुख्य समाचार बुलेटिन प्रसारित होंगे :

सूचना तथा प्रसारण मंत्री श्री के०के० शाह ने गत मास हुई 'हिंदी समिति' की बैठक में सदस्यों को बताया कि आगामी 8 दिसंबर से, आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से हिंदी के मुख्य समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाएंगे । इस कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी के दो मुख्य समाचार बुलेटिन प्रतिदिन प्रसारित होंगे, जो सुबह 8 बजे और शाम को पौने नौ बजे सुने जा सकेंगे । समिति की बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि पत्र सूचना कार्यालय के सभी एककों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी समाचार तैयार हों ।

हिंदी पढ़ने वाले रेलवे कर्मचारी पुरस्कृत :

रेलवे मंत्रालय ने हिंदी सीखने वाले कर्मचारियों को साढ़े सात हजार रुपये के नकद पुरस्कार वितरित किए। झांसी मध्य रेलवे प्रखंड में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रखंडीय अधीक्षक श्री बी० एस० नथाक्स ने पुरस्कार वितरण किया। पांच कर्मचारियों को तीन-तीन सौ रुपये का प्रथम पुरस्कार 18 कर्मचारियों को दो-दो सौ रुपये का द्वितीय पुरस्कार और बारह कर्मचारियों को एक-एक सौ रुपये का तृतीय पुरस्कार मिला।

भारतीय मानकों का हिंदी में प्रकाशन :

भारतीय मानक संस्था ने पहली बार हिंदी और अंग्रेजी में एक साथ परिवर्तन गुणक और परिवर्तन सारणियों से संबंधित भारतीय मानक प्रकाशित किया। यह मानक पिछले मानक का पुनरीक्षित रूप है। इसका प्रमुख उद्देश्य फुट-पौंड-सेकेंड प्रणाली से मीटरी प्रणाली में परिवर्तन की सुविधा के लिए परिवर्तन-गुणक तथा बनी-बनाई परिवर्तन-सारणियां उपलब्ध कराना है। इस संबंध में किसी अधिकृत पुस्तक की आवश्यकता काफी समय से महसूस की जा रही थी। इस प्रकाशन में हिंदी और अंग्रेजी पाठ एक-दूसरे के सामने प्रकाशित किए गए हैं और इसमें अंतर्राष्ट्रीय अंकों का उपयोग किया गया है।

सरकारी कर्मचारियों के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम :

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग द्वारा आगामी 1 जनवरी से कुछ विशेष वर्ग के सरकारी कर्मचारियों और केंद्रीय स्कूल संगठन के अध्यापकों के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। सर्वप्रथम, गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना की 'प्रबोध' परीक्षा के लिए छात्र भर्ती किए जाएंगे। पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष होगी। प्रथम श्रेणी के अधिकारी, आपरेशनल स्टाफ और वे कर्मचारी जिनके लिए इस समय हिंदी सीखने की सुविधाएं नहीं हैं, इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। केंद्रीय स्कूल संगठन के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों को भी इसमें प्रवेश मिल सकता है। आवेदन पत्र और विस्तृत जानकारी के लिए सहायक निदेशक, पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 को लिखें।

* राजधानी में

- नागरी प्रचारिणी सभा ने 27 अक्तूबर को राजधानी में एक समारोह आयोजित किया जिसमें सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी विश्वकोश का दसवां खंड तथा हिंदी शब्द-सागर का पांचवां खंड विशिष्ट व्यक्तियों को भेंट किया गया। सभा की दिल्ली शाखा के अध्यक्ष डा0 [illegible] शंकर झा ने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय भाषाओं में विभिन्न विषयों के मौलिक और अनूदित ग्रंथ प्रकाशित करने से पहले शब्द सागर और विश्वकोश जैसे आधारभूत ग्रंथों का प्रकाशन बहुत जरूरी है। शब्द सागर के पांचवें खंड में 1600 शब्द और विश्वकोश के दसवें खंड में 'रंग' से लेकर 'विद्युत उपकरण' तक 612 लेख, चित्र एवं रेखाकृतियों आदि के साथ, प्रकाशित किए गए हैं।

- माध्यमिक स्कूलों में दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अध्यापन के तरीकों पर विचार-विमर्श करने के लिए राजधानी में तीन दिन का एक सम्मेलन हुआ। इसमें देश के विभिन्न भागों के 30 शिक्षाविदों ने भाग लिया। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा0 त्रिगुण सेन ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा : भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रस्ताव और त्रिभाषा सूत्र को कार्यरूप देने के लिए उत्सुक है। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि उचित प्रेरणा पा कर बच्चे अपनी मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषाएं चाव से सीखने लगेंगे।

- इन्द्रप्रस्थ कालेज की हिंदी परिषद की ओर से 6 नवंबर को अंतर-कालेज कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में दिल्ली के प्रायः सभी मुख्य कालेजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हिन्दू कालेज, इन्द्रप्रस्थ कालेज और किरोड़ीमल कालेज को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार मिले। इन्द्रप्रस्थ कालेज में इस प्रकार की कविता प्रतियोगिता हर वर्ष आयोजित की जाती है।

- राजधानी के हिंदी साहित्यकारों की संस्था "साहित्यिकी" की बैठक में श्री जगदीश चंद्र पांडेय के उपन्यास "गगास के तट पर" पर विचार-विमर्श हुआ। बैठक की अध्यक्षता डा0 प्रभाकर माचवे ने की। बैठक में श्री कृष्ण चंद्र गुप्ता, डा0 रणवीर रांग्रा, श्री प्रदीप पंत आदि लेखकों ने उपन्यास पर अपने विचार प्रकट किए।

* प्रादेशिक अंचल में

केरल के स्कूलों में हिंदी अध्ययन की वर्तमान स्थिति :

लोक शिक्षा निदेशक, त्रिवेन्द्रम की रिपोर्ट के अनुसार केरल के स्कूलों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है :-

हिंदी अनिवार्य तीसरी भाषा के रूप में पांचवीं से दसवीं कक्षा तक पढ़ाई जाती है । छठी से दसवीं कक्षाओं में हिंदी के, लिए प्रति सप्ताह तीन पीरियड और पांचवीं कक्षा में दो पीरियड नियत किए गए हैं । 1967-68 में पांचवीं से दसवीं कक्षाओं में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 17,87,613 थी । इन सभी कक्षाओं में हिंदी में वार्षिक परीक्षा ली जाती है और उसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है । उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 35 प्रतिशत अंक आवश्यक हैं । इस समय हाई स्कूलों और अपर प्राइमरी स्कूलों में 4264 हिंदी अध्यापक पूर्णकालिक रूप से और 1301 अंशकालिक रूप से काम कर रहे हैं । हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए राज्य सरकार रामवर्मापुरम और त्रिवेन्द्रम में दो प्रशिक्षण कालेज चला रही है । इन में 370 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है । 1966 से 1968 तक हिंदी लेकर एस0 एस0 एल0 सी0 में बैठने वाले छात्रों की संख्या क्रमशः 1,57,905, 1,53,455 और 1,55,972 थी ।

मद्रास-अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता जैनमुनि आचार्य तुलसी ने मद्रास में पत्रकारों से बातें करते हुए कहा कि उन्होंने अपने चतुर्मास काल में हिंदी का ही प्रयोग किया किन्तु उससे किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न नहीं हुई । हजारों श्रोता हिंदी में भाषण सुनते थे तथा बाद में उसका तमिल में अनुवाद कर दिया जाता था । किसी भी श्रोता ने अंग्रेजी भाषा की मांग नहीं की । उन्होंने सुझाव दिया कि भाषा का प्रश्न भाषा शास्त्रियों तथा शिक्षाविदों पर छोड़ देना चाहिए । अपना व्यक्तिगत मत व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी ही देश की संपर्क भाषा हो सकती है । आचार्य जी ने समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि अपनाने पर भी जोर दिया ।

गोआ - उपप्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कुन्दागार (पणजी) में एक पत्रकार सम्मेलन में कहा : भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि ही सर्वोत्तम है । रोमनलिपि किसी भी भारतीय भाषा के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती ।

- गोमंतक राष्ट्रभाषा सभा, मडगांव की तरफ से मडगांव में तथा पणजी में हिन्दी - प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था । मडगांव की प्रदर्शनी का उद्घाटन तारीख 15 अक्टूबर को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रोफेसर चन्द्रहासन ने गोवा के उद्योग मंत्री श्री एंथनी डिसोज़ा की अध्यक्षता में आयोजित सभा में किया । उद्घाटन भाषण में प्रोफेसर साहब ने बताया कि गोवा में हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की आशा हम कर सकते हैं । यहां मराठी, कोंकणी भाषा बोलने वाले अधिक हैं । कोंकणी भाषा में लोक - साहित्य काफी मात्रा में है और उसका विकास करना चाहिए । लेकिन कोंकणी भाषियों को एक बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वे अपनी भाषा के लिए नागरी लिपि स्वीकार करें । अगर उसके लिए लिपि में कोई हेरफेर आवश्यक है तो वह काम निदेशालय करेगा । असल में निदेशालय ने इस काम को अपने हाथ में ले लिया है ।

पणजी में प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री गोपाल आपा-कामत, अध्यक्ष विधान सभा की अध्यक्षता में शिक्षा निदेशक डा० पांडुरंग वर्दे ने 19 अक्तूबर को किया । श्री वर्दे ने अपने भाषण में कहा कि गोवा वालों को हिंदी का प्रचार जोरों से करना चाहिए और हिन्दी के सरल रूप का प्रचार करना चाहिए । गोंवा के मुख्यमंत्री श्री बांदोडकर तथा शिक्षा मंत्री ने इस आयोजन की बड़ी प्रशंसा की । दोनों स्थानों में लगभग सात हजार आदमियों ने प्रदर्शनी देखी । गोमंतक राष्ट्रभाषा सभा के अध्यक्ष श्री पांडुरंगराव पुलांवकर तथा मंत्री श्री मा० वा० पंडित ने प्रदर्शनी की सारी व्यवस्था की और निदेशालय के सहायक शिक्षा अधिकारी श्री बी० आर० नारायण ने उनकी भरसक मदद की ।

महाराष्ट्र - उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक श्री कृश्नचन्दर की 55 वीं वर्षगांठ मनाने के लिए बम्बई के साहित्यकारों तथा साहित्यिक संस्थाओं की ओर से एक समारोह

किया गया । समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री श्री रफीक जकारिया ने की । समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा कि लेखक और कवि जनता को प्रेरणा ही नहीं देते बल्कि उसे आशावादी बनाने में भी समर्थ होते हैं ।

- अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, नई दिल्ली ने पूना में 26 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों की एक संगोष्ठी का आयोजन किया । महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा पूना के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी में अहिंदी भाषी लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन तथा वितरण, हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद और लेखकों के संगठन संबंधी प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ । विभिन्न प्रांतों के 32 लेखकों ने संगोष्ठी में भाग लिया । महामहोपाध्याय डा0 दत्तो वामन पोतदार ने समापन समारोह में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए कहा : भारत के स्वाधीन और लोकतंत्रीय राष्ट्र बन जाने के पूर्व सार्वदेशीय कार्यों के लिए हिंदी या हिन्दुस्तानी भाषा न्यूनाधिक रूप से प्रयुक्त होती रही है । आशा की जाती है कि स्वतंत्र भारत में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा । दुर्भाग्य से स्थिति सर्वथा विपरीत है । इस स्थिति में सुधार लाने के लिए हिंदीतर भाषियों को आगे आना चाहिए । इसमें उनका तथा समूचे राष्ट्र का हित है ।

राजस्थान : हिंदी संस्था संघ के तत्वावधान में अहिंदी भाषी प्रांतों के प्रसिद्ध साहित्यकारों के एक सद्भावना मंडल ने राजस्थान की यात्रा की । इस सद्भावना मंडल में मराठी कवि श्री पुरुषोत्तम शिवराम रेगे, तमिल के वरिष्ठ साहित्यकार श्री का0 ना0 सुब्रह्मण्यम और गुजराती के कथाकार श्री चुन्नीलाल मड़िया थे । विभिन्न स्थानों पर वहां की साहित्यिक तथा शैक्षिक संस्थाओं ने इस साहित्यकारों का सम्मान किया ।

हरियाणा : हरियाणा सरकार ने 4 नवंबर को एक अध्यादेश जारी कर दिया है जिसके अनुसार देवनागरी लिपि में हिंदी 26 जनवरी, 1969 से सरकारी काम-काज की भाषा बन जाएगी । यह अध्यादेश पंजाब राजभाषा कानून 1960 के स्थान पर लागू किया गया है ।

*विश्वविद्यालयों में

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का निर्माण :

हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए बनाई गई उपकुलपतियों की स्थायी समिति की दूसरी बैठक का उद्घाटन करते हुए शिक्षा राज्य मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने कहा कि केन्द्रीय सरकार विश्वविद्यालयों में सभी स्तरों और कृषि, कानून तथा इंजीनियरी सहित सभी पाठ्यक्रमों में 1973 तक हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कृतसंकल्प है। केन्द्रीय सरकार ने 1000 विदेशी ग्रंथों के अनुवाद के लिए कापीराइट प्राप्त कर लिया है और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को इन ग्रंथों के अनुवाद का काम सौंपा गया है। बिहार तथा राजस्थान सरकारों को हिंदी में पाठ्य पुस्तकों के निर्माण के लिए पांच-पांच लाख रुपए का अनुदान दिया जा चुका है। उत्तरप्रदेश, हरियाणा और मध्यप्रदेश सरकारों से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार किया जा रहा है।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका

यूनेस्को कूरियर

मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री अति उत्कृष्ट और प्रशंसा प्राप्त

एक प्रति : एक रुपया

वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये

शैक्षिक संस्थाओं एवं पुस्तकालयों के लिए : 9-50 रुपये

कम से कम 5 वार्षिक ग्राहक बनाने वालों को कमीशन दिया जाएगा। जनवरी, 1968 से ग्राहक बनने वालों को पिछले 5 अंक मुफ्त भेजे जाएंगे। नमूने की प्रति के लिए 80 पैसे के डाक टिकट भेजें। अधिक विवरण के लिए लिखें

प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय),
वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22.

*विदेशों में

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार :

सोवियत लैंड की नेहरू पुरस्कार समिति ने इस वर्ष भारतीय भाषाओं के 29 लेखकों, कवियों, पत्रकारों, विद्वानों और बाल चित्रकारों को पुरस्कृत करने की घोषणा की है। श्री वृंदावन लाल (हिंदी), श्री वासवराजा कुट्टिमनि (कन्नड़), श्री विमलचंद्र घोष (बंगला) और श्री मोहन सिंह (पंजाबी) को आठ-आठ हज़ार रुपए के पुरस्कार दिए गए हैं। पत्रकारिता और अनुवाद कार्यों के लिए चार लेखकों को 25-25 सौ के पुरस्कार दिए गए हैं। इनके नाम हैं : श्रीमती ज्या ठाकरे (गुजराती), कु0 कुर्रत-उल-एन-हैदर (उर्दू) श्री के0 पी0 जी0 नम्बूदिरी (मलयालम) और श्री दर्शन सिंह (पंजाबी)। इसके अतिरिक्त 7 लेखकों को एक-एक हज़ार और 11 लेखकों को आठ-आठ सौ रुपए के पुरस्कार दिए गए हैं। जिन बाल-चित्रकारों को पुरस्कृत किया गया है उन्हें कृष्ण सागर के निकट आर्टेक यंग पायनियर शिविर में एक माह की छुट्टी बिताने का अवसर मिलेगा।

सोवियत मध्य-एशिया में संस्कृत के दो प्राचीन ग्रंथ

भारतीय संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के निदेशक डा0 लोकेशचन्द्र ने एक पत्रकार सम्मेलन में बताया कि सोवियत ताजिक जनतंत्र में संस्कृत भाषा के दो प्राचीन ग्रंथों की पांडुलिपियां मिली हैं। इनकी लिपि ब्राह्मी है। इनमें से एक ग्रंथ दो सौ पृष्ठों का है। भोज पत्र पर लिखे गए इन ग्रंथों के बारे में भाषाविदों का विचार है कि ये छठी-सातवीं शताब्दी के हैं। इन ग्रंथों पर सोवियत संघ के संस्कृतज्ञ विद्वान काम कर रहे हैं और आगामी दो-तीन वर्षों में ये प्रकाशित हो जाएंगी।

डा0 लोकेशचन्द्र ने पत्रकारों को यह भी जानकारी दी कि जापान के ओयासन नगर में एक सौ से अधिक मंदिर हैं तथा एक हज़ार से भी अधिक वर्षों से वहां संस्कृत का पठन-पाठन हो रहा है। उन्होंने बताया कि ओयासन नगर तंत्रविद्या का केन्द्र है और गत नौ-सौ वर्षों से यहां अक्षय दीप जल रहा है।

0 नव प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ0	मूल्य
राधाकृष्ण प्रकाशन, 2 अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6				
स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएं	उर्मिला गुप्ता	शोध प्रबंध	372	16-00
नंददास	रूप नारायण	समालोचना	278	15-00
महादेवी	सं0 इंद्रनाथ मदान	,,	228	6-50
दिनकर	सं0 सावित्री सिन्हा	,,	237	6-50
राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परंपरा	अगर चंद नाहटा	,,	121	7-50
प्रसाद का गद्य	सूर्य प्रसाद दीक्षित	,,	137	4-50
हिंदी उपन्यास-नारी चित्रण	बिंदु अग्रवाल	शोध प्रबंध	451	22-50
बिहारी	सं0 ओम प्रकाश	समालोचना	187	6-50
शिक्षा तथा मनोविज्ञान में अनुसंधानोपयोगी सांख्यिकी	मनमोहन वर्मा	सांख्यिकी	180	4-50
विनोद पुस्तक मंदिर, डा0 रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2.				
भूषण और उनका काव्य	डा0 राजमल बोरा	शोध प्रबंध	408	15-00
हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास	राजनाथ शर्मा	साहित्य इतिहास	816	11-00
सूफी काव्य विमर्श	डा0 श्याम मनोहर पांडेय	समालोचना	248	6-00
हिंदी और तेलुगु वैष्णव भक्ति साहित्य - तुलनात्मक अध्ययन	डा0 के0 रामनाथन	शोध प्रबंध	471	15-00
आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6.				
मैं अछूत हूं	विष्णु प्रभाकर	गांधी विचार	108	1-00
सर्वोदय की ओर	विश्वनाथ टंडन	,,	103	1-00
गरीब की पुकार	सुरेश भाई	,,	158	2-00

गांधी जी के सान्निध्य में	प्रभाकर दिवाण	गांधी विचार	108	1-00
भारत सिंधु	अरुण	प्रागैतिहासिक उपन्यास	368	12-00

हिंदी साहित्य भंडार, गंगा प्रसाद रोड़, लखनऊ :

श्रीकृष्ण चरित	पं० रूप नारायण पाँडेय	प्रबंध काव्य	301	4-50
शिक्षण कला एवं हिंदी शिक्षण	प्रो० रामसेलावन चौधरी	शिक्षण शास्त्र	465	8-50
हिंदी साहित्य में हास्य और व्यंग्य	सं० प्रेम नारायण टंडन	समीक्षा	504	10-00
निमाड़ के संत कवि सिंगाजी	डा० रमेश चंद्र गंगराडे	शोध प्रबंध	117	8-00
महाकवि सुब्रह्मण्य भारती एवं महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा० पी० जयरामन	,,	560	20-00
हिंदी और तेलुगु के कृष्ण काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा० एन० एस० दक्षिणामूर्ति	शोध प्रबंध	491	20-00
स्वतंत्र समाज की शिक्षण पद्धति	डा० वि०के० जवली	शिक्षा शास्त्र	376	10-00
हिंदी और तेलुगु के मध्यकालीन राम साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति	शोध प्रबंध	416	15-00
पंच प्रसून	तेज नारायण टंडन		-	6-85
कुरुक्षेत्र जागता है	एन० चंद्रशेखरन नायर	नाटक	132	2-00
नेहरू अंतिम झलक	डा० प्रेमनारायण टंडन	एकांकी	117	2-50
दक्षिण की भाषाएं और उनका साहित्य	जी० सुंदररेड्डी	भाषा शास्त्र	204	7-00

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए :	ले० वी जेलेनिन	पृ० 142	मूल्य 5-00
2. सिखों का इतिहास :	ले० हरीराम गुप्त	पृ० 304	मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक		पृ० 165	मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश		पृ० 324	मूल्य 4-50
2. शब्दार्थ मीमांसा :	ले० रामचन्द्र वर्मा	पृ० 326	मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ० 148	मूल्य 4-50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ०270	मूल्य 12-50
3 संकलन		पृ० 580	मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)
वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script
4. Devanagari Through the Ages
5. देवनागरी लेखन विधि चार्ट
6. परिवर्धित देवनागरी चार्ट
7. Standardisation of Hindi Spelling
8. हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रवन्ध संपादक, हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

22.8
285-6
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3
अंक 3

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

सत्यमेव जयते

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर. एन्. 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 नवंबर 1968 अंक 3

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

0 हिन्दी

- * भारत सरकार में
- * राजधानी में
- * प्रादेशिक अंचल में
- * विश्वविद्यालयों में
- * विदेशों में

0 नए प्रकाशन

> शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है तब विद्यार्थियों के दिमाग पर सिर्फ उस भाषा के शब्द याद रखने का ही बोझ नहीं पड़ता, परंतु विषय को समझने में भी उन्हें बड़ी कठिनाई होती है । यह तो साफ बात है कि जहां रटने की शक्ति बढ़ती है वहां समझने की शक्ति घट जाती है ।
>
> \- सरदार पटेल (30-11-1946)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं0 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

गांधी जी ने कहा था -

"विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर जो बोझ पड़ता है वह असह्य है। यह बोझ हमारे बच्चे उठा तो सकते हैं, लेकिन उसकी कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है। वे दूसरा बोझ उठाने के लायक नहीं रह पाते। इससे हमारे स्नातक अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। उनमें खोज करने की शक्ति, विचार करने की रुचि, साहस, धीरज, वीरता, निर्भयता और अन्य गुण बहुत क्षीण हो जाते हैं। इससे हम नई योजनाएं नहीं बना सकते और यदि बनाते हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर पाते। कुछ लोग, जिनमें उपर्युक्त गुण दिखाई देते हैं, अकाल ही काल के गाल में चले जाते हैं। एक अंग्रेज ने लिखा है कि मूल लेख और सोखता कागज के अक्षरों में जो भेद है, वही भेद यूरोप के और यूरोप के बाहर के लोगों में है। इस विचार में जो सचाई है वह कोई एशिया के लोगों की स्वाभाविक अयोग्यता के कारण नहीं है। इसका कारण शिक्षा का योग्य माध्यम चुन लेना है। दक्षिण आफ्रिकी हब्शी साहसी, शरीर से कद्दावर और चरित्रवान् हैं। बाल-विवाह आदि जो दोष हममें हैं वे उनमें नहीं हैं। फिर भी उनकी दशा वैसी ही है जैसी हमारी है। उनकी शिक्षा का माध्यम डच भाषा है। वे भी हमारी तरह डच भाषा को तुरन्त अधिकृत कर लेते हैं और हमारी ही तरह शिक्षा समाप्त होते-होते कमजोर हो जाते हैं। वे भी बहुत हद तक कोरे नकलची निकलते हैं। उनमें भी असली चीज माध्यम रूप में मातृ-भाषा के हटने से लुप्त हुई दीखती है। अंग्रेजी शिक्षा पाए हुए हम लोग ही इस नुकसान का सही अनुमान नहीं लगा पाते। यदि हम यह अनुमान लगा सकें कि जनसाधारण पर हमारा कितना कम असर पड़ा है, तो इसकी कुछ कल्पना हो सकती है। हमारे माता-पिता हमारी शिक्षा के बारे में कभी-कभी कुछ कह देते हैं, वह विचारने लायक होता है। हम जगदीश चन्द्र वसु और राय को देखकर मोहांध हो जाते हैं। मुझे विश्वास है कि हमने 50 वर्ष तक मातृ-भाषा द्वारा शिक्षा पाई होती, तो हममें इतने वसु और राय होते कि उन्हें देखकर हमें अचम्भा न होता।"

- द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन में अध्यक्ष पद से दिए गए भाषण से। दिनांक 20-10-1917.

सौराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति, राजकोट

सौराष्ट्र में हिन्दी प्रचार का कार्य पूज्य बापू की प्रेरणा से सन् 1937 में प्रारम्भ हुआ और काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार सभा नामक संस्था की स्थापना हुई। यह राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से सम्बद्ध थी। 1948 में सौराष्ट्र रचनात्मक समिति की स्थापना होने पर काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार सभा इसमें मिला दी गई। रचनात्मक समिति ने सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति के नाम से अपनी एक उप-समिति बनाई और इस उप-समिति ने 1952 से अपनी परीक्षाएं चलाना प्रारम्भ किया।

सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति की पितृ-संस्था सौराष्ट्र रचनात्मक समिति एक पंजीकृत संस्था है, जो अनेक रचनात्मक कार्यों के साथ-साथ हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी करती है। हिन्दी प्रचार-प्रसार के सारे कार्य-क्रम उसकी अंगभूत समिति सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति की देख-रेख में होता है।

सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति का उद्देश्य भारत के संविधान में दी गई व्याख्या के अनुसार राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार और विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह समिति परीक्षाओं का संचालन, पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था, व्याख्यान माला, प्रचार तालीम वर्ग, भाषण स्पर्धा, निबन्ध स्पर्धा, कवि सम्मेलन आदि अनेक साहित्यिक कार्यों का आयोजन करती है।

परीक्षा-संचालन :

सौराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति अपनी चार हिंदी परीक्षाएं चलाती है - बालपोथी, हिंदी पहली, दूसरी और तीसरी। पहली तीन परीक्षाएं मैट्रिक के नीचे के स्तर की हैं और 'तीसरी' परीक्षा मैट्रिक के स्तर की है। इसकी मान्यता का प्रश्न भारत सरकार के विचाराधीन है। समिति मैट्रिकोत्तर स्तर की अपनी कोई परीक्षा नहीं चलाती, किन्तु गुजरात की 'विनीत' और 'सेवक' परीक्षाओं के लिए व्यवस्था करती है। हिंदी परीक्षाओं के अतिरिक्त समिति अपनी गुजराती परीक्षा, अनुवाद परीक्षा, मराठी-परीक्षा और उर्दू परीक्षा का भी संचालन करती है।

समिति का कार्यक्षेत्र सौराष्ट्र और कच्छ के सात जिले - अमरेली, कच्छ, जामनगर, जूनागढ़, भावनगर, राजकोट और सुरेन्द्र नगर हैं। सौराष्ट्र और कच्छ में समिति की विभिन्न परीक्षाओं के लिए कुल मिलाकर 810 केन्द्र हैं, जिनमें से 127 में 'तीसरी' परीक्षा के लिए अध्यापन और परीक्षा की व्यवस्था है। अध्यापन का कार्य समिति के अवैतनिक प्रचारक करते हैं। परीक्षा संचालन का कार्य परीक्षा समिति की देख-रेख में होता है। प्रति वर्ष हजारों छात्र समिति की परीक्षा में बैठते हैं।

पुस्तकालय :

समिति के पुस्तकालय में लगभग चार हजार हिन्दी पुस्तकें हैं और वाचनालय में 35 पत्र-पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं। इसके लगभग 100 सदस्य हैं। पुस्तकालय में पुस्तकें खरीदने और पत्र-पत्रिकाएं मंगवाने के लिए समिति को भारत सरकार से अनुदान मिलता है।

अन्य कार्यक्रम :

समिति प्रतिवर्ष भाषण तथा निबन्ध प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, व्याख्यानमाला तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इनमें से कुछ कार्यक्रमों के लिए भारत सरकार की ओर से भी अनुदान मिलता है।

समिति का कार्यालय राष्ट्रीयशाला, राजकोट के भवन में है। श्री कानजी भाई चौहाण, समिति के परीक्षा मंत्री हैं और श्री नरेन्द्र भाई अंजारिया कार्यालय मंत्री हैं।

+ \+ \+ \+

हिंदी के अधिकाधिक यांत्रिक प्रयोग के लिए सुझाव आमंत्रित :

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद ने भारत की समस्त हिंदी सेवी संस्थाओं तथा हिंदी प्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे हिंदी में टेलीप्रिंटर, टाइपराइटर, पता-छेपी आदि यांत्रिक सुविधाओं के विस्तार तथा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में अपने सुझाव भेजें। ये सुझाव परिषद के मंत्री को इस पते पर भेजे जा सकते हैं :- एक्स0 वाई0 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23।

0 हिंदी

* भारत सरकार में

अधिनियमों के अनुवाद-कार्य में प्रगति :

भारत सरकार के अधिनियमों तथा विधि संबंधी अन्य साहित्य के अनुवाद का काम राजभाषा (विधायी) आयोग, विधि मंत्रालय की देख-रेख में हो रहा है। अब तक आयोग द्वारा तैयार किए गए निम्नलिखित केन्द्रीय अधिनियमों के हिंदी पाठ राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 5 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन अधिप्रमाणीकृत किए गए हैं :-

1- भारतीय दण्ड संहिता, 1860 2- भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872
3- संपत्ति अन्तरण अधिनियम, 1882 4- माल विक्रय अधिनियम, 1930
5- दिल्ली (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1964
6- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 7- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951
8- संसद् (निरर्हता) निवारण अधिनियम, 1959
9- राष्ट्रपतीय और उपराष्ट्रपतीय निर्वाचन अधिनियम, 1952
10- लोक प्रतिनिधित्व (प्रकीर्ण उपबन्ध) अधिनियम, 1956
11- लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अधिनियम, 1967 | 12- भारतीय संविदा अधिनियम, 1872
13- वैध निविदा (हस्तलिखित नोट) अधिनियम, 1964
14- गोवा, दमण और दीव न्यायिक आयुक्त न्यायालय (उच्च न्यायालय के रूप में घोषणा) अधिनियम, 1964
15- केरल राज्य विधान-मण्डल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1964
16- केरल राज्य विधान-मण्डल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1965
17- भूमि अर्जन अधिनियम, 1894 18- भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932
19- दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 20- भारतीय न्यास अधिनियम, 1882
21- परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881 22- सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908
23- द्वि-सदस्य निर्वाचन-क्षेत्र (उत्सादन) अधिनियम, 1961
24- सांख्यिकीय संग्रहण अधिनियम, 1953 | 25- एशियाई विकास बैंक अधिनियम, 1966
26- रेल (सशस्त्र-बल-सदस्य-नियोजन) अधिनियम, 1965

27- गोवा, दमण और दीव (सिविल प्रक्रिया संहिता और माध्यस्थम् अधिनियम, का विस्तारण) अधिनियम, 1965

28- गोवा, दमण और दीव (आमेलित कर्मचारी) अधिनियम, 1965

29- हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955   30- विनिर्दिष्ट अनुतोष अधिनियम, 1963

31- भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908   32- परिसीमा अधिनियम, 1963

33- संरक्षक और प्रतिपाल्य अधिनियम, 1890

34- अभ्रक खान श्रम कल्याण निधि अधिनियम, 1946

35- हिन्दू अप्राप्तवयता और संरक्षकता अधिनियम, 1956

36- हिन्दू दत्तक और भरणपोषण अधिनियम, 1956 | 37- उत्प्रवास अधिनियम, 1922

38- नियोजनालय (रिक्तियों की अनिवार्य अधिसूचना) अधिनियम, 1959

39- माध्यस्थम् अधिनियम, 1940 | 40- जयन्ती शिपिंग कम्पनी (प्रबंध ग्रहण) अधिनियम, 1966

41- प्रेस परिषद अधिनियम, 1965   42- दिल्ली प्रशासन अधिनियम, 1966

43- तेलक्षेत्र (विनियमन तथा विकास) अधिनियम, 1948

44- कराधान विधियां (वसूली की कार्यवाहियों का चालू रखा जाना और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1964

45- साप्ताहिक अवकाश दिन अधिनियम, 1942 | 46- हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956

47- मेटल कारपोरेशन आफ इन्डिया (उपक्रम का अर्जन) अधिनियम, 1966

48- अन्तर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 | 49- इलायची अधिनियम, 1965

50- मंत्रियों के संबलमों और भत्तों से संबंधित अधिनियम, 1952

51- नियोजक-दायित्व अधिनियम, 1938 | 52- बालक (श्रम गिरवीकरण) अधिनियम, 193

53- बालक नियोजन अधिनियम, 1938 | 54- औद्योगिक नियोजन (स्थायी आदेश) अधिनियम, 1946

55- डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) अधिनियम, 1948

56- न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948   57- व्यवसाय संघ अधिनियम, 1926

58- औद्योगिक विवाद (बैंककारी कम्पनी) विनिश्चय अधिनियम, 1955

59- कोयला खान श्रमिक कल्याण निधि अधिनियम, 1947

60- लोह अयस्क खान श्रमिक कल्याण उपकर अधिनियम, 1961

61- औद्योगिक विवाद (बैंककारी तथा बीमा कम्पनी) अधिनियम, 1949

62- कोयला खान भविष्य-निधि तथा बोनस स्कीम अधिनियम, 1948
63- मजदूरी संदाय अधिनियम, 1936   64- खान अधिनियम, 1952
65- साधारण खण्ड अधिनियम, 1897   66- आयुध अधिनियम, 1959
67- बागान श्रम अधिनियम, 1951   68- मोटर परिवहन कर्मकार अधिनियम, 1961
69- बीड़ी तथा सिगार कर्मकार (नियोजन की शर्तें) अधिनियम, 1966

इनकी प्राप्ति के लिए प्रकाशन प्रबंधक, सिविल लाइन्स, दिल्ली या राजभाषा (विधायी) आयोग, ला इन्स्टीट्यूट बिल्डिंग, भगवानदास रोड, नई दिल्ली से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है ।

गणित शब्दावली की संगोष्ठी :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में नई दिल्ली में गणित की शब्दावली पर विचार करने के लिए सात दिन की संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने कहा : आयोग, शब्दावली तैयार करने का काम दिसंबर, 1969 तक पूरा कर लेगा । उसके बाद आयोग के विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग मानक ग्रंथों के अनुवाद तथा विभिन्न विषयों की अनुसंधान पत्रिकाओं के प्रकाशन में किया जा सकेगा इससे पहले आयोग के अध्यक्ष डा0 बाबूराम सक्सेना ने कहा कि आयोग ने विभिन्न विषयों की बुनियादी शब्दावली का काम लगभग पूरा कर लिया है और स्नातक स्तर की पुस्तकें इस शब्दावली की मदद से लिखी जा सकती हैं ।

आकाशवाणी से हिंदी के मुख्य समाचार बुलेटिन प्रसारित होंगे :

सूचना तथा प्रसारण मंत्री श्री के0के0 शाह ने गत मास हुई 'हिंदी समिति' की बैठक में सदस्यों को बताया कि आगामी 8 दिसंबर से, आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से हिंदी के मुख्य समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाएंगे । इस कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी के दो मुख्य समाचार बुलेटिन प्रतिदिन प्रसारित होंगे, जो सुबह 8 बजे और शाम को पौने नौ बजे सुने जा सकेंगे । समिति की बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि पत्र सूचना कार्यालय के सभी एककों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी समाचार तैयार हों ।

हिंदी पढ़ने वाले रेलवे कर्मचारी पुरस्कृत :

रेलवे मंत्रालय ने हिंदी सीखने वाले कर्मचारियों को साढ़े सात हजार रुपये के नकद पुरस्कार वितरित किए । झांसी मध्य रेलवे प्रखंड में आयोजित एक विशेष समारोह में क्षेत्रीय अधीक्षक श्री वी० एस० मथाऊ ने पुरस्कार वितरण किया । पांच कर्मचारियों को तीन-तीन सौ रुपये का प्रथम पुरस्कार 18 कर्मचारियों को दो-दो सौ रुपये का द्वितीय पुरस्कार और बारह कर्मचारियों को एक-एक सौ रुपये का तृतीय पुरस्कार मिला ।

भारतीय मानकों का हिंदी में प्रकाशन :

भारतीय मानक संस्था ने पहली बार हिंदी और अंग्रेजी में एक साथ परिवर्तन गुणक और परिवर्तन सारणियों से संबंधित भारतीय मानक प्रकाशित किया । यह मानक पिछले मानक का पुनरीक्षित रूप है । इसका प्रमुख उद्देश्य फुट-पौंड-सैकेंड प्रणाली से मीटरी प्रणाली में परिवर्तन की सुविधा के लिए परिवर्तन-गुणक तथा बनी-बनाई परिवर्तन-सारणियां उपलब्ध कराना है । इस संबंध में किसी अधिकृत पुस्तक की आवश्यकता काफी समय से महसूस की जा रही थी । इस प्रकाशन में हिंदी और अंग्रेजी पाठ एक-दूसरे के सामने प्रकाशित किए गए हैं और इनमें अंतर्राष्ट्रीय अंकों का उपयोग किया गया है ।

सरकारी कर्मचारियों के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम :

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग द्वारा आगामी 1 जनवरी से कुछ विशेष वर्ग के सरकारी कर्मचारियों और केंद्रीय स्कूल संगठन के अध्यापकों के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम शुरु किया जा रहा है । सर्वप्रथम, गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना की 'प्रबोध' परीक्षा के लिए छात्र भर्ती किए जाएंगे । पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष होगी । प्रथम श्रेणी के अधिकारी, आपरेशनल स्टाफ और वे कर्मचारी जिनके लिए इस समय हिंदी सीखने की सुविधाएं नहीं हैं, इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं । केंद्रीय स्कूल संगठन के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों को भी इसमें प्रवेश मिल सकता है । आवेदन पत्र और विस्तृत जानकारी के लिए सहायक निदेशक, पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 को लिखें ।

* राजधानी में

- नागरी प्रचारिणी सभा ने 27 अक्तूबर को राजधानी में एक समारोह आयोजित किया जिसमें सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी विश्वकोश का दसवां खंड तथा हिंदी शब्द सागर का पांचवां खंड विशिष्ट व्यक्तियों को भेंट किया गया । सभा की दिल्ली शाखा के अध्यक्ष डा0 वेणी शंकर झा ने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय भाषाओं में विभिन्न विषयों के मौलिक और अनूदित ग्रंथ प्रकाशित करने से पहले शब्द सागर और विश्वकोश जैसे आधारभूत ग्रंथों का प्रकाशन बहुत जरूरी है । शब्द सागर के पांचवें खंड में 1600 शब्द और विश्वकोश के दसवें खंड में 'रंग' से लेकर 'विद्युत उपकरण' तक 612 लेख, चित्र एवं कलाकृतियों आदि के साथ, प्रकाशित किए गए हैं ।

- माध्यमिक स्कूलों में दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अध्यापन के तरीकों पर विचार-विमर्श करने के लिए राजधानी में तीन दिन का एक सम्मेलन हुआ । इसमें देश के विभिन्न भागों के 30 शिक्षाविदों ने भाग लिया । केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा0 त्रिगुण सेन ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा : भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रस्ताव और त्रिभाषा सूत्र को कार्यरूप देने के लिए उत्सुक है । उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि उचित प्रेरणा पा कर बच्चे अपनी मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषाएं चाव से सीखने लगेंगे ।

- इन्द्रप्रस्थ कालेज की हिंदी परिषद की ओर से 6 नवंबर को अंतर-कालेज कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई । प्रतियोगिता में दिल्ली के प्रायः सभी मुख्य कालेजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । हिन्दू कालेज, इन्द्रप्रस्थ कालेज और किरोड़ीमल कालेज को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार मिले । इन्द्रप्रस्थ कालेज में इस प्रकार की कविता प्रतियोगिता हर वर्ष आयोजित की जाती है ।

- राजधानी के हिंदी साहित्यकारों की संस्था "साहित्यिकी" की बैठक में श्री जगदीश चंद्र पांडेय के उपन्यास "गगास के तट पर" पर विचार-विमर्श हुआ । बैठक की अध्यक्षता डा0 प्रभाकर माचवे ने की । बैठक में श्री कृष्ण चंद्र गुप्ता, डा0 रणवीर रांग्रा, श्री प्रदीप पंत आदि लेखकों ने उपन्यास पर अपने विचार प्रकट किए ।

* प्रादेशिक अंचल में

केरल के स्कूलों में हिंदी अध्ययन की वर्तमान स्थिति :

लोक शिक्षा निदेशक, त्रिवेन्द्रम की रिपोर्ट के अनुसार केरल के स्कूलों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है :-

हिंदी अनिवार्य तीसरी भाषा के रूप में पांचवीं से दसवीं कक्षा तक पढ़ाई जाती है । छठी से दसवीं कक्षाओं में हिंदी के ,लिए प्रति सप्ताह तीन पीरियड और पांचवीं कक्षा में दो पीरियड नियत किए गए हैं । 1967-68 में पांचवीं से दसवीं कक्षाओं में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 17,87,613 थी । इन सभी कक्षाओं में हिंदी में वार्षिक परीक्षा ली जाती है और उसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है । उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 35 प्रतिशत अंक आवश्यक हैं । इस समय हाई स्कूलों और अपर प्राइमरी स्कूलों में 4264 हिंदी अध्यापक पूर्णकालिक रूप से और 1301 अंशकालिक रूप से काम कर रहे हैं । हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए राज्य सरकार रामवर्मापुरम और त्रिवेन्द्रम में दो प्रशिक्षण कालेज चला रही है । इन में 370 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है । 1966 से 1968 तक हिंदी लेकर एस0 एस0 एल0 सी0 में बैठने वाले छात्रों की संख्या क्रमशः 1,57,905, 1,53,455 और 1,55,972 थी ।

मद्रास-अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता जैनमुनि आचार्य तुलसी ने मद्रास में पत्रकारों से बातें करते हुए कहा कि उन्होंने अपने चतुर्मास काल में हिंदी का ही प्रयोग किया किन्तु उससे किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न नहीं हुई । हजारों श्रोता हिंदी में भाषण सुनते थे तथा बाद में उसका तमिल में अनुवाद कर दिया जाता था । किसी भी श्रोता ने अंग्रेजी भाषा की मांग नहीं की । उन्होंने सुझाव दिया कि भाषा का प्रश्न भाषा शास्त्रियों तथा शिक्षाविदों पर छोड़ देना चाहिए । अपना व्यक्तिगत मत व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी ही देश की संपर्क भाषा हो सकती है । आचार्य जी ने समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि अपनाने पर भी जोर दिया ।

गोवा - उपप्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कुन्काणर (पणजी) में एक पत्रकार सम्मेलन में कहा : भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि ही सर्वोत्तम है। रोमनलिपि किसी भी भारतीय भाषा के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती।

- गोमंतक राष्ट्रभाषा सभा, मडगांव की तरफ से मडगांव में तथा पणजी में हिन्दी - प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। मडगांव की प्रदर्शनी का उद्घाटन तारीख 15 अक्टूबर को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रोफेसर चन्द्रहासन ने गोवा के उद्योग मंत्री श्री एंथनी डिसोज़ा की अध्यक्षता में आयोजित सभा में किया। उद्घाटन भाषण में प्रोफेसर साहब ने बताया कि गोवा में हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की आशा हम कर सकते हैं। यहां मराठी, कोंकणी भाषा बोलने वाले अधिक हैं। कोंकणी भाषा में लोक - साहित्य काफी मात्रा में है और उसका विकास करना चाहिए। लेकिन कोंकणी भाषियों को एक बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वे अपनी भाषा के लिए नागरी लिपि स्वीकार करें। अगर उसके लिए लिपि में कोई हेरफेर आवश्यक हो तो वह काम निदेशालय करेगा। असल में निदेशालय ने इस काम को अपने हाथ में ले लिया है।

पणजी में प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री गोपाल आपा-कामत, अध्यक्ष विधान सभा की अध्यक्षता में शिक्षा निदेशक डा० पांडुरंग वर्दे ने 19 अक्टूबर को किया। श्री वर्दे ने अपने भाषण में कहा कि गोवा वालों को हिंदी का प्रचार जोरों से करना चाहिए और हिन्दी के सरल रूप का प्रचार करना चाहिए। गोवा के मुख्यमंत्री श्री बंदोरकर तथा शिक्षा मंत्री ने इस आयोजन की बड़ी प्रशंसा की। दोनों स्थानों में लगभग सात हजार आदमियों ने प्रदर्शनी देखी। गोमंतक राष्ट्रभाषा सभा के अध्यक्ष श्री पांडुरंगराव मुलगांवकर तथा मंत्री श्री मा० बा० पंडित ने प्रदर्शनी की सारी व्यवस्था की और निदेशालय के सहायक शिक्षा अधिकारी श्री बी० आर० नारायण ने उनकी भरसक मदद की।

महाराष्ट्र - उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक श्री कृश्नचन्दर की 55 वीं वर्षगांठ मनाने के लिए बम्बई के साहित्यकारों तथा साहित्यिक संस्थाओं की ओर से एक समारोह

किया गया । समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री श्री रफीक जकारिया ने की । समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा कि लेखक और कवि जनता को प्रेरणा ही नहीं देते बल्कि उसे आशावादी बनाने में भी समर्थ होते हैं ।

- अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, नई दिल्ली ने पूना में 26 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों की एक संगोष्ठी का आयोजन किया । महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा पूना के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी में अहिंदी भाषी लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन तथा वितरण, हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद और लेखकों के संगठन संबंधी प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ । विभिन्न प्रांतों के 33 लेखकों ने संगोष्ठी में भाग लिया । महामहोपाध्याय डा0 दत्तोवामन पोतदार ने समापन समारोह में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए कहा : भारत के स्वाधीन और लोकतंत्रीय राष्ट्र बन जाने के पूर्व सार्वदेशीय कार्यों के लिए हिंदी या हिन्दुस्तानी भाषा न्यूनाधिक रूप से प्रयुक्त होती रही है । आशा की जाती है कि स्वतंत्र भारत में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा । दुर्भाग्य से स्थिति सर्वथा विपरीत है । इस स्थिति में सुधार लाने के लिए हिंदीतर भाषियों को आगे आना चाहिए । इसमें उनका तथा समूचे राष्ट्र का हित है ।

राजस्थान : हिंदी संस्था संघ के तत्वावधान में अहिंदी भाषी प्रांतों के प्रसिद्ध साहित्यकारों के एक सद्भावना मंडल ने राजस्थान की यात्रा की । इस सद्भावना मंडल में मराठी कवि श्री पुरुषोत्तम शिवराम रेगे, तमिल के वरिष्ठ साहित्यकार श्री का0 ना0 सुब्रह्मण्यम और गुजराती के कथाकार श्री चुन्नीलाल मड़िया थे । विभिन्न स्थानों पर वहां की साहित्यिक तथा शैक्षिक संस्थाओं ने इन साहित्यकारों का सम्मान किया ।

हरियाणा : हरियाणा सरकार ने 4 नवंबर को एक अध्यादेश जारी कर दिया है जिसके अनुसार देवनागरी लिपि में हिंदी 26 जनवरी, 1969 से सरकारी काम-काज की भाषा बन जाएगी । यह अध्यादेश पंजाब राजभाषा कानून 1960 के स्थान पर लागू किया गया है ।

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का निर्माण

हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण के लिए बनाई गई उपकुलपतियों की स्थायी समिति की दूसरी बैठक का उद्घाटन करते हुए शिक्षा राज्य मंत्री श्री भागवत झा आजाद ने कहा कि केन्द्रीय सरकार विश्वविद्यालयों में सभी स्तरों और कृषि, कानून तथा इंजीनियरी सहित सभी शाखाओं में 1973 तक हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कृतसंकल्प है। केन्द्रीय सरकार ने 1800 विदेशी ग्रंथों के अनुवाद के लिए कापीराइट प्राप्त कर लिया है और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को इन ग्रंथों के अनुवाद का काम सौंपा गया है। बिहार तथा राजस्थान सरकारों को हिंदी में पाठ्य पुस्तकों के निर्माण के लिए पांच-पांच लाख रुपए का अनुदान दिया जा चुका है। उत्तरप्रदेश, हरियाणा और मध्यप्रदेश सरकारों से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार किया जा रहा है।

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका

यूनेस्को कूरियर

मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री अति उत्कृष्ट और प्रशंसा प्राप्त
एक प्रति : एक रुपया   वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये
शैक्षिक संस्थाओं एवं पुस्तकालयों के लिए : 9-50 रुपये

कम से कम 5 वार्षिक ग्राहक बनाने वालों को कमीशन दिया जाएगा। जनवरी, 1968 से ग्राहक बनने वालों को पिछले 5 अंक मुफ्त भेजे जाएंगे। नमूने की प्रति के लिए 80 पैसे के डाक टिकट भेजें। अधिक विवरण के लिए लि

प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय),
वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22.

*विदेशों में

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार :

सोवियत लैंड की नेहरू पुरस्कार समिति ने इस वर्ष भारतीय भाषाओं के 29 लेखकों, कवियों, पत्रकारों, विद्वानों और बाल चित्रकारों को पुरस्कृत करने की घोषणा की है। श्री वृंदावन लाल (हिंदी), श्री बासवराजा कुट्टिमणि (कन्नड़), श्री विमलचंद्र घोष (बंगला) और श्री मोहन सिंह (पंजाबी) को आठ-आठ हज़ार रुपए के पुरस्कार दिए गए हैं। पत्रकारिता और अनुवाद कार्यों के लिए चार लेखकों को 25-25 सौ के पुरस्कार दिए गए हैं। इनके नाम हैं : श्रीमती उषा ठाकुर (गुजराती), कु० कुर्रत-उल-एन-हैदर (उर्दू) श्री के० पी० वी० नम्बूदिरी (मलयालम) और श्री दर्शन सिंह (पंजाबी)। इसके अतिरिक्त 7 लेखकों को एक-एक हज़ार और 11 लेखकों को आठ-आठ सौ रुपए के पुरस्कार दिए गए हैं। जिन बाल-चित्रकारों को पुरस्कृत किया गया है उन्हें कृष्ण सागर के निकट आर्टेक के पायनियर शिविर में एक माह की छुट्टी बिताने का अवसर मिलेगा।

सोवियत मध्य-एशिया में संस्कृत के दो प्राचीन ग्रंथ

भारतीय संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के निदेशक डा० लोकेशचन्द्र ने एक पत्रकार सम्मेलन में बताया कि सोवियत ताजिक जनतंत्र में संस्कृत भाषा के दो प्राचीन ग्रंथों की पांडुलिपियां मिली हैं। इनकी लिपि ब्राह्मी है। इनमें से एक ग्रंथ दो सौ पृष्ठों का है। भोज पत्र पर लिखे गए इन ग्रंथों के बारे में भाषाविदों का विचार है कि ये छठी-सातवीं शताब्दी के हैं। इन ग्रंथों पर सोवियत संघ के संस्कृतज्ञ विद्वान काम कर रहे हैं और आगामी दो-तीन वर्षों में ये प्रकाशित हो जाएंगे।

डा० लोकेशचन्द्र ने पत्रकारों को यह भी जानकारी दी कि जापान के ओयासन नगर में एक सौ से अधिक मंदिर हैं तथा एक हज़ार से भी अधिक वर्षों से यहां संस्कृत का पठन-पाठन हो रहा है। उन्होंने बताया कि ओयासन नगर तंत्रविद्या का केन्द्र है और गत नौ-सौ वर्षों से यहां अक्षय दीप जल रहा है।

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ0	मूल्य
राधाकृष्ण प्रकाशन, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6.				
स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएं	उर्मिला गुप्ता	शोध प्रबंध	372	16-00
नंददास	रूप नारायण	समालोचना	278	15-00
महादेवी	सं0 इंद्रनाथ मदान	,,	228	6-50
दिनकर	सं0 सावित्री सिन्हा	,,	237	6-50
राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परंपरा	अगर चंद नाहटा	,,	121	7-50
प्रसाद का गद्य	सूर्य प्रसाद दीक्षित	,,	137	4-50
हिंदी उपन्यास-नारी चित्रण	बिंदु अग्रवाल	शोध प्रबंध	451	22-50
बिहारी	सं0 ओम प्रकाश	समालोचना	187	6-50
शिक्षा तथा मनोविज्ञान में अनुसंधानोपयोगी सांख्यिकी	मनमोहन वर्मा	सांख्यिकी	130	4-50
विनोद पुस्तक मंदिर, डा0 रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2.				
भूषण और उनका काव्य	डा0 राजमल बोरा	शोध प्रबंध	403	15-00
हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास	राजनाथ शर्मा	साहित्य का इतिहास	816	11-00
सूफ़ी काव्य विमर्श	डा0 श्याम मनोहर पांडेय	समालोचना	248	6-00
हिंदी और तेलुगु वैष्णव भक्ति साहित्य - तुलनात्मक अध्ययन	डा0 के0 रामनाथन	शोध प्रबंध	471	15-00
आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6.				
मैं अछूत हूं	विष्णु प्रभाकर	गांधी विचार	108	1-00
सर्वोदय की ओर	विश्वनाथ टंडन	,,	103	1-00
गरीब की पुकार	सुरेश भाई	,,	158	2-00

गांधी जी के सान्निध्य में	प्रभाकर दिवाण	गांधी विचार	108	1-00
भारत सिंधु	अरुण	प्रागैतिहासिक उपन्यास	368	12-00

हिंदी साहित्य भंडार, गंगा प्रसाद रोड, लखनऊ :

श्रीकृष्ण चरित	पं० रूप नारायण पांडेय	प्रबंध काव्य	301	4-50
शिक्षण कला एवं हिंदी शिक्षण	डॉ० रामखेलावन चौधरी	शिक्षा शास्त्र	465	8-50
हिंदी साहित्य में हास्य और व्यंग्य	सं० प्रेम नारायण टंडन	समीक्षा	504	10-00
निमाड़ के संत कवि सिंगाजी	डा० रमेश चंद्र गंगराड़े	शोध प्रबंध	117	8-00
महाकवि सुब्रह्मण्य भारती एवं महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा० पी० जयरामन	,,	560	20-00
हिंदी और तेलुगु के कृष्ण काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा० एस० एस० दक्षिणामूर्ति	शोध प्रबंध	421	20-00
स्वतंत्र समाज की शिक्षण पद्धति	डा० वि०के० जवली	शिक्षा शास्त्र	378	10-00
हिंदी और तेलुगु के मध्यकालीन राम साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति	शोध प्रबंध	416	15-00
पंच प्रसून	तेज नारायण टंडन		-	6-85
कुरुक्षेत्र जागता है	एन० चंद्रशेखरन नायर	नाटक	132	2-00
नेहरू अंतिम झलक	डा० प्रेमनारायण टंडन	एकांकी	117	2-50
दक्षिण की भाषाएं और उनका साहित्य	जी० सुंदररेड्डी	भाषा शास्त्र	204	7-00

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. **अपना हृदय सबल बनाइए :** ले० वी जेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5-00
2. **सिखों का इतिहास :** ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. **हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक** पृ० 165 मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. **व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश** पृ० 324 मूल्य 4-50
2. **शब्दार्थ मीमांसा :** ले० रामचन्द्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. **शांति-रक्षा अंक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 148 मूल्य 4-50
2. **द्विवेदी स्मृति विशेषांक :** आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 270 मूल्य 12-50
3. **संकलन** पृ० 580 मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)

वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. **मानक देवनागरी**
3. **Standard Devanagari Script**
4. **Devanagari Through the Ages**
5. **देवनागरी लेखन विधि चार्ट**
6. **परिवर्धित देवनागरी चार्ट**
7. **Standardisation of Hindi Spelling**
8. **हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण**

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

14.8.62

२४५६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 4

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 128.17।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 दिसंबर 1968 अंक 4

0 भाषा संगम (ज्ञानपीठ पुरस्कार)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (कुछ नवीन संस्थाओं का परिचय)

0 हिंदी

- भारत सरकार में
- राजधानी में
- प्रादेशिक अंचल में
- विश्वविद्यालयों में
- विदेशों में

0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था :

अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से शिक्षा में कम-से-कम सोलह वर्ष लगते हैं। यदि इन्हीं विषयों की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए, तो ज्यादा से ज्यादा दस वर्ष लगें। यह राय बहुत से अनुभवी शिक्षकों ने प्रकट की है। हज़ारों विद्यार्थियों के छः-छः वर्ष बचें तो अर्थ यह होता है कि कई हज़ार वर्ष जनता को मिल गए।

- द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन (1917) में दिए गए भाषण से

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

सन् 1967 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार पाने वाले कन्नड़ के महाकवि डा0 पुट्टप्प और गुजराती के शीर्षस्थ कवि श्री उमाशंकर जोशी के सम्मान में 20 दिसंबर को विज्ञान भवन में एक भव्य सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के अध्यक्ष उत्तरप्रदेश के राज्यपाल डा0 गोपाल रेड्डी ने दोनों राष्ट्रकवियों को पचास-पचास हज़ार रुपये के चैक के साथ वाग्देवी की कांस्य-प्रतिमा तथा स्वर्ण प्रशस्ति भेंट की। ज्ञानपीठ का यह तीसरा पुरस्कार है जो डा0 पुट्टप्प को उनके कन्नड़ महाकाव्य "रामायण दर्शनम्" पर और श्री उमा शंकर जोशी को उनके गुजराती काव्य-संग्रह "निशीथ" पर संयुक्त रूप से दिया गया है। इस अवसर पर अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए डा0 गोपाल रेड्डी ने कहा : इस राष्ट्रीय पुरस्कार ने देश की साहित्यिक और राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित किया है। अब यह पुरस्कार देश की मूलभूत एकता का प्रतीक माना जाने लगा है। पुरस्कृत ग्रंथों के हिंदी अनुवादों का विमोचन सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री हिदायतुल्ला ने किया।

डा0 पुट्टप्प का जन्म मैसूर राज्य के मालेनड नामक गांव में 29 दिसंबर 1904 को हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला में हुई और फिर वे मैसूर में आकर अध्ययन करने लगे। यहीं उन्हें विश्व के प्रसिद्ध लेखकों की कृतियों को पढ़ने का अवसर मिला। प्रकृति के सान्निध्य ने उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। प्रारंभ में अंग्रेजी में लिखते रहे किंतु अपने मित्र आयरलैंड के कवि श्री जे0 एच0 कज़िन के कहने पर अंग्रेज़ी छोड़ कर कन्नड़ में काव्य रचना करने लगे। मातृभाषा का सशक्त माध्यम पाकर उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का विकास हुआ और वे कविता, कहानी, नाटक, बाल-साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में उत्तरोत्तर उच्चकोटि का सर्जन करने लगे। अब तक उनकी कविता की 24, कहानी-उपन्यास की 5, बाल-साहित्य की 7, निबंध और समालोचना की 9, नाटक की 11

तथा जीवनी, अनुवाद आदि की 5 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें "पद्मभूषण" के अलंकार से तथा मैसूर सरकार ने "राष्ट्रकवि" के पद से सम्मानित किया है।

डा0 उमाशंकर जोशी का जन्म उत्तर-पूर्वी गुजरात में ईडर जिले के बामना नामक गांव में 21 जुलाई 1911 को हुआ। गांव में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सन् 1926 तक ईडर में स्कूल-शिक्षा प्राप्त करते रहे। अहमदाबाद में कुछ समय तक कालेज की शिक्षा प्राप्त करने के बाद सन् 1930 में गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में कूद पड़े। उनकी कविता के महान क्षण साबरमती जेल में आए। सन् 1931 में "विश्वशांति" शीर्षक से उनकी लंबी कविता प्रकाशित हुई जिसे उच्चकोटि के समालोचकों ने तत्काल सराहा। सन् 1934 में प्रकाशित "गंगोत्री" नामक काव्यकृति पर उन्हें गुजराती का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार "रणजीतराम सुवर्ण चंद्रक" प्राप्त हुआ। किंतु इससे उनके साहित्यिक सर्जन में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आई अपितु वे लगातार विभिन्न विधाओं में उच्चकोटि की रचनाएं देते रहे। अब तक उनके 8 काव्य-संग्रह, 2 एकांकी संग्रह, 4 कहानी संग्रह, 1 उपन्यास, 2 निबंध-संग्रह, 8 समालोचना-ग्रंथ, 2 अनुसंधान ग्रंथ, 2 अनूदित ग्रंथ और 3 संपादित ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

डा0 पुट्टप्प और उमाशंकर जोशी के स्वागत-सम्मान के लिए राजधानी में और भी समारोह हुए। 21 और 22 दिसंबर को पंजाब नेशनल बैंक के सभा भवन में भारतीय ज्ञानपीठ के तत्वावधान में दो दिन की विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था "कल्पनाशील साहित्य पर विज्ञान और प्रविधि का प्रभाव"। गोष्ठी में विभिन्न भाषाओं तथा विषयों के अनेक प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया।

हिमाचल प्रदेश संस्कृत सम्मेलन

हिमाचल प्रदेश संस्कृत सम्मेलन का अधिवेशन गत मास शिमला में हुआ। [illegible]बाड़ी हाल में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन सुविख्यात विद्वान श्री एस0एस0 ठाकुर ने किया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ राजगुरु पं0 तारादत्त जुब्बल को 501 रुपये तथा शाल भेंट किया गया और संस्कृत विद्यालय के छात्रों को पुरस्कार दिए गए।

स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिंदी विद्यापीठ, पय्यन्नूर

इस संस्था की स्थापना कुछ साल पहले हुई थी । सन् 1960 में यह पंजीकृत हुई । पय्यन्नूर में विद्यापीठ का एक केन्द्रीय विद्यालय है और अन्य चार स्थानों में इसकी शाखाएं हैं । इस समय लगभग 200 विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं । प्रत्येक विद्यालय में 5 घंटे तक पढ़ाई होती है और दक्षिण भरात हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार किए जाते हैं । विद्यालय का संचालन एक कार्य-समिति करती है जिसके अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष हर साल चुने जाते हैं । श्री वी० एम० गोविंदन नंबीशन इसके स्थापक सदस्य तथा मंत्री हैं । केंद्रीय विद्यालय में एक पुस्तकालय भी है ।

गांधी स्मारक हिंदी प्रचार मंडल, कीरिक्काड (केरल)

गांधी स्मारक हिंदी प्रचार मंडल एक पंजीकृत संस्था है । यह संस्था के० आर० स्मारक हिंदी महाविद्यालय का संचालन करती है । यहां विद्यालय का अपना भवन है । चार केन्द्रों पर हिंदी की कक्षाएं चलती हैं जिनमें लगभग 125 विद्यार्थी हिंदी पढ़ते हैं । हिंदी पढ़ाने का काम 1 पूर्णकालिक और 4 अंशकालिक अध्यापक करते हैं । जी के० एस० राघवन पिल्लै इस मंडल के कार्यभारी अधिकारी हैं ।

अहिंदी भाषी केन्द्रीय कर्मचारियों की निबंध प्रतियोगिता

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद केन्द्रीय सरकार के ऐसे कर्मचारियों के लिए मातृभाषा हिंदी नहीं है और जिनका हिंदी ज्ञान बी०ए० के स्तर से कम है, एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है । प्रतियोगिता की तिथि 5 और 6 जनवरी है । निबंध-लेखन के विषय हैं :- (1) हिंदी में कार्य करना सरल है; (2) विश्व शांति और हम; और (3) गांधी जी के सपनों का भारत । प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है । प्रतियोगी अपने नाम सीधे परिषद के कार्यालय, एस० वाई० 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली को भेज सकते हैं ।

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, पूर्वोत्तर रेल शाखा, लखनऊ का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह लखनऊ में 20 नवंबर को आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा0 बी0 गोपाल रेड्डी ने पुरस्कार वितरित किए। सरकारी काम-काज में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने के लिए जिला सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ को स्व0 कुंदन लाल श्रीवास्तव वैजयंती प्रदान की गई।

- हिंदी साहित्य सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा में स्वायत्तता के प्रश्न को लेकर जो विवाद खड़ा हुआ था वह अब समाप्त हो गया है। दोनों संस्थाओं के बीच हुए समझौते में यह व्यवस्था है कि सम्मेलन का अध्यक्ष राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का पदेन अध्यक्ष होगा और समिति का निर्वाचित अध्यक्ष सम्मेलन में वरिष्ठ उपाध्यक्ष का पद संभालेगा। समिति अपना अध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारी स्वयं चुना करेगी।

प्राचीन पांडुलिपियों का शोध संस्थान

ब्रज की प्राचीन एवं दुर्लभ पांडुलिपियों पर शोध के लिए वृन्दावन की श्रीनारायण धर्मशाला में एक शोध-संस्था की स्थापना की गई है। इस संस्थान का उद्घाटन केन्द्रीय पर्यटन और सिविल विमानन मंत्री डा0 कर्णसिंह ने किया। शोध-संस्थान के अंतर्गत पांडुलिपियों के एक संग्रहालय की स्थापना भी की गई है। इसमें दुर्लभ तथा जीर्ण-शीर्ण पांडुलिपियों को सुरक्षित रखा जा सकेगा। इस संस्थान की स्थापना डा0 रामदास गुप्त ने की है। गुप्त जी आजकल लंदन विश्वविद्यालय के "स्कूल आफ ओरिएण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज़" विभाग में हिंदी प्राध्यापक के पद पर काम कर रहे हैं। संस्थान में देश-विदेश से आए हुए शोधार्थियों एवं दर्शकों के आवास की व्यवस्था भी है।

श्री अज्ञेय को "साहित्य वाचस्पति" की उपाधि

हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ने हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री अज्ञेय को सम्मेलन की सर्वोच्च उपाधि "साहित्य वाचस्पति" से सम्मानित करने का निश्चय किया है। यह उपाधि उन्हें जनवरी 1969 के दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रदान की जाएगी।

0 हिंदी

भारत सरकार में

पुस्तकालय विज्ञान शब्दावली संगोष्ठी

शिक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से 16 दिसंबर से 20 दिसंबर 1968 तक पुस्तकालय विज्ञान शब्दावली संबंधी एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में लगभग 1400 शब्दों पर विचार किया गया । संगोष्ठी का समापन करते हुए शिक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेर सिंह ने पुस्तकालय विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला और इस विषय के विशेषज्ञों तथा विद्वानों से अनुरोध किया कि वे अनुवाद तथा मौलिक लेखन द्वारा पुस्तकालय विज्ञान को समृद्ध बनाएं ।

आयोग ने इस विषय के लगभग 5 हज़ार शब्द बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है । इसमें से लगभग 2 हज़ार शब्दों को अंतिम रूप दिया जा चुका है ।

भाषा शिक्षक सम्मेलन

शिक्षा मंत्रालय की ओर से गत मास नई दिल्ली में देश भर के शिक्षाविदों तथा भाषा शिक्षकों का तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया । इसमें लगभग 30 शिक्षाविदों ने भाग लिया । सम्मेलन ने यह सुझाव दिया है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक दूसरी भाषा के रूप में हिंदी तथा अन्य भाषाओं को पढ़ाने के लिए साल में कम से कम 400 घंटे दिए जाने चाहिए । अंग्रेज़ी की शिक्षा के लिए साल में 600 घंटे निर्धारित किए जाने चाहिए । अंग्रेज़ी की शिक्षा छठी कक्षा से पहले शुरु नहीं होनी चाहिए । छठी कक्षा से शुरु हो कर उसका अध्ययन हाई स्कूल तक जारी रहना चाहिए ।

संसद समाचार

- लोक सभा में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में रक्षा उपमंत्री श्री एम० आर० कृष्ण ने बताया कि भारत सरकार फ्रांस सरकार के इस सुझाव को स्वीकार नहीं करती कि एन० सी० सी० के हिंदी आदेशों को अंग्रेज़ी में बदल दिया जाए । उन्होंने बताया कि ये आदेश एन-सी० सी० और सेना दोनों के लिए हैं । गत दस वर्षों से इनका प्रयोग हो रहा है और इसमें किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई है ।

- रक्षा उत्पादन मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र ने लोकसभा में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि गृह मंत्रालय ने 6 जुलाई 1968 के एक परिपत्र द्वारा रक्षा संगठनों के सभी कार्यालयों को हिंदी के प्रयोग के संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं। श्री मिश्र ने बताया कि अब तक रक्षा मंत्रालय तथा उससे संबद्ध कार्यालयों के 1580 मानक फार्मों का हिंदी अनुवाद हो चुका है। लगभग 2770 फार्मों का हिंदी अनुवाद शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के परामर्श से किया जा रहा है।

- उप-प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने संसद-सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा लिखे गए पत्र के उत्तर में यह आश्वासन दिया है कि भविष्य में स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में हिंदी में हस्ताक्षर करने पर कोई बाधा नहीं होगी। गत मास वयोवृद्ध विद्वान चिकित्सक श्री रामगोपाल शास्त्री को हिंदी में हस्ताक्षर करने के लिए स्टेट बैंक की एक शाखा में दो घंटे परेशान होना पड़ा था। इस संबंध में श्री शालवाले ने उपप्रधान मंत्री को एक पत्र लिखा था।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की गतिविधि

आधार शब्दावली का निर्माण

निदेशालय ने लगभग 20 हज़ार शब्दों की एक आधार-शब्दावली तैयार की है। इसे विशेषज्ञ समिति ने तीन बैठकों में विचार करने बाद अनुमोदित कर दिया है। यह शब्दावली हिंदी से हिंदीतर भारतीय भाषाओं के द्विभाषी। त्रिभाषी कोशों के निर्माण में एकरूपता की दृष्टि से, आधार का काम देगी। कोशों में अंग्रेजी पर्याय भी दिए जायेंगे। इन कोशों के निर्माण की योजना शिक्षा मंत्रालय के विचाराधीन है।

हिंदी टाइपराइटर कुंजीपटल में संशोधन

सन् 1964 में भारत सरकार द्वारा घोषित हिंदी टाइपराइटर कुंजीपटल के संबंध में विभिन्न सूत्रों से प्राप्त सुझावों पर विचार करने के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा नियुक्त समिति ने प्रमुख टाइपराइटर निर्माताओं से परामर्श करके हिंदी टाइपराइटर के कुंजीपटल में कुछ परिवर्तन करने की सिफारिश की है। ये सिफारिशें सरकार के विचाराधीन हैं। जनवरी 1969 के अंत तक इस विषय में सरकार का निर्णय घोषित होने की संभावना है।

*राजधानी में

साहित्य कला परिषद की स्थापना

दिल्ली प्रशासन की कार्यकारी परिषद ने एक प्रस्ताव पास करके यह निश्चय किया है कि दिल्ली में साहित्यकला परिषद की स्थापना की जाए । इस परिषद का काम दिल्ली के श्रेष्ठ कलाकारों को पुरस्कृत करना, श्रेष्ठ ग्रंथों का प्रकाशन करना, भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों के हिंदी अनुवाद तैयार करवाना, अंतर्ज्यीय स्तर पर साहित्यिक सहयोग स्थापित करना तथा साहित्यिक गोष्ठियां और कला प्रदर्शनियां आदि आयोजित करना होगा । परिषद के अधिक से अधिक 25 सदस्य होंगे ।

– दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने हिंदी फिल्मों के सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री महेन्द्र कपूर का, राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष में, अभिनंदन किया । 26 नवंबर को आयोजित इस समारोह में राजधानी के अनेक साहित्यकार और विद्वान सम्मिलित हुए । समारोह की अध्यक्षता महापौर लाला हंसराज ने की ।

– श्यामलाल कालेज, शाहदरा की हिंदी परिषद का उद्घाटन करते हुए हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री जैनेन्द्र कुमार ने कहा कि हिंदी किसी व्यक्ति अथवा अंचल विशेष के घेरे में बंधी न होने के कारण सार्वदेशिक और सार्वजनिक भाषा है ।

– दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, चांदनी चौक मंडल की ओर से गणतंत्र दिवस के अवसर पर इस वर्ष भी हिंदी नामपट्ट प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी । प्रतियोगिता में भाग लेने की अंतिम तारीख 4 जनवरी है ।

– असमिया ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार साहित्यरथी श्री लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ को उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 24 नवंबर को नई दिल्ली में एक समारोह आयोजित किया गया । समारोह में राजधानी के अनेक विद्वान तथा साहित्यकार शामिल हुए । राष्ट्रपति डा0 जाकिर हुसैन ने श्री बेजबरुआ को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ जैसे महान साहित्यकारों पर सब का अधिकार होता है । हम उन पर गर्व करते हैं ।

* प्रादेशिक अंचल में

केरल :

केरल के शिक्षा मंत्री श्री सी0 एच0 मोहम्मद कोया ने राज्य विधान सभा में कहा है कि केरल सरकार राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए हिंदी के अध्यापन को आवश्यक मानती है। राज्य सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार कर लिया है और वह मानती है कि हिंदी का अध्ययन केरल राज्य के अपने हित में है।

- गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित 'राम चरित मानस' के मलयालम अनुवाद का विमोचन केरल के राज्यपाल श्री विश्वनाथ ने 31 दिसंबर, 1968 को त्रिवेन्द्रम में किया। इस ग्रंथ का अनुवाद मलयालम के प्रसिद्ध कवि श्री वेण्णिक्कुलम गोपाल कुरुप ने किया है।

पंजाब :

पंजाब के राज्यपाल डा0 पावटे के निजी सलाहकार ने पत्रकारों को सूचना दी है कि पंजाब सरकार के सरकारी कैलेंडर तथा डायरियां पंजाबी के साथ-साथ हिंदी में भी मुद्रित की जाएंगी। इससे पहले पंजाब सरकार ने यह निर्णय किया था कि सरकारी कैलेंडर और डायरियां पंजाबी और अंग्रेजी में मुद्रित होंगी।

- पंजाब के राज्यपाल डा0 पावटे ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा है कि राष्ट्रपति शासन लागू होने से राज्य की भाषा नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है तथा पंजाबी के विकास के लिए हर संभव उपाय किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि पंजाब और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को पंजाबी भाषा के विकास के लिए पंजाब सरकार ने हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया है। विश्वविद्यालय स्तर पर पंजाबी को शिक्षा के माध्यम के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार अपने हिस्से के रूप में पच्चीस लाख रुपये देने की व्यवस्था कर रही है। केंद्रीय सरकार से राज्य को इस प्रयोजन के लिए एक करोड़ रुपये मिलने की आशा है। चंडीगढ़ स्थित सचिवालय और विभागीय कार्यालयों में लगभग चार हजार सरकारी कर्मचारियों को टंकण, आशुलेखन, टिप्पण और प्रारूप लेखन आदि का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। पंजाबी के लगभग 5200 टाइपराइटर वितरित

किए जा चुके हैं तथा और अधिक टाइपराइटर प्राप्त किए जा रहे हैं।

उत्तरप्रदेश :

हरिद्वार नगरपालिका द्वारा केन्द्रीय परिवहन और जहाजरानी मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव के नागरिक अभिनंदन के लिए एक समारोह का आयोजन किया। समारोह में भाषण करते हुए डा0 राव ने कहा : हिंदी आगामी 15-20 वर्षों में न केवल देश की राष्ट्रभाषा के रूप में सर्वत्र मान्य होगी बल्कि अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप में भी इसे मान्यता प्राप्त हो जाएगी। प्रजातंत्र में बहुमत की भाषा ही राष्ट्रभाषा बन सकती है। हिंदी भाषियों को आवेश में न आकर धैर्य से काम लेना चाहिए और किसी हिंदीतर भाषा को अवश्य सीखना चाहिए।

राजस्थान :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने जयपुर के कामर्स कालेज के छात्र संघ का उद्घाटन करते हुए कहा : अंग्रेजी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए किंतु उसे शिक्षा के माध्यम के रूप में चालू रखना अनुचित होगा। जब तक लोकभाषा को ज्ञान-प्राप्ति की भाषा नहीं बनाया जाएगा तब तक ज्ञान आत्मसात् नहीं होगा और विद्यार्थी में मौलिक विचार पैदा नहीं होंगे। यदि इस बात की ओर हमने ध्यान नहीं दिया तो देश की शिक्षा अंधकार के गर्त में चली जाएगी। यह बात गलत है कि अंग्रेज़ी से भारत की एकता बनी है और बनी रह सकती है। यह भी एक भ्रम है कि अंग्रेज़ी विज्ञान की भाषा है। रूस, जर्मनी और जापान में वैज्ञानिक उन्नति अंग्रेज़ी भाषा के कारण नहीं हुई है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार संसार के वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य का 60 प्रतिशत अंश रूसी भाषा में है।

- बीकानेर (राजस्थान) के क्षेत्रीय राजकीय पुस्तकालय में गत मास एक चित्र तथा पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में स्थानीय लेखकों तथा प्रकाशकों की पुस्तकों के अतिरिक्त बाल-साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तकों को भी प्रदर्शित किया गया।

हरियाणा :

भारतीय साहित्य परिषद की हरियाणा प्रदेश शाखा का एक दिवसीय सम्मेलन 2 दिसंबर को हिसार में हुआ । सम्मेलन ने हरियाणा सरकार के उस निर्णय की सराहना की जिसके अनुसार आगामी 26 जनवरी से हिंदी को पूर्ण रूप से सरकारी काम-काज की भाषा बना दिया जाएगा । सम्मेलन ने सिफारिश की है कि 26 जनवरी के बाद अंग्रेज़ी के प्रयोग की छूट को भी समाप्त किया जाना चाहिए । हिंदी को स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षा का माध्यम अविलंब बनाया जाना चाहिए और हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर की मौलिक और अनूदित पुस्तकों के प्रणयन के लिए ठोस प्रयत्न किए जाने चाहिए ।

- रेवाड़ी स्थित अहीर कालेज में 28 नवंबर, 1968 को समस्त हरियाणा के कालेज छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 10 कालेजों के 22 छात्रों ने भाग लिया । पुरस्कार वितरण केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने किया । उसी दिन केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की रेवाड़ी शाखा के रेल कर्मचारियों की एक विशेष गोष्ठी हुई । इसकी अध्यक्षता प्रो० ए० चन्द्रहासन ने की । गोष्ठी में सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग के विषय पर विचार विनिमय हुआ ।

दिल्ली :

दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने विभागीय अध्यक्षों की एक बैठक में बताया कि दिल्ली प्रशासन की हिंदी लागू करने की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी का कामचलाऊ ज्ञान नहीं है उन्हें आवेदन करने पर तीन महीने तक की छूट दी जा सकेगी । नये भर्ती किए जाने वाले कर्मचारियों तथा दूसरे विभागों से प्रतिनियुक्त कर्मचारियों के लिए हिंदी के ज्ञान को अनिवार्य कर दिया गया है ।

- झांसी से 17 मील दूर राष्ट्रकवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त की जन्मस्थली में पुण्य जयंती समारोह के अवसर पर विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । कवि-सम्मेलन और विचारगोष्ठी के अतिरिक्त राष्ट्रकवि के साहित्य और चित्रों की प्रदर्शनी भी की गई ।

* विश्वविद्यालयों में

मलयालम सीखने वाले उत्तर भारतीय छात्रों को विदाई :

केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित एक सभा में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की केरल शाखा के उपाध्यक्ष संसद-सदस्य श्री चंद्रशेखरन ने कहा कि त्रिभाषा सूत्र को अमल में लाने तथा हिंदी के विकास के प्रयत्नों में दक्षिण भारतीय राज्यों में केरल अग्रणी रहा है । एक या अधिक दक्षिण भारतीय भाषाओं को अध्ययन का विषय बना कर ऐसा ही सहायक रुख हिन्दी-भाषी राज्यों को भी अपनाना चाहिए । इस सभा का आयोजन सर्वश्री शिवपाल त्यागी और छविनाथ पांडेय को विदाई देने के लिए किया गया था । लखनऊ तथा बनारस विश्वविद्यालय के इन दो स्नातकोत्तर छात्रों को उत्तर प्रदेश सरकार ने 'राष्ट्रीय एकता वृद्धि के लिए भाषा कार्यक्रम' के अंतर्गत मलयालम के अध्ययन के लिए भेजा था ।

दक्षिण में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव :

कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा ने कुछ समय पहले दक्षिण के मैसूर राज्य में एक हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव रखा था । शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन, श्री निजलिंगप्पा और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डा० दौलतसिंह कोठारी के बीच इस संबंध में गत मास चर्चा हुई और यह निश्चय किया गया कि शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आंध्र, केरल, तमिलनाडु तथा मैसूर की राज्य-सरकारों से इस विषय में राय लेंगे और तत्पश्चात् हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का निश्चय किया जाएगा ।

बाल-साहित्य पर पी-एच०डी० की उपाधि :

सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभविद्यानगर (गुजरात) ने श्री मस्तराम कपूर द्वारा प्रस्तुत 'हिंदी बाल-साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन' शोध-प्रबंध को विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० उपाधि के लिए स्वीकार किया है ।

* विदेशों में

रूस में हिंदी रचनाओं के अनुवाद लोकप्रिय

सोवियत रूस के प्रकांड हिंदी पंडित डा0 वाई0 पी0 चेलिशेव ने पत्रकारों से हुई एक भेंट में बताया है कि रूस में हिंदी साहित्यकारों की कृतियों के अनुवाद बहुत लोकप्रिय हुए हैं। डा0 चेलिशेव मास्को के एशियाई देशों के संस्थान में भाषा शास्त्र तथा साहित्य विभाग के अध्यक्ष हैं। उनकी दो पुस्तकों पर इस वर्ष उन्हें सोवियत लैंड "नेहरू पुरस्कार" मिला है। इन पुस्तकों के नाम हैं "आधुनिक हिंदी कविता" और "हिंदी भाषा का संक्षिप्त इतिहास"। उन्होंने बताया कि एशियाई देशों के संस्थान के माध्यम से हम सोवियत जनता को भारतीय साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित कराना चाहते हैं। इस प्रयास में हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री अज्ञेय के उपन्यास "नदी के द्वीप" तथा उनके एक कविता संग्रह का रूसी अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है।

सूर सागर का रूसी भाषा में अनुवाद :

रूस की विदुषी श्रीमती साजानोवा नातालिया मिखाईलोवना जी इस समय भारत-सोवियत सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत भारत आई हुई हैं, गत तीन वर्षों से "सूर सागर" का रूसी भाषा में अनुवाद कर रही हैं। आशा है कि यह ग्रंथ आगामी दो-तीन वर्षों में प्रकाशित हो जाएगा।

हिंदी कवयित्री पर रूस में शोध-कार्य :

उजबेकिस्तान की विज्ञान अकादमी के पूर्व विद्या संस्थान की वैज्ञानिक स्वेतलाना येनाकीवा ने प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री स्व0 सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं का अध्ययन कर एक शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है।

- उर्दू के महाकवि मिर्ज़ा गालिब के शताब्दी-समारोह के अवसर पर ईरान सरकार ने मिर्ज़ा गालिब की सारी रचनाओं का संकलन फारसी में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। ईरान के शाह ने भारत के औद्योगिक विकास मंत्री श्री

फखरुद्दीन अली अहमद से जो ईरान के दौरे पर गए थे इस बारे में विचार-विमर्श किया है । श्री फखरुद्दीन अली अहमद गालिब शताब्दी समारोह समिति के सचिव हैं ।

यूट्रेक्ट के विश्वविद्यालय में भारतीय आर्य भाषाओं का अध्ययन :

भारत की आधुनिक भाषाओं, विशेष रूप से हिन्दी, के अध्ययन के लिये हालैंड के यूट्रेक्ट विश्वविद्यालय में दो पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं । पहला पाठ्यक्रम उन लोगों के लिये है जो यह भाषा सीखना चाहते हैं । दूसरा पाठ्यक्रम उच्च स्तर के अध्ययन के लिये है । ये दोनों पाठ्यक्रम सन् 1957 से 1961 तक डाक्टर जायसवाल की अध्यक्षता में चले । बाद में यह कार्य श्री लाइडन और डा0 हिस्टरमन करते रहे और अब डा0 पी0 गैफके इसे चला रहे हैं । पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी साहित्य के इतिहास और बंगला साहित्य के इतिहास तथा सभ्यता पर पुस्तकें लिखी गई हैं ।

इन भाषाओं के अध्ययन के अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय में अनुसन्धान का कार्य भी किया जा रहा है । डा0 गैफके ने हिन्दी की वाक्य रचना आदि के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी है । बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों और कथा साहित्य पर भी कुछ पुस्तकें लिखी गई हैं ।

पिछली शताब्दी में भारत से बहुत से लोग सूरीनाम में जाकर बस गए थे । इन लोगों के लोकगीतों को इकट्ठा कर उन पर एक निबन्ध तैयार किया गया है । यह जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि इन गीतों का भारतीय गीतों से कितना सम्बन्ध है । इन गीतों के कई टेप तैयार कराए गये हैं और अनुसन्धान कार्य के लिये उनसे सहायता ली जा रही है ।

0 नए प्रकाशन

गुरदास कपूर एंड सन्स, 3823 चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
अमर दीप	क्षेमचंद्र सुमन	जीवनी संग्रह	176	3-50
मंत्र सूत्र	राजेन्द्र अवस्थी	उपन्यास	172	3-50
संयुक्त राष्ट्र संघ	श्रीमती प्रभा चौहान	राजनीति	159	5-00
किस को नमन करूं	प्रभाकर द्विवेदी	उपन्यास	158	[illegible]
ज्योति जवाहर	देवी प्रसाद राही	खण्ड काव्य	152	5-00
थिरकते पैर	श्रीचंद जैन	संस्कृति	136	5-00
पारिजातहरण	सम्पादन : श्रीकृष्ण नंदन पीयूष	नाटक	170	5-00

हिन्द पाकेट बुक्स, जी0टी0 रोड़, शाहदरा, दिल्ली-22 :

दिल जले की आह	जी0 पी0 श्रीवास्तव	उपन्यास	175	2-00
योग के आसन	श्रीपाद दा0 सातवलेकर	योग चर्चा	173	2-00
फिर दीप जलेगा	नीरज	गीत संग्रह	176	2-00
परछाई	विष्णु प्रभाकर	उपन्यास	108	1-00
सफेद फूल	कृश्न चंदर	कहानी संग्रह	169	2-00
बासठ दिन	दत्त भारती	उपन्यास	176	2-00
धूप छांव	गुरुदत्त	उपन्यास	279	3-00
तरंगों के प्रेत	चन्दर	उपन्यास	176	2-00

सामयिक प्रकाशन, 3543 जटवाड़ा, दरियागंज, दिल्ली-6 :

कार्यालय कोश	गोपीनाथ श्रीवास्तव	कोश	302	12-00
गुड़ियों का खेल	समरेश वसु	उपन्यास	179	5-00
समाज मनोविज्ञान	कृष्णदत्त द्विवेदी	समाजशास्त्र	276	6-00

राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-7 :

लालसा	एफ0 स्काट फिट्जगेराल्ड	उपन्यास	243	6-00
परिवार चिकित्सा	डा0 युद्धवीर सिंह	चिकित्सा	148	3-50

महान प्रेमी और उनकी प्रेमिकाएं	इलाचंद्र जोशी	कहानी	192	4-50
न आने वाला कल	मोहन राकेश	उपन्यास	207	6-00
सात घूंघट वाला मुखड़ा	अमृत लाल नागर	उपन्यास	156	4-50
केशव का आचार्यत्व	डा० विजयपाल सिंह	शोध निबंध	486	20-00
नानी की कहानियां	रूप नारायण चतुर्वेदी	बाल-साहित्य	56	1-50

मासिक विवेक विकास, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-4 :

विवेक विकास	सं० श्रीमती इन्दिरा मायाराम	नवसाक्षर प्रौढ़ोपयोगी मासिक	-	6-00 (वार्षिक)

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिन्दी मासिक पत्रिका

यूनेस्को कूरियर

मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री अति उत्कृष्ट और प्रशंसा प्राप्त

एक प्रति : एक रुपया

वार्षिक शुल्क 10-50 रुपये
शैक्षिक संस्थाओं एवं
पुस्तकालयों के लिए : 9-50 रुपये

कम से कम 5 वार्षिक ग्राहक बनाने वालों को कमीशन दिया जाएगा ।

जनवरी, 1968 से ग्राहक बनने वालों को पिछले 5 अंक मुफ्त भेजे जाएंगे ।

नमूने की प्रति के लिए 80 पैसे के डाक टिकट भेजें । विवरण के लिए लिखें :

प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
केंद्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय),
वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

रजि. सं. आर. एन्.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए : ले० वी जेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5-00
2. सिखों का इतिहास : ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक पृ० 165 मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश पृ० 324 मूल्य 4-50
2. शब्दार्थ मीमांसा : ले० रामचन्द्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 148 मूल्य 4-50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में पृ० 270 मूल्य 12-50
3 संकलन पृ० 580 मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)
वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script
4. Devanagari Through the Ages
5. देवनागरी लेखन विधि चार्ट
6. परिवर्धित देवनागरी चार्ट
7, Standardisation of Hindi Spelling
8 हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

12-4

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 अंक 4

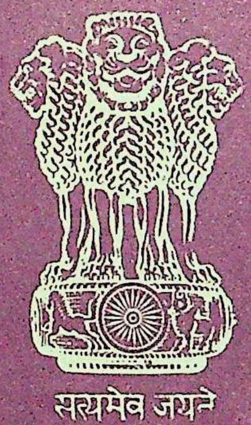

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 3 दिसंबर 1968 अंक 4

0 भाषा संगम (ज्ञानपीठ पुरस्कार)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (कुछ नवीन संस्थाओं का परिचय)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

गांधी जी ने कहा था :

अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से शिक्षा में कम-से-कम सोलह वर्ष लगते हैं। यदि इन्हीं विषयों की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए, तो ज्यादा से ज्यादा दस वर्ष लगेंगे। यह राय बहुत से अनुभवी शिक्षकों ने प्रकट की है। हज़ारों विद्यार्थियों के छः-छः वर्ष बचने का अर्थ यह होता है कि कई हज़ार वर्ष जनता को मिल गए।

- द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन (1917) में दिए गए भाषण से

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

0 भाषा संगम

सन् 1967 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार पाने वाले कन्नड़ के महाकवि डा0 पुट्टप्प और गुजराती के शीर्षस्थ कवि श्री उमाशंकर जोशी के सम्मान में 20 दिसंबर को विज्ञान भवन में एक भव्य सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया । समारोह के अध्यक्ष उत्तरप्रदेश के राज्यपाल डा0 गोपाल रेड्डी ने दोनों राष्ट्रकवियों को पचास-पचास हज़ार रुपये के चैक के साथ वाग्देवी की कांस्य-प्रतिमा तथा स्वर्ण प्रशस्ति भेंट की । ज्ञानपीठ का यह तीसरा पुरस्कार है जो डा0 पुट्टप्प को उनके कन्नड़ महाकाव्य "रामायण दर्शनम्" पर और श्री उमा शंकर जोशी को उनके गुजराती काव्य-संग्रह "निशीथ" पर संयुक्त रूप से दिया गया है । इस अवसर पर अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए डा0 गोपाल रेड्डी ने कहा : इस राष्ट्रीय पुरस्कार ने देश की साहित्यिक और राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित किया है । अब यह पुरस्कार देश की मूलभूत एकता का प्रतीक माना जाने लगा है । पुरस्कृत ग्रंथों के हिंदी अनुवादों का विमोचन सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री हिदायतुल्ला ने किया ।

डा0 पुट्टप्प का जन्म मैसूर राज्य के मालेनाड नामक गांव में 29 दिसंबर 1904 को हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला में हुई और फिर वे मैसूर में आकर अध्ययन करने लगे । यहीं उन्हें विश्व के प्रसिद्ध लेखकों की कृतियों को पढ़ने का अवसर मिला । प्रकृति के सान्निध्य ने उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित किया । प्रारंभ में अंग्रेजी में लिखते रहे किंतु अपने मित्र आयरलैंड के कवि श्री जे0 एच0 कज़िन के कहने पर अंग्रेज़ी छोड़ कर कन्नड़ में काव्य रचना करने लगे । मातृभाषा का सशक्त माध्यम पाकर उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का विकास हुआ और वे कविता, कहानी, नाटक, बाल-साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में उत्तरोत्तर उच्चकोटि का सर्जन करने लगे । अब तक उनकी कविता की 24, कहानी-उपन्यास की 5, बाल-साहित्य की 7, निबंध और समालोचना की 9, नाटक की 11

तथा जीवनी, अनुवाद आदि की 5 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें "पद्मभूषण" के अलंकार से तथा मैसूर सरकार ने "राष्ट्रकवि" के पद से सम्मानित किया है।

डा0 उमाशंकर जोशी का जन्म उत्तर-पूर्वी गुजरात में ईडर जिले के बामना नामक गांव में 21 जुलाई 1911 को हुआ। गांव में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सन् 1926 तक ईडर में स्कूल-शिक्षा प्राप्त करते रहे। अहमदाबाद में कुछ समय तक कालेज की शिक्षा प्राप्त करने के बाद सन् 1930 में गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में कूद पड़े। उनकी कविता के महान क्षण साबरमती जेल में आए। सन् 1931 में "विश्वशांति" शीर्षक से उनकी लंबी कविता प्रकाशित हुई जिसे उच्चकोटि के समालोचकों ने तत्काल सराहा। सन् 1934 में प्रकाशित "गंगोत्री" नामक काव्यकृति पर उन्हें गुजराती का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार "रणजीतराम सुवर्ण चंद्रक" प्राप्त हुआ। किंतु इस से उनके साहित्यिक सर्जन में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आई अपितु वे लगातार विभिन्न विधाओं में उच्चकोटि की रचनाएं देते रहे। अब तक उनके 8 काव्य-संग्रह, 2 एकांकी संग्रह, 4 कहानी संग्रह, 1 उपन्यास 2 निबंध-संग्रह, 8 समालोचना-ग्रंथ, 2 अनुसंधान ग्रंथ, 2 अनूदित ग्रंथ और 3 संपादित ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

डा0 पुट्टप्प और उमाशंकर जोशी के स्वागत-सम्मान के लिए राजधानी में और भी समारोह हुए। 21 और 22 दिसंबर को पंजाब नेशनल बैंक के सभा भवन में भारतीय ज्ञानपीठ के तत्वावधान में दो दिन की विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था "कल्पनाशील साहित्य पर विज्ञान और प्रविधि का प्रभाव।" गोष्ठी में विभिन्न भाषाओं तथा विषयों के अनेक प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया।

हिमाचल प्रदेश संस्कृत सम्मेलन

हिमाचल प्रदेश संस्कृत सम्मेलन का अधिवेशन गत मास शिमला में हुआ। कालीबाड़ी हाल में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन सुविख्यात विद्वान श्री एस0एस0 ठाकुर ने किया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ राजगुरु पं0 तारादत्त जुब्बल को 501 रुपये तथा शाल भेंट किया गया और संस्कृत विद्यालय के छात्रों को पुरस्कार दिए गए।

स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिंदी विद्यापीठ, पय्यन्नूर

इस संस्था की स्थापना कुछ साल पहले हुई थी । सन् 1960 में यह पंजीकृत हुई । पय्यन्नूर में विद्यापीठ का एक केन्द्रीय विद्यालय है और अन्य चार स्थानों में इसकी शाखाएं हैं । इस समय लगभग 200 विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं । प्रत्येक विद्यालय में 5 घंटे तक पढ़ाई होती है और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार किए जाते हैं । विद्यालय का संचालन एक कार्य-समिति करती है । श्री वी० एम० गोविंदन नंबीशन इसके स्थापक सदस्य तथा मंत्री हैं । केंद्रीय विद्यालय में एक पुस्तकालय भी है ।

गांधी स्मारक हिंदी प्रचार मंडल, कीरिक्काड (केरल)

गांधी स्मारक हिंदी प्रचार मंडल एक पंजीकृत संस्था है । यह संस्था के० आर० स्मारक हिंदी महाविद्यालय का संचालन करती है । यहां विद्यालय का अपना भवन है । चार केन्द्रों पर हिंदी की कक्षाएं चलती हैं जिनमें लगभग 125 विद्यार्थी हिंदी पढ़ते हैं । हिंदी पढ़ाने का काम 1 पूर्णकालिक और 4 अंशकालिक अध्यापक करते हैं । श्री के० एस० राघवन पिल्लै इस मंडल के कार्यभारी अधिकारी हैं ।

अहिंदी भाषी केन्द्रीय कर्मचारियों की निबंध प्रतियोगिता

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद केन्द्रीय सरकार के ऐसे कर्मचारियों के लिए जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है और जिनका हिंदी ज्ञान बी०ए० के स्तर से कम है, एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है । प्रतियोगिता की तिथि 5 और 6 जनवरी है । निबंध-लेखन के विषय हैं :- (1) हिंदी में कार्य करना सरल है; (2) विश्व शांति और हम; और (3) गांधी जी के सपनों का भारत । प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है । प्रतियोगी अपने नाम सीधे परिषद के कार्यालय, एक्स० वाई० 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली को भेज सकते हैं ।

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, पूर्वोत्तर रेल शाखा, लखनऊ का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह लखनऊ में 20 नवंबर को आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा0 बी0 गोपाल रेड्डी ने पुरस्कार वितरित किए। सरकारी काम-काज में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने के लिए जिला सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ को स्व0 कुंदन लाल श्रीवास्तव वैजयंती प्रदान की गई।

- हिंदी साहित्य सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा में स्वायत्तता के प्रश्न को लेकर जो विवाद खड़ा हुआ था वह अब समाप्त हो गया है। दोनों संस्थाओं के बीच हुए समझौते में यह व्यवस्था है कि सम्मेलन का अध्यक्ष राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का पदेन अध्यक्ष होगा और समिति का निर्वाचित अध्यक्ष सम्मेलन में वरिष्ठ उपाध्यक्ष का पद संभालेगा। समिति अपना अध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारी स्वयं चुना करेगी।

प्राचीन पांडुलिपियों का शोध संस्थान

ब्रज की प्राचीन एवं दुर्लभ पांडुलिपियों पर शोध के लिए वृन्दावन की श्रीनारायण धर्मशाला में एक शोध-संस्थानकी स्थापना की गई है। इस संस्थान का उद्घाटन केन्द्रीय पर्यटन और सिविल विमानन मंत्री डा0 कर्णसिंह ने किया। शोध-संस्थान के अंतर्गत पांडुलिपियों के एक संग्रहालय की स्थापना भी की गई है। इसमें दुर्लभ तथा जीर्ण-शीर्ण पांडुलिपियों को सुरक्षित रखा जा सकेगा। इस संस्थान की स्थापना डा0 रामदास गुप्त ने की है। गुप्त जी आजकल लंदन विश्वविद्यालय के "स्कूल आफ ओरिएण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज़" विभाग में हिंदी प्राध्यापक के पद पर काम कर रहे हैं। संस्थान में देश-विदेश से आए हुए शोधार्थियों एवं दर्शकों के आवास की व्यवस्था भी है।

श्री अज्ञेय को "साहित्य वाचस्पति" की उपाधि

हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ने हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री अज्ञेय को सम्मेलन की सर्वोच्च उपाधि "साहित्य वाचस्पति" से सम्मानित करने का निश्चय किया है। यह उपाधि उन्हें जनवरी 1969 के दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रदान की जाएगी।

0 हिंदी

भारत सरकार में

पुस्तकालय विज्ञान शब्दावली संगोष्ठी

शिक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से 16 से 20 दिसंबर 1968 तक पुस्तकालय विज्ञान शब्दावली संबंधी एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में लगभग 1400 शब्दों पर विचार किया गया । संगोष्ठी का समापन करते हुए शिक्षा राज्य मंत्री प्रो0 शेर सिंह ने पुस्तकालय विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला और इस विषय के विशेषज्ञों तथा विद्वानों से अनुरोध किया कि वे अनुवाद तथा मौलिक लेखन द्वारा पुस्तकालय विज्ञान को समृद्ध बनाएं ।

आयोग ने इस विषय के लगभग 5 हज़ार शब्द बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है । इसमें से लगभग 2 हज़ार शब्दों को अंतिम रूप दिया जा चुका है ।

भाषा-शिक्षक सम्मेलन

शिक्षा मंत्रालय की ओर से गत मास नई दिल्ली में देश भर के शिक्षाविदों तथा भाषा शिक्षकों का तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया । इसमें लगभग 30 शिक्षाविदों ने भाग लिया । सम्मेलन ने यह सुझाव दिया है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक दूसरी भाषा के रूप में हिंदी तथा अन्य भाषाओं को पढ़ाने के लिए साल में कम से कम 400 घंटे दिए जाने चाहिए । अंग्रेज़ी की शिक्षा के लिए साल में 600 घंटे निर्धारित किए जाने चाहिए । अंग्रेज़ी की शिक्षा छठी कक्षा से पहले शुरू नहीं होनी चाहिए । छठी कक्षा से शुरू हो कर उसका अध्ययन हाई स्कूल तक जारी रहना चाहिए ।

संसद समाचार

· लोक सभा में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में रक्षा उपमंत्री श्री एम0 आर0 कृष्ण ने बताया कि भारत सरकार मद्रास सरकार के इस सुझाव को स्वीकार नहीं करती कि एन0 सी0 सी0 के हिंदी आदेशों को अंग्रेज़ी में बदल दिया जाए । उन्होंने बताया कि ये आदेश एन-सी0 सी0 और सेना दोनों के लिए हैं । गत दस वर्षों से इनका प्रयोग हो रहा है और इसमें किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं आई है ।

- रक्षा उत्पादन मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र ने लोकसभा में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि गृह मंत्रालय ने 6 जुलाई 1968 के एक परिपत्र द्वारा रक्षा संगठनों के सभी कार्यालयों को हिंदी के प्रयोग के संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं। श्री मिश्र ने बताया कि अब तक रक्षा मंत्रालय तथा उससे संबद्ध कार्यालयों के 1580 मानक फार्मों का हिंदी अनुवाद हो चुका है। लगभग 2770 फार्मों का हिंदी अनुवाद शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के परामर्श से किया जा रहा है।

- उप-प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने संसद-सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा लिखे गए पत्र के उत्तर में यह आश्वासन दिया है कि भविष्य में स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में हिंदी में हस्ताक्षर करने पर कोई बाधा नहीं होगी। गत मास वयोवृद्ध विद्वान चिकित्सिक श्री रामगोपाल शास्त्री को हिंदी में हस्ताक्षर करने के लिए स्टेट बैंक की एक शाखा में दो घंटे परेशान होना पड़ा था। इस संबंध में श्री शालवाले ने उपप्रधान मंत्री को एक पत्र लिखा था।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की गतिविधि

आधार शब्दावली का निर्माण

निदेशालय ने लगभग 20 हज़ार शब्दों की एक आधार-शब्दावली तैयार की है। इसे विशेषज्ञ समिति ने तीन बैठकों में विचार करने बाद अनुमोदित कर दिया है। यह शब्दावली हिंदी से हिंदीतर भारतीय भाषाओं के द्विभाषी । त्रिभाषी कोशों के निर्माण में एकरूपता की दृष्टि से, आधार का काम देगी। कोशों में अंग्रेजी पर्याय भी दिए जायेंगे। इन कोशों के निर्माण की योजना शिक्षा मंत्रालय के विचाराधीन है।

हिंदी टाइपराइटर कुंजीपटल में संशोधन

सन् 1964 में भारत सरकार द्वारा घोषित हिंदी टाइपराइटर कुंजीपटल के संबंध में विभिन्न सूत्रों से प्राप्त सुझावों पर विचार करने के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा नियुक्त समिति ने प्रमुख टाइपराइटर निर्माताओं से परामर्श करके हिंदी टाइपराइटर के कुंजीपटल में कुछ परिवर्तन करने की सिफारिश की है। ये सिफारिशें सरकार के विचाराधीन हैं। जनवरी 1969 के अंत तक इस विषय में सरकार का निर्णय घोषित होने की संभावना है।

x. राजधानी में

साहित्य कला परिषद की स्थापना:

दिल्ली प्रशासन की कार्यकारी परिषद ने एक प्रस्ताव पास करके यह निश्चय किया है कि दिल्ली में साहित्यकला परिषद की स्थापना की जाए । इस परिषद का काम दिल्ली के श्रेष्ठ कलाकारों को पुरस्कृत करना, श्रेष्ठ ग्रंथों का प्रकाशन करना, भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों के हिंदी अनुवाद तैयार करवाना, अंतर्ज्यीय स्तर पर साहित्यिक सहयोग स्थापित करना तथा साहित्यिक गोष्ठियां और कला प्रदर्शनियां आदि आयोजित करना होगा । परिषद के अधिक से अधिक 25 सदस्य होंगे ।

— दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन ने हिंदी फिल्मों के सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री महेन्द्र कपूर का, राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में, अभिनंदन किया । 26 नवंबर को आयोजित इस समारोह में राजधानी के अनेक साहित्यकार और विद्वान सम्मिलित हुए । समारोह की अध्यक्षता महापौर लाला हंसराज ने की ।

— श्याम लाल कालेज, शाहदरा की हिंदी परिषद का उद्घाटन करते हुए हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री जैनेन्द्र कुमार ने कहा कि हिंदी किसी व्यक्ति अथवा अंचल विशेष के घेरे में बंधी न होने के कारण सार्वदेशिक और सार्वजनिक भाषा है ।

— दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, चांदनी चौक मंडल की ओर से गणतंत्र दिवस के अवसर पर इस वर्ष भी हिंदी नामपट्ट प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी । प्रतियोगिता में भाग लेने की अंतिम तारीख 4 जनवरी है ।

— असमिया के सुप्रसिद्ध साहित्यकार साहित्यरथी श्री लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ को उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 24 नवंबर को नई दिल्ली में एक समारोह आयोजित किया गया । समारोह में राजधानी के अनेक विद्वान तथा साहित्यकार शामिल हुए । राष्ट्रपति डा0 जाकिर हुसैन ने श्री बेजबरुआ को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ जैसे महान साहित्यकारों पर सब का अधिकार होता है । हम उन पर गर्व करते हैं ।

* प्रादेशिक अंचल में

केरल :

केरल के शिक्षा मंत्री श्री सी० एच० मोहम्मद कोया ने राज्य विधान सभा में कहा है कि केरल सरकार राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए हिंदी के अध्यापन को आवश्यक मानती है । राज्य सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार कर लिया है और वह मानती है कि हिंदी का अध्ययन केरल राज्य के अपने हित में है ।

– गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित 'राम चरित मानस' के मलयालम अनुवाद का विमोचन केरल के राज्यपाल श्री विश्वनाथ ने 31 दिसंबर, 1968 को त्रिवेन्द्रम में किया । इस ग्रंथ का अनुवाद मलयालम के प्रसिद्ध कवि श्री वेण्णिक्कुलम गोपाल कुरुप ने किया है ।

पंजाब :

पंजाब के राज्यपाल डा० पावटे के निजी सलाहकार ने पत्रकारों को सूचना दी है कि पंजाब सरकार के सरकारी कैलेंडर तथा डायरियां पंजाबी के साथ-साथ हिंदी में भी मुद्रित की जाएंगी । इससे पहले पंजाब सरकार ने यह निर्णय किया था कि सरकारी कैलेंडर और डायरियां पंजाबी और अंग्रेजी में मुद्रित होंगी ।

– पंजाब के राज्यपाल डा० पावटे ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा है कि राष्ट्रपति शासन लागू होने से राज्य की भाषा नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है तथा पंजाबी के विकास के लिए हर संभव उपाय किए जा रहे हैं । उन्होंने बताया कि पंजाब और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को पंजाबी भाषा के विकास के लिए पंजाब सरकार ने हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया है । विश्वविद्यालय स्तर पर पंजाबी को शिक्षा के माध्यम के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार अपने हिस्से के रूप में पच्चीस लाख रुपये देने की व्यवस्था कर रही है । केंद्रीय सरकार से राज्य को इस प्रयोजन के लिए एक करोड़ रुपये मिलने की आशा है । चंडीगढ़ स्थित सचिवालय और विभागीय कार्यालयों में लगभग चार हज़ार सरकारी कर्मचारियों को टंकण, आशुलेखन, टिप्पण और प्रारूप लेखन आदि का प्रशिक्षण दिया जा चुका है । पंजाबी के लगभग 5200 टाइपराइटर वितरित

किए जा चुके हैं तथा और अधिक टाइपराइटर प्राप्त किए जा रहे हैं ।

उत्तरप्रदेश :

हरिद्वार नगरपालिका द्वारा केन्द्रीय परिवहन और जहाजरानी मंत्री डा0 वी0के0आर0वी0 राव ने नागरिक अभिनंदन के लिए एक समारोह का आयोजन किया । समारोह में भाषण करते हुए डा0 राव ने कहा : हिंदी आगामी 15-20 वर्षों में न केवल देश की राष्ट्रभाषा के रूप में सर्वत्र मान्य होगी बल्कि अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप में भी इसे मान्यता प्राप्त हो जाएगी । प्रजातंत्र में बहुमत की भाषा ही राष्ट्रभाषा बन सकती है । हिंदी भाषियों को आवेश में न आकर धैर्य से काम लेना चाहिए और किसी हिंदीतर भाषा को अवश्य सीखना चाहिए ।

राजस्थान :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने जयपुर के कामर्स कालेज के छात्र संघ का उद्घाटन करते हुए कहा : अंग्रेजी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए किंतु उसे शिक्षा के माध्यम के रूप में चालू रखना अनुचित होगा । जब तक लोकभाषा को ज्ञान-प्राप्ति की भाषा नहीं बनाया जाएगा तब तक ज्ञान आत्मसात् नहीं होगा और विद्यार्थी में मौलिक विचार पैदा नहीं होंगे। यदि इस बात की ओर हमने ध्यान नहीं दिया तो देश की शिक्षा अंधकार के गर्त में चली जाएगी । यह बात गलत है कि अंग्रेज़ी से भारत की एकता बनी है और बनी रह सकती है । यह भी एक भ्रम है कि अंग्रेज़ी विज्ञान की भाषा है । रूस, जर्मनी और जापान में वैज्ञानिक उन्नति अंग्रेज़ी भाषा के कारण नहीं हुई है । यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार संसार के वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य का 60 प्रतिशत अंश रूसी भाषा में है ।

- बीकानेर (राजस्थान) के क्षेत्रीय राजकीय पुस्तकालय में गत मास एक चित्र तथा पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी में स्थानीय लेखकों तथा प्रकाशकों की पुस्तकों के अतिरिक्त बाल-साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तकों को भी प्रदर्शित किया गया ।

हरियाणा :

भारतीय साहित्य परिषद की हरियाणा प्रदेश शाखा का एक दिवसीय सम्मेलन 2 दिसंबर को हिसार में हुआ । सम्मेलन ने हरियाणा सरकार के उस निर्णय की सराहना की जिसके अनुसार आगामी 26 जनवरी से हिंदी को पूर्ण रूप से सरकारी काम-काज की भाषा बना दिया जाएगा । सम्मेलन ने सिफारिश की है कि 26 जनवरी के बाद अंग्रेज़ी के प्रयोग की छूट को भी समाप्त किया जाना चाहिए । हिंदी को स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षा का माध्यम अविलंब बनाया जाना चाहिए और हिंदी में विश्वविद्यालय स्तर की मौलिक और अनूदित पुस्तकों के प्रणयन के लिए ठोस प्रयत्न किए जाने चाहिए ।

- रेवाड़ी स्थित अहीर कालेज में 28 नवंबर, 1968 को समस्त हरियाणा के कालेज छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 10 कालेजों के 22 छात्रों ने भाग लिया । पुरस्कार वितरण केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने किया । उसी दिन केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की रेवाड़ी शाखा के रेल कर्मचारियों की एक विशेष गोष्ठी हुई । इसकी अध्यक्षता प्रो० ए० चन्द्रहासन ने की । गोष्ठी में सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग के विषय पर विचार विनिमय हुआ ।

दिल्ली :

दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने विभागीय अध्यक्षों की एक बैठक में बताया कि दिल्ली प्रशासन की हिंदी लागू करने की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी का काम चलाऊ ज्ञान नहीं है उन्हें आवेदन करने पर तीन महीने तक की छूट दी जा सकेगी । नये भर्ती किए जाने वाले कर्मचारियों तथा दूसरे विभागों से प्रतिनियुक्त कर्मचारियों के लिए हिंदी के ज्ञान को अनिवार्य कर दिया गया है ।

- झांसी से 17 मील दूर राष्ट्रकवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त की जन्म स्थली में पुण्य जयंती समारोह के अवसर पर विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । कवि-सम्मेलन और विचार-गोष्ठी के अतिरिक्त राष्ट्रकवि के साहित्य और चित्रों की प्रदर्शनी भी की गई ।

* विश्वविद्यालयों में

मलयालम सीखने वाले उत्तर भारतीय छात्रों को विदाई :

केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित एक सभा में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की केरल शाखा के उपाध्यक्ष संसद-सदस्य श्री चंद्रशेखरन ने कहा कि त्रिभाषा सूत्र को अमल में लाने तथा हिंदी के विकास के प्रयत्नों में दक्षिण भारतीय राज्यों में केरल अग्रणी रहा है। एक या अधिक दक्षिण भारतीय भाषाओं को अध्ययन का विषय बना कर ऐसा ही सहायक रुख हिन्दी-भाषी राज्यों को भी अपनाना चाहिए। इस सभा का आयोजन सर्वश्री शिवपाल त्यागी और छबिनाथ पांडेय को विदाई देने के लिए किया गया था। लखनऊ तथा बनारस विश्वविद्यालय के इन दो स्नातकोत्तर छात्रों को उत्तर प्रदेश सरकार ने 'राष्ट्रीय एकता वृद्धि के लिए भाषा कार्यक्रम' के अंतर्गत मलयालम के अध्ययन के लिए भेजा था।

दक्षिण में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव :

कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा ने कुछ समय पहले दक्षिण के मैसूर राज्य में एक हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव रखा था। शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन, श्री निजलिंगप्पा और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डा० दौलतसिंह कोठारी के बीच इस संबंध में गत मास चर्चा हुई और यह निश्चय किया गया कि शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आंध्र, केरल, तमिलनाडु तथा मैसूर की राज्य-सरकारों से इस विषय में राय लेंगे और तत्पश्चात हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का निश्चय किया जाएगा।

बाल-साहित्य पर पी-एच०डी० की उपाधि :

सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभविद्यानगर (गुजरात) ने श्री मस्तराम कपूर द्वारा प्रस्तुत 'हिंदी बाल-साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन' शोध-प्रबंध को विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकार किया है।

* विदेशों में

रूस में हिंदी रचनाओं के अनुवाद लोकप्रिय

सोवियत रूस के प्रकांड हिंदी पंडित डा0 वाइ0 पी0 चेलिशेव ने पत्रकारों से हुई एक भेंट में बताया है कि रूस में हिंदी साहित्यकारों की कृतियों के अनुवाद बहुत लोकप्रिय हुए हैं । डा0 चेलिशेव मास्को के एशियाई देशों के संस्थान में भाषा शास्त्र तथा साहित्य विभाग के अध्यक्ष हैं । उनकी दो पुस्तकों पर इस वर्ष उन्हें सोवियत लैंड "नेहरू पुरस्कार" मिला है । इन पुस्तकों के नाम हैं 'आधुनिक हिंदी कविता' और 'हिंदी भाषा का संक्षिप्त इतिहास' । उन्होंने बताया कि एशियाई देशों के संस्थान के माध्यम से हम सोवियत जनता को भारतीय साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित कराना चाहते हैं । इस प्रयास में हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री अज्ञेय के उपन्यास 'नदी के द्वीप' तथा उनके एक कविता संग्रह का रूसी अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है ।

सूर सागर का रूसी भाषा में अनुवाद :

रूस की विदुषी श्रीमती साजानोवा नातालिया मिखाईलोव्ना जो इस समय भारत-सोवियत सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत भारत आई हुई है, गत तीन वर्षों से 'सूर सागर' का रूसी भाषा में अनुवाद कर रही हैं । आशा है कि यह ग्रंथ आगामी दो-तीन वर्षों में प्रकाशित हो जाएगा ।

हिंदी कवयित्री पर रूस में शोध-कार्य :

उजबेकिस्तान की विज्ञान अकादमी के पूर्व विद्या संस्थान की वैज्ञानिक स्वेतलाना थेनाकोवा ने प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री स्व0 सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं का अध्ययन कर एक शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है ।

- उर्दू के महाकवि मिर्ज़ा गालिब के शताब्दी-समारोह के अवसर पर ईरान सरकार ने मिर्ज़ा गालिब की सारी रचनाओं का संकलन फारसी में प्रकाशित करने का निश्चय किया है । ईरान के शाह ने भारत के औद्योगिक विकास मंत्री श्री

फखरुद्दीन अली अहमद से जो ईरान के दौरे पर गए थे इस बारे में विचार-विमर्श किया है । श्री फखरुद्दीन अली अहमद गालिब शताब्दी समारोह समिति के सचिव हैं ।

यूट्रेख्ट के विश्वविद्यालय में भारतीय आर्य भाषाओं का अध्ययन :

भारत की आधुनिक भाषाओं, विशेष रूप से हिन्दी, के अध्ययन के लिये हालैंड के यूट्रेख्ट विश्वविद्यालय में दो पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं । पहला पाठ्यक्रम उन लोगों के लिये है जो यह भाषा सीखना चाहते हैं । दूसरा पाठ्यक्रम उच्च स्तर के अध्ययन के लिये है । दोनों पाठ्यक्रम सन् 1957 से 1961 तक डाक्टर जायसवाल की अध्यक्षता में चले । बाद में यह कार्य श्री लाइडन और डा० हिस्टरमन करते रहे और अब डा० पी० गैफके इसे चला रहे हैं । पिछले कुछ वर्षों में हिंदी साहित्य के इतिहास और बंगला साहित्य के इतिहास तथा सभ्यता पर पुस्तकें लिखी गई हैं ।

इन भाषाओं के अध्ययन के अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय में अनुसंधान का कार्य भी किया जा रहा है । डा० गैफके ने हिन्दी की वाक्य रचना आदि के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी है । बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों और कथा-साहित्य पर भी कुछ पुस्तकें लिखी गई हैं ।

पिछली शताब्दी में भारत से बहुत से लोग सूरीनाम में जाकर बस गए थे । इन लोगों के लोकगीतों को इकट्ठा कर उन पर एक निबन्ध तैयार किया गया है । यह जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि इन गीतों का भारतीय गीतों से कितना सम्बन्ध है । इन गीतों के कई टेप तैयार कराए गये हैं और अनुसन्धान कार्य के लिये उनसे सहायता ली जा रही है ।

0 नए प्रकाशन

गुरुदास कपूर एंड सन्स, 3883 चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6 :

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
अमर दीप	क्षेमचंद्र सुमन	जीवनी संग्रह	176	3-50
मंत्र सूत्र	राजेन्द्र अवस्थी	उपन्यास	172	3-50
संयुक्त राष्ट्र संघ	श्रीमती प्रभा चौहान	राजनीति	159	5-00
किस की नाव [illegible]	प्रभाकर द्विवेदी	उपन्यास	152	3-25
ज्योति जवाहर	देवी प्रसाद राही	खण्ड काव्य	152	5-00
थिरकते पैर	श्रीचंद जैन	संस्कृति	136	5-00
पारिजातहरण	सम्पादन : श्रीकृष्ण नंदन पीयूष	नाटक	170	5-00

हिन्द पाकेट बुक्स, जी0टी0 रोड़, शाहदरा, दिल्ली-22 :

दिल जले की राह	जी0 पी0 श्रीवास्तव	उपन्यास	175	2-00
योग के आसन	श्रीपाद दा0 सातवलेकर	योग चर्चा	173	2-00
फिर दीप जलेगा	नीरज	गीत संग्रह	176	2-00
परछाईं	विष्णु प्रभाकर	उपन्यास	108	1-00
सफेद फूल	कृश्न चंदर	कहानी संग्रह	169	2-00
बासठ दिन	दत्त भारती	उपन्यास	176	2-00
धूप छांव	गुरुदत्त	उपन्यास	279	3-00
तरंगों के प्रेत	चन्दर	उपन्यास	176	2-00

सामयिक प्रकाशन, 3543 जटवाड़ा, दरियागंज, दिल्ली-6 :

कार्यालय कोश	गोपीनाथ श्रीवास्तव	कोश	302	12-00
गुड़ियों का खेल	समरेश वसु	उपन्यास	179	5-00
समाज मनोविज्ञान	कृष्णदत्त द्विवेदी	समाजशास्त्र	276	6-00

राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-7 :

लालसा	एफ0 स्काट फिट्जगैराल्ड	उपन्यास	243	6-00
परिवार चिकित्सा	डा0 युद्धवीर सिंह	चिकित्सा	148	3-50

महान प्रेमी और उनकी प्रेमिकाएं	इलाचंद्र जोशी	कहानी	192	4-50
न आने वाला कल	मोहन राकेश	उपन्यास	207	6-00
लाल घूंघट वाला मुखड़ा	अमृत लाल नागर	उपन्यास	156	4-50
केशव का आचार्यत्व	डा0 विजयपाल सिंह	शोध निबंध	486	20-00
नानी की कहानियां	रूप नारायण चतुर्वेदी	बाल-साहित्य	56	1-50

मासिक विवेक विकास, अमरगढ़, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-4 :

विवेक विकास	सं0 श्रीमती इन्दिरा मायाराम	नवसाक्षर प्रौढ़ोपयोगी मासिक	-	6-00 (वार्षिक)

यूनेस्को (पेरिस) के सहयोग तथा शिक्षा मंत्रालय की सहायता से
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के तत्वावधान में प्रकाशित
शिक्षा, संस्कृति एवं विज्ञान की अनुपम हिंदी मासिक पत्रिका
यूनेस्को कूरियर
मुद्रण, सज्जा एवं सामग्री अति उत्कृष्ट और प्रशंसा प्राप्त
एक प्रति : एक रुपया
वार्षिक शुल्क : 10-50 रुपये
शैक्षिक संस्थाओं एवं
पुस्तकालयों के लिए : 8-50 रुपये
कम से कम 5 वार्षिक ग्राहक बनाने वालों को कमीशन दिया जाएगा।
जनवरी, 1968 से ग्राहक बनने वालों को पिछले 5 अंक मुफ्त भेजे जाएंगे।
नमूने की प्रति के लिए 60 पैसे के डाक टिकट भेजें। विवरण के लिए लिखें :
प्रबंध संपादक, यूनेस्को कूरियर (हिंदी),
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय),
वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

178330

रजि. सं. आर. एन.
12817/66

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए :	ले० वी जेलेनिन	पृ० 142	मूल्य 5-00
2. सिखों का इतिहास :	ले० हरीराम गुप्त	पृ० 304	मूल्य 5-00

स्वयं-शिक्षक ग्रन्थमाला

1. हिन्दी-तमिल स्वयं-शिक्षक	पृ० 165	मूल्य 3-85

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश		पृ० 324	मूल्य 4-50
2. शब्दार्थ मीमांसा :	ले० रामचन्द्र वर्मा	पृ० 326	मूल्य 11-50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं
मूल्य एक प्रति 3-00, वार्षिक 10-00 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ० 148	मूल्य 4-50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक :	आर्ट पेपर पर, दो रंगों में	पृ०270	मूल्य 12-50
3 संकलन		पृ० 580	मूल्य 11-50

‡हिन्दी कूरियर

(सचित्र मासिक यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण)

वार्षिक 10-50, एक प्रति 1-00

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : **परिवर्धित देवनागरी**
2. **मानक देवनागरी**
3. **Standard Devanagari Script**
4. **Devanagari Through the Ages**
5. **देवनागरी लेखन विधि चार्ट**
6. **परिवर्धित देवनागरी चार्ट**
7, **Standardisation of Hindi Spelling**
8 **हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण**

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर, **प्रबधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

‡ग्राहक बनने के लिए प्रबन्ध संपादक, **हिन्दी कूरियर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली** को मनीआर्डर द्वारा चन्दा भेजें।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित
संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

आर. एन.
7/66

Compiled
1999-2000